32

॥ श्री ॥



श्री सिद्ध-किशोरी चरित्रामृत सागर

प्रथम बार १५००

मूल्य—सप्रेम नित्य पाठ

श्री सिद्ध-किशोरी चरित्रामृत सागर

लेखक व प्रकाशक :—

अधिकारी रामगोपालदास,

भइया लक्ष्मीनिधी,

श्री जानकी घाट, श्री अयोध्या जी।



— संशोधक —

पं० श्री भैयाराम जी मिश्र, एम. ए. एल. एल. बी.

अध्यापक:—गू० ना० खत्री कालेज,

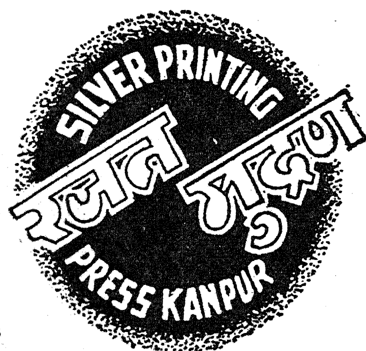
कानपुर

सम्वत २०११

प्रथम बार १५००

मूल्य—सप्रेम नित्य पाठ

मुद्रक:—सिलवर प्रिन्टिंग प्रेस, अहाता सवाई सिंह, कानपुर।


SILVER PRINTING
PRESS KANPUR

❀ श्री सीताराम जी ❀

श्री सिद्धकिशोरी चरितामृत सागर

विषय सूची

—:❀:—

पृष्ठ पांच पर (प्रेमां भक्ति) लिखना भूल गये हैं तथा पृष्ठ १३०-चरित्र नं० २६ में उर्फ स्वयं पावी जी की जगह भूल से दुर्वासा जी छप गया है।

श्रीः

श्री सीतारामचंद्राभ्यां नमः

भगवते श्री रामानन्दाय नमः — श्री सिद्धकिशोरीयै नमः — श्रीमते श्री हनुमते नमः

श्री गुरुवे नमः

❀ श्री गुरु बन्दना ❀

जे गुरु चरण रेणु सिर धरहीं।
ते जनु सकल विभव बस करहीं ॥

जे गुरु पद अम्बुज अनुरागी।
ते लोकहु वेदहु बड़ भागी ॥

"गुरु बिन भवनिधि तरे न कोई। जो विरंचि शंकर सम होई ॥"

श्री गुरू चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनौं निमिकुल विमल यश, जो दायक फल चारि ॥

श्री गुरुदेव !

आप के श्री चरणों में इस तुच्छ सेवक का कोटिशः प्रणाम हैं, सादर सप्रेम वन्दना है, साष्टांग दंडवत है। आप तो मायिक गुणों से निगु ण एवं निराकार होते हुए भी शिष्यों के प्रेमवश सुदिव्य सगुण साकार हो जाते हैं। प्राकृतिक वाणी से अनिर्वचनिय हैं, फिर भी शिष्य परशिष्य आप का गुण गान करते ही हैं।

बलिहारी गुरुदेव की, कियो बहुत उपकार।
हरि सुधन हृदय धरयो, छुड़ा दियो संसार ॥

भगवन्! आप ने अकारण कृपा-दया से इस दीन सेवक को अपने चरण शरण में लिया, प्रभु की सेवा-सुमिरण का मार्ग दिखलाया, संत जनों का साथ कर दिया, उन्होंने भी संसारी मोह माया से छुड़ाकर भगवान की ओर बढ़ाया। गुरुदेव! आप की अपार कृपाओं का अनुभव कर मैं तो कृत कृत्य

एवं कृतार्थ हो गया। भगवन् । मैं तो नेत्रों में अश्रु मोतियों की भेंट लेकर अश्रुओं के ही अर्घ से पाद-पद्मों को धो प्रणाम करता हूँ, मेरी कुपात्रता पर ध्यान न दीजिएगा। पारस लोहे की कुपात्रता पर ध्यान न देकर उसको स्वर्ण बना देना ही वह अपना स्वाभाविक धर्म समझता है। गुरुदेव !मैं तो आप की दया का भिखारी हूँ।

बार बार वंदन करूं हरि गुरु संत समान।
बलिहारी गुरुदेव को दीनों हरि पद दान॥
मन चंचलता थिर रहे श्री अवध मिथिला विश्राम।
कृपा करो निज जन जान, गाऊं श्री सीताराम॥

इस घोर संसार रूपी समुद्र के एक मात्र कर्णधार! इस शुष्क जीवन वाटिका में सरलता—विमलता लाने वाले श्री गुरु महाराज! मेरे हृदय के आराध्य देव!

"करन चहौं निमिकुल गुन गाहा, लघु मति मोर चरित अवगाहा।"

हे कृपा नाथ! "मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी" की शुभ जीवनी को लिखने का साहस तो कर लिया है, परन्तु लिखने की बुद्धि नहीं, लेखन-शैली भी नहीं जानता, लेखक के नियम क्या २ हैं, इनको भी मैं भूल गया हूँ, इन्हीं कारणों से बड़ी असमंजस में पड़ा हूँ कि अब करूं तो क्या करूं? भारी कठिनाई दिखाई पड़ रही है; रात दिन इसी उधेड़बुन में हैरान परेशान हूँ। अब तो केवल एक मात्र आप का ही आसरा और भरोसा है, गुरुदेव! आप की शरण हूँ, दयासागर! इस दास पर दया करना, कृपा करना एवं लाज भी रखना।

आप का चरण रजु-पाद पद्मानुगामी
राम गोपालदास (भइया जी)
(लक्ष्मीनिधी)

स म र्प ण



श्री साकेत वासी भगवतपाद प्रातः स्मरणीय परम पूज्य गुरुवर अनन्त श्री स्वामी जयदेव दास जी महाराज।

आप के श्री चरण कमलों की शरणागति प्राप्त करके इस दास ने अपने जीवन में जो कुछ भी थोड़ा सा आपकी असीम कृपा द्वारा प्राप्त किया है, उसे महान श्रद्धा, भक्ति, अनन्य प्रेम एवं हृदय के समस्त शुद्ध भावों से **"अनन्त श्री सिद्ध किशोरी जी"** की इस परम पावनी जीवनी को अपनी भाव भीनी **पुष्पांजली** रूप में आपके श्री कर-कमलों में सादर सप्रेम समर्पण करता हुआ आशीर्वाद का इच्छुक हूँ।

श्री चरणों का तुच्छ सेवक

रामगोपाल दास (भईया जी)

लक्ष्मीनिधी

❀ श्री इष्ट वन्दना ❀

"सिद्ध किशोरी" बहु उपकार, आप ने सर्वदा "भैया" पर किये।
उपहार प्रति उपकार मैं क्या दूँ तुम्हैं इस के लिये ? १
है क्या हमारा सृष्टि में, यह सब आप से है बनी।
संतत ऋणी हम हैं तुम्हारे, तुम हमारे हो धनी ॥ २
लोक शिक्षा के लिये अवतार, "बहिन" तुमने था लिया।
निर्विकार शक्ति होते भी, नर सदृश कौतुक किया ॥ ३
"श्री रामनाम" ललाम जिन्ह का सर्व मंगल धाम है।
उस "बहनोई" को भी "सार" का, श्रद्धा समेत प्रणाम है ॥ ४

छन्द

"बहिन सिद्ध किशोरी जू ने चरितामृत बरषाया।
चमत्कार से पूर्ण अमित लीला ललाम दरषाया ॥
भक्तन के उर भली भाँति से भक्ति भाव सरषाया।
करि-स्पर्श अनूपमता से प्रेमिनि को हरषाया ॥

छन्द

अन्तर यामिनि दिव्य दया मयि अति उदारता कीन्हो ॥
तृकालज्ञ स्पर्श मात्र से मंत्र मुग्ध करि लीन्हो ॥
बहन सिद्ध किशोरी जू ने नेम प्रेम जब चीन्हो ॥
तब तो रामगोपालदास को निज भय्या पद दीन्हो ॥

घनाक्षरी

चारू चरितामृत अनोखे चोखे मांगलीक ॥
अद्भुत अनूप सोई वन्दि गुन गाऊं मैं ॥
लीला जो ललाम सुख धाम है तमाम ता मैं ॥
लिपि बद्ध लेख लिखि ललकि लखाऊं मैं ॥
विश्व के बिहारी की निहारी आदि शक्ति दिव्य ॥
सर्वेश्वरी मानि उर ध्यान धरि ध्याऊं मैं ॥
चाह निज भय्या की है सिद्धकिशोरी तेरे ॥
पद अरविन्द को मलिन्द बनि जाऊँ मैं ॥

सुन्दरी छंद

सिद्धकिशोरी शक्ति शिरोमणि हैं।
सब सिद्धि प्रदान करैं छण माहीं ॥
शुचि दिव्य अलौकिक रूप प्रभा।
पसरी प्रिय प्रेमिन के मन माहीं ॥
लखि शील उदार पना करुणा।
रस व्यापि गयो खल मूढ़न माहीं ॥
मधुरी अवलोकन बोलन की।
अभिलाष करैं वसु लोकन माहीं ॥

छंद

पाई न गति केहि पतित पावनि राम भज सुनि शठ मना।
गनिका, अजामिलु व्याध, गीधु गजादि खल तारे घना ॥
आभरि, यवन, किरात, खल, स्वपचादि, अति अघ रूपजे।
कहि नाम वारक तेपि पावन होंहि राम नमामिते ॥

दोहा

कलिजुग सम जुग आन नहीं जौ नर कर विस्वास।
गाइ राम गुन गन विमल भवतर बिनहिं प्रयास ॥
अस प्रभू दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥
जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य।
अस समर्थ सीतारामहि भजहिं जीव ते धन्य ॥

चौपाई

नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत शिरोमनि भे प्रहलादू ॥
ध्रुव सगलानि जपउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने वस करि राखे रामू ॥
भायँ कुभायँ अनख आलस हूँ। नाम जपत मंगल दिसि दस हूँ ॥
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। राम न सकहिं नाम गुन गाई ॥



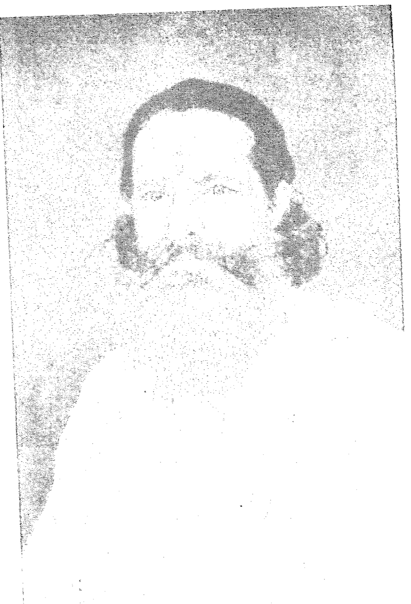
श्री रामजी — श्री सिद्ध किशोरी जी



श्री लक्ष्मीनिधी जी — श्री चक्रवर्ती जी



श्री सिद्ध किशोरी जी



अधिकारी श्री राम गोपाल दास जी (लक्ष्मी निधि)

(श्री बाल्मीकीय रामायणान्तर्गत अनन्त श्री राम जी की वंशावली)

१-अव्यक्त से २-श्रीब्रह्माजी ३-श्रीमरीचि मुनि ४-श्रीकश्यप मुनि ५-श्रीविवस्वान् महाराज (सूर्य्य) ६-श्रीमनु महाराज ७-श्री-इक्ष्वाकु महाराज ८-श्रीकुक्षि महाराज ९-श्रीविकुक्षि महाराज १०-श्रीवाण महाराज ११-श्रीअनरण्य महाराज १२-श्रीपृथु महाराज १३-श्रीत्रिशंकु महाराज १४-श्रीधुन्धुमार महाराज १५-श्रीयुवनाश्व महाराज १६-श्रीमान्धाता महाराज १७-श्रीसुस-न्धि महाराज १८-श्रीध्रुवसन्धि महाराज १९-श्रीभरत महाराज २०-श्रीअसित महाराज २१-श्रीसगर महाराज २२-श्रीअसमंजस महाराज २३-श्रीअंशुमान्जी २४-श्रीदिलीपजी २५-श्री भगीरथजी २६-श्रीककुत्स्थ महाराज २७-श्रीरघु महाराज २८-श्रीकल्माषपाद महाराज २९-श्रीशंखण महाराज ३०-श्रीसुदर्शन महाराज ३१-श्री-अग्निवर्ण महाराज ३२-श्रीशीघ्रग महाराज ३३-श्रीमरु महाराज ३४-श्रीप्रशुश्रुक महाराज ३५-श्रीअम्बरीष महाराज ३६-श्रीनहुष महाराज ३७-श्रीययातिमहाराज ३८-श्रीनाभाग महाराज ३९-श्री अज महाराज ४०-श्रीदशरथ महाराज के ४१-श्रीरामजी महाराज श्री भरत जी, श्री लक्ष्मण जी, श्री शत्रुघ्न जी महाराज।

(अनन्त श्री विदेह जी महाराज की वंशावली)

१-श्रीनिमि महाराज २-श्रीमिथि महाराज ३-श्रीप्रथमजनक महाराज ४-श्रीउदावसु महाराज ५-श्रीनन्दिवर्धन महाराज ६-श्री-सुकेतु महाराज ७-श्री देवरात महाराज ८-श्रीबृहद्रथ महाराज ९-श्रीमहाबीर महाराज १०-श्रीसुधृति महाराज ११-श्रीधृष्टकेतु महाराज १२-श्रीहर्यश्व महाराज १३-श्रीमरु महाराज १४-श्रीप्रती-न्धक महाराज १५-श्रीकीर्तिरथ महाराज १६-श्रीदेवमीढ महाराज १७-श्री विबुध महाराज १८-श्रीमहीध्रक महाराज १९-श्रीकीर्तिरात महाराज २०-श्रीमहारोमा महाराज २१-श्रीस्वर्णरोम महाराज २२-श्री ह्रस्वरोम महाराज २३-श्रीसीरध्वज महाराज श्री जनक महाराज करके विख्यात हुए २४-श्रीलक्ष्मीनिधि महाराज।

श्रीः

श्री अमर रामायणान्तर्गत श्री किशोरी जी के भैया श्री लक्ष्मीनिधि जी के ननिहाल एवं ससुराल

अग्निकोण में एक कोण देश है, उसमें एक रियासत विकाशापुरी है, वहां के राजा का शुभ नाम था श्री भूरिमेधा जी एवं उनकी महारानी का नाम श्री सुधाम्रया जी, उनकी दो पुत्रियां श्री सुनैयना जी एवं श्री कान्तीमती जी थीं। इन दोनों का शुभ विवाह श्री जनकपुर (मिथिलाधाम) के महाराजा विदेह श्री जनक जी (श्री शरिध्वज) महाराज के साथ हुआ था। महारानी श्री सुनैयना जी की एक पुत्री श्री सीता जी (जानकी जी) एवं एक पुत्र श्री लक्ष्मीनिधि भी थे। श्री जानकी जी का शुभ विवाह श्री राम जी महाराज के संग धनुष भंग द्वारा हुआ।

दूसरी रानी श्री कान्तीमती जू की एक पुत्री श्री उर्मिला जी थीं, जिन का शुभ विवाह श्री लक्ष्मण जी महाराज के संग हुआ इस प्रकार श्री लक्ष्मीनिधि के नाना का नाम हुआ श्री भूरि मेधा जी, व नानी श्री सुधाम्रया जी, एवं मामा का नाम सुमाल और कुन्डल।

ससुराल

दक्षिण दिशा में बिडालक देश में वैडाला रियासत के राजा श्री श्रीधर जी थे, उनकी रानी का शुभ नाम श्री सुकान्ता जी था, उनकी एक पुत्री श्री सिद्धी जी, पुत्र श्री कान्तीधर जी थे। श्री जानकी जी के भैया श्री लक्ष्मीनिधि जी का शुभ बिवाह श्री सिद्धी जी के साथ होने से श्री कान्तीधर जी इनके साले, राजा श्रीधर जी लक्ष्मीनिधि के ससुर एवं, श्री सुकांता जी इनकी सास हुई।

—:०:—

वक्तव्य

लेखक की ओर से

प्रिय पाठको। मैं इस पावन जीवनी को प्रारम्भ करने से पहले यह बता देना चाहता हूँ कि भगवान की लीला विभूति का स्मरण एवं उनके भक्तों का जीवन चरित्र लिख या पढ़ सुन कर हम उन्हें कुछ दे तो देते नहीं, केवल अपने हृदय में जमे पापों का नाश ही कर देते हैं, कारण कि, ऐसे भगवत कृपा पात्रों की जीवनी भी कलिमलग्रसित जीवों के लिये उनके समस्त पाप ताप दुःख दर्द को समूल नष्ट करने के लिये सन्जीवनी है।

किसी पुन्यात्मा पुरुष के जीवन का कथन करना इसे जीवनी लिखना कहा जाता है, अब सवाल यह होता है कि जो हमारे तन में, मन में और हमारी आँखों में बसा हो, फिर उस की जीवनी को क्या लिखना ? सज्जनो ! यह सब ठीक है; परन्तु मेरा सोया हुआ मन जग उठा, एवं छिपी हुई प्रीति तड़प उठी, तभी इसे लिखने का प्रयास हुआ ! यह इस समय के एक परम प्रतापी आदर्श श्री लीला विहारी स्वरूप का जीवन वृत्तान्त अर्थात् उनके अद्भुत चमत्कारी चरित्रों का भंडार है, उन का एक एक चरित्र अलौकिक तथा अमूल्य है।

सज्जनो ! मैं न तो कवि हूँ न पण्डित और न ही कोई लेखक तब मेरे जैसा अनाड़ी ऐसे महान पुरुष की जीवनी को क्या लिख सकता है ? परन्तु जैसे मच्छर से लेकर गरुड़ तक सभी पक्षी अपनी २ शक्ति अनुसार आकाश में उड़ते हैं तथा शेष, महेश, शारदा से लेकर एक साधारण प्रभु प्रेमी भी अपने प्रभु के गुण कथन करता ही है, इसी प्रथा का अवलम्ब लेकर मैं ने भी अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार श्री सीताराम जी तथा श्री

गुरु देव के बल भरोसे पर ही अपनी खोज पूर्ण जहाँ तक मुझ से हो सका श्री अयोध्या धाम विहौती कीर्तन समाज (जिन के संचालक भक्तवर श्री १०८ श्री रमाँ जी महाराज थे एवं वर्तमान सन्चालक व मालिक पुजारी श्री रामशंकर शरण जी महाराज हैं, श्री जानकी जी लीला स्वरूप (श्री सिद्ध किशोरी जी) के जीवन चरित्रों का संग्रह करके उनकी स्मृति दिलाते हुऐ इसे लिखने व प्रकाशित कराने का साहस किया है, जिस से संसार में उन के शुभ चरित्रों का प्रचार व प्रसार हो कर जगत जीवों का कल्याण हो ! सिद्ध महान पुरुषों के जीवन चरित्रों को सुनने से मनुष्य के जीवन पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है, और यदि उन चरित्रों का श्रद्धा पूर्वक मनन किया जावे तो कामधेनु की भाँति मनोकामना का भी फलदायक होता है। आशा है कि धर्म को काँटा समझने वाले लोग भी इन दिव्य चरित्रों से कुछ लाभ उठा सकेंगे !

सर्वज्ञता का अभाव होने से मनुष्य मात्र भूल का पात्र तो है ही, भूल तो सभी से हुआ ही करती है, इसलिये दृष्टि दोष अथवा विचार भ्रम से यदि इस जीवनी में भी कहीं कुछ भूल दिखाई पड़े तो पहाड़ खोद कर चूहा निकालने के झंझट में न पड़ कर प्रेमीजन इस जीवन चरित्र से सार ग्रहण करने की ही उदारता दिखायेंगे।

जड़ चेतन गुण दोष मय विश्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुण गहहिं पय परि हरि वारि विकार ॥

श्री युगुल-सरकार प्रिय-प्रीतम श्री सीताराम जी महाराज को मेरा कोटिशः प्रणाम है कि जिन की असीम कृपा द्वारा ही मुझे इस परम पुनीत ग्रन्थ को लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ श्री सिद्ध किशोरी जी की इस जीवन झाँकी की रचना प्रेमीजनों के कल्याणार्थ ही हुई है जो कि उन को उपहार रूप में भेंट की

जावेगी, इस का मूल्य केवल सप्रेम "दैनिक पाठ" होगा!

पाठको! इस जीवनी की भूमिका एवं अपनी अनुमती सम्मती में कुछ महानुभावों ने मेरी भी प्रशंसा लिख डाली है; कि भैया जी ने यह किया वह किया, जनता का बड़ा उपकार किया! मैंने क्या किया,? कुछ भी नहीं, सज्जनो, मन तो ठहरा तरंगों का समुद्र, मेरे मन में भी तरंग उठी, तो श्री सिद्धकिशोरी जी की प्रेरणा एवं कृपा द्वारा ही मैं ने इधर उधर बिखरे चरित्रों का संग्रह करके लिख डाला, और प्रेमी भक्तजनों ने इसे प्रेम पूर्वक छपवा डाला; तो फिर मेरी इस में कौन सी बड़ाई हुई?

"बहनोई श्री राम" की इच्छा बिनु-हिले नहीं पत्ता भाई।
"श्री सिद्ध किशोरी" ने कथा अपनी स्वयं ही लिखाई॥

मैं तो अज्ञानी हूँ; अनुभव शून्य हूँ, मुझ में भाव भक्ति नहीं, इस जीवनी को पढ़ने सुनने से पाठकजनों को कुछ लाभ तथा मनोरंजन भी होगा या नहीं, इस बात को भी में नहीं जानता, मगर हाँ! इतना जरूर है कि इस जीवनी सम्वाद में श्री सिद्ध किशोरी रस रूपी सरिता का प्राकट्य होगा जिस को रसानुरागी श्री सिद्धकिशोरी जी के कमल रूपी मुख से निकले मधु को पीकर तृप्त एवं मस्त होंगे-इसलिये आशा है कि भक्तजन इस का संग्रह करके लाभ उठावेंगे—

मैं चाहता हूँ कि इस पवित्र जीवनी के प्रचार द्वारा इस कराल कलिकाल में जनता का भगवद् भक्ति लाभ से उद्धार हो साथ ही साथ लेखक एवं प्रकाशक (प्रेमी भगत समाज) का परिश्रम भी सफल हो। अब यदि प्रेमी जन इस जीवनी का प्रेम पूर्वक स्वागत करते हुये इस का मनन कर अपने दुखमय जीवन को सुधार कर कुछ भी शान्ति प्राप्त कर सके, तो मैं अपने स्पूर्ण परिश्रम को सफल समझूंगा।

अधिकारी रामगोपाल दास लेखकः—

❀ भूमिका ❀

परम आदरणीय वीतराग श्री भागवती कथा के सुप्रसिद्ध लेखक ब्रह्मचारी श्री प्रभुदत्त जी महाराज-संकीर्तनभवन झूँसी (प्रयाग) द्वारा लिखित भूमिका।

अवतारा ह्यसंख्येया हरेः सत्वनिधोर्द्विजाः।
यथा विदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रशः॥

हमारे शास्त्रों में भगवान के अनेक प्रकार के अवतार बताये गये हैं। युगावतार; कल्पावतार, अंशावतार, आवेशावतार; मन्वन्तरावतार; कलावतार आदि २ इनके अनेक भेद बताये गये हैं। अवतारों की कोई गणना नहीं जैसे नहर में से असंख्यों छोटी २ कूलें निकल कर पृथ्वी को तृप्त करती हैं उसे शस्य श्यामला बनाती हैं। इसी प्रकार उन सत्वनिधि परात्पर प्रभु से अनेक छोटे बड़े अवतार प्रगट होकर भक्तों को सुख देते हुये उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। भक्तों के भेद से उपासना के भी अनेक भेद हैं! बहुत से भक्त भगवत अर्चा विग्रहों में प्रत्यक्ष दर्शन पाते हैं। अर्चा विग्रह भी अर्चावतार ही होते हैं। बहुत से लीला स्वरूपों की उपासना करते हैं और लीला स्वरूपों में ही उन्हें भगवत-साक्षात्कार हो जाता है।

लीला स्वरूप तो शृंगार करके आवें, तो सभी भावुक भक्तों के लिये वन्दनीय हैं। किन्तु लीला स्वरूपों में भी कोई २ स्वरूप ऐसे चमत्कारी होते हैं कि वे शृंगार में हों या बिना शृंगार के, उनमें भगवता प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर होती है। श्री अवध में तथा श्री वृन्दावन में ऐसे स्वरूपों के कभी २ भावुक भक्तों को दर्शन हो जाते हैं और वे अपनी सर्वज्ञता भी अपने

भक्तों पर प्रगट कर देते हैं तभी उनकी विशेष मान्यता होती है, वे भी अवतार ही हैं किन्तु देखा गया है ऐसे चमत्कारी लीला स्वरूप अधिक दिन इस पृथ्वी पर निवास नहीं करते। कुछ ही दिन अपनी लीला दिखाकर अन्तर्हित हो जाते हैं। मैंने तो दर्शन किये नहीं, किन्तु अभी हाल में ही श्री अवध में ऐसे ही एक श्री राम चंद्र भगवान के लीला स्वरूप थे, भक्तगण उन्हें प्रत्यक्ष भगवान ही मानते थे, जब मैं फरूखाबाद गया तो वहाँ बड़े २ ऊँचे और विद्वान साधक उनकी भगवत रूप में उपासना करते मिले, और अनेक चमत्कार भी उनके बताये। ऐसे ही एक श्री किशोरी जी के लीला स्वरूप श्री अवध के बिहौती भवन में हो गये हैं। उनके चमत्कारों के ही कारण अवध में वे "श्री सिद्धकिशोरी जी" के नाम से प्रसिद्ध थे। मैंने उनके दर्शन किये हैं और जो उनमें भगवत बुद्धि रख कर अत्यन्त निष्ठा रखते थे उनका भी संग किया है। वास्तव में वे बड़े ही चमत्कारी लीला स्वरूप थे। उनकी अनेकों सिद्धि की तथा अन्तर्यामीपने की घटनायें प्रसिद्ध हैं। जिनमें से कुछ श्री स्वामी रामगोपाल दास जी महाराज की कृपा से इस पुस्तक में संग्रहीत हैं। श्री सिद्धकिशोरी जी का स्वरूप इतना भव्य था; कि जो भी उनके दर्शन कर लेता वह प्रभावित हुये बिना नहीं रहता था। इतनी छोटी अवस्था में इतनी सर्वज्ञता इतनी कार्य और व्यवहार पटुता अन्यत्र कहीं देखने में नहीं मिलती।

मैंने अवध में इसके पूर्व भी दर्शन किये थे इसका स्मरण नहीं या प्रयाग में ही किये थे, किन्तु तब तक मेरा कोई विशेष परिचय नहीं था किन्तु वे तो मुझे जानती ही थीं, जब आज से १८-१६ वर्ष पूर्व हमारा चौदह महीने का अखण्ड नाम संकीर्तन यज्ञ चल रहा था, तब उसमें दो ढाई महीने आकर श्री उड़िया बाबा जी महाराज बिराजे थे, ग्वालियर के महात्मा

श्री रामदास जी रामायणी भी थे, यज्ञ समाप्त करके ५०-६० आदमियों के साथ श्री उड़िया बाबा जी महाराज ने श्री अयोध्या की यात्रा की। तब तक वे किसी भी सवारी पर नहीं चढ़ते थे इसलिये हम सब भी पैदल ही श्री अवध तक गये। वहाँ जाकर हमने ठठेरों के मन्दिर बिहौती भवन में उनके दर्शन किये, हमें उन्हों ने अपने हाथों वस्त्र प्रदान किये, और अत्यन्त ही प्रेम प्रदर्शित किया, तभी मेरा विशेष परिचय हुआ। इसके लगभग दो वर्ष के पश्चात् श्री पशुपतिनाथ जी के दर्शन को हम नैपाल गये; नैपाल से लौटते समय श्री जनकपुर धाम जाने की इच्छा से श्री सीतामढ़ी उतरे। संयोग की बात, कि जिस स्थान में हम उतरे थे वहीं श्री पुजारी जी अपने स्वरूपों सहित बिराज-मान थे। अवध के सुप्रसिद्ध संत श्री रामपदार्थदास जी (श्री वेदान्ती जी) महाराज भी वहीं ठहरे थे। स्वरूपों की सेवा में कर्वी (चित्रकूट) के सुप्रसिद्ध संत साकेत वासी श्री महन्त जयदेवदास जी महाराज के कृपा पात्र अधिकारी श्री रामगोपाल दास जी महाराज भी थे। उनका तो उन में साक्षात किशोरी जी का ही भाव था; उनकी निष्ठा परिचर्या और भक्ति को देख कर मैं तो अत्यन्त ही प्रभावित हुआ। किसी विशेष कारण बस हम श्री जनकपुर नहीं जा सके, इसलिये रेल में भी स्वरूपों के साथ ही साथ लौटे। उस समय उनके प्रभाव की कुछ झांकी हुई।

इसके कुछ ही दिनों पश्चात् सुना गया, कि वे इस लोक की लीला समाप्त करके अन्तहित हो गईं। इसके कुछ ही वर्षों के पश्चात् बिहार ऐसेम्बली के अध्यक्ष (स्पीकर) श्री रामदयालु सिंह जी मेरे पास मकान बना कर झूंसी में रहे, वे श्री किशोरी जी के अनन्य भक्तों में से थे, उनमें साक्षात श्री किशोरी जी का भाव रखते थे, और अपनी शक्ति के अनुसार

सदा सेवा भी करते रहते थे, उन्हीं की आज्ञा से श्री पुजारी जी से इन्हों ने दीक्षा भी ली थी, इनके द्वारा भी बहुत प्रशंसा सुनी; उनके सम्बन्ध की बातें इसी पुस्तक में पाठक पृथक पढ़ेंगे। अतः उनकी पुनरावृत्ति करने की आवश्यकता नहीं। जैसा कि मैं पूर्व ही बता चुका हूँ ऐसी विभूतियाँ अधिक समय अवनी पर स्थिर नहीं रहतीं; जिन श्री रामजी के विग्रह का मैंने उल्लेख किया, वे भी १७-१८ वर्ष की आयु में इह लोक की लीला समाप्त कर गये। ऐसे ही श्री सिद्धकिशोरी जी भी १५ वर्ष की आयु में अन्तर्हित हो गईं, किन्तु यहाँ अपने अनेकों भक्तों को छोड़ गईं उन्हीं की स्मृति दिलाने को यह पुस्तक रूप में प्रयास है। आशा है कि भावुक भक्तों को इससे प्रेरणा मिलेगी। वे लोग बड़ भागी हैं जिन्होंने श्री सिद्धकिशोरी जी की पूर्ण कृपा प्राप्त की है। और वे भी नर नारी बड़ भागी हैं जिन्होंने उनके दर्शनों का लाभ लिया है। इन शब्दों के सहित मैं अपने इस वक्तव्य को समाप्त करता हूँ। और श्री किशोरी जी के अमल विमल पादपद्मों में पुनः २ प्रार्थना करता हूँ कि वे हमें भी अपने चरण रज की भक्ती का अधिकारी बनावें। इति शुभम !

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, संकीर्तन भवन
झूँसी (प्रयाग)



श्री सिद्धकिशोरी जी के सम्बन्ध में कुछ सुप्रसिद्ध सन्त महात्माओं की शुभ सम्मतियाँ

सकल गुण सम्पन्न विद्या वारिध परम पूज्य श्री रामपदार्थ दास जी महाराज (वेदान्ती जी) श्रीजानकी घाट, श्री अयोध्या जी का-

हृदय उद्गार

अनन्त श्री साकेताधीश परात्पर प्रभु श्री सीताराम जी यों तो व्यापक रूप चराचर स्वरूप हैं ही, परन्तु अपनी लीला विभूती में अपने भक्तों को सुख देने के लिए अनेक अवतार धारन करते हुए भी जब हृदय में पूर्ण शान्ति नहीं प्राप्त कर पाते, तब अवतार कालीन समय इत्यादि की बाधा से बाध्य होकर किसी महान व्यक्ति के रूप में नर रूप धारण करके लीलानुकरण वेष में अपने भक्तों के मनोभिलाषित सभी भावों की पूर्ति करते हुये पुनः अपने शाश्वत रूप में परिणत हो जाते हैं इस लीलानुकरण अवतार में अनेकों भक्तों को अपने इष्ट की प्राप्ति हुई है, तथा यह लीलानुकरण अनादि कालीन एवं सभी शास्त्र सम्मत है, जैसे श्रीमद्भागवत, श्री कौशलखण्ड, श्री शिव संहितादि। श्री शिव संहिता जी के पंचम पटल के बीसवें अध्याय में इस लीलानुकरण प्रतिष्ठादि की विधि लिखी है कि उत्तम ब्राह्मण कुल के बालक हों, सर्वांग सुन्दर हों, तथा चित्ताकर्षक हों, उनकी विमुग्धावस्था हो, उनको मातापिता से लेकर अर्चाविग्रह की भांति पंचामृतादि से वेदमंत्रो तथा श्री युगुल मंत्रराजादि से विधिवत उपनयन संस्कार व श्री वैष्णव पंचसंस्कार तथा भगवत प्राण प्रतिष्ठा करें, पुनः उनको इस प्रकार का बोध करावें, कि आप श्री सच्चिदानन्दकंद श्री राम जी



अनन्त श्री स्वामी पं० रामवल्लभा
शरण जी महाराज
श्री जानकी घाट, श्री अयोध्या जी





अनन्त श्री पं० रामपदार्थ दास जी
(वेदान्ती जी)
श्री जानकी घाट, श्री अयोध्या जी

हैं, तथा आप के माता पिता श्री कौशिल्या अम्बा तथा श्री चक्रवर्ती श्री दशरथ जी महाराज हैं, और श्री किशोरी जी को भी इस प्रकार से बोध करावें, कि आप श्री मिथिलेश राजकुमारी श्री जानकी जी हैं, आप के पिता श्री शीरध्वज जनक जी महाराज तथा आप की माता श्री सुनैना अम्बा जी हैं, इन सब संस्कारों के पश्चात् उनकी अर्चा विग्रह की भांति सतत काल पूजा सेवा करें। किसी भी समय उनका कोई अपचार न हो जाय। इस प्रकार यदि जो भी व्यक्ति श्री लीलानुकरण स्वरूप यज्ञ करते हैं; वह लीलाविहारी पुरुष साक्षात पर पुरुष स्वरूप हो जाते हैं। तथा उनके चरित्र भी भक्तों की भावानुसार सभी भावों की पूर्ति कारक होते हैं, कारण कि यहीं आवेशावतार है, ठीक इसी उक्त विधि के अनुसार श्री बिहौती भवन के पुजारीश्री रामशंकरशरण जी महाराज ने श्री सिद्धकिशोरी जी को हम सब के समक्ष प्रत्यक्ष किया था, जिनके कुछ इनेगिने चरित्रों का संग्रह श्री रामगोपालदास जी अधिकारी स्थान कर्वी श्री चित्रकूट (भइया श्री लक्ष्मीनिधी जी) ने किया है, इन चरित्रों को मैंने आद्योपान्त कथा रूप में श्रवण किया है। यह सब अक्षरशः सत्य हैं, इसके अतिरिक्त श्री सिद्धकिशोरी जी का मैंने भी स्वयं कई बार दर्शन किया था। उनकी बाल्यकालीन लीलाओं में ही अनुक्षण अनोखे अनोखे चमत्कार देखने में आया करते थे, प्रत्येक शब्द में गूढ़ रहस्य अप्लावित रहा करता था। अतः उनके विषय में जो भी आख्यायिकायें लिखी गई हैं। यह सभी सत्य तथा अकाट्य हैं। अतः हम लोगों को चाहिए कि श्री सिद्ध किशोरी जी के इस चरित्र रूप महान ग्रन्थराज को श्री "सीतायन" ग्रंथ की भांति पूज्य मान कर पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ नियम पूर्वक पाठ करें, तथा दूसरों को श्रवण करा कर उनके भी हृदय में श्री सीताराम जू की दिव्य भक्ति रूप शरद

राका शशि चंद्रिका उदय करावें, तथा उसके फल स्वरूप इस घोर अंधकारपूर्ण भवाटवी से निकाल कर सदा के लिये श्री सीताराम जू के श्री साकेतधाम को प्राप्त करैं।

दृश्य रूप में तो सभी भक्तजन श्री लीला स्वरूपों के प्रेमी होते ही हैं परन्तु, हमें तो श्री सिद्धकिशोरी जू के अदृश्य रूप में भी भैया श्री लक्ष्मीनिधी जी की अटूट श्रद्धा, विश्वास, तथा अचल भक्ति देख सुन कर अति प्रसन्नता होती है। अन्त में मेरी तो श्री सिद्धकिशोरी जी से यही प्रार्थना है कि वह अपनी और भी बिलखती हुई आत्माओं को अपनावें, तथा मुझे भी निरन्तर दिव्य दम्पति प्रिया प्रीतम श्री सीताराम जी की परिचर्या में लगायें, कि जिससे अनवरत अक्षुण्य रूप से श्री युगुल माधुरी रूप की झांकी होती रहै, मानव जीवन की सार्थकता यही है।

वेदान्ती रामपदार्थ दास

रसराज उपासक कविकुल शिरोमणि पं० श्री मैथिलीशरण जी महाराज (भक्त माली) नज़र बाग-श्री अयोध्या जी का

नम्र निवेदन

मृदुल मोद मुद माधुरी, करुणा सिन्धु गम्भीर।
स्वामिनि जय श्री मैथिली, आर्य्य श्री रघुबीर॥

महान हर्ष का विषय है कि आज मैथिली श्री स्वामिनी किशोरी जी के भावुक सु हृदय भ्राता परम प्रेमी श्री लक्ष्मीनिधि जी (अधिकारी श्री रामगोपाल दास जी स्थान कर्वी (चित्रकूट) के प्रेम एवं पवित्र भावना की परिभाषा करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। यों तो हमारे पूज्य श्री अयोध्या जी के बड़े २ महानुभाव महात्मा भावुक रसिक अनन्य और विद्यानिधि हैं

जिन्होंने "श्री सिद्धकिशोरी जी" के इस रहस्य-मय चरितामृत की भली भांति आलोचना और अपनी २ अनुमती प्रदान की है; अब हमारे जैसे अल्प बुद्धि वालों का उनके सामने इस विषय में लेखनी उठाने का साहस नहीं पड़ रहा है "तदपि कहे बिन रहा न कोई" इसी आधार पर तोतरी भाषा की तरह बाल बिनोद के समान अनमिल अक्षरों में लेखनी लिखने को लालायित हो रही है। इसमें दो विषय (ब्रह्म तथा जीव) की तरह ओत प्रोत अवर्णीय हैं। एक तो भइया श्रीमान् लक्ष्मीनिधी जी का हृदय और दूसरा अद्भुत एक लीला स्वरूप (श्री सिद्ध किशोरी जी) द्वारा व्यक्ति विग्रह में अलौकिक चमत्कारों का अवतीर्ण। पहले हम श्री सिद्धकिशोरी जी के सम्बन्ध में ही कुछ टूटे फूटे शब्दों द्वारा निवेदन करके पीछे श्री भइया जी के सन्मुख होंगे।

श्री मिथिला अन्तर प्रदेश निमिपाल (नैपाल) तराई के पर्वतों में एक महान योगिराज तपस्वी महात्मा स्वामी श्री गिरीशानन्द जी विचरा करते थे; वह कभी २ श्री जनकपुर धाम में भी उतर आते थे और अकिन्चन भाव से अज्ञात बन कर वहाँ के मुनी महात्माओं भावुक उपासकों के आश्रमों में जा २ कर उनके भाव भूषित सतसंग से अपने तपस्चर्या से तपे भये हृदय को शीतल करते रहते थे। स्वामी जी वेद वेदाङ्ग शास्त्रों के विद्वान थे। और उपासना रहस्य के सतसंग को करते २ उनके अद्वैत हृदय में द्वैत का संचार भी हो गया था, इसलिये श्री किशोरी जी के श्री विग्रह में तल्लीन हो विलास करने का सौभाग्य प्राप्त कर काञ्चन वन में स्थाई रूप से विचरने लगे।

श्री मिथिला जी की ८४ कोसी परिक्रमा जो प्रति संवत फाल्गुन मास में हुआ करती है, एक बार उसमें जिला छपरा

अन्तर्गत माणीपुर ग्राम निवासी पं० श्री सिद्धेश्वर तिवारी जी भी सपत्नीक वहां पधारे, जो श्री मिथिला जी के बड़े निष्ठावान थे, वह अचानक श्री स्वामी जी महाराज की पर्ण-कुटीर पर कञ्चन वन में भी पहुँचे, और अपनी पत्नी (श्री जुगुल सहचरी जी) के सहित श्री स्वामी जी का दर्शन करके कृत २ हुये। श्री स्वामी जी भी उनकी निर्दम्भ भोली भक्ति को देख उनमें अपने स्वात्म भाव का सञ्चार करने लगे, कुछ काल जब वहां निवास करके चलने का मनोरथ भया, तब श्री स्वामी जी ने आज्ञा प्रदान की कि कालान्तर में हम आप के यहाँ जन्म लेंगे, और यह श्री जुगुल सहचरी जी हमारी अम्मा होंगी; इन्हीं की गोद के हम शिशु बनेंगे। आप दोनों को हम एक मंत्र बताते हैं उसी का जाप करते रहिये। उसके पश्चात् वह दम्पति चले आये और वैसे ही उसी आकाँक्षा में काल बिताने लगे। संयोगवश सम्वत १९७९ वि० में स्वामी जी ने अपने इस भौतिक कलेवर का त्याग किया और सम्वत १९८० में अम्बा श्री जुगुल सहचरी के गर्भ से वही ब्रह्मवेत्ता स्वामी जी पुत्र बन कर प्रगट भये, वह बड़े चमत्कारी और प्रतिभाशाली उत्तरोत्तर अपनी कलाओं का विकास करने लगे, और ३ वर्ष की अवस्था होने पर उन्हें अपने सुस्वरूप का बोध होने लगा, संयोग से श्री अयोध्या जी के शृंगारी महात्मा महान रसराज भाव आवेशी श्री लीला विहारी श्री जुगुल सरकार चारों भइयन के दुलहा भेष के भोक्ता श्री किशोरी जी के नित अंगजा विभूती से प्रादुर्भूत श्री विहौती भवन के महाराज पुजारी श्री रामशंकर शरण जी माणीपुर ग्राम में पधारे (इन दम्पति के श्री गुरुदेव भी आप ही थे) और उस बालक स्वरूप को अवलोकन करते ही इनकी मति विभोर सी हो गई, वह इनको श्री अवध ले आये और विधवत प्रतिष्ठा करके इनका शृंगार श्री किशोरी जी का करने

लगे, अब जो २ सुख व अनुभव उनसे श्री विहौती भवन के श्री महाराज जी के हुआ वह तो अवर्णीय है इसको वही जानें, सहस्त्रों नर नारी भक्त भावुकों के प्रति जैसे २ भाव प्रगट किये और उन्हें सुख दिया सो कहे कौन, पर यहां तो आवश्यक यह है कि हमें अपने भइया (श्री लक्ष्मीनिधि जी) के सरस हृदय की सराहना करनी है जिन्होंने श्री सिद्ध किशोरी जी के इन पवित्र चरित्रों का चित्रण करके हमारे सामने रक्खा है। यह चरित्र क्या हैं, यह श्री भइया जी के स्नेहात्मक हृदय के उद्गार हैं।

श्री भइया जी को श्री सिद्ध किशोरी जी का साक्षातकार होते ही उस पुरातनी प्रेम और भाव की जाग्रति तत्काल हो गई और वह नित्य नया रंग छाननें लगे, और श्री सिद्धकिशोरी जी ने स्वयं अपने ही कर कमलों से उस अचला-लंगोटी वाले मुनि वेश का राजसी शृंगार राजकुमार की तरह करके और भइया २ कह कर उस दिव्य भाव की स्थापना भी कर दी, और आप भी निरावरण अपने भ्राता श्री लक्ष्मीनिधी जी की तरह ऐश्वर्य माधुर्यमई नई २ लीलाओं के केल विनोद का रसास्वादन करने लगे, जिसे श्री भइया जी ने इस "सिद्धकिशोरी चरितामृत सागर" में स्पष्ट ही किया है, यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि भक्त का हृदय भगवान का खिलौना होता है, उस में जो २ तरंगें उठती हैं वह भगवान के आकर्षणीय और मनोरंजनीय होती हैं, उनका अभिषेक और प्रतिमा प्रभू के उल्लास एवं अहेतुकी कटाक्ष से होती रहती है। प्रेम और भाव क्या तत्व है इसको तो श्री भइया जी ने चरितावली में स्पष्ट करके दिखा ही दिया है। देखिये! भाव शब्द प्रकृति प्रदेश में बाजारू है, अतएव बाजार में बिक्री के लिये आई हुई चीज का ही भाव होता है, जनता में जबतक उस वस्तु का भाव न निकल जाये तब तक माल को न तो धनी बेच सकते हैं और न ही ग्राहक

ले सकें, पुनः भाव के निर्धार होते ही दोनों अपने २ स्वरूपानुरूप कार्य में प्रवृत होजाते हैं, वस्तु पीछे उठाई जावेगी ग्राहक अपना पल्ला पहले पसार देगा! वैसे ही जीव अनादि काल से भगवान के समीप क्यों न खड़ा रहे और खड़ा ही है, पर न तो वह उसका स्पर्श कर सके, और न वे इसको ही अंगीकार कर सकें। यद्यपि ग्राहक की तरह तुर्रा भगवान को ही है, और उससे भी कहीं ज्यादा बेचैनी और फिकर उस जीव को है। भाव का निर्धार करना (निर्ख निकालना) उस बाजार के मुखिया चौधरी का काम है, वह ग्राहक और मालधनी दोनों के मान का नहीं, वैसे ही यहाँ जीव और भगवान दोनों के अतिरिक्त तीसरे श्री आचार्य जब तक नहीं मिलते, तब तक भाव का निरधार कैसे होवे, जिस समय आचार्य के द्वारा भाव का निराधार हो जाता है तब भाव के अनुसार यह (जीव) भोग बन जाता है और प्रिय इसे भोगता है, भाव से खरीदी हुई वस्तु निस्संकोच भोग में आती है, जब से पलड़े में आई और गठरी में बंधी उसी समय से खरीदार का अहम् भाव (ममत्व) उसी में बढ़ने लगता है, भगवान भी इसे अपनी वस्तु मानकर क्या २ नहीं करते हैं, किन्तु यह जीव भोग होकर उनकी खरीदी हुई वस्तु बन कर भी बन्सी से बेधी हुई जीवित मछली की तरह पुनः जल में एवं संसार रूपी समुद्र में कूद जाता है इसी से उनमें गोते लगाता उछलता डूबता क्या २ नहीं सहता, भेदन हो जाने के कारण उस जल में भी नहीं रह करता, अतएव संगति तो तभी है कि भाव भया और भोक्ता के हाथ बिका और भोग बन कर समस्त भोग पदार्थों की तरह भोग के स्वरूप में सभी आवृत्तियों को पार करके प्राप्त भया, श्री भइया लक्ष्मीनिधी जी भी इसी प्रकार अपनी प्रिय बहिन श्री सिद्ध किशोरी जी को साक्षात आचार्य स्वरूपा पाकर उनके

द्वारा भाव का निर्धार होने पर बहनोई (श्री राम जी) के हाथ बिक ही तो गये ! बस इसी प्रकार "कहाँ तो राज राजेश्वरी स्थान कर्वी (चित्रकूट) की गद्दी का अधिकार और कहाँ वह अनेक सेवक सेवकाओं से सेवित सत्कार वह तो सब हो गया एक प्रिय पर निस्सार ! कितनी २ विपत्तियां आईं, क्या२ कष्ट आये, पर वह सब के सब श्री सिद्धकिशोरी (परम आचार्य) की कृपा कटाक्ष द्वारा पर्वत की राई एवं सूली की जगह कांटा होते गये, अंत में आज अकिञ्चन भाव को प्राप्त हो; अपने प्रिय के गुण गान में विभोर हो अलाप कर रहे हैं।

प्रिय नें भइया जी को प्रथम तो अज्ञात रूप में पान्चाल देश (पंजाब) से आर्कषण करके बिन्ध प्रदेश श्री चित्रकूट में लाके रक्खा, वहाँ से प्रिय बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी द्वारा भाव निर्धार होते ही नित-विहार की निज-निकुन्ज सुप्रसिद्ध श्री जानकी घाट श्री रामवल्लभा कुन्ज अपनी राजधानी श्री अयोध्याजी में पहुँच गये, यहाँ के अध्यक्ष वेद वेदाङ्ग विद सकल शास्त्र पारंगत श्री १०८ श्री स्वामी रामपदार्थदास जी (वेदान्ती) महाराज हैं। जो अपने दिव्य सुशील गुणों से सभी को विमोहित कर लेते हैं, क्या करें प्रसंग आजाने पर लेखनी मानती नहीं। श्री वेदान्ती जी महाराज वर्तमान काल में सन्त शिरोमणि हैं, जिनकी सहन शीलता, धैर्य, गम्भीरता और मिति भाषता माधुर्य की खानि हैं, यह महाराज जी श्री भइया जी को इतने लालन पालन और गौरव के साथ आश्रय दिये हैं आप के लिये जथा नामः तथा गुणः, ठीक जैसे बहिन के घर में भइया बड़े मान से रहता है वैसे ही आप अपनी बहिन की इस कुन्ज में सुख विलास कर रहे हैं, क्यों न हो। आखिर तो है भी श्री रामवल्लभा कुन्ज, और फिर स्वयं श्री वेदान्ती जी महाराज के इतने कृतज्ञ हैं कि सिद्ध गुरु-शिष्य का भाव होते

हुये भी स्नेहवसात कहीं अधिक से अधिक अन्तः करण में जगह दे रक्खी है। "प्रेम"

प्रायः प्रेम की परिभाषा सभी प्रेमीजन कुछ और ही करते हैं, वास्तव में वैसी है भी, परन्तु मेरा तो तोतरी वाणी का विनोद है जरा इसे भी सुनिये। प्रेम अधिकांश प्रेमी का स्वरूप है, और पुनः वह रस रूप है, जब भोक्ता की भोग वस्तु पर हाव भाव, चाव, उमाव, अभिलाष, उल्लास एवं परियास होती है उसी को प्रेम कहते हैं, सो यह चीज़ तो भइया रामगोपाल दासजी के ऊपर उनके प्रिय बहनोई श्री चक्रवर्ती-कुमार राघवेन्द्र-यार की भलि भाँति प्रतीत होती है, क्यों न हों, सार बहनोई का दिव्य सम्बन्ध ही तो ठहरा !

अन्त में हम अपने भइया जी को अंकमाल देकर अपनी बड़ी बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी की सेवा में इस लेख को समर्पित करते हैं। हमने उन्माद वश यदि कुछ अशिष्टता इस में करदी हो, तो हमारी इस भूल को क्षमा करेंगी। भइया जी के विषय में जो कुछ लिखा है, सो तो आपको भी स्वीकार होगा ही। यह हमारे श्री भइया ही हैं, इसलिये भइया तो सभी के एक हैं, जैसे भइया पर आपका प्यार वैसे ही हम सभी बहिनों का भइया पर दुलार ! श्री सिद्धकिशोरी बहिन जी की जय, प्यारे भइया जी की जै। इति शुभम्। पं० मैथिली शरण,

रसिकाधिराज श्री युगुल पादपंकज चंचरीक पूज्य श्री राम किशोर शरण जी महाराज, श्री हनुमत निवासी श्री अयोध्या का

हृद्भाव

पाठको ! यह जो लेख आप सब के कर कमल में प्राप्त है इस में एक उत्तम ब्राह्मण कुल बालक अति सुन्दर उत्तम २ लक्षणों से लांछित बालक अवस्था ही से जिनमें बोल चाल

से अति चमत्कार का लक्षण पाया जाता था उनकी अवस्था जब सात आठ वर्ष की हुई, तब उनका श्री राजकिशोरी जी का श्रृंगार होकर झांकी होने लगी, अब उनके कहन सुनन में अद्भुत २ चरित्रों के प्रकाश होने लगे जो कि देखने सुनने वालों को आनन्द समुद्र में निमग्न कर देते थे, उन चरित्रों में जो कुछ इस जीवनी में वर्णन हैं वह आप पढ़कर आनन्द को प्राप्त तो होंगे ही, अब उन चरित्रों में विश्वास मानकर श्रद्धा करनी चाहिये, क्योंकि विश्वास ही फल दायक होता है। काष्ट पाषाण में ईश्वर देखने में नहीं आते हैं परन्तु जिनको विश्वास है वे पाषाण से भी ईश्वर प्रगट करलिये हैं, अतएव इनमें श्रद्धा विश्वास होना चाहिये, तर्क वितर्क न करनी चाहिये, तर्क वितर्क में तो सिवाय हानि छोड़ कर लाभ है ही नहीं। धन्यवाद भइया श्री रामगोपाल दास जी को है, कि जो अतिशय परिश्रम करके इसको प्रगट किया है। क्यों न हो, प्रेम ऐसा एक अनूपम रत्न ही है, "प्रेम बिना सब फीको ऐसे ! लवन बिन बहु विंजन जैसे" !! रामकिशोर शरण—

मान्यवर सद्शास्त्र विशारद पूज्य पं० श्री अखिलेश्वरदास जी महाराज (व्यास) श्री राम घाट श्री अयोध्या जी की

शुभ सम्मति

श्री लीला स्वरूपों के परमप्रिय प्रेमी भइया श्री रामगोपालदास जी अधिकारी स्थान कर्वी (चित्रकूट) जो कि इस समय सात आठ वर्षों से श्री जानकीघाट श्रीमान् पूज्य श्री पण्डित जी महाराज के शुभ स्थान में निवास कर श्री अवध वास कर रहे हैं, अपने इष्टदेव श्री सीताराम जी में इनकी भावना बहिन बहनोई की है । श्री बिहौती समाज श्री अयोध्या जी के एक अनुपम चमत्कारी लीला स्वरूप श्री सिद्ध किशोरी जी की गुण

गाथा का कुछ परिचय उनकी शुभ जीवनी में लिखकर जन्ता के समक्ष उपस्थित करते हुए श्री भैया जी ने एक महान आदरणीय कार्य किया है, इसको आदि से अन्त तक पढ़ सुन मुझे तो महान हर्ष एवं आनन्द प्राप्त हुआ है। श्री सिद्धकिशोरी जी के अलौकिक चरित्रों के अतिरिक्त इस जीवनी में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य एवं कर्मयोग का सजीव चित्रण करते हुए प्रेम का पूर्ण प्रवाह भी प्रवाहित किया गया है, भइया जी की लेखन शैली भी विचित्र भावपूर्ण एवं बड़ी रंगीली और रसीली है। यद्यपि आपकी पंजाब जन्मभूमि होने के कारण उर्दू, अंग्रेजी एवं फारसी की ही विशेषज्ञता है, तथापि आप की हिन्दी भी अत्यन्त मार्मिक हुई है। यह भी श्री सिद्धकिशोरी जी का प्रसाद एवं अनूपम अनुकम्पा है। लीला स्वरूपों में जैसा भइया जी का शुद्ध प्रेम एवं दृढ़ भावना है वैसा ही इनको श्री जुगुल सरकार ने कोमल एवं भावुक हृदय भी दिया है, आप को बालकाल से ही लीला स्वरूपों के सम्पर्क एवं सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त है।

मैं अपना दुर्भाग्य समझता हूँ कि श्री सिद्धकिशोरी जी के लीला काल में मैं और कहीं था, जिस से उनकी लीलाओं का मैं अनुभव न कर सका, परन्तु उनके प्रतिनिधि स्वरूप श्री किशोरी जी (श्री पांच सरकार) की लीला सुखों का अनुभव किया, हमको अपूर्व अनिवर्चनीय आनन्दानुभव भया। श्री पांच सरकार श्री किशोरी जी की स्वरूपाई के समय जब २ श्री सिद्ध-किशोरी जी की उदारता; दयालुता एवं सुशीलता आदि गुणों की चर्चा चलती तो मेरा हृदय व्याकुल हो जाता था कि हाय मैं उनका शुभ दर्शन न कर सका, तब उस समय अन्तरयामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी मेरी हार्दिक व्याकुलता को जानकर अपनी प्रतिनिधि श्री किशोरी जी के द्वारा ही अपने शुभ दर्शनों का

अलभ्य लाभ प्रदान कर मेरे अशांत हृदय को शान्त एवं सुखी कर दिया करती थीं। मैंने उनके इस प्रकार के अन्तरयामी पने के अपूर्व चमत्कारों का कई वार अनुभव किया है। वास्तव में श्री सिद्धकिशोरी जी इस कलिकाल के लीला स्वरूपों में अनुपम रत्न एवं दिव्य विभूती थीं, मैंने उनके वहुत से जिन २ चमत्कारी चरित्रों को प्रेमियों के मुखार विन्दों से कई वार सुना था, श्री लक्ष्मीनिधी भइयाजी ने उन्हीं समस्त चरित्रों का संकलन इस ग्रन्थ में करके प्रेमी भक्तों को रसास्वादन कराया है। इसमें संदेह नहीं कि यह जीवनी भावुक प्रेमी जनों के सूखे हुए हृदयों को प्रेम के जल से सींच कर तुरन्त हरा भरा कर देने वाली है तथा सर्व प्रकार से समस्त साधारण तथा असाधारण भक्तों के लिए भी उपयोगी है, नित्य प्रति इसके अध्यन करने से प्रेमियों को अपूर्व सुख एवं लाभ होगा। मैं तो सादर इस जीवनी का स्वागत करता हुआ लेखक श्री भइया जी को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने वड़े परिश्रम से ऐसे शुभ कार्य का सम्पादन करके प्रेमी समाज का उपकार किया है, कारण कि ऐसे २ अवतारी महापुरुषों की जीवनी भी कलिमल ग्रसित जीवों के लिये संजीवनी हुआ करती है। पं० अखिलेश्वरदास

रूप रसमाते सखा श्री अवधेश राजकुमार पूज्य श्री धर्म भगवान जी महाराज श्री सद्गुरु सदन, श्री अयोध्याजी के

दो शब्द

श्री चित्रकूटान्तरगत स्थान कर्वी के अधिकारी श्री रामगोपल दास जी चेला श्री स्वामी १०८ महंत श्री जयदेवदास जी महाराज से मैं लगभग ३१ वर्षों से पूर्ण परिचित हूँ, आप वाल्यावस्था से ही श्री लीला स्वरूपों के अनन्य प्रेमी हैं तथा उसी प्रकार अद्वितीय गुरु भक्त भी हैं। आपने अच्छे २ महान

पुरुषों के द्वारा प्रेम, भक्ति, एवं लीला स्वरूपों की सेवा के रहस्यों का भली भांति अध्ययन किया है, इसलिये लीला स्वरूपों में सच्ची भावना तथा पूर्ण श्रद्धा के कारण ही आपको आज तक उनकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त है, श्री युगुल सरकार प्रिया प्रीतम में पहले तो आपकी दास भावना थी, परन्तु इधर १६ १७ वर्ष हुये कि श्री विहौती भवन के एक अपूर्व अनुपम चमत्कारी बालक (श्री सिद्ध किशोरी जी) के लीला स्वरुप ने हमारे ही सामने श्री अधिकारी जी का श्री राजकुमार का शृंगार अपने ही कर कमलों द्वारा करते हुये इनको श्री मिथिलेश-राजकुमार (श्री भइया लक्ष्मीनिधी) के पद से विभूषित कर इनसे अपना तो बहिन-भैया का नाता जोड़ा एवं श्री रामजी से सार-बहनोई का नाता दृढ़ करा दिया। तब से आज दिन तक भइया जी अपने इष्ट देव श्री सीताराम जी के पादपंकजों में अनन्य लुब्ध मधुकरवत् परमानुरागी बन उसी भावनानुसार आनन्द एवं सुख लेते हुये मग्न रहा करते हैं।

इस समय श्री भइया जी ने उन्हीं श्री सिद्ध किशोरी जी के जीवन चरित्रों का भली भांति संग्रह कर इनको प्रकाशित कराने की इच्छा से एक अनोखे ढंग से ग्रंथ लिखा है इसकी भाषा में भी कोमलता-मृदुलता-एवं सौंदर्य की भावना ओत प्रोत है, सो ठीक है, ऐसा होना भी उचित ही है, कारण कि इस जीवनी में श्री सिद्ध किशोरी जी का कथानक है तो भाषा में भावों के अनुकूल कोमलता तथा माधुर्य की झलक भी क्यों न हो? मेरा तो अनुमान है कि साक्षात श्री जनक नन्दिनी जी श्री लीला स्वरूप के भेष में प्रेमी जनों को कृतार्थ करने के निमित्त इस संसार में पधारीं और फिर अपने निज धाम को अपनी ही इच्छानुसार चली भी गईं। यह कहना भी कुछ अनुचित न होगा कि ऐसे २ चमत्कारी लीला स्वरुप यदि हमारे लीला-

नुकरण समाज में अवतीर्ण होने लगें तब तो भारत का पुनरोद्धार हो जाय भवसिन्धु में डूबती हुई जनता का बेड़ा पार हो जाय। मैं इस जीवनी के लेखक (भैया श्री लक्ष्मीनिधी जी) को किन शब्दों में धन्यवाद दूँ जिनके अत्यन्त परिश्रम द्वारा इस जीवनी का प्राकट्य हुआ है, । इस घोर पाप मय कलियुग में यह जीवनी सर्व साधारण जनता के लिये हितकर एवं सर्व कामनाओं को भी पूर्ण करने वाली है। मैं अपनी शुभ कामनाओं सहित इस जीवनी का सादर स्वागत करता हूँ, पाठकों से भी अनुरोध करूंगा कि वह भी इसका मनन करते हुये अपने जीवन को सफल बनावें। इति शुभम दः धर्मभगवान

निकुंज सुख भोक्ता शृंगार भाव भूषित श्री विदेहजाशरण जी महाराज ऋण मोचन घाट, श्री अयोध्या जी का

मानस स्रोत

"यहि तन से तल्लीन ह्वै प्रीति प्रतीत विशेषि।
बहिन चरित भइया लिख्यो, निज नैनन कुछ देखि"

श्री जनक लली रघुलाल गुण, लक्ष्मीनिधी कृत नेम।
"प्रेम मोद" गावत सुनत, पावहिं परतम क्षेम॥

जीवनी नहीं है संजीवनी है जीवन हित, पूरित सुधा से सिद्धश्रीकिशोरी यस रसते। माधुरी है मोद मय मधुरता की सीम सुभग, पावन परत्व गुण गुंफित क्या लसते॥ श्रवण मननही है सेवन अनुपान बिन, तोष पोष भावन के भेद भरे ससते। परतम सुप्रेम ही अमरता है रस राज, प्रगटयो सु भइया के सुभाव ही सुबसते॥

यह कहते हुये मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि श्री भइया जी ने जो यह श्री सिद्ध किशोरी जी का माधुर्य लीलामृतमय चरित्र लिखा है। यह बहुत ही सुन्दर तथा लालित्य मय है और सर्व साधारण को भाव देश में प्रवेश करने के लिये आचार्यवत् पथ

प्रदर्शक एवं साक्षात लीला विहारी श्री प्रीया प्रीतम जू के नित्य विहार में समावेशित कर देने वाला है। जो २ चरितावलियाँ आपने लिखी हैं सभी अक्षरशः सत्य हैं, जिन लोगों ने इन लीलाओं का अवलोकन किया है उनमें से कई एक पार्षद श्री किशोरी जी के पास पहुंच चुके हैं। तथा जो कुछ लोग वर्तमान हैं वह इन्हीं सब चरित्रों में अनुक्षण निमग्न रहते हुये अवशेष जीवन समाप्ति का बाट जोह रहे हैं। अतः हम सब का परम कर्तव्य है कि इस चरितावली का पठन पाठन तथा मनन कर श्री किशोरी जी के दिव्य धाम को प्राप्त करते हुये श्री भइया जी के परिश्रम को भी सफल करके अपने अपने जीवन को भी सफल करें। —दः विदेहजा शरण

रसिक शिरोमणि रासरस आवेशी श्री राजकिशोरीवर शरण जी (परमानन्द) श्री जानकी घाट; श्री अयोध्या जी की—

❀ अनुमति ❀

ये परम पूर्व पुण्य का फल है जो श्री विहौती भवन के लीला स्वरूप श्री सिद्ध किशोरी जी का शुभ जीवन चरित्र प्रकाशित हो आप सब भावकों के सन्मुख उपस्थित होने वाला है। श्री सिद्ध किशोरी जी भावक, लीला स्वरूपों में अग्रगण्य और सब में एक उज्ज्वल अनुपम रत्न थीं। आपने अपने दर्शनों एवं अद्भुत चरित्रों के अमृत रसास्वादन द्वारा प्रेमी भक्तों का जितना भी हित तथा उपकार किया है वह यहाँ के किसी लीला प्रेमी जनों से छिपा नहीं है। आपके समस्त चरित्र चमत्कारी तथा परम पावन होने के कारण प्रत्येक प्रेमी समाज के लिये हितकर हुये हैं। लेखक महोदय, श्री भइया लक्ष्मीनिधि जी ने बड़े परिश्रम से चरित्रों को खोज खोज कर प्रत्येक चरित्र कुसुमों का सर्व

मन्थन भली भाँति किया है। साथ ही साथ इनकी लेखन शैली भी भाव पूर्ण बड़ी ही सुन्दर एवं रोचक भी है। हमें पूर्ण आशा है कि समस्त भावुक प्रेमीं जन इस पुनीत चरितामृत का पान कर अपने जीवन को सफल बनाते हुये प्रिय लेखक जी के श्रम को भी सफल करेंगे। कवित्त—

श्री सिद्धकिशोरी के चरित अन्हवैया भैया, सिया श्याम रस गैया प्रीति रीति उमगैया हैं। प्रिया प्रीतम सुहैया सीया गुण गण चुनैया, श्री कृपा पथ बतैया सुजन प्राण सुख दैया हैं। प्रेम परितीत बहिनोई में दिखैया नैया, सुचिरत सरसैया यही लक्ष्मीनिधि भैया हैं। सिया रति सुनैया लीला स्वरूप रंग रंगैया, बड़ भागी कहैया यहि लाहु के लेवैया हैं॥ —राजकिशोरीवर शरण

श्री हरि गुरू संत अनुरागी राय साहब पं० रुद्रदत्त सिंह जी
परसनल एसिस्टेन्ट श्री अयोध्या राज की—

❀ राय ❀

प्रिय सज्जनो! यह जीवनी जो महानुभाव संत शिरोमणि भक्तानुरागी सिया पद पराग मधुकर श्री रामगोपाल दास जी ने, जो अधिकारी स्थान कर्वी (चित्रकूट) के हैं श्री पतित पावन जन मन भावन करुणा सागरी क्षमा भंडार "श्री सिद्धकिशोरी जी" की रोचक प्रेम मयी सरल भाषा में लिखी है, वह केवल जीवनी ही नहीं है वह संजीवनी है, जो लेखक ने बड़े परिश्रम से ढूँढ़ २ कर एकत्रित की है, जो इस कलिकाल के भयंकर सर्प से डसे हुये मृत प्राय जनों के लिये प्राणदा बूटी है, उस संजीवनी बूटी से जिसको अनन्त बलशाली श्री मारुतनन्दन जी ने कितने परिश्रम से लाकर केवल श्री लखनलाल जी की (जो स्वयं शेषावतार लीलाधारी हैं जिनके एक फण पर यह सारा ब्रह्माण्ड एक

रज के कण के समान विराजमान है) मूर्छा विगत करके जीवित किया था। यद्यपि यह लीला मात्र ही था; परन्तु इस जीवन बूटी के रसास्वादन से कितने अधम कलिमल ग्रसित काम क्रोधादि के कठिन भारों से दवे हुये जो इस जगत में जीवित रहते हुये भी मृतक सम हैं, प्राण-धन पाकर इस संसार से कलिराज को अंगूठा दिखा भवसागर से विना प्रयास तर गये और तरेंगे।

श्री सिद्धकिशोरी जी का कुछ परिचय लेखक जी ने इस पुस्तक के अग्र भाग में भी लिखा है, उनकी अगम महिमा को तथा अनन्त लीलाओं एवं चरित्रों को यह पामर तुच्छ जीव कैसे और क्या कह सकता है। जो लीलायें इस कलिकाल में प्रगट होकर थोड़े ही दिनों में रसिक जनों के विनोदार्थ एवं प्रेमी जनों के हितार्थ दीन दुखिया अधमों के कल्याणार्थ दिखाईं, उनका कोई सहस्र जिह्वा से कण मात्र भी वर्णन करने का साहस नहीं कर सकता, केवल उनके पद्म पद्पराग का ध्यान ही इस जीवन के लिये अमूल्य रत्न है। श्री रामगोपाल दास जी आप की भावना धन्य है और धन्य है आपका श्री सिद्ध किशोरी जी के कमल पद में अकथनीय दृढ़ अनुराग! इस पामर को भी अपने स्वर्गीय भ्राता पं० श्री दुर्गादत्तजी रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर "रसिकराज" की सेवा में रह कर श्री सिद्धकिशोरी जी की लीलाओं को अवलोकन करने का शुभ अवसर बहुधा मिलता था, और उनका कृपा पात्र कहे जाने का भी इस अधम को गौरव था। यह केवल श्री किशोरी जी की ही दयावाणी की एक किंचितमात्र झलक नहीं थी तो क्या थी? परन्तु इस पर भी यह अधम उनकी अपार दया क्षमा तथा अनुकंपा को इस जगद्-व्याधि के चक्करों में पड़कर भूल गया था, भइया श्री लक्ष्मीनिधि जी की कृपा ने ही मुझ भूले हुये को सद्मार्ग पुनः दिखा दिया।

॥ इति शुभम् ॥ पं० रुद्रदत्त सिंह



उपकार एवं धन्यवाद

सज्जनो ! इस संसार में धनी, सुखी, रूपवान एवं विद्वान अनेकों पड़े हैं, परन्तु धन्यवाद का पात्र तो वही बड़भागी ही हो सकता है जिसकी वृत्ति प्रभु चरणविन्दों में लगी हो, तथा पारमार्थिक कार्यों में भी जिसकी पूर्ण श्रद्धा एवं लगन हो पाठको ! धन को धर्म में लगाने का स्वप्न देखने वाले तो संसार में भले ही बहुत से पुरुष मिलेंगे, परन्तु धन को धर्म में लगाने वाले कोई विरले माई के लाल एवं भगवत कृपा पात्र ही होंगे। वर्तमान समय में जब कि सब चीजें महंगी हो रही हैं, इस जीवनी का छपना कठिन था, परन्तु सब से हर्ष की बात तो यह है कि पूज्यपाद स्वामी श्री सत्याशरण जी महाराज ने इस शुभ जीवनी को सदभावना से अपनाने एवं इसको छपवाने के लिए जितना उत्साह दिखलाया है, उसके लिए मैं आप का ऋणी हूँ आप तो सर्वदा इस कार्य की सफलता के लिये अग्रसर रहे हैं। सर्व प्रथय १२५) रुपया आर्थिक सहायता प्रदान करते हुए आपने अपनी उदारता तथा त्याग का भी पूर्ण परिचय दिया है। आप की सहज सूचना पाते ही ५१) श्री रामसरन जी खन्डेलवाल बुकसेलर चौक, कानपुर ने, ११) इनके सुपुत्र श्री कैलाशनाथ जी, ११) इनके मित्र माधोप्रसाद जी, ५१) इनके बहनोई श्री दीनानाथ जी, ५१) इनके पिता श्री गोपीनाथजी, द्वारा कौशलपुरी मंदिर के श्री हनुमान जी, ने श्री सिद्धकिशोरी जी की जीवनी छपवाने के निमित्त सेवा की है, आप का हार्दिक उत्साह प्रेम तथा परिश्रम भी सराहनीय है। १५१) श्री वैदेहीवल्लभशरण जी गांधीनगर कानपुर, १२५) श्री राधारमनलाल जी अगरवाल अमीनाबाद लखनऊ, १५१) श्री महाराजा माता जी काशी रामनगर, १५१) पुजारी श्री रामशंकरशरण जी विहौती भवन श्री

अयोध्या जी, १०१) सेठ हुलासीलाल रामदयाल मार्फत श्री ललिताचरण जी जनरलगंज कानपुर, १०१) सेठ बद्रीदास सीताराम जी मोढ़ाटोली कानपुर मार्फत श्री श्रीराम जी; १०१) डाक्टर साहेब पं० श्री बनवारीलाल जी कानपुर, १०१) अधिकारी मौनी श्री हरिसेवकदास जी देवराही कुटी देवरिया (और भी कुछ मौनी जी ने देने का वचन दिया है) आप सब की आर्थिक सेवा हृदय का प्रेम एवं उत्साह तो देख सुन कर मुझे भारी प्रसन्नता हुई। आप सब प्रेमियों का सहयोग भी प्रसंशा से परे नहीं है। ५१) ठाकुर सियाविहारीशरण जी सब्जीमंडी कानपुर, ५१) अधिकारी रामगोपालदास भइया जी), ५१) श्रीमती श्री चारूशीलाजी बी० ए० मुजफ्फरपुर, ३१) श्री मोहनलाल जी हलवाई दूकानदार श्री अयोध्या जी, २५) श्री मती श्री सियादेईजी नौघड़ा कानपुर, २५) श्री रुद्रदत्त सिंहजी राज सदन अयोध्या, २५) रामलालशरण जी खोवाबाजार कानपुर, २१) श्री रामकुमार शरण जी, नौघड़ा कानपुर। २१) श्री कमला शरण जी, सबजीमंडी कानपुर। २१) श्री डलाराम जी, सबजी मंडी कानपुर। २१) श्री मंगलीप्रसाद किशोरीशरण जी कलक्टर गंज कानपुर। २१) श्री दरीलालजी लोकमन मुहाल कानपुर १५) श्री रामजी पैन्शनर तारघर कानपुर।

इन सबने भी बड़े उत्साह पूर्वक इसमें भाग लियाहै धन्यवाद !

११) पं० श्री हनुमानदास जी तिवारी प्रयाग। ११) श्री बाबूलाल सियाराम जी (कर्वी वाले) कानपुर। ११) श्रीमती त्रिवेनीदेवी जी नारियल बाजार कानपुर। ११) श्री बनवारीलाल जी त्रिपाठी धेमऊ। ८) श्रीमती सुभगा देवी जी कानपुर। ६) श्री आनन्दवन जी वैश्य नौघड़ा कानपुर। ५) श्री मधूवनप्रसाद जी वैश्य नौघड़ा कानपुर। ५) श्री रामकृपाल शरण जी हटिया कानपुर। ५) श्री पुरुषोत्मदास जी रूइया बादशाही नाका

कानपुर, ५) पं० भैयाराम जी मिश्रा वादशाही नाका कानपुर, ५) श्री रामगंगा शरण जी डिप्टी पड़ाव कानपुर। ५) श्री बाबू लाल जी मोढ़ा टोली कानपुर । ११) श्री महादेव प्रसाद जी वैश्य चौक कानपुर। ५) श्री भान प्रकाश जसौरा वाले कानपुर, ७) फुटकर गुप्त सेवा।

इन सब के नाम भी भुलाये नहीं जा सकते, आप सब का सहयोग भी यथा शक्ति बराबर ही रहा, आप खाली नहीं रहे, कहाँ तक कहा जाय, हार्दिक सहानभूति से तो कोई वञ्चित रहा ही नहीं, सब किसी ने खुली जबान से 'श्री सिद्धकिशोरी जी' के चमत्कारी चरित्रों का समर्थन करते हुये इन की प्रशंसा ही की है, तथा इन की जीवनी को भी हृदय से अपनाया है।— पाठको! यह जीवनी जो बिना किसी मूल्य के आप सब के हाथों में पहुँच गई है, यह केवल इन उपरोक्त भक्तजनों की उदारता एवं दानवीरता का ही तो फल है। मैं इस शुभ कार्य सम्पादन के उपलक्ष में धन्यवाद देता हुआ भगवन श्री सीता राम जी महाराज से प्रार्थना करता हूं कि इन समस्त प्रेमीजनों का यह धार्मिक उत्साह सब काल अमर रहे—तथा अपने श्री चरणों की अटल भक्ति के साथ २ एसे सुयोग्य प्रेमीजनों को दीर्घायु प्रधान कर धन्धाम एवं शरीर से भी सुखी रक्खैं।

परम पूज्य स्वामी श्री सत्याशरण जी महाराज एवं पूज्य चरण वेदान्ती श्री राम पदार्थदास जी महाराज के उपकारों को मैं कदापी भूल नहीं सकता, जिन्हों ने मुझे समय २ पर उचित परामर्श देकर इस कार्य क्षेत्र में उत्साह का अंकुर पैदा किया, तथा मेरी थकी हुई चेष्टाओं को शक्ति प्रदान करते रहे हैं। आप मुझ पर परम अनुग्रह करते रहते है, मैं आप के अनेक उपकारों के भार से आप का अधिक आभारी बन गया हूँ। इस लिये

आज मुझे अपने आन्तरिक भावों के प्रगट करने की अभिलाषा उत्पन्न हुई है—श्री वेदान्ती जी महाराज ने इस जीवनी को प्रेम पूर्वक सुना, अति प्रभावित होने के कारण मुझे इस को छपवाने के नमित १०००) रु० भी देने लगे, परन्तु मैंने उन से आर्थिक सहायता न लेकर केवल आशीर्वाद की ही याचना की, जिस से वह कुछ रूष्ट से हो गये ! तब मैंने प्रार्थना की, कि सरकारी छत्र छाया में रहते मेरे राम को ८ वर्ष हो चुके हैं, आप ने मुझे अपना ही अंग मान कर हर प्रकार से मेरा लालन पालन करते हुये अपनी उदारता एवं साधुता का परिचय देकर मुझे स्थानीय समस्त बंधनों से भी मुक्त कर रखा है। केवल भगवद् भजन करने या भगवद् चरित्रों के अवलोकनार्थ ही पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता दे रक्खी है, मैं तो आप की इस प्रकार की कृपा से अधिक बोझीला हो गया हूँ जिससे आप के उन उपकारों का बदला चुकाने में असमर्थ हूँ तब आप मुझे भार से दबे हुये को क्यों अधिक दबाकर ऋणी बना रहे हैं; जीवनी चाहे छपे या न छपे, मैं केवल आशीर्वाद छोड़कर आप से इस आर्थिक सहायता को कदापि स्वीकार नहीं करूँगा ! आप की इस प्रकार की शुभ भावना एवं सनेह को देख सुन कर मैं आप को कोटिशः धन्यवाद देता हूँ ! अन्त में मैं आप का तथा श्री स्वामी सत्याशरणजी महाराज का भी नितान्त ऋणी एवं कृतज्ञ हूँ जिन के आशीर्वादात्मक भावों की सहायता से ही उस अमरात्मा श्री "सिद्धकिशोरी जी" की स्मृति को स्थाई रखने एवं लोकोपकारार्थ इस शुभ जीवनी की स्थापना और पूर्ति हुई है ! क्यों न हो ? संत ही तो संसार को सत्य मार्ग पर चलाने तथा शान्ति और सच्चा सुख भी प्रदान करने वाले संसार वृक्ष के अमर फल होते हैं।

पूज्य श्री स्वामी सत्याशरण जी महाराज (श्री चक्रवर्ती जी)

से भी मेरी अन्तिम प्रार्थना है, कि आप ने इधर ३२ वर्ष से जो कुछ भी मेरे हित और कल्याण के नमित करना कराना था सो तो सब कुछ किया, परन्तु अब आप से मेरी याचना है आप के सामने पल्ला पसार कर केवल यही भिक्षा माँगता हूँ, कि अनन्त श्री सीताराम जी के श्री चरणों की भक्ति प्रदान करते हुये आप भी अपने चरणों से इस सेवक को कभी न्यारा न करेंगे ! मैं आप के प्रति अपनी कृतज्ञता के भाव यथार्थ रूप से प्रगट करने में अपने को असमर्थ समझता हूँ, इस लिये हमारा प्रेमी भगत समाज ही आप की समस्त अनूपम कृपाओं का अनन्त काल तक गुण गान करता रहेगा।

साकेतधाम वासी भक्तराज श्री "रामाँ जी" महाराज का भी मैं अति आभारी हूँ और कोटिशः धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने भक्त रतन पुजारी श्री रामशंकरशरण जी महाराज को प्रगट करके (एक नवीन अनुपम श्री राम विवाह-कलेवा उत्सव का प्रचार करते हुये) श्री राम भक्तों के लिये एक अमोल्य निधि प्रदान करने से भारी उपकार किया है। आप श्री दूल्हा सरकार (नौशा ववुआ) के प्रेमी जनों के निमित्त यह सुदृढ़ नाव वनाकर छोड़ गये हैं, जिस से भवपार करते हुये अपने प्यारे प्रीतम के श्री चरणों तक पहुँच जावें। श्री विहौती समाज के वर्तमान संचालक पुजारी श्री रामशंकर शरण जी महाराज का भी मैं आभारी हूँ, मैं तो इस श्री राम विवाह-कलेवा उत्सव का भी सादर सप्रेम मान सम्मान करता हूँ कि जिसके द्वारा मुझे सर्व प्रथम श्री चित्रकूट में श्री युगुल सरकार श्री सिद्धकिशोरी जी के शुभ दर्शन प्राप्त हुये, फिर श्री अयोध्या जी में भी इनही श्री युगुल सरकार की कृपा तथा आशीर्वाद द्वारा मेरा श्री सीता राम जी महाराज से एक नवीन दिव्य नाता (बहिन-भइया-

और साले-बहनोई) का दृढ़ होकर मैं महान परमानन्द को प्राप्त हुआ।

❀ श्री विवाह उत्सव की बांकी झांकी का शुभ दर्शन ❀

केकि कंठ दुति श्यामल अंगा।
तडित विनिन्दक बसन सुरंगा॥
शरद विमल विधुवदन सुहावन।
नयन नवल राजीव लजावन॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन। शोभा कोटि मनोज लजावन॥
जावक युत पद कमल सुहाये। मुनिमन मधुप रहत जंह छाये॥
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरत बालि रवि दामिन जोती॥
कल किंकिणि कटि सूत्र मनोहर। बाहू विशाल विभूषण सोहर॥
पीत जनेऊ महाछवि देई। कर मुद्रिका चोरि चित लेई॥
सोहत ब्याह साज सब साजे। उर आयत सब भूषण राजे॥
पीत उपरणा कांखा सोती। दुहुं आचरण लगे मणि मोती॥
नयन कमल कल कुंडल काना। बदन सकल सौंदर्य निधाना॥
सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक शुचि रुचिर निवासा॥
सोहत मौर मनोहर माथे। मंगल मय मुक्ता मणि गाँथे॥

निगम नीति कुल रीति करि अर्घ पांवड़े देत।
वधुन सहित सुत परिछि सब चलीं लिवाय निकेत॥

मैं अपने सुपरिचित भक्तवर श्री रामसरन जी खण्डेलवाल एवं उनके पिता भक्तराज श्री गोपीनाथ जी का नाम भी कदापि भूल नहीं सकता, जो कि भगवान श्री सीताराम जी के अनन्य उपासक एवं कट्टर प्रेमी हैं। आप ने श्री सिद्धकिशोरी जी की इस जीवनी को आदि से अन्त तक आदर पूर्वक सुनकर अपने प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। इस जीवनी के छपवाने में भी आपकी सहायता एवं परिश्रम सराहनीय है। आप दोनों की

धार्मिक एवं परमार्थिक कार्यों में पूरी श्रद्धा रहती है प्रभु कृपा से आप के घर में कुछ कमी नहीं है धन, धाम एवं संतान से भी आप परिपूर्ण हैं । कानपुर (कौशलपुरी) में आप ने अपना निजी एक बहु मूल्य मकान भी बनवाया है। आपके कुटुम्ब के सभी लोग वैष्णव प्रभु प्रेमी एवं समस्त सात्विक गुण सम्पन्न हैं। श्री रामसरन जी के लिये यह कहते हुए मुझे परम हर्ष होता है। कि आप के पिता जी तो पक्के धर्म निष्ठ गुरूभक्त एवं भगवत प्रेमी भी हैं। उनके जीवन का अधिक समय सत्संग, प्रभु स्मरण तथा भगवत भागवत् सेवा एवं श्री अयोध्या जी के दर्शनार्थ ही व्यतीत होता है। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि ऐसे प्रेमी सज्जनो को अपने चरणों की भक्ति के साथ साथ धार्मिक भाव तथा दीर्घ आयु भी प्रदान करें।

संशोधक महोदय पंडित भैयाराम जी मिश्र एम. ए., एल. एल. बी.; अध्यापक श्री गुरु नारायण खत्री कालेज कानपुर, से मैं लगभग तीस वर्ष से पूर्ण परिचित हूं। आपके सम्बन्ध में मेरी तो कुछ विशेष लिखने की इच्छा थी, किन्तु आप को रुचिकर नहीं हुआ। इस लिये मैं केवल इतना तो अवश्य लिखूँगा कि आप श्री अयोध्या जी श्री सद्गुरुसदन निवासी श्री साकेतवासी पूज्य श्री रामवल्लभाशरण जी महाराज के अनन्य कृपा पात्र (शिष्य) हैं। आप की कितनी अनूठी गुरु भक्ति है। आपका कितना भावुक एवं प्रेमी हृदय है, आप की भगवद्—भक्ति की भावना कितनी प्रबल है मैं इसको कहाँ तक लिखूँ । गृहस्थ आश्रम का पालन करते हुये भी इतना श्रद्धालु, इतनी उच्च कोटिका गुरु भक्त एवं प्रेमी भगवत् भक्त होना क्या कोई साधारण बात है। यह तभी हो सकता है जब कि श्री गुरुदेव की तथा भगवत कृपा होती है। आपका त्याग

परिश्रम एवं शील स्नेह युक्त धार्मिक स्वभाव तो इस बात का सूचक है कि आपने विद्या का परम लाभ इसी जीवन में प्राप्त कर लिया। अहा! आपका कितना सुन्दर दिव्य जीवन है इसे तो देख सुनकर मुझे भारी प्रसन्नता होती है। इस शुभ जीवनी के संशोधन कार्य में आप ने अपने बहु मूल्य समय की आहुती देते हुये जो मुझे सहायता दी है उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ,

इसके अतिरिक्त इस महा महिमा मयी जीवनी के लिखने में जिन २ महानुभावों एवं सज्जन पुरुषों से मुझे श्री सिद्धकिशोरी जी के चरित्रों की प्राप्ति हुई है उनका भी मैं हृदय से परमानुग्रह और उपकार मानता हूँ।

श्री प्रेम रसामृत मूर्ति कृपामय श्री युगल सरकार के चरणा-विन्द मकरन्द की कृपा मयी सुमधुर रसधारा सदैव बहती हुई सरस हृदयों में अधिकार अनुरूप सर, सरिता, सागरादि का अनूप रूप धारण करके हम जैसे माया दग्ध अधम कंगाल जीवों को भी रसास्वाद रूप सदावर्त, से सदा सन्तुष्ट करती रहे, अनन्त श्री सीताराम जी महाराज से मेरी यही हार्दिक प्रार्थना है।

भइया जी (लेखक)



श्रीमते रामानन्दा-
-चार्याय नमः

श्री सद्गुरु चरण
कमलेभ्यो नमः

श्री
सीतारामचन्द्राभ्यां नमः

श्री सिद्ध किशोरीयै नमः

श्री हनुमते नमः



❀ श्री सिद्ध किशोरी चरितामृत सागर ❀

(श्री सिद्ध किशोरी जी का जीवन चरित्र)

"बहु विधि सुमनों से संचित मधु किया-इसे अपना लेना
हंस रूप गुण पय पीकर-औगुण नीर बहा देना"

प्रिय सज्जनो ! इस असार संसार में कभी ऐसा भी आपत विपत का समय आता है जब कि मनुष्य का चित्त भवसागर की तरल तरंगों से टकराकर एवं संसार की विषम वेदनाओं से ऊबकर चारों तरफ से हताश हो जाता है, और उनके सभी साधन, सहायक, तथा प्रयोग विफल होकर समस्त शक्तियाँ भी कुंठित हो जाती हैं अर्थात् जीव जब अपनी शक्ति से निराश होकर भटकते-भटकते थक जाता है तब उसके मन में किसी सार वस्तु के समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है और उसके समझने के लिये वह लालायित होता है। उस समय उसको प्रभू शक्ति प्रदान करते हुये यह प्रेरणा करते हैं कि साहस मत छोड़ो धीरज को धारण करो एवं उत्साह से काम लो तब "वह निर्बल के

बल श्री राम" की शक्ति को पाकर उस अदृश्य शक्ति की शरण लेने के, एवं सहायता प्राप्त करने के निमित्त छट पटाता है, उस को संसारी वस्तुयें प्रिय नहीं लगतीं, उस का मन भी चंचल चिंतित एवं व्याकुल रहता है रात दिन उसी उधेड़ बुन में लगे रहने और सोच विचार करने के बाद उसका हृदय सत्य-सनातन सर्वेश्वर भगवान की तरफ झुकता है, और वह अपनी आर्तनाद द्वारा भगवान को पुकारने भी लगता है। ऐसी आर्तनाद का समय समय पर प्रति फल यह प्राप्त होता है कि उसका परलोक एवं परमेश्वर में श्रद्धा एवं विश्वास उत्पन्न होने लगता है जहाँ अटूट श्रद्धा तथा अटल विश्वास हुआ तबतो एक जबरदस्त तूफान उसके हृदय में लहरें मारने लगता है और वह उस की खोज करने को चल देता है।

बहुत लोगों का कथन है कि उसका पूरा-पूरा पता किसी को नहीं मिला और जिन को मिला भी वह लौट कर वापस नहीं आये परन्तु भगवान के भावुक अनुभवी संतों एवं भक्तों का कथन है कि उसका पता पाकर दिव्यानन्द की प्राप्ति होने पर इस मृत्यु लोकमें वापस आने का किसी का भी जी नहीं चाहता। इस सृष्टि के आरम्भ काल से आज तक न जाने कितने ही तत्व द्रष्टा भगवान एवं उनके धाम की खोज में चले, कितने तो तलाश करते करते वहाँ तक पहुँच गये कितने बीच में ही अटक गये, कितने कष्ट देखकर हिम्मत हार गये उनके हौसले पस्त हो गये अर्थात् उत्साह भंग हो गया इस लिये भाग खड़े हुये और न मालूम कितने भावुक भक्त जन अब भी उस प्रभु के एवं उन के दिव्य धाम की खोज में व्यग्र हैं

❀ रंगीली झाँकी ❀

अच्छा तो जरा श्री भगवान एवं उनके दिव्य धाम की रंगीली झाँकी का अवलोकन तो करलें देखिये:—

अत्यन्त मधुर एवं ठण्डे प्रकाश की चाँदनी छिटक रही है। इस सलोने तेज में श्री सरकार की मधुर मुसकान की छटा अलग ही छा रही है। सरकार के सिर पर मुकुट है मुकुट में जटित अमूल्य रत्नमणी मोतियों का रंग बिरंगा प्रकाश अपना अलग ही ज्योति मण्डल बना रहा है, काले काले घुघरारे महीन और चिकने केश पाश कपोलों पर लटक कर भक्तजनों के नेत्र एवं मन को नाग पाश में बाँध रहे हैं अनन्त एवं विस्तृत ललाट पर केसर की खौर एवं तिलक ऐसे जान पड़ते हैं मानों चन्द्र मण्डल पर मंगल और वृहस्पति दोनों का संयोग हो गया हो, आप का मुखड़ा क्या है मानों समस्त सुन्दरता का समुद्र है, अनुग्रह की वर्षा करती हुई भौंहें, प्रेमामृत बिखेरते हुये रतनारे विशाल ललित लोचन, नीलम के दर्पन के समान स्वच्छ कपोल जिनमें मकराकृत कुण्डल के प्रतिबिम्ब पड़ रहे हैं एवं अनुराग की लाली उभर रही है इतने सुन्दर हैं कि उनकी उपमा ही नहीं मिलती, शुक की चोंच के समान नासिका, पके हुये बिम्बफल के समान अधर जिनके दर्शन मात्र से देह की सुध बुध भूल जाती है और जो कि अनार दानों के समान सुन्दर सुडौल दंत पंक्ति को परदे में छिपाये रखते हैं सुन्दर चिबुक कम्बुकण्ठ हृष्ट-पुष्ट कंधे, विशाल भुजदंड लाल लाल हथेलियाँ बड़ी बड़ी कोमल अँगुलियाँ उभरे और लाल लाल नख, कर कमल में पीतकमल ऊँचा और चौड़ा वक्ष स्थल गम्भीर नाभी सुन्दर उदर कंठ में कौस्तुभमणि वक्ष स्थल पर नीलम के समान मुक्ता माला कंधे पर पीताम्बर सिंह

की कटि के समान कटि है ऊँची एड़ी सुडौल पंजे यव, कमल, अंकुशादि, चरण चिन्ह लाल लाल तलवे जिनमें यावक (महावर) लगा हुआ है उभरे हुये लाल लाल नख जिन के दर्शनों से भक्तों के हृदय का अन्धकार दूर भाग जाता है और जिन में सन्तों के मन भौंरों के समान रहते हैं ऐसे चरणाविन्दों का वर्णन तो मुझ से हो ही नहीं सकता, मीठे बोल सुन्दर चितवन हृदय को लुभाने चित को चुराने और मन को हरने वाली मंद मंद मृदु मुसक्यान से आप अपने भक्तजनों के हृदय की जलन को दलन किया करते हैं।

भगवान के श्रेष्ठ समीपी भक्त ही शृंगार के समय बाजूबंद अँगूठी कंकण नूपुरादि के रूपमें समय २ पर भगवान के अंगस्पर्श का सुख लिया करते हैं, कभी धनुष बाण ही बन जाते हैं तो कभी पार्षद हो कर भगवान की सेवा और सुविधा के अनुरूप ही वह अपने २ रूप बना लेते हैं।

❊ दिव्य धाम साकेत लोक ❊

यह तो प्रभु एवं उनके भक्तों की इच्छा का बना हुआ दिव्य चिन्मय लोक है, वहां उनके संकल्प ही मूर्तिमान होकर प्रेमाकृत लीला करते हैं वहाँ तो एक ही समय में सारे समय एक ही स्थान में सारे स्थान और एक ही वस्तु में सारी वस्तुयें रहती हैं, वहाँ संसार का कोई भी नियम लागू नहीं होता न जन्म, न मरण, न जवानी, न बुढ़ापा, न सूर्य, न चन्द्र, न स्त्री, न पुरुष, न सृष्टि न प्रलय, न काम क्रोधादि विकार, न शोक, न मोह, न बंधन, न मुक्ति इत्यादि सर्व द्वन्द्वों से रहित है वहाँ तो सब कुछ भगवान है सब भगवान मय है सब उन्हीं का संकल्प और सब उन्हीं की लीला है, वहाँ अज्ञान न होने से ज्ञान भी नहीं है राग

न होने के कारण वैराग भी नहीं है वहाँ तो केवल प्रेम है, सेवा है, बिलास है, श्री युगल सरकार प्रिया प्रीतमजू के परस्पर हास-विलास, बोलन चलन • चितवन • खेलन और मुस्क्यान की माधुरी कण कण से बरसती रहती है बस यही त्रिपाद् विभूती है यही साकेत धाम है।

भगवान के इस धाम में जड़ चेतन छोटे बड़े ऊँच नीच का कोई भेद नहीं हैं वहाँ तो सब के सब चिन्मय हैं सब भगवत कथा को सुनते हैं जिसे देखो वही भगवत कथा एवं कीर्तन का प्यासा घूम रहा है।

जिन की भावना निर्मल है और विश्वास अटल है ऐसे प्रेमी भक्त अपने प्यारे प्रभु को खोज कर प्रेम पाश में बाँध आकर्षण कर ही लेते हैं देखिये ! भगवान का बचन भी है कि:—

हूँ स्वतन्त्र सबसों परे-पर भक्तन आधीन
लीला भक्तहित करत हूँ-यह खेल मेरो प्राचीन । १ ॥
भक्तों के हित कारण ही-बहु रूप बनाया करता हूँ
साकेत धाम के सुख छोड़े-पृथ्वी पर आया करता हूँ २ ॥

सज्जनों ! भगवान का बचन है कि जो प्रेमी जन अपना घरद्वार स्त्री पुत्र परिवार एवं मन की समस्त वासनाओं का परित्याग कर केवल मेरा ही भजन मेरा ही ध्यान और मेरा ही चिन्तवन करते हैं तब भला, मैं उनको कैसे भूल सकता हूँ। मेरा तो सहज ही स्वभाव है कि जो कोई मुझे जिस भावना से भजे मैं भी उसको उसी प्रकार से भजता हूँ कारणकि:—

भाव का भूखा हूँ मैं-औ भाव ही बस सार है,
भाव से मुझ को भजे तो, उस का बेड़ा पार है।
अन्न धन औ वस्त्र भूषण कुछ न मुझ को चाहिये।
आप हो जाये मेरा बस, पूर्ण यह सत्कार है।

भाव बिन सब कुछ भी दे डाले तो मैं लेता नहीं,
भाव से एक फूल भी दे तो मुझे स्वीकार है।
भाव बिन सूनी पुकारें मैं कभी सुनता नहीं,
भाव पूरित टेर ही करती मुझे लाचार है।
जो मुझ में ही भाव रखकर लेते हैं मेरी शरण,
उनके और मेरे हृदय का एक रहता तार है।
भाव जिस जन में नहीं उसकी मुझे चिन्ता नहीं,
भाव वाले भक्त का भरपूर मुझ पर भार है।
बाँध लेते हैं मुझे यों भक्त दृढ़ जंजीर में,
इस लिये इस भूमि पर होता मेरा औतार है।

देखा सज्जनों! निराकार अपने आप साकार यहाँ हुआ-
ले आइना के अक्स नमूदार यहीं हुआ।

भगवान का कथन है कि मेरा भक्त जिस समय संसार को भूल कर मुझे आर्तनाद द्वारा पुकारता है तब तो मुझ से रहा नहीं जाता उस समय मुझे अपने नित्य धाम साकेत को छोड़ कर भक्तों के भाव भरे हृदय में रहना ही अतिप्रिय लगता है। मेरा भक्त जब खड़ा कीर्तन करता है तब मैं वहां नृत्य करता हूं भक्त जब चलता है तो मैं भी उसके पीछे पीछे चला करता हूं मेरा भक्त जब थक जाता है तब तो मैं उसके हृदय में पुनीत प्रेमानन्द की धारा बहा कर उसकी थकावट को दूर कर देता हूँ। मेरा भक्त जब प्रेम में मगन हो रोने लगता है तब मैं अपने पीताम्बर की छोर से उस के आँसू को पोंछता हूँ और उसके प्रेम मगन हो कर अति विकल हो जाने पर मीठे-मीठे बचन सुनाकर उस को धैर्य्य बँधाता हूं मेरा प्रिय भक्त जिस समय मेरे विछोह में धैर्य्य को छोड़ कर अधीर हो जाता है तब तो मैं उसको अपनी गोदी में बिठला कर पुचकारता हूं, मुख चूमता

हूँ यहाँ तक कि स्नेह पूर्वक उसको अपने गले से भी लगा लेता हूँ।

संसार में प्रेम करने वालों से प्रेम करना यह तो स्वाभाविक धर्म है ही, परन्तु मैं तो अपने से वैर करने वालों पर भी अनुकम्पा ही किया करता हूं तब मैं अपने उन भक्तों को भला कैसे भूल सकता हूँ जो निरन्तर मेरे ही आश्रित रहते हुए प्रेम भाव से सतत मेरा ही स्मरण भजन एवं पूजन किया करते हैं? यही कारण है कि मुझे ऐसे भक्तों के अधीन हो जाना पड़ता है। एवं उन की रुची अनुसार मुझे वैसा करना भी पड़ता है फिर वह जैसे भी नाच नचावें मुझे नाचना भी पड़ता है, मैं उनका बन जाता हूं और वह मेरे बन जाते हैं मैं उन को निर्भय बना देता हूं। वह मेरी दिव्य विभूति के हकदार बन जाते हैं मेरा दृढ़ व्रत यह भी है कि यदि कोई प्रेमी भक्त मुझे खरीदना चाहे तो मैं उन के हाथ बिना दामों के बिक भी जाता हूँ। मैं तो केवल प्रेम का भूखा हूं बिना प्रेम के कोई कितनी बातें गढ़ २ के मुझ से कहे मुझे पुकारे अथवा मेरी प्रार्थना करे तो भी मैं नहीं सुनता और यदि प्रेम भाव से मेरा भक्त मुझे एक बार भी पुकारे तो मैं सब काम छोड़ दौड़ा २ तुरन्त उसके समीप जाता हूँ और उसकी रक्षा करने के निमित्त आतुर हो उठता हूं जैसी चन्दन में शीतलता, अग्नी में उष्णता एवं दिव्य खाद्य-पदार्थों में स्वाद और गुण स्वभावता विद्यमान हैं उसी प्रकार भक्तों की रक्षा करना भी मेरा सहज ही स्वभाव समझो। मेरे भक्तों से वैर विरोध कर मेरा पांव पूजने वाले मुझे कभी प्यारे नहीं लगते और न ही वे मेरी प्राप्ति कर सकते हैं। जो मेरे भक्तों से शत्रुता रखता है वह मेरा शत्रु है, वह मेरी कितनी भी ठाठ बाट से पूजा प्रतिष्ठा करे मैं उसे कभी स्वीकार नहीं करता। वास्तव में अगर सच पूछो तो भक्त मेरे लिए हैं और मैं भक्तों के लिए हूँ।

भक्तों का मैं प्राण हूं तो भक्त मेरे प्राण हैं और यदि मैं भक्तों की शान हूं तो भक्त मेरी शान हैं। देखिये। मेरे अनुराग में रंगे हुए उमंग से फूले हुए रस रंग में डूबे हुए भक्ति भंग के नशे में झूमते हुए मेरे भक्तराज कितने प्यारे एवं भोले भाले होते हैं। अपने एक एक भक्त के एक एक भाव पर मैं तो लाख २ बार न्योछावर जाऊँ, देखता ही रहूं। अहा! कैसी प्यारी झांकी है चित्त को मेरे चरणों में लगाए हुए नेत्रों से प्रेमाश्रु बरसाते हुए रस भरी रसनासे मेरे गुण गाते हुए ये मेरे भक्त राज हैं। क्या अनोखी अदा है। कभी लाज छोड़ कर नाचते हैं तो कभी आँख मींच कर सावधान हो बैठ जाते हैं कभी हंसते कभी रोते, कभी पुकारते तो कभी मौन ही हो जाते हैं कभी चलते फिरते हैं तो कभी अचल भी हो जाते हैं।

ये लाज को छोड़ कर सब से मुँह मोड़ कर जग का नाता तोड़ कर आँख से आँख जोड़ कर मुझे भी प्रेम प्रदेश में कभी लिटा रहे हैं तो कभी बिठा रहे हैं। ये मेरे पूर्ण प्रताप को जानकर भी अनजान हैं। भोले बालक की तरह भक्ति रानी की गोद में बैठ कर मचल रहे हैं। मेरे लिए ललक रहे हैं। अपने कोमल हृदय का स्पर्श देकर मुझे सुखी कर रहे हैं। इनके मन में में नया रंग है, नई उमंग है, लालसा है अभिलाषा है। वह किस के लिए? केवल मेरी ही प्रीति के लिए सुख के लिए, कुशलता एवं सेवा के लिए। यह जब दर्द भरे दिल से गदगद कंठ से मेरे दुख के दिनों के गीत गा गा कर व्याकुल होते हैं तब तो मैं भी आश्चर्य चकित हो जाया करता हूँ इसके स्मरण मात्र से इनको जितना दुख होता है उसके अनुभव काल में भी मुझे उतना दुख नहीं हुआ। ओहो! मुझसे इनकी इतनी प्रीति! यह तो प्रेम की ठठेरी मठेरी गली में घूम रहे हैं। मेरे सुख मय समय को देख कर हर्ष से फूल उठते हैं खिल-खिला उठते

हैं वे लाभ छोड़ कर अगाध अनुराग की नदी में डूब कर नाचते हैं और मुझे हिंडोले में बिठाकर रंगा रंगी झोंका देते हैं एवं मस्ती में आकर मेरे गुणों का गान करते हैं।

"छिपी वह कहाँ मधुर मुस्क्यान"

कभी मुझे मिश्री दूध भोग लगाते हैं, तो कभी दही भात भी खिलाते हैं, कभी माखन मिश्री चटाते हैं तो कभी कभी दही चूरा भी चबाते हैं। अहा ! ऐसे प्रेमी भक्तों की चरण रज से तो अमित भुवन पवित्र होते हैं। मेरी प्यारी भक्ति महारानी के भोले भाले बच्चे जैसे प्यारे लगते हैं वैसे तो मेरी नाभीकमल से उत्पन्न ब्रह्मा जी भी नहीं, औघड़ दानी शङ्कर भी इतने सुखकर नहीं हैं और तो क्या कहूँ सदा सुख रूप सहज आनन्द स्वरूप मेरी आत्मा भी भक्तों के बराबर प्यारी नहीं लगती। मीठी मीठी बोली वाले विरह लीला से व्यथित एवं विशुद्ध प्राण वाली प्रीतिफंद में फसे हुए भक्तजन ही मुझे प्यारे से प्यारे लगते हैं।

सज्जनो ! ध्यान की सच्ची कुंजी प्रीति ही तो है। हृदय की जितनी एकाग्रता पवित्रता एवं प्रियता बढ़ने लगती है उतना ही उतना वह युगल के विहार लीला, विलास एवं सरस चित्त को आकर्षित करने लगता है। प्रेम में स्वाद है परन्तु भोग नहीं, सुख हो या दुःख स्नेह की लव तो जलती ही रहती है। इसमें दर्द है पर आह नहीं। प्रियतम के लाड़ लड़ाने में ही प्रेमकी महिमा है प्रेम में तो देह गेह की सुध भूल जाती है। सच्चे प्रेमी के लिये तो प्रेम ही काम एवं प्रेम ही भोजन है। तथा प्रेम-संगीत में ही प्रेमी मग्न रहता है। निरन्तर प्रियतम की सेवा में सावधान होकर जैसे भी हो उन्हें सुख पहुँचाना यही प्रेम का मुख्य स्वरूप है। प्रेमी तो उस प्रेम आनन्द का भी तिरस्कार कर देता है जो उसके प्रीतम की सेवा में बाधा डाले।

सज्जनो ! प्रेमी भगत तो !

"रमते रहते हैं सदा, देखते लीला प्रीतम की,
कल कहीं आज कहीं प्रात कहीं रात कहीं ।"

एक समय श्री किशोरी जू ने भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज से प्रश्न किया कि भगवन ! आपका ध्यान तो चराचर जगत करता है फिर समाधी लगाकर आप किसका ध्यान किया करते हैं आपसे श्रेष्ठ तो संसार में कोई है ही नहीं फिर किसके भजन चिन्तन में आप मगन रहा करते हैं"

भगवान ने उत्तर दिया—"हे प्रिये मेरे भी कुछ भजनीय हैं। मेरे भक्त मुझे जिस भाव से भजते हैं ठीक उसी भाव से मैं भी अपने उन भक्तों का भजन स्मरण किया करता हूँ। जब भक्तजन मेरा ध्यान करते हैं तब तो मैं भी उनका ध्यान करता हूँ। यदि भक्त मुझे अपना इष्ट मानते हैं तो मैं भी उन्हें अपना इष्ट मान कर उनके चरणों की रज (धूली) की लालच से उनके पीछे पीछे घूमा करता हूँ। हे प्रिये ! मैं तो इस समय अपने एक महान भाग्य शाली प्रिय भक्त ही का ध्यान करते हुये उनसे मानसिक बातें भी कर रहा था।"

देखा सज्जनो ! सभी लोगों को संसार में अपना प्रेमी अत्यन्त प्यारा होता है। अपने प्रेमी की प्रसन्नता के लिये संसार के प्रिय से प्रिय पदार्थों की परित्याग के अनेकों उदाहरण मौजूद हैं। जब संसारी पुरुष ही अपने प्रेमियों को इतना प्यार करते हैं तो प्रभु अपने प्रेमी भक्तों को कितना चाहते होंगे यह कहने की बात नहीं ? देखिये ! भक्तों के पीछे तो भगवान अपने आप को भी भूल जाते हैं। और मेरे भक्तों का किसी प्रकार गुणगान हो यही उनकी आन्तरिक लालसा बनी रहती है। अत: भगवान को प्रसन्न करने का सरल उपाय यही है कि उनके भक्तों की पूजा स्तुति

करें। उनके चारु चरित्रों को ही सदा श्रवण करें एवं भक्तों की ही यश रूपी मणिमाला सदा कंठ में धारण किये रहे। भगवान की महिमा भक्तों द्वारा ही है, इसलिये भक्तों की कथा ही भगवत कथा है। भक्तों के हाड़ मांस का तो वर्णन किया नहीं जाता उनकी भक्ति की ही महिमा गायी जाती है। भगवान में उनका कितना अटूट स्नेह था एवं भगवान भी उनके समस्त कार्यों को स्वयं अपने हाथों से जिस प्रकार करते रहते थे, यही भक्तों की गाथायें हैं।

भगवत भक्त त्रैलोक्य पावन क्यों हुए ?

इसलिये कि उन्होंने अपनी अनुपम भक्ति के द्वारा भगवान को अपने आधीन बना लिया। देखिये अर्जुन ने भगवान को बिना दाम के ही मोल लेकर उनको अपना सेवक और सारथी भी बना लिया था और भक्त वत्सल भगवान भी कितने प्रेम से उत्साह पूर्वक उनके सारथी के काम को बिना किसी संकोच के निभाते रहे। भगवत प्रेम और भक्ति में कोई अन्तर नहीं है। दोनों में गम्भीरतम सम्बन्ध है भक्ति स्वतन्त्र और सर्व सुखों की जड़ है। जैसे सूरज अंधकार का शत्रु है उसी प्रकार भक्ति भी माया की शत्रु है। मनुष्य जीवन का परम एवं चरम लक्ष्य उसका एक मात्र उद्देश्य भगवत प्राप्ति है। हृदय रूपी शीशा धोने के लिये भक्ति रूपी जल की आवश्यकता है जब हृदय शुद्ध हो गया कालिमा धुल गई तभी तो भगवान का दर्शन प्राप्त होगा।

भगवान को जब अपने कलेजे में अपना दिल नहीं मिलता तब वह उसे ढूढ़ते हुए अपने प्रिय भक्त के पास आते हैं और उसको अचेत से सचेत करते हैं तथा भीतर से बाहर निकाल कर दर्शन भी देते हैं। असल बात यह है कि जब भक्त अपने को साधन हीन देख अपनी बिबशता से फड़फड़ाने लगता है तब

कहीं उसके हृदय की धड़कन बन्द न हो जाय यह सोचकर भगवान अपना ऋण उतार देते हैं अर्थात अपने प्रिय भक्त को दर्शन दे देते हैं। भगवान अपने भक्त को कभी नहीं छोड़ते। उसके अविरल प्रेम एवं भक्ति के वशीभूत होकर स्वयं उसके संग संग रहकर उसको भी अपने ही पास रखते हैं। भगवान में सर्वोत्तम भाव से मन लगाने का नाम ही तो भक्ति है। भक्ति, भक्त, भगवान एवं गुरु की महिमा का कोई पार नहीं पा सकता भगवद् भक्ति चारों पदार्थों (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) को देने वाली है। विश्व का कल्याण (परोपकार) करना भी प्रभु भक्ति ही समझी जाती है।

अहा ! भगवत भक्ति भी क्या ही विलक्षण वस्तु है भगवान को वश में करने के लिये केवल प्रेम और भक्ति की ही आवश्यकता है स्वयं साक्षात भगवान को भी जब कभी आधीन होना पड़ा है तो केवल भक्तों के प्रेम एवं भक्ति से ही। सार असार का जानना ज्ञान है। असार को छोड़ना वैराग्य है एवं सार का हाथ लग जाना भक्ति है। वैराग्य और ग्यान यह भी दोनों भक्ति के संरक्षक, वर्द्धक एवं सहायक हैं। जब तक स्नेह (प्रेम) का बीज ही नहीं होगा तो भक्ति का वृक्ष भला कैसे उत्पन्न हो सकता है ? इस भक्ति महारानी की साधना से बिकराल माया के चक्कर में पड़े जीव छुटकारा पाकर सद्गति को भी प्राप्त कर लेते हैं। इसमें किसी जाति और वर्ण का भेद भाव नहीं है। श्रद्धावान स्त्री, पुरुष ब्राह्मण, शूद्र कोई भी क्यों न हो सभी भगवत् भक्ति के अधिकारी हो सकते हैं। किन्तु अश्रद्धालु एवं अपात्र में यह ज्ञान और भक्ति ठहर नहीं सकते। जैसे कि सिंहनी का दूध सोने के पात्र बिना रह नहीं सकता। दूसरे पात्र में रखने से पात्र फटकर दूध भी धरती पर गिर जायगा।

भगवान की भक्ति करके उसके बदले में कुछ याचना करनी भक्ति को मानों बेचना है। ऐसी भक्ति वास्तव में भगवान की निष्काम भक्ति नहीं कहलाती, यह तो हुई साकाम भक्ति! और बदला चाहने से स्नेह भी दूषित हो जाता है।

भगवान की भक्ति तो अनादिकाल से चली आती है। संसार में ऐसे २ भक्त भी हुए जिनके पास न तो राज था और न ही कोष परन्तु केवल इस भक्ति के प्रताप से ही उन्होंने भगवान को वस में करके खिलौना बना लिया और परम स्वतन्त्र भगवान को उनके हाथों वेदाम बिकना भी पड़ा। मेरा यह कथन केवल कल्पना की भीति पर आधार नहीं रखता बल्कि इसमें कई प्रमाण उपस्थित किए जा सकते हैं। कारण कि मैंने इतिहासों के पन्ने उलटने में अपने बहुमूल्य समय की आहुती दी है। तभी तो भगवत भक्ति की अनादिकता सिद्ध हुई जिसे मैं यहाँ लिख रहा हूँ।

भगवान को इस भक्ति द्वारा प्राप्त करने एवं प्रसन्न करने के निमित यह सहज उपाय निरापद एवं परम श्रेयकर मार्ग है यदि मनुष्य के हृदय में भक्ति का भाव विद्यमान हो तो फिर चाहे दूसरे साधन न भी हो तो भी केवल एक भक्ति द्वारा कर्म ही वैराग्य ज्ञान तथा मोक्ष तीनों स्वयं ही सिद्ध हो जाते हैं। जरा देखये तो:—

(१) भक्त अम्बरीप जी के इतिहास को, महान त्यागी तपोधन महर्षि दुर्वासा जी के घोर क्रोध काने पर भी एकसद्ग्रहस्थ राजा अम्बरीप ने इस भगवत भक्ति के कारण ही उनपर विजय प्राप्त की।

(२) श्री द्रोपदी जी का चरित्र हमें शिक्षा देती है कि वह असहाय अबला समझ कर भरी सभा में नग्न की जारही थी

भगवत भक्ति के कारण से ही इसकी सर्व प्रकार रक्षा हुई। एवं अन्यायी और अत्याचारी असुर समाज का मान भंग हुआ।

(३) सपत्नीक श्री विदुर जी महाराज का चरित्र हमें यह बतलाता है कि महा अभिमान के कारण दुर्योधन के बहुमूल्य मेवा आदि भोज पदार्थों को परित्याग करके बिदुरजी के निरस केले के छिलकों में भक्ति के ही कारण भगवान को मेवा आदि पदार्थों से भी विशेष रस का स्वाद एवं आनन्द मिला था

(४) श्री ध्रुव भक्तजी अपनी सौतेली मां के बचनों से दुखी होकर तप करने लगे थे इस का फलित अर्थ यह है कि अकाम अथवा सकाम भक्ति भी श्री ध्रुवजी के समान इस लोक से परमपद तक की प्राप्ति करा सकती है।

(५) अहीर्निश धर्म पर कुठाराघत करने वाला दुर्दण्ड अत्याचारी दैत्यराज अनेकानेक षटयंत्रों से भगवत भक्त एवं भक्त समाज को पीसना ही अपना धेय समझने वाला तथा इन्द्र यमादिकय का शासक होता हुआ भी अपनी समस्त शक्ति लगा कर भक्त श्री प्रह्लाद जी का बाल तक भी बाँका न कर सका, आहा! प्रह्लाद जी की सहन शीलता एवं क्षमा भी विशेष सराहनीय है।

(६) श्री हनुमान जी महाराज की भक्ति का तो क्या कहन जिन्हों ने सब प्रकार से भगवान के कैंकर्य सेवा के लिये प्राकृतिक एवं दिव्य समस्त वैभव तथा ब्रह्मलोकादि के सुखों पर लात मार कर अकिंचन भाव से अनन्य भक्ति के द्वारा केवल साक्षात भगवान श्री राम चन्द्र जी महाराज को ही नहीं किन्तु उनके समस्त परिवार को भी अपना ऋणी बना लिया।

(७) आहा सज्जनो ! ज़रा देखिये तो अनन्त श्री भरत जी महाराज की भक्ति और प्रेम भाव को जिन्हों ने भगवान श्री राम चन्द्र महाराज जी की चरण पादुकाओं के पूजनादि को भी भगवान के समान ही सन्मानित किया है उनकी इस प्रकार की अविरल अनुपम भक्ति का क्या कहना है आहा ! धन्य ! श्री भरत जी महाराज की इस भक्ति की महिमा के विषय में सज्जनो मेरे पास शब्द ही नहीं हैं जो मैं यहाँ लिख सकूँ ।

पाठको ! भक्ति की कहीं दुकान नहीं खुलती । यह तो एक अमोल रत्न है जो कि अधिकारी ग्राहकों को ही भगवत-भागवत की कृपा से मिल सकता है जिसके हृदय में भगवत भक्ति एवं प्रेम उत्पन्न हो जाता है उसे तो फिर संसार की कोई भी वस्तु आकर्षित नहीं कर सकती और न ही माया उसको अपने चुंगुल में फँसा सकती है सिवाय अपने प्रीतम के चिन्तवन के उस के पास दूसरा काम ही नहीं रह जाता वह कभी रोता है और कभी हंसता भी है कभी गाता है तो कभी नृत्य भी करने लगा जाता है यहाँ तक कि उसे अपने शरीर तक की सुधि बुधि भी भूल जाती है भगवान के प्रेमी भक्तों का विचित्र खेल है उनके हृदय गत भावों को समझना मनुष्य के लिये अति कठिन है ।

"दुनिया कहती है प्रेमी को पागल और दिवाना,
भगवान मुग्ध होते हैं जहाँ झूम रहा मस्ताना ।"

आहा ! यह तुच्छ जीव जो कि माया के क्षुद्र सुखों के लिये हाय हाय करता हुआ हैरान और परेशान रहता है वही प्रभु की भक्ति के प्रभाव से अखिल ब्रह्माण्ड नायक राज राजेश्वर प्रभु के निकट तक पहुँचने का अधिकारी बन जाता है, और भगवान का एक प्यारा खिलौना बन कर उनकी छाती से लग कर केलि करने लगता है भगवान उसको अपनाते हैं उसके साथ खेलते हैं और फिर उसको अपने से पृथक कदापि नहीं करते ।

भगवान की समस्त लीलायें रसमयी एवं भाव मयी होती हैं जिनके श्रवण मात्र से ही मनुष्य संसार सागर से बात की बात में पार हो जाता है वह बाँणी का विषय नहीं। जिन भक्तों का चित्त भगवान के चरण कमलों में भ्रमर की भाँति रसास्वादन में मुग्ध हो गया है उन महान पुरुषों को किसी से बोलने तक का अवकाश भी कहाँ रह जाता है और जिन भक्तों के हृदय में जब श्री सीताराम जी रम गये तो काम देव भी भगजाते हैं और जब कामदेव आते हैं तो श्री सीताराम जी भी रमते राम हो जाते हैं। सज्जनों ! काम देव का कथन है कि जो कोई भगवत भक्त निरन्तर भगवत भजन तथा कैंकर्य में लगा रहता है तो उससे मैं बोलता भी नहीं हूँ, श्री भगवान के गुण अनन्त हैं एक एक गुण की अनन्त अनन्त शाखायें हैं, जब भगवान स्वयं किसी के हृदय में आकर विराज मान हो जाते हैं तब उसके सभी गुण एवं उनकी समस्त शाखा प्रशाखा प्रेमी भक्त के हृदय में भी आ जाती हैं एवं समय समय पर उपयोगिता के अनुसार उनका प्राकाट्य भी होता रहता है इसी लिये तो भक्तों के गुणों की गणना करना भी कठिन है जैसे समुद्र की एक बूँद भी उसके खारी पन के गुण को प्रगट कर देती है अमृत का एक कण भी अमर कर ही देता है गंगाजल का एक छींटा भी पवित्र करने के लिये पर्याप्त है वैसे ही यहाँ भी भगवत, भागवत के गुणों को समझो !

जिनपर भगवान की कृपा हो जाय तो उनको अपनाना उनके लिये आश्चर्य और असम्भव ही क्या है ? विश्वास पूर्वक निष्कपट भगवान तथा भक्तों की सेवा ही भक्ति है साफ दिल के आइने में श्रद्धा का मसाला लगाने से हृदय में ईश्वर भक्ति बढ़ने लगती है तभी तो भगवान की झलक दिखाई पड़ती है, इसलिये भगवान की भक्ति ही समस्त सद्गुणों की जननी धात्री है मुक्त

पुरुष भी लीला से शरीर स्वीकार करके भक्ति का स्वाद और आनन्द लेते हैं, ब्रह्म भाव की प्राप्ति हो जाने पर ही भक्ति मिलती है और भक्ति की प्राप्ति से रसिक जन भानु कुल भानु परम अह्लाद मूर्ति भगवान श्रीरामचन्द्र जी महाराज के समीप पहुँच जाते हैं।

देखिये ! शास्त्रों में प्रारब्ध को अमिट बताया है परन्तु अनुभवी महात्माओं का कथन है कि भक्तों का प्रारब्ध मिट जाता है प्रारब्ध तो केवल कर्म दृष्टि से है और ज्ञान दृष्टि से शरीर। पूर्व जन्म और उत्तर जन्म यह सब प्रतीत मात्र है केवल ब्रह्म ही ब्रह्म सत्य है भक्त की दृष्टि से सब अपने प्यारे प्रभु की लीला है वह कर्म के आधीन नहीं है, कर्म जिसके आधीन हैं वह कर्ता जीव भी तो उन्हीं के आधीन है इसलिये वह चाहे जैसी भी लीला करें सब उन्हीं का तो खेल स्वाँग है और सब कुछ वही हैं इसलिये न भक्त का प्रारब्ध है न उसका भोग।

सज्जनो ! भगवान के श्रद्धालु भावुक भक्त का तो कभी नाश नहीं होता कारण जो उनकी शरण हो गया, उनके आश्रित हो गया तब उसका नाश कहाँ ?

देखिये ! चक्की में डाले हुए सब अनाज पिस जाते हैं परन्तु चक्की में जो दाने लकड़ी की खूँटी (कीली) के शरण हो जाते हैं वह अवश्य पिसने से बच ही तो जाते हैं।

प्रभु के समीप सब भक्त बराबर हैं उनके समीप कोई छोटा बड़ा नहीं प्रभु सबको एक दृष्टि से देखते हैं उनकी नजर इतनी बड़ी है कि उनको कोई चीज छोटी नहीं बल्कि बड़ी ही नजर आती है परन्तु रसिक जनों ने यह मर्याद बाँध रक्खी है कि सकाम तो छोटा एवं निष्काम बड़ा भक्त होता है अर्थात् सकाम तो बेटे का दोस्त तथा निष्काम बाप का मित्र, और बहुत सोच समझ लेने के बाद अन्तिम यह विचार पक्का किया गया कि यह असमर्थ जीव कादर और कमजोर दिल है दुख में इसे कोई न

कोई पुकारने की जगह (सकाम भक्ति) भी जरूर चाहिये, अगर इसके सभी रास्ते बन्द हो गये तो यह निष्काम भक्ति मार्ग पर चल ही न सकेगा इसीलिये धीरे २ जब इसका प्यार प्रियतम में गाढ़ हो जायगा इसे कोई दूसरी इच्छा भी न रहेगी फिर तो यह स्वयं ही पूर्ण निष्काम भक्त बन जायगा एवं सब कुछ अपने प्रियतम के लिये ही चाहेगा इसीलिये भक्त न होने से सकाम भगवत भक्त होना भी अच्छा ही है।

जिनके हृदय में भगवत प्राप्ति की उत्कण्ठा जाग्रत होती है गाँव, महल, कुल परिवार, सगे सम्बन्धी, इष्ट मित्र, मान प्रतिष्ठा यश आदि २ कुछ भी इनके मार्ग में अड़चन नहीं डाल सकते जैसे कि श्रीगंगाजी मार्ग के पहाड़ी चट्टानों एवं खंडरों को चीड़ती फाड़ती समुद्र में जा मिलती हैं वैसे ही भगवत भक्त भी सब विघ्न बाधाओं को पार करके अपने लक्ष्य स्थान पर पहुँच जाते हैं।

भगवान तो स्वच्छन्द लीला विहारी हैं जब जिस भक्त के साथ जैसी मौज हुई लीला कर डाली वह अपने भक्त को कभी लँगोटी बाबा के रूप में देखके खुश होते हैं तो कभी स्वामी के रूप में, कभी राजकुमार के भेष में देख मग्न होते हैं तो कभी हँसते खेलते देखकर खुश और प्रसन्न होते है और कभी २ तो रोते गाते और नाचते देखकर ही आनन्दित हुआ करते हैं जैसे गऊ अपने मैल लगे हुए बच्चे को चाटती है जी भर दूध पिलाती है और हर समय उसकी रक्षा करती है वैसे ही भगवान भी अपने मैले कुचैले प्रेमी भक्तों के अपराधों को अपना भोग बना लेते हैं एवं अपने सम्बन्ध में की हुई उनकी प्रत्येक लालसा को भी पूर्ण कर देते हैं -इसके अतिरिक्त जैसे वानरी अपने बच्चे को हृदय से लगाये रहती है वैसे ही प्रभु भी अपने

प्रमी जनों को अपनी गोदी में रखते हैं। और जिस प्रकार बिल्ली अपने बच्चों को मुख में लेकर सुरक्षित स्थान में पहुँचाती है। उसी प्रकार भक्तों की इच्छा न होने पर भी भगवान उन्हें दुख से बचा कर उन्हें सुख पहुँचाते हैं सज्जनों! जीव जब तक व्याकुल होकर ईश्वर अथवा उनके भक्तों के चरित्रों में डुबकी नहीं लगाता तब तक ईश्वर के घर की झांकी नहीं कर सकता ईश्वर की व्याकुलता अनायास ही संसार को भी छुड़ा देती है तब यह मन प्रियतम के पास हर दम रहने लगता है और अन्तर के रस में निरन्तर डूबे रहने के कारण उसके नेम प्रेम के नशे में ऐसे चूर रहते हैं कि वह क्षण भर के लिये भी उस प्रेम रसामृत महासागर से बाहर निकलना पसन्द नहीं करता यहाँ तक कि उसका तन, मन, प्राण, आत्मा सब प्रेम रंग में रंग जाते हैं और प्रेम की आँच से पापरूपी बर्फ के पहाड़ पिघल कर आँसुओं के रूप में बह निकलते हैं! प्रेम का चुम्बक तो उसके विकार रूपी कीलों तक को उखाड़ देता है जैसे दूध से निकला हुआ मक्खन जल के ऊपर निर्लेप रहता है! वैसे ही भक्त जन भी संसार में संसार से निर्लेप रहकर भगवान की याद किया करते हैं। अभिमान और विकार यह दोनों उन्नति के मार्ग के कण्टक हैं यही रुकावट डाल कर जीव को भगवान से विमुख कर देते हैं-श्रद्धा और सेवा इन दोनों रोगों की रामबाण औषधी हैं। भगवत भक्ति एक अमूल्य निधि गुप्त रखने की वस्तु है परन्तु इसे गुप्त कब तक रखा जा सकता है, जब तक अपनी याद हो मगर जिस समय भक्त के हृदय समुद्र में भावावेश का ज्वार आता है तब उसकी लहरें अपने आप ही उछल उछल कर तटभूमी को प्लावित करने लगती हैं। यह भी भगवान की एक मौज तथा मनोरञ्जन हैं! यदि भक्तों के द्वारा भगवान अपनी भक्ति सुधा सीकर की वर्षा न करते-उसके

प्रेम प्याले को कभी कभी छलका न देते तो जगत में फँसे हुये जीवों को भक्ति रस के नमूने का भी पता न चलता—भक्ति के आनन्द में भक्त का हृदय कहीं फट न जाय इसके लिये भी उस का बाहर प्रवाहित होना भी जरूरी होता है इसका स्वयं भगवान ध्यान रखते हैं।

भगवान तो संसार में अपने भक्तों का अपने सेवकों का यश फैलाना एवं उनको गौरव प्रदान करना ही चाहते है। जो भक्त अटल रहते हैं मोहब्बत की खाक में वह दाखिल हो जाते हैं, श्री राम की जात पाक में मिल जाते हैं। मोहब्बत और जंग में तो हर चीज रवा है।

Everything is fair in love and war

भगवान सबके संग रहते हुये भी निर्लेप कहलाते हैं ऐसे भगवान को विचारी अबलायें एकान्त में घुल घुलकर बातें करते हुये देख करके मन में समझती थीं कि भगवान अब हमारे ही वश में हैं-- यथार्थ में अगर देखा जाय तो केवल भक्तों को छोड़कर भगवान किसी के वश में आने वाले नहीं हैं। हाँ भक्त जन जैसे चाहें भगवान को नचा भी सकते हैं शेष सब जीवों को तो भगवान जैसे मदारी बन्दरों को नचाता है वैसे मायारूपी रस्सी में बाँधकर नित्यप्रति नचा ही रहे हैं। भगवान कब क्या और क्यों करते हैं? यह कहना तो श्री शेष जी से भी शेष रह जाता है। वेद भी नेति नेति कहकर असमर्थता प्रकट करते हैं इसलिये भगवान की ऐसी क्रीड़ा का रहस्य हर कोई समझ नहीं सकता! भगवान तो प्रेम के भूखे हैं न कि धन धाम के। देखिये! चुल्लू भर गंगाजल से ही श्री गंगा जी को जल पिलाने से क्या उनकी प्यास बुझ सकती है? और क्या विश्व के प्रकाशक भगवान को एक छुद्र दीपक प्रकाशित कर सकता है?

कदापि नहीं ! किन्तु हम अपनी भक्ति को भी तो किसी प्रकार प्रकाशित करें इसलिये भक्त जन सम्पूर्ण सामग्री के स्वामी सर्वथा परिपूर्ण ब्रह्म भगवान के लिये फल फूल तथा अन्य प्रकार के और भी कुछ उपहार भेंट करते हुये अपनी भक्ति को दरसाया करते हैं। सच्चे प्रेम एवं राम भक्ति के बिना मानव हृदय हृदय नहीं है बल्कि वज्रवत कठोर पाषान है। जिस हृदय में प्रेम है वही मनुष्य जीवित समझो और जिसके हृदय में प्रेम नहीं वही मृतक समान है।

भगवान में अनन्य प्रेम का होना ही भक्ति है भक्ति में आयु द्रव्य रूप का तो कुछ भी मोल नहीं। विद्या, धन, जाति, बल यह भी मुख्य नहीं है भगवान तो केवल प्रेम को देखते हैं प्रेम से ही सन्तुष्ट होते हैं गुणों से नहीं बतलाइये तो ! व्याधा का कौन सा अच्छा आचरण था ? ध्रुव की उम्र ही क्या थी ? गजेन्द्र के पास कौनसी विद्या थी ? विदुर की कौनसी उत्तम जाति थी ? यादवपति उग्रसेन का कौनसा पुरुषार्थ था ? कुब्जा का कौनसा सुन्दर रूप था ? सुदामा के पास कौन सा धन था ? भक्ति प्रिय भक्त वत्सल भगवान तो केवल भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं। इसलिये प्रेममय नित्य अविनाशी, विज्ञानानन्द घन सर्वशक्तिमान सर्वव्यापी ईश्वर की भक्ति करने का सब मनुष्यों को अधिकार है।

हिन्दुओं के लिये तो भगवान की सच्ची भक्ति और सच्चा प्रेम ही सर्व श्रेष्ट है जब तक उन्होंने भगवान की भक्ति की उनके घरों में लक्ष्मी का निवास रहा और जबसे भक्ति का नाता तोड़ा, भगवान से मुख मोड़ा, तब से पड़ा कर्म का कोड़ा ! पामाल हो गये और सब कुछ लुट गया।



"Love isGod ❀ प्रेम ❀ God is love"

प्राणीमात्र पर प्रेम करना प्रभु प्रेम करना है विश्व की कुछ भी सहायता न करना एवं किसी की श्रद्धा को ठुकरा देना वस्तुतः प्रेम नहीं है, और वह भी सच्चा प्रेमी नहीं है, जिसने अपने प्रीतम प्यारे की याद में नैनों को तर करके अपने प्यारे के चरण कमलों को नहीं पखारा-प्रेम में तो ऐसी मधुरता एवं मिठास है कि ऐसी मधुरता अमृत में भी नहीं है और इसमें शक्ति ऐसी है कि त्रिलोकी नाथ भगवान को भी बन्धन में बाँध ले। इसके समान संसार में ऐसा कोई शक्तिशाली पदार्थ नहीं है भगवत प्रेम का दर्जा सबसे ऊँचा है, इसके सामने मुक्ति की मिठास भी फीका ही पड़ जाती है परन्तु "खानपान सुख चाहत अपने-तिन्हें प्रेम परसत नहीं सपने" सज्जनों! प्रेमफल कितना स्वादु कितना मधुर है, इस से जो चित्त को प्रसन्नता होती है, वह कहने की बात नहीं-वह तो अनुभव करने की वस्तु है आज तक संसार का कोई भी मीमांसिक ढ़ाई अक्षर "प्रेम" की मीमांसा में सफल नहीं हुआ, प्रेम के ग्रन्थों में भी प्रेमियों के लिये कोई धारा नहीं है।

("There is no law for the lovers")

प्रेम तो नियम की सुदृढ़ भीति की तोड़ फोड़ कर अपने प्राण प्रियतम चारु चरणों का चुम्बन कर लेता है। प्यारे की उस नगरी तक पहुँचाने वाला प्रेम ही एक राज मार्ग है, एवं समस्त साधनों का शिरोमणि है, देखिये-वृज की अबलाओं के निर्मल प्रेम ने श्री उद्धव जी के प्रबल ज्ञान प्रचण्ड को किस प्रकार पछाड़ दिया कि उनके मँहगे तत्वज्ञान को किसी ने

मूली के पत्तों के भाव भी मोल न खरीदा ! इसलिये अगाध तत्वज्ञान में निमग्न महात्मा श्री उद्धव जी को परास्त होकर लाचार प्रेम विश्व विद्यालय से "प्रेमी" की डिगरी प्राप्त करनी पड़ी।

सज्जनो ! प्रेम कुछ सौदा तो है नहीं कि पैसा फेंका और और तुरन्त बाजार से खरीद लाये, वह तो जब भगवत कृपा होती है और अनेक योनियों में भ्रमण करते हुये सुयोगवस जीव भगवान की ओर उन्हीं की प्रेरणा से बढ़े और उन्हीं में में मन लगा कर उन्हीं के चिन्तवन स्मरण में अपना सब समय बितावै तभी तो ऐसे उत्कट प्रेम की उपलब्धि होती है। इस लिये।

"प्राण जाय मगर राम नाम भूलो नहीं !
दुख में तड़पो नहीं-सुख में फूलो नहीं ॥"

मनको प्रतिदिन व प्रतिक्षण का यह अनुभव है कि जिनसे हमारा कोई संसारी नाता होता है उससे कितना मोह व कितनी ममता होती है एवं उसका कितना स्मरण चिन्तन भी होता है ! इसलिये जो लोग प्रियतम से भी कोई नाता निश्चित कर अपने आप को उनके बल भरोसे पर छोड़ देते हैं तब भला वह हताश कैसे हो सकते हैं ? उनकी रक्षा के निमित्त तो भगवान सदा तत्पर रहते हैं और हर प्रकार से उसका योगक्षेम भी करते हैं ! परन्तु होना चाहिये दृढ़ विश्वासी ! कारण कि आत्म शक्ति एवं आत्म विश्वास के सामने कुछ भी असम्भव नहीं-विश्वास से ममुष्य निर्भय तथा निश्चित हो जाता है। एवं विश्वास की कमी से ही उस सच्ची स्थिति से ममुष्य को वंचित रहना पड़ता है। संसारी लोगों में किया हुआ मोह तो संसारी बन्धनों को दृढ़ करता है जब कि वही मोह भगवत सम्बन्ध से भगवान और भक्तों की स्मृति वस्तु में किया जाय तो उससे भगवत

स्नेह बढ़ता है। प्रभु का प्यार रग रग, में भर जाने से सहज ही में ईश्वरता तो भूल जाती है अपनपौ हो जाने के कारण प्रेम बढ़ने लगता है यह रसिक पुरुषों की प्रेमगली है। देखिये एक फकीर कहता है ! "चलरे दिल यार की गली में रो आवें, कुछ तो दिल का गुबार धो आवें।" कारण कि विरहाग्नि से मन का मल जल कर जहां दिल हल्का हुवा - तब पापों का भी प्रायश्चित समझो ! प्रेमी के हृदय में जब विरह की ज्योति जागती है दिल का दिया जलने लगता है तब उसके लिये अपने प्रियतम प्रभु का नाम, रूप, लीला, धाम यही चारों उसके जीवन के आश्रय होते हैं इन्हीं के सहारे बिरही जीता है, इन्हीं का वर्णन श्रवण, स्मरण करता है, गुन गुनाता है इन्हीं में, डूबता उतराता है इन्हीं में, बाहर भी यही भीतर भी यही-इसी भाव ही में तन्मय रहता है और उनके हृदय का प्याला प्रेम से लबालब भर कर आँखों के रास्ते छलक उठता है। श्री लीला विहारी भगवान के प्यारे भक्त जन तो विषय सुख साधन सुख, एवं ब्रह्म सुख तक का भी तिरस्कार करते हुये निरन्तर सत्संग से ही आनन्द लेते हैं। कारण कि :—

"कोटि जन्म के पुण्य जब उदय होत एक संग,
छूटत मन की मलीनता-भावत तब सतसग" !

प्रभु मेरे हैं और मैं प्रभु का हूं, यह सहज ममता रूपी पान का बीड़ा चबा कर चितरूपी अधरों को लाल करते रहते हैं, ज्ञानी अपने को देखता है, और प्रेमी भक्त अपने प्रियतम को देखते हैं और अपने हृदय मन्दिर में प्रीति के पलंग पर सत्य की सेज बिछा कर श्री गुरू मंत्र मणि दीप जगा कर सर्वदा के लिये अविद्या का अन्धकार मिटा कर सदा अपने को बिछुड़ा हुआ समझकर कातर हृदय से प्रियतम के मधुर नाम की पुकार आठों पहर अनुराग में मस्त रहकर भगवान के सामने विनय

प्रार्थना करते हुये नेत्रों से अश्रुओं की धारा बहाते रहते हैं, अहा ! करुणा के समान शान्ति मई इस अश्रु धारा में स्नान करने का सौभाग्य जिसे मिल जाता है, वह तो सदा के लिये शोक संताप से छुटकारा पा जाता है। अपना प्रेमास्पद चिर काल में जब कहीं से आता है तो हृदय में हर्ष की एक बाढ़ सी आ जाती है। चित्त चाहता है कि उसे आँखों से पी जाँयें मन में आता है कि रास्ते में अपनी पलकों के पाँवड़े बिछा दें जिस पर प्रियतम के पाद पद्म पड़ें, उस समय एक विचित्र दशा होती है। अहा ! भगवान का रूप भी क्या है मानो समस्त सुन्दरता का समुद्र है। रूप तो उसी को कहते हैं जो छिनर में नवीन ही नवीन दिखाई दे। एवं सौन्दर्य माधुर्य्य प्रतिपल बढ़ता ही प्रतीत हो यह समस्त शोभा तो भगवान में ही हैं भगवान का मुख ही भक्तों का सर्वस्व है, इन्हीं के दर्शनों के लिये असंख्यों जन्म योग जप तप किये जाते हैं ! अहा। ज़रा देखो तो उस प्यारे की कैसी मंद मंद मुसकान है कि जादू भरी मृदु मुस्कान ही अपने भक्त जनों के हृदय की जलन को दलन करती हुई आनन्द का श्रोत बहाती है उनके स्वभाव को तो वही जान सकता है कि जिसने उनका शुभदर्शन किया हो, जिसने एक बार भी उनकी झलक निहार ली उसे तो जगत फीका और निस्सार दिखाई देने लगता है, नेत्रों के कटाक्ष तो घायल ही कर देते हैं, इन्हें अमृत के कुण्ड एवं आनन्द के श्रोत समझो, यह तो माधुरी के सागर अनियारे प्यारे तथा सुख के सदन हैं, सुन्दर चन्दन की खौर कितनी अनुपम है, कारी कारी चिकनी घुँघरारी लटें कपोलों का स्पर्श करती हुँई काली नागिनियों के छोटे छोटे बच्चों के समान टेढ़ी मेढ़ी होकर विष के स्थान में अमृत का वमन कर रही हैं, मीठे बोल सुन्दर चितवन चित्त को चुराने वाली मुख की शोभा का तो क्या कहना ? दर्शन करने मात्र से देह की सुध बुध तक भूल

जाती है, मानों जादू का काम करती है। उन अपने प्रिय बहनोई श्री राम जी महराज के चरणारविन्दों का वर्णन भला उनके साले लक्ष्मीनिधि से क्या हो सकता है, जिन जावकयुत लाल लाल श्री चरणों में सन्तों के मन भवरों के समान रसामृत का पान करते रहते हैं। उस प्यारे प्रीतम की रूपमाधुरी के पान करने में जिनके नेत्र रत हो गये उनके भाग्य का तो कहना ही क्या, संसार का समस्त सौन्दर्य्य भगवान के अखिल सौन्दर्य्य राशि का एक कण मात्र है! भला एक विन्दु, सिन्धु को कैसे भिगो सकता है? एक कण मिश्री क्षीर सागर को मधुर बनाने में कैसे समर्थ हो सकती है इसी प्रकार यहाँ संसारिक सौन्दर्य्य भी भगवान को किस प्रकार से मोहित कर सकता है? किसी प्रकार से नहीं, वह तो सदा निर्लेप हैं।

प्रेम तो एक ऐसा अद्भुत रस है कि इसे जितना भी शील संकोच के साथ जितना ही एकान्त से एकान्त में पान किया जाय उतना ही अधिक स्वादिष्ट प्रतीत होगा, शील संकोच से इसकी मधुरता अति अधिक बढ़ जाती है यद्यपि प्रेम प्रकट करने की वस्तु नहीं है, यह गोपनीय है फिर भी यह प्राणी इतना अधूरा है कि वह अपने हृदय के भावों को रोक नहीं सकता एवं गुप्त प्रेम के वर्णन करनेको विवश हो जाताहै। "गलत है कि दिल का लगाना बुरा है, मोहब्बत का लेकिन जताना बुरा है!" दुनिया में सबसे जबरदस्त ताकत जो मनुष्य को सचाई के सांचे में डालकर उसके गंदे एवं बुरे ख्यालात को जलाकर भस्म कर दे वह है "प्रेम"! भगवत प्रेम की मस्ती अजब तरह का नशा है जिसका खुमार कभी न उतर कर प्रतिदिन बढ़ता ही रहे इसलिये क्षणिक प्रेम के तरंग वाले को प्रेमी नहीं कहा जा सकता है प्रेम और मोह में तो आकाश पाताल का अन्तर है मोह तो हाड़ मांस की दीवार पर निर्भर है हाड़ मांस के सूखते ही उसमें परिवर्तन

होकर नष्ट हो जाता है मगर प्रेम सर्वथा इससे भिन्न है, प्रेम स्थाई एवं शान्ति को श्रष्टि करता है तथा इसके वियोग में भी प्रेमी की आसक्ति बढ़ती ही जाया करती है। "जो आवै तो जावे नहीं, जावे तो आवे नहीं!" "अकथ कहानी प्रेम की, समझ लो मन माँहि।" जहाँ प्रकृति का खेल है वहां पर तो विकार है। प्रेम तो विकार शून्य है। एवं संसारिक प्रेम में इतना अन्तर है कि उसके कारण रूप का नाश होते ही उसका प्रेम भी नष्ट होकर उसका आगामी जीवन भी शून्य सा प्रतीत होने लगता है।

प्रभु के लाड़ले संत कहाँ नहीं हैं। वह तो सर्वत्र आनन्द सिन्धु में ही मग्न रहते हैं, उनके हृदय में नित्य नवीन अपूर्ण प्रेम भरी लहरें लहराया करती हैं, और इस प्रेम सिन्धु की प्रेम कुंज में प्रवेश करते ही उनके प्रेम की धारा बहने लगती है।

वह कुंज क्या जिसमें मनोहर फूल खिलते न हों,
वह फूल क्या जिसमें मधुप मधु के लिये मिलते न हों।
वह भ्रंगक्या जिनको रसिकजन आतम गुरू कहते न हों,
वह रसिक क्या जिनके हृदय में प्रेम नद बहते न हों।

"जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं!
वह हृदय नहीं है पत्थर है-जिसमें सियाबर का प्यार नहीं"
हर दिल है रुसवाय मुहब्बत-हर एक सर में है सौदाय मुहब्बत!
यह सच है कौन है फर्जानाये इश्क -
और कहां पाबन्द है दीवानाये इश्क।
यहां भेद जात पांत का नारी न नर का है,
हरी को जो प्रेम करके भजे-सो ही हरी का है

"Love can supply all wants."

"We can not compel love and we can not

make it a Law"
"Lovers ever run before the clock"
दिल हो उन्हें मुबारक, जो दिल को ढूंढ़ते हैं।
हम तो दिल से हाथ धो कर, दिलवर को ढूंढ़ते है ॥
जब मिट गई हो हस्ती, खो जाय दिल तो क्या ग़म।
उल्फ़त पर मिटने वाले, कब दिल को ढूंढ़ते हैं ॥

—:❀:—

❀ श्री सद्गुरू महिमा ❀

—:❀:—

जिज्ञासु का परम कर्त्तव्य है कि सर्व प्रथम सद्गुरू की शरण में जाकर उनकी सेवा से हृदयरूपी खेत को शुद्ध करे, तब सद्गुरू कृपा करके नाम रूप बीज देंगे, वह शुद्ध हृदय में ही धीरे-धीरे प्रवेश करेगा। जैसे बीज मिट्टी में मिल कर एवं पानी के मेल से उग कर फूलता और गुलज़ार होता है अर्थात् बीज जब तक अपने आप को खोकर धूल में नहीं मिलाता तब तक अंकुरित होकर न तो फूलता है और न ही फलता है। इसी प्रकार मनुष्य जब तक अपने आप को सच्चे गुरू देव के आत्म-समर्पण नहीं करता तब तक न तो वह जन्म मरण के बन्धन से छूट सकता है और न ही किसी श्रेष्ठ पद का अधिकारी ही बन सकता है सच्चे जिज्ञासु को ही सच्चे गुरू की प्राप्ति होती है। गुरू और भगवान में कोई अन्तर नहीं, जैसे भगवान सर्व व्यापक हैं वैसे ही गुरू तत्व भी सर्व व्यापक है। जब हृदय में परमार्थ की प्रबल जिज्ञासा होती है तब सर्व अन्तर्यामी गुरू स्वयं ही अधिकारी समझ कर उसके सम्मुख प्रकट होते हैं, और उसके समस्त संशयों का छेदन कर देते हैं।

"गुरु की कृपा होत ही, मिटत सकल भवफन्द ।
भवफन्दन के छूटते, उपजत परमानन्द ॥"

योग्य गुरू कभी अपात्र को उपदेश नहीं करते क्योंकि अपात्र को दिया हुआ उपदेश उसी प्रकार व्यर्थ हो जाता है, जैसे ताँबे के पात्र में रख देने से दही ! और भस्म में किया हुआ हवन तथा कड़वी लौकी के बनाये हुए साग में डाला हुआ घी मसाला व्यर्थ जाता है। अन्य अधिकारी के सन्मुख कोई महत्वपूर्ण उपदेश एवं कथा भी नहीं कहते, क्योंकि वह समझते हैं कि ऊसर खेत में बीज बोना व्यर्थ ही नहीं है बल्कि समय और शक्ति का दुरुपयोग भी करना है ! इसलिये अनाधिकारी के सन्मुख ज्ञान को प्रकट न करना, बिना पूछे भी न कहना, कारण कि बिना पूछे कहने से बात का महत्व चला जाता है—जैसी योग्यता हो उतना ही ज्ञान प्रकट करना। अगर अधिक प्रकट किया गया तो वह उसे पूर्ण रीति से ग्रहण करने में असमर्थ होगा, और यदि अधिकारी की योग्यता से न्यून ज्ञान दिया तो उसे संतोष न होगा, इसीलिये जिज्ञासु एवं शिष्य का अधिकार समझ कर ही गुरू या वक्ता उसे उपदेश करते हैं, हीन श्रेणी के शिष्य को उच्च श्रेणी का ज्ञान सहसा दे देना व्यर्थ है, क्योंकि वह उसे सहसा धारण करने में असमर्थ होगा, उसी प्रकार उच्च श्रेणी के शिष्य या श्रोता को निम्न श्रेणी का उपदेश दें तो उसकी तृप्ति ही न होगी जैसी योग्यता का चेला होगा और जितनी अधिक उसमें ग्रहण करने की शक्ति होगी, चाहना होगी, उसीके अनुसार उसको गुरू शिक्षा भी देंगे इसलिये जो योग्य शिष्य अपनी हस्ती मिटा कर दीनता की खाक व प्रेमियों के विरह भाव का स्मरण करके आँसुओं के पानी से नामरूप बीज को सींचते हैं—तब सत्संग के सुरक्षित कोट के भीतर बाहर अन्तर प्रेमियों के संग से भक्ति लता बढ़ने

लगती है, इसमें अनुराग की कोपलें, भाव के रंग बिरंगे फूल एवं सेवा रूपी स्वादिष्ट फल भी लगने लगते हैं श्रीगुरू परमेश्वर की कृपा से यह भक्ति लता मायिक ब्रह्माण्डों को पार करती हुई विरजा नदी का भी उल्लंघन कर जाती है, अब यहाँ से दो रास्ते फूटते हैं, यदि अपने ही विश्राम, सुख, औरकाम का जागरण हो गया, तब तो यहीं डूब जाता है, परन्तु जिसके मन में उत्कट उत्कंठा जग रही है, और जिनकी भक्ति लता का प्रेम फल पाने के लिये स्वयं प्रियतम भी ललचते मचलते रहते हैं, उनकी भक्ति बेलि दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती २ अपने इष्टदेव के धाम में पहुँच प्राण प्रियतम के चरण कमल रूप कल्प वृक्ष से लिपटकर नित्य नये रंग रसमय मधुर फल प्रियतम को चखाती है, वह कैसे हैं ? जिनमें गुठली, छिलके और रेशे का नाम मात्र भी नहीं है ! केवल रस ही रस भरा रहता है परन्तु यह कार्य संतों की कृपा बिना एवं दिल से दिल मिलाये बगैर हो ही नहीं सकता संतों के हृदय से प्रवाहित उपदेश रस के रंग में अपने जीवन को रंग देना उनकी आँखों के इशारों के ताल पर नृत्य करना एवं संतों के हृदय के प्यार, प्यास, भाव एवं साधना को अपनाना ही दिल से दिल मिलाना कहलाता है । यही भगवत प्राप्ति का यत्न है, सद्गुरू की कृपा से क्या नहीं हो सकता, वह तो बिन्दु को सिन्धु तृण को कल्पवृक्ष, नागफनी को चन्दन, लोहे को सोना, मुरदे से जिन्दा, एवं जड़ से चैतन्य बना सकते हैं—यदि जीव सच्चे हृदय से साधना करता हुआ ईश्वर की तरफ चले तो ईश्वरके पास पहुंचने में उसको हजारों वर्ष लग सकते हैं और मुरशद (गुरू) की मेहर हो जाय, तो विषय में फँसा हुआ जीव भी बिना किसी साधना के दस वर्ष, दस महीने, दस दिन, दस घड़ी अथवा दस ही पल में ईश्वर से मिल सकता हैं, यह कब हो सकता है ? जब कि साधक श्री गुरूदेव

की ताड़ना को पिता के प्यार से भी अधिक माने—अर्थात् आज्ञा को कभी न तो टाले न भंग करे, और न कभी तर्कवितर्क द्वारा उनको तंग करे, यदि कोई गुरुजनों के बचनों की अवहेलना करे साधु पुरुषों का तिरस्कार करे अपने हित की बात कहने में भी जिसे बुरी लगे, अपने हितैषियों को भी जो कोई शत्रु समझे पूज्यों के लिये भी जो कोई कुवाक्य बोलै तो समझ लेना चाहिये कि उसका बिनाश समीप है, मृत्यु के बश में होकर अपना सर्वस्व नष्ट करने के लिये ही मनुष्य ऐसे २ आचरण करता है इसके अतिरिक्त जो अपने हित में सदा रत रहते हों वह यदि हमारे दुर्व्यवहार से दुखी होकर हमें परित्याग कर चले जावें और हमें उनके जाने पर पश्चाताप न हो तो निश्चय समझ लेना चाहिये कि हमारा कल्याण नहीं। संसारके सभी मत मजहब एवं सभी सम्प्रदाय जीव को भगवान के समीप पहुंचाने के निमित्त ही तो बने हैं उनके बाहरी रूप में ,चाहे जितना भी भेद भाव हो परन्तु भीतरी वस्तु (भगवत प्रेम) तथा (भगवत स्वरूप) में कोई अन्तर नहीं सबके दिलों में तो ईश्वर ही धड़क रहा है सब की सांसों पर ईश्वर ही झूला झूल रहा है, सबकी मनोवृत्तियों के साथ वही नाच रहा है और सब की बुद्धि में वही जज बनकर बैठा हुआ है—उसको हिन्दू मुसलमान, यहूदी, ईसाई की कोई पहिचान नहीं है, वह सब का है, और सब में है, जो संत लोग ईश्वर के इस स्वरूप को पहिचान लेते हैं वह किसी के साथ राग द्वेष की तो चर्चा ही क्या भेद भाव भी नहीं करते, वे तो सभी की सच्चाई और ईमानदारी का आदर करते हैं चाहे वह किसी भी धर्म के क्यों न हों!

जो ईश्वर के पास पहुँच चुके हैं वह समर्थ पुरुष सब एक रूप हैं सभी संत और दरवेष प्रभु के घर से ही तो आते हैं—एक ही परमात्मा के अनेक वेष हैं और जैसे रंग बिरंगी

गायों का दूध एक ही किस्म का होता है उसी प्रकार आत्मा और परमात्मा भी एक ही हैं दो नहीं ।

सज्जनों ! जैसे एक ही बिजली घर से लाखों तार निकल कर करोड़ों बल्बों को रोशनी देते हैं । कहीं नीले, कहीं पीले, कहीं हरे, कहीं लाल, कहीं सफेद ! इसी प्रकार संसार का अज्ञानान्धकार दूर करने के लिये कहीं किसी रूप में कहीं किसी स्वरूप में भिन्न भिन्न मत और मजहब में भिन्न भिन्न रूप में संत और दरवेश प्रकट होते रहते हैं, और जैसे बायु के सम्बन्ध से पुष्प की सुगंधि नासिका तक पहुँच जाती है वैसे ही सत्यपुरुषों के सम्बन्ध और सन्सर्ग से निर्मल चित्त अनायास ही ईश्वर तक पहुँच जाते हैं ।

ईश्वर के नाम अनन्त हैं, अनन्त रूप हैं, अनन्त भाव हैं, उसे किसी नाम से भी कोई पुकारे तो वह सब की पुकार सुन लेता है, एवं किसी रूप या किसी भाव से उनकी याद करै तो वह सब की मनो कामनाओं को भी पूर्ण कर सकता है नाम और नामी में कुछ भी भेद नहीं रहता, देखिये जल एक है उसे कोई कहता है पानी, तो कोई वाटर, कोई यदि उसे आब कहता है तो कोई एकवा अगर उसे किसी ने जल कहा तो किसी ने तोय, इसी प्रकार कोई नीर भी कहता है वैसे ही भगवान को भी कोई कहता है "गाड" तो कोई "हरी" कोई कहता है राम तो कोई रहीम, कोई कहता है ईसू तो कोई कहता है अल्ला, देखिये ! वस्तु एक ही है केवल नाम में भेद है ! जरा और भी देखिये ! घर का जो मुखिया होता है उसके साथ अनेक लोगों के अनेक प्रकार के सम्बन्ध हुआ करते हैं, अगर वह किसी का बाप है तो किसी का चाचा भी यदि किसी का मामा है तो किसी का भाई, किसी का ससुर है तो किसी का समधी, किसी का साला है तो किसी

का बहनोई, किसी का गुरू है तो किसी का शिष्य भी होता है। वैसे ही परमात्मा भी एक है उसकी अनेक लोग अनेक भावों से उपासना करते हैं।



❀ सत्संग ❀

कीर्तन तथा श्री राम नाम की महिमा

सत्संग सुगम एवं उत्तम साधन है, सत्संग में भक्तों के दिव्य नाम गुण एवं लीला चरित्रों का मधुर वर्णन होता है। जो कि मानव जीवन का सार है। थोड़ा खाकर अधिक चबाने से अधिक स्वाद बढ़ता है, इसलिये जितना भी सत्संग करें उससे दुगुना मनन भी करें जैसे नींव के बिना महल का टिकना असम्भव है, वैसे मनन के बिना सत्संग का टिकना भी मुश्किल है और जैसे भोजन के एक एक ग्रास से भूख मिटती है तृप्ति होती है, एवं शरीर का बल भी बढ़ता है, वैसे ही सत्संग की जुगाली करने से विषय की भूख मिटती है। रस की वृद्धि होती है, एवं प्रेम का एक एक अँग परिपुष्ट होता है।

"धन दारा और सम्पदा-पापी हू के घर होय !
सत्संगति और हरि कथा-तुलसी दुर्लभ दोय ॥"

संसारी भोग विषय की वस्तुएं तो कूकर शूकर सभी योनियों में प्राप्त हो सकती हैं किन्तु सत्संगति (भगवत चर्चा) यह तो मनुष्य योनि में ही सम्भव है जिसे एक बार भी सत्संगत का

रस मिल गया। उसे तो फिर मुक्ति की इच्छा भी नहीं रह जाती। साधु समागम एवं सत्संग तो परम भाग्यशाली पुरुषों को ही प्राप्त होता है। यदि हम संसारी कार्य्यों में से कुछ समय निकाल कर भगवान के सन्मुख रोवें उनके मधुर नामों को आर्त होकर पुकारें तो फिर हमारे जीवन में आनन्द की हिलोरें उठने लगें, इसलिये "जब तलक है जिन्दगी फुरसत न होगी काम से कुछ समय थोड़ा बचा कर प्रेम करलो "श्री सीताराम से" यह संसारी कार्य कभी समाप्त नहीं होंगे! एक के बाद दूसरा दूसरे के बाद तीसरा कार्य लगा ही रहेगा इसलिये कुछ समय नियमित रूप से देना चाहिये। जब कि वे व्यर्थ कार्यों के लिये समय निकाल लेते हैं तो बड़े आश्चर्य की बात है कि भगवत चर्चा के लिये उनको समय क्यों नहीं मिलता। देखिये जब आप हाथों से काम करते हैं, तब मुख तो खाली रहता है मुख से भगवान का नाम उच्चारण करते चलो आप का कल्याण हो जायगा। शास्त्रों में लिखा है कि संसार रूपी सर्प से काटे हुये प्राणी की एक मात्र यही औषधी है कि सभी अवस्थाओं में सब स्थानों में सभी समय भगवान के नामों का कीर्तन करें, यहाँ तक कि पाखाने में और सब बातें बोलना तो निषेध है परन्तु भगवत नाम लेना वहां भी निषेध नहीं है भगवन् नाम लेने में शुचि अशुचि पात्र कुपात्र देश काल आदि का कोई भी नियम लागू नहीं है, जप तो जितना ही शनैः शनैः किया जाय उतना ही श्रेष्ठ है परन्तु कीर्तन जितना ही उच्चस्वर में किया जावे उतना ही लाभप्रद है स्वयं भी अपने कानों को सुनाई दे और आस पास के जितने भी पशु पक्षी नर नारी जड़ चैतन्य सुनेंगे, उन सब का भी कल्याण होगा।

श्री हनुमान जी महाराज की प्रतिज्ञा है कि भगवान के नाम को कोई कैसे भी किसी भी देश में कहीं भी लेगा तो मैं उसकी

रक्षा करूँगा, जब कि नाम जापकों के सिर पर इतना प्रबल पराक्रमी बरद हस्त है, तब तो सब को निर्भय होकर भगवन् नाम का कीर्तन करना ही चाहिये। दूसरे साधनों में तो विधि-हीन होने से उनका उलटा फल बतलाया है, परन्तु भगवन् नाम से कभी भी किसी अवस्था में हानि नहीं हो सकती! देखिये! नाम में स्वयं सामर्थ है आप किसी भी आदमी का नाम लेकर पुकारें तो वह शीघ्र आप से मिलेगा क्योंकि वह चेतन्य है। सभी वर्णों के लोग श्री सीता राम नाम के प्रताप से संसार बन्धन से सदा के लिये छूट सकते हैं, नाम जप करने वालों की चिन्ता नामी को स्वयं रहती है, देखिये! अजामिल, गज, द्रोपदी आदि की कथा। शब्द का भारी प्रभाव होता है, आप किसी अनजान आदमी को जरा साला तो कहदो देखिये! उस पर कितना बुरा प्रभाव पड़ेगा, वह अगर क्रोधी हुवा तो आप की भली भांति पूजा भी कर देगा। जब कि एक साधारण शब्द बिना सम्बन्ध के उच्चारण करने से अपना प्रभाव दिखलाता है तो जो नाम रस विग्रह चेतन नित्य चिन्तामणि है तो क्यों वह अपना प्रभाव नहीं दिखलायेगा?

"प्रायश्चित सब पाप का श्री सीताराम नाम है,
तुम उच्चारण भर करो-फिर तो नाम को काम है।"

अनन्त कोटि ब्रमाण्ड नायक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र महाराज के नाम की महिमा को भला दूसरा कोई क्या वर्णन कर सकता है, जब कि स्वयं—

"राम न सकैं नाम गुण गाई"!

विपुल वैभव एवं अटूट सम्पति भी किसी के सुख का कारण नहीं हो सकती, अगर ऐसा होता तो बड़े २ राजे महाराजे धन सम्पत्ति पर लात मार कर उसको ठुकराकर

भगवान् की प्राप्ति के लिये वन में न चले जाते ! सज्जनो ! सुख तो निरन्तर भगवान का नाम लेने से ही मिल सकता है—

"तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र किये दान,
मन पवित्र हरि भजन में होत त्रिविधि कल्याण"
"लेने को हरि नाम है देने को अन्नदान,
तरने को आधीनता और डूबने को अभिमान ॥"
"राम नाम को सुमिरले-हंस के भावैं खीझ,
उल्टा सुलटा उपजै ज्यों खेतन में बीज"

एक जमाना था कि आर्य लोग अपने प्यारे प्रभु श्री रामजी के प्रेम में हमेशा मग्न रहते थे राम नाम में प्रेम और भक्ति दिखाते हुये श्रद्धा और विश्वास की जंजीर में जकड़े भगवान का गुण गान करते थे श्री राम नाम को समस्त जंत्र तंत्र और मंत्रों का सिरताज और मुकुट मणि मानते थे उनको पूर्ण विश्वास था कि

"जभी नाम हृदय धरयो भयो पाप का नास,
मानो चिनगी अग्नि की पड़ी पुराने घास"।

श्री राम नाम को सबसे श्रेष्ट और सर्व गुणों का आधार समझते थे।

❋ कुंडलिया ❋

हिन्दू होय के न सुने राम कथा सुख सार,
ताके सिर पै दीजिये दस हजार पैजार (जूता)।
दस हजार पैजार, मुख पर करखा दीजै,
दे गरदन में हाथ शहर से बाहर कीजै।
कहैं गिरिधर कविराय सुनो हो कुन्दू,
राम कथा न सुने ससुर काहे का हिन्दू।

ऐसे परम कल्याण प्रद भगवान के मधुर नामों को जो कोई

नहीं भजता वह चौरासी लाख योनियों में भटक भटक कर हमेशा जन्मता मरता रहता है !

" बिन राम कहीं आराम नहीं, इसमें शक और कलाम नहीं।
इस दम का कोई कयाम नहीं, है आज सुबह तो शाम नहीं।"

इस असार संसार सागर की दुखद तरंगों में अनादि काल से भटकते हुये दीन प्राणियों के कल्याण के लिये जहां शास्त्रों में अनेक उपाये बताये हैं, वहाँ श्रुतियाँ, स्मृतियाँ तथा स्मृतिकार महात्माओं ने इस कठिन कलिकाल में केवल श्री राम भक्ति एवं श्री राम नाम को ही एक मात्र समस्त जीवों के उद्धार का अन्तिम साधन कहा है।

"बैठत सभा सबही हरि जू की कौन बड़ो को छोट,
सूरदास पारस के परसे मिटत लोह की खोट।"

"तब कर मत खगनायक एहा, करिय राम पद पंकज नेहा।"

आग का गुण जलाना है चाहे उसको कोई जाने या न जाने, इसी प्रकार श्री राम नाम का गुण भी पाप पुण्य दोनों को जलाना है, जब तक पाप और पुण्य का खाता बेबाक नहीं होता तब तक प्रभु का दीदार कहाँ ? और उनके दीदार बिना भला परमपद को प्राप्ति कहाँ ?

"धरती बिनु धीरज कौन धरे, माता बिनु आदर कौन करे।
बरषा बिनु सागर कौन भरै, श्री राम बिनु दुख कौन हरै"।

भगवान के सभी रूप और सभी नाम प्रभावशाली हैं, उनमें छोटा बड़ा किसे बताया जाय। पारस का पत्थर जिसके हाथ लग जाता है, तब तो वह काँच की चमक दमक की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखता, इसलिये !

"नाम हरी का मुख से प्यारे, कभी भुलाना न चाहिये,
पाकर नर तन बदन रतन को खाक मिलाना न चाहिये।

"विद्यापढ़ उपदेश करो - गर धन होये कुछ दान करो,
शरीर में यदि बल है - तो निर्बल का कल्याण करो ।"
"चाहो यदि कल्याण जगत में-तो सियवर का ध्यान धरो,
चला गया दसशीश यहाँ से - शान बढ़ाना न चहिये ।"

सब शास्त्रों का सार एवं निचोड़ यही है कि भगवत भजन को ही परम धन समझ कर भगवान से ही सनेह और प्रेम करै, कुटुम्ब के लोगों में आसक्त न होकर उनसे निर्वाह मात्र ही संसर्ग रखै, और—

"जाके प्रिय न राम बैदेही,
तजिये ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही ।"

देखिये ! जहाँ से मूत्र उत्पन्न होता है वहाँ से पुत्र भी उत्पन्न होता है । यदि वह अपने अनुकूल है, भगवत भक्त है, कुल वंश की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला है तब तो वह पुत्र है, नहीं तो मूत्र की भाँति त्यागने योग्य है, ऐसे नास्तिक और अन्यायी पुत्र, मित्र अथवा सम्बन्धी को तो त्याग देना ही धर्म और न्याय है, कारण कि भगवत विमुख का मुख देखना भी महापाप है ।

पाठको ! संसार में बहुत से विषयी लोग बहुत दिन तक जीते हैं परन्तु उनके जीने से क्या लाभ, दिन हुआ गोरख धन्धे में लग गये, अनेक सुन्दर सुन्दर पदार्थों को खा पीकर विष्टा तथा मूत्र बना डाला, सुअरनी एवं कुतिया की तरह व्यर्थ बच्चे पैदा कर डाले, जिनका पालन पोशन करना भी मुश्किल हो गया उधर तो दिन भर झूँठ मूँठ बेईमानी एवं ठगी से लोगों को खूब लूटा और ठगा । और पेट भरकर रात्रि में पलंग पर लगाई मशहरी और लस्त होकर तान दुपट्टा सो गये । इसी प्रकार बचपन गया, जवानी आई । जवानी गई, बुढ़ापा आया । और अन्त में मर गये । जिस जीवन में साधना नहीं, भजन नहीं, सत्संग नहीं रात दिन पेट भरने की ही चिन्ता सवार है, और जब देखो

विषय वासनाओं की ही चर्चा चल रही है तो ऐसे लोग चाहे जन्मते ही मर जावें, चाहे १०० वर्ष जी कर मरें उनसे लाभ ही क्या ? उन्हें तो हर दम आहार निद्रा और मैथुन का ही भूत सवार रहेगा !

"कोटि कल्प को काल हूं भक्ति बिना बेकार है,
क्षण भर हरी हृदय में वसै सो ही समय सुखसार है ।

इसलिये जिनका समय भगवत भजन में व्यतीत हुआ उन्हीं की आयु सार्थक समझो और जिन्होंने मनुष्य तन का यथार्थ कर्त्तव्य समझकर विषय भोगों को नाशवान क्षण भंगुर एवं संसार में फंसाने वाला जानकर उनको परित्याग कर श्री सीताराम जी के कोमल चरणारविन्दों में ही चित्त को लगा लिया हो तो ऐसे बड़ भागियों के लिये केवल एक मुहूर्त का जीवन भी बहुत है उसी में वह अपना कल्याण कर सकते हैं और जो भगवान से विमुख हुये उन्हीं की दुर्दशा होती है ।

"श्री सीताराम बिनु जीवन जीवन नहीं कहावै,
भक्ति हीन नर मृतक सरिस होय काल वितावै ।"

भगवत कृपा—

वह मनुष्य एवं संत जन धन्य हैं जिनके मुख से मृत्युकाल में मनमोहन प्यारे श्री सीताराम जू के सुमधुर नामों का उच्चारण हो जाता है । फिर उनके भाग्य का तो कहना ही क्या जिन्हें अन्तकाल में उन श्याम गौर श्री जुगुल सरकार की हृदय मानस में बांकी झांकी हो जाती है । अनन्त काल तक जप, तप, पूजा, पाठ, एवं ज्ञान ध्यान इत्यादि करने का एक मात्र उद्देश्य यही है कि अन्त समय भगवान के सुमधुर नामों का इस जिह्वा से उच्चारण हो जाय । और मन में उनकी काले काले घुंघराले, चिकने बालों वाली विश्व मोहनी झांकी एक बार समा जाय तो

हमारे सभी साधन एवं जीवन भी सुफल हो जायँ। योगी जन जिनके एक बार के दर्शनों के निमित्त सहस्रों युग तपस्यचर्य्या करते हैं, अन्त समय में जिनके नाम का संकीर्तन करने से और मन में भी भावमयी जिनकी छटा आने से सभी कर्म बन्धनों से छूट जाते हैं। और ज्ञानी, ध्यानी, नीति विशारद, भक्ति तत्व के ज्ञाता, इस भूमण्डल में विचर विचर कर उस प्रभु का जगत-मंगल नाम उच्चारण करते हैं वही भगवान अपने भक्तों के सम्मुख स्वयं साक्षात साकार रूप से इन चर्म चक्षुओं के सामने ही उपस्थित हो जाया करते हैं, वह सौभाग्य किसी साधन के द्वारा साध्य नहीं हो सकता, यह तो एक मात्र भगवान की कृपा पर ही निर्भर है।

चिन्ता—

चिन्ता चिता बराबर होती है। इसलिये—

"चिन्ता ताकी कीजिये जो अन होनी होय।
यह मारग संसार का "नानक" थिर न कोय॥"

संसार के दुःख में डूब जाना व्योहारी कुसंगी लोगों का काम है। यदि सत्संगी लोग भी अधिक चिन्तित एवं व्याकुल होने लगें तो फिर सत्संग से लाभ ही क्या हुआ? मनुष्य को चिन्ता तो केवल परम पिता परमेश्वर की प्राप्ति करने के लिये करना ही उचित है कोई अतिथि अथवा अभ्यागत जिसके घर द्वार से खाली लौट जाय तब चिन्ता करनी चाहिये, कारण कि इनका घर से खाली हाथ लौट जाना भारी अनर्थ एवं अमंगल का सूचक होता है। हर समय भगवान के दरबार में विनय प्रार्थना करने से हृदय की समस्त व्यथा चिन्ता एवं दुःख दर्द पानी बनकर आँखों से बह बह कर निकल जाता है। चिन्ता चिता को हृदय में कभी जगह न देनी चाहिये। संतों का

सत्संग उदारता, भगवत भजन, भगवान के सामने प्रार्थना एवं अपराधों की क्षमा करने कराने से चिन्ता कोसों दूर भाग जाती है और डर व भय यदि रक्खे तो भगवान का ही डर रक्खे, इस प्रकार का डर मनुष्य को संसार में निडर ही बना देता है। जो भगवान से डरेगा वह कपट अन्याय एवं असत्य को आचरण में नहीं लायेगा, धर्म से डिगने का भय एवं परलोक के बिगड़ने का भय यही भय ऐसे हैं जो कि मनुष्य को संसार यात्रा में अभय बनाते हैं। भगवत कृपा से ही मनुष्य अभय पद की प्राप्ति करके यथार्थ सुख और शान्ति के जीवन को व्यतीत कर सकता है।

नियम का पालन—

नियम का पालन करना भी आवश्यक है, नित्य नियम का पालन न करना मानो प्रेम देव का अनादर ही करना है कारण कि नियम के समय प्रेमदेव पदार्पण करते हैं। और जब अपने प्रिय को किसी दूसरे व्यवहार में लगा देखते हैं, तो प्रभु निराश होकर लौट जाते हैं, तथा श्री हनुमान जी महराज जो भगवत कथा सुनने के रसिक हैं उनको भी भारी खेद होता है। इसलिये भूल करके भी नियम से कभी न चूके—

"राम कथा जहँ होत है, तहाँ तहाँ पवनकुमार,
सिर पर अँजुली धर सुनत, बहत नैन जल धार।"

श्री महाप्रसाद महात्म—

अहा! श्री महाप्रसाद के महात्म का भी क्या कहना! हरी हरी कोमल तुलसी मंजरी सहित शुद्धता से बनाई हुई रसोई में जब डाल कर भगवान के अर्पण की जाय, तो उसी प्रसाद को महाप्रसाद कहते हैं। और जब उस महाप्रसाद को संत एवं भगवत भक्त पालें उनके पाने के बाद जो शेष रह जाय उसको महा,

महाप्रसाद कहते हैं, उस प्रसाद को उनकी ही आज्ञा से श्रद्धा भक्ति के सहित पाने से सभी प्रकार के पापों का नाश होकर, अन्तः करण की मलीनता भी दूर होकर हृदय शुद्ध बन जाता है।

प्रारब्ध—

यह जीव अपने कर्मानुसार ऊँच नीच योनियों में आता है प्रारब्ध का यही चक्कर है, लीलाधारी की यही लीला एवं खिलाड़ी का यही खेल है, मायापति की यही माया है, यही कर्मचक्कर संसार को चला रहा है।

यह पुन्य पाप ही अनेक योनियों में जीव को भरमा रहे हैं कायिक, वाचिक, एवं मानसिक यह तीन प्रकार के पाप पुन्य हुआ करते हैं यह शारीरिक दुःख सुख दोनों प्रारब्धानुसार ही आते जाते रहते हैं। जिस योनि में मनुष्य जाता है न चाहना करने पर भी प्रारब्ध उनके साथ ही साथ रहती है, और उसी के अनुसार सुख दुःख भी होते हैं! उसकी चिन्ता करो तो मिलेंगे और न चिन्ता करने पर भी जरूर मिलेंगे! इस लिये हर एक मनुष्य को सदा भगवान के भरोसे पर निश्चिन्त रहना चाहिये, और संसार में किसी पुरुष से कोई आशा न रखकर भगवान का भजन करना चाहिये. जो लोग भगवान के भरोसे पर ही रहते हैं और जिन्होंने अपना शरीर मन और प्राण प्रभु के पाद पद्मों में अर्पण कर दिया है प्रभु उनके किसी भी मनोरथ को विफल न करते हुये अवश्य उनके मन की समस्त इच्छाओं को पूरा करते हैं। जिनको प्रभु का विश्वास है, वह सुखी रहता है और जब विश्वास को खो कर अधीर हो बैठता है तभी दुख पाता है जिसका यह अटल निश्चय बना रहता है कि सर्वान्तर्यामी भगवान किसी न

किसी रूप में आकर मेरे मनोरथ को अवश्य पूर्ण करेंगे, तब तो न जाने कैसे इन के समस्त कार्य किसी को निमित बना कर पूर्ण हो जाते हैं एक बार नहीं सैकड़ों बार का यह अनुभव है, "पहले बनी प्रारब्ध पीछे बना शरीर"। विधाता ने जो कुछ भी हमारे भाग्य में लिख दिया है, वह चाहे कहीं जा बैठो अवश्य मिल ही जायगा। और इससे अधिक स्वर्ण की खान में भी जाने पर हाथ न आयेगा। इसलिये—

ग़मे रोजी मखुर बरहम मजन, औराके दफ़्तर रा,
के पेशअजतिफ्ल ऐजद पुर कुनद पिसताने मादरां"।

संसारी भोग भी तो प्रब्धानुसार ही होते हैं, इसलिये साधु पुरुष इनके आने पर अत्यन्त हर्ष नहीं मानते, और न चले जाने पर विषाद! वह तो यह समझते हैं जो हमारे भाग्य का होगा, जो हमारी प्रारब्ध का होगा उसे तो कोई ले नहीं सकता, मेट नहीं सकता, त्रिकाल में भी वह दूसरे का हो नहीं सकता, और जो भोग हमारे प्रारब्ध का नहीं है, वह किसी भी प्रयत्न से किसी भी उपाय से किसी भी पुरुषार्थ से हमें मिल नहीं सकता। मनुष्य के जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म भगवान के सम्मुख होते ही भस्म हो जाते हैं।

क्रियमाण कर्म—

मनुष्य जो पाप करते हैं वह भजन करने से इस तरह से खतम हो जाते हैं कि उसकी निन्दा करने वाला तो उसके पापों को और उसकी प्रशंसा करने वाला उसके पुण्यों को अपने माथे पर ले लेता है। तब तो उसका खाता बेबाक अर्थात् चुकता हो जाता है और वह मनुष्य भजन के प्रताप से निर्लेप होकर जल में कमल के पत्ते की तरह अपना जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करने लगता है।

प्रारब्ध भोग—

प्रारब्ध भोग उसको कहते हैं कि उसके संचित कर्मों में से कुछ पुन्य ले कर कर्मों के भोगने के लिये मनुष्य का जन्म हुआ करता है। अच्छे बुरे कर्म जरूर भोगने ही पड़ते है, अच्छे का फल सुख और और बुरे कर्मों का फल दुख मिलता है। यदि कोई हमको सुख देता है तो वह हमारा हितकारी है और दुख देता है तो हमारा शत्रु है, यह कभी न समझना चाहिये। क्यों कि सुख दुख देने वाला कोई नहीं! सुख दुख अपने अपने कर्मों का भोग है।

"कोऊ न काहू सुख दुख कर दाता, निजकृत कर्म भोग सब भ्राता।"

काल की महिमा—

धर्म करने से सुख और पाप करने से दुख ही मिला करता है यदि किसी को धर्म करने से भी दुख मिले तो इसमें भी किसी को दोष न देकर भगवान की कृपा ही समझैं भगवत लीला, काल की महिमा एवं प्रारब्ध कर्मों का भोग बड़ा ही प्रबल होता है, जोकि टल नहीं सकता, देखिये! पांडवों के पास यद्यपि धर्म, कलाकौशल, बल, सहायक, एवं समुचित साधन सामग्री उपस्थित थीं जिनके सहायक सम्पूर्ण संसार के स्वामी सर्व सामर्थ सच्चिदानन्द स्वरूप साक्षात श्याम सुन्दर ही थे। उनसे बढ़ कर सहायक भला और कौन हो सकता है? यह उनके केवल सहायक ही नहीं थे सखा, स्वामी, सुहृद, सेवक सभी कुछ थे, देखिये! इतना सब होने पर भी पाण्डवों को दुख भोगने पड़े मुट्ठी भर अन्न की आशा से कृपण गृहस्थियों के द्वार द्वार पर खड़े होकर याचना करनी पड़ी बारह वर्ष तक बन बन भटकते फिरे क्लेशों को सहते हुये जंगलों में घूमते रहे, भाइयो! इसी से हमको इस परिणाम पर पहुँचना पड़ता है, कि काल

की गति दुर्निवार है, यह काल इन भगवान से कोई दूसरे देव हों ऐसी बात नहीं, यही काल स्वरूप भगवान कब किस से क्या कौतुक कराते हैं इसको उनकी कृपा बिना कोई जान ही नहीं सकता, इसलिये दुखों और कष्टों से घबड़ाना नहीं चाहिये किंतु इसको भी भगवत की कृपा ही मान कर सहना चाहिये। कारण कि जैसे सोना तपाया जाने पर और भी खरा हो जाता है वैसे ही कष्टों से तप तपा कर उनका भक्तिरूपी स्वर्ण भी अधिकाधिक उज्वल, निर्मल एवं महा उच्चश्रेणी का होने लगता है, इसलिये भगवदानुरागी धीरजवान पुरुष महान कष्टों के पड़ने पर भी धीरता का परित्याग नहीं करते। बल्कि भगवान के अनन्य प्रेमी रसिकजन तो सदा भगवान से सुख की चाहना न करते हुये दुख एवं विपत्ति की ही याचना किया करते हैं। वह तो कहते हैं कि हे भगवन्! मुझे शक्ति दो कि मेरे नेत्र आप की जुगल माधुरी का निरन्तर पान करते रहें वाणी आप के गुणानवाद में लगी रहे, चित्त में आप की माधुरी मूर्ति बसी रहे, मन आप के ही ध्यान में मग्न रहे! फिर तो मुझे और चाहिये क्या मैंने तो सब कुछ पा लिया, अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाते हुये शरीर का सम्पूर्ण कर्त्तव्य कार्य भी कर लिया, कृपया अपने श्री चरणारविन्दो में मुझे सदा के लिये आसरा देते हुये निरन्तर अपनी चरण सेवा में रखलें और जहाँ तक हो सके मुझे विपत्ति एवं दुख ही दुख दें, कारणकि इन्हीं विपत्तियों के द्वारा ही तो आपके शुभ दर्शन होते हैं, सुख में भला आप की याद ही कब आती है? इस लिये मैं उन अनित्य क्षण भंगुर तुच्छ नाशवान सुखों को लेकर क्या करूं भगवान्! जो आप से मुझे प्रथक करदें, प्यारे प्रीतम विपत्तियों ने ही तो मुझे आप की शरण में जाना सिखाया। जब कि सुखों ने आप से विमुख बना कर प्रथक कर डाला, जो सम्पति

एवं सुख आप के श्री चरणों से दूर करै आप की भक्ति तथा चरण सेवा छुड़ावे आप से प्रथक करावै वही तो मेरे लिये घोर विपति हैं इसलिये ऐसे

"सुख के सिर पर सिल पड़े जो तुमको बिसराय,
बलिहारी वा दुख की जो तव चरणन में लाय"।

प्रत्येक कार्य में कारण छिपा रहता है—कारण से ही कार्य प्रकट होता है किसी बीज का बोना कारण है उससे पेड़ उत्पन्न हो कर फल फूल इत्यादि का मिलना यह कार्य हुआ। इसी प्रकार पाप पुन्य बीज हैं, और सुख दुख उसके फल हैं। जो कि सभी को भोगने ही पड़ते हैं, कारण के बिना कोई कार्य होता ही नहीं, इस लिये प्रत्येक कार्य का कारण सोचने से मनुष्य की सभी शंकायें दूर हो सकती हैं।

यह जीव अच्छा बुरा जो कुछ भी कार्य करता है सब भगवान की प्रेरणा से ही करता है संसार में ज्ञानी अज्ञानी सब लोग प्रभु प्रेरित होकर ही कार्य कर रहे हैं अन्तर केवल इतना है कि ज्ञानी तो इस रहस्य को समझता है। और अज्ञानी अहंकार के वशीभूत होकर अपने को ही कर्त्ता मान बैठता है, अज्ञानी जनों को इस बहुरूपी माया ने ही ठग लिया है। जब अकर्ता होकर भी अपने को कर्त्ता मान लेता है तभी तो उसे दुखों का भी भागी बनना पड़ता है। देखा! माया के पाश में बँध कर जीव कैसा भूल जाता है। मायापति भगवान की मोहनी माया का प्रभाव बड़ा अद्भुत होता है, वह जिससे जब जो कुछ कराना चाहते हैं तब उसकी वैसी बुद्धि भी बना देते हैं इसी का नाम है माया का चक्कर! जरा देखिये तो श्री राम जी एवं रावण में कितना अन्तर है, जितना सिंह और सियार में, समुद्र और नाले में, अमृत और कांजी में, सोने और लोहे में, चन्दन और कीचड़ में

हाथी व विलार में, गरुड़ तथा कौवे में, हँस एवं गीध में, परन्तु रावण ने अपने घमण्ड से धन के मद और जवानी की मस्ती में चूर होकर भगवान श्री रामजी महाराज को कुछ नहीं समझा। माया के फन्दे में फँस जाने के कारण ही तो "एक समय जिस रावण के हाजिर त्रिलोक रहे, एक समय दसों शीश कटे फिरे रण में" इसलिये माया को छोड़कर मायापति मनमोहन प्यारे श्री सीताराम जी से ही पहिचान करो उन्हीं से प्रेम करो, उन्हीं के गुणों का गान करो, फिर माया तो अपने प्यारे की दासी है, वह लजाती हुई भाग जायगी। तब तुम माया के परदे को फाड़कर भगवान की गोदी में स्थान पा जाओगे, उस समय शोक मोह तो काफूर हो जायगें, इधर जरा मरण के चक्कर में फंसने से भी छूट जाओगे और भक्ति रूपी आनन्द के सागर में पड़े पड़े अमृत का पान करते हुये सदा सच्चे सुख का अनुभव भी करते रहोगे।

निष्काम कर्म—किसी के द्वारा मान प्राप्त होने पर फूलो मत, और अपमान मिलने पर अपने आप को भूलो मत! संसारी लोक लाज को तिलाञ्जलि देने से ही भगवान में प्रेम हो सकता है, जिस प्रकार श्री गंगाजी सर्वदा पापी प्राणियों के पापों को धोती रहती हैं, उसी प्रकार संतों के सत्संग से सभी प्रकार के सन्ताप एवं दुख दर्द भी दूर हो जाते हैं। यदि संत जन इस धरा धाम पर विचरण करके हम जैसे संशयग्रस्त जीवों के संशयों का चूर्ण न करते तो यह सभी प्राणी सदा संशय सागर में डूबते हुये तड़पते रहते, याद रखो! पाप कर्म से दुख उठाना पड़ता है। जब कि पुन्य कर्मों से सुख की प्राप्ति होती है, इसलिये जैसे पापकर्म बन्धन हैं उसी तरह पुन्य कर्म भी बन्धन ही समझो, एक अगर मूँज की रस्सी है तो दूसरी रेशम की,

मनुष्य बँधता दोनों से ही रहेगा, बन्धन में अन्तर नहीं है इस-लिये मुक्ति पाने की इच्छा करने वालों को सभी प्रकार के कर्मों का त्याग भी करना पड़ेगा, सब कर्मों को करते समय उन्हें भगवत सेवा समझें, और प्रत्येक कार्य करके "श्री सीता रामचन्द्रार्पण मस्तु" कह दिया करें अर्थात यह कर्म श्री सीताराम जी के अर्पण है इस कर्म के करने से आप प्रसन्न हों, यह कर्म आपके ही निमित्त है, मैं न इसका कर्त्ता हूँ और न भोक्ता ! ऐसा करने से वह कर्म निष्फल हो जाता है भगवान के सम्र्पण होने से निर्बीज बन जाता है, मतलब यह है कि वह भुन जाता है, जैसे उर्वरा भूमि में पानी पाकर पड़ा हुआ बीज जरूर ही उग आवेगा किन्तु आप उसी बीज को अगर भूवर में भून डालें तो फिर कितना भी पानी दें, खाद डालें, वह कभी उगने का नहीं। इसी प्रकार निष्काम कर्म भगवत प्रसन्नता के लिये किया गया श्री राम प्रेम एवं भक्ति को ही उत्पन्न करेगा। इसलिये भगवान के प्रेमी जन तो अपने समस्त कर्मों को भगवान के ही अर्पण कर भगवान को प्राप्त होते और जब तक संसार में रहते हैं तब तक समस्त चिन्ता और शोक को त्याग मस्त होकर श्री राम गुण का गान करते हुये स्वच्छन्द होकर विचरा करते हैं, अहा ! ऐसे पुरुष धन्य हैं उनका वैराग्य ज्ञान एवं भगवत प्रेम सराहनीय है यदि जीवन हो तो ऐसा ही हो। संत जन सबसे प्रथम विषयों में बार बार दुख को देखकर उससे मन को हटाते हैं और भगवान में पूर्ण सुख समझ कर उनमें मन लगाने का प्रयत्न करते हैं यही वैराग्य और अभ्यास है वैराग्य के बढ़ने से भगवान में प्रेम बढ़ता है और जिस समय भगवान का कुछ असली आनन्द प्राप्त होता है तब तो लोक और परलोक के सभी भोग पदार्थ फीके मालूम पड़ने लगते हैं। मन को अधर्म से हटाना और धर्म में लगाना ही वैराग्य है, ऐसे सच्चे वैराग्य से ही चित्त की वृत्तियों

का निरोध होता है जिसको भगवत से राग होता है उसी को विषयों से भी वैराग्य होता है। जिज्ञासु को कभी दुख से दुखी होकर अपनी मुसीबत का हाल किसी से न कहना चाहिये, क्योंकि इससे वैराग्य हलका होता है। "आपत्ती में एक एक से अहवाल कहना मुसीबत से यह है मुसीबत ज्यादा।"

भगवत का नाम और कीर्तन का फल यह है कि भूत भविष्य और वर्तमान में भी जो पाप बन गये हों, भगवत कीर्तन रूपी आग उन्हें जलाकर भस्म कर देती है और कलियुग के समस्त दोष निवृत हो जाते हैं। जिस प्रकार सिंह को देखकर मृग भाग जाता है उसी प्रकार भगवान का नाम, कीर्तन सुन कर मनुष्य के समस्त पाप ताप भाग जाते हैं, देखिये! नामी से नाम बड़ा होता है। श्री कुम्भज ऋषि जी नाम के बल से समुद्र सोख गये, नल नील ने नाम के ही प्रताप से पुल बाँधा एवं श्री हनुमान जी श्री राम नाम के प्रताप से ही समुद्र फांद गये।

सज्जनो! संसार से मुक्त होने का उपाय केवल भगवत नाम उच्चारण ही है। संसारी लोग पदार्थों को देखने के लिये सूरज से प्रकाश लेते हैं, और जब सूरज नहीं रहता तब चन्द्रमा की चांदनी से काम चलाते हैं। उसके अभाव में अग्नि से काम लेते हैं। और जहां ये तीनों न हों तो वहाँ शब्द प्रकाश से अर्थात् आवाज से ही काम लिया जाता है। जैसे "अरे तू इधर आ, मैं इधर खड़ा हूँ।" बस इसी तरह समझ लो कि परमात्मा सूरज, चन्द्र, और अग्नि से दिखाई नहीं देता किन्तु उसकी प्राप्ति का उपाय एक शब्द ज्योति ही है इसलिये परमात्मा श्री सीताराम जी के नाम को एक एक श्वांस में आवाज से पुकारो (उनका नाम उच्चारण करो) तब देखो कि प्रभु आप की आवाज को कितनी जल्दी सुनते हैं, यदि आपको सचमुच अपने हृदय मन्दिर में भगवान

को नचाना है तो गोपियों की तरह प्रेम दिखलाओ, आप की तो बात ही क्या है, देखिये !—

छन्द

गज के पुकारते ही ग्राह से बचाया था,
और द्रौपदी की विनय पर वस्त्र बन आया था।
अजामील पापी को पुत्र के पुकारने पर,
"'नारायण' इस नाम से ही नर्क से छुड़ाया था।
प्रहलाद के पुकारने पर जल्दी श्री राम प्यारा,
खंभ तोड़ फोड़ कर "नरसिंह बन आया था।

इस लिये श्री राम नाम रूपी अमृत का पान करो तब अमर हो जावोगे देखिये ! अमृत समुद्र में होता है यह गलत है, यदि समुद्र में अमृत होता तो समुद्र खारी क्यों होता ? और चन्द्रमा में होता तो चन्द्रमा का क्षय क्यों होता स्त्री के मुख में अमृत होता तो उसका पति पीकर अमर हो जाता, उसकी मृत्यु क्यों होती ? अगर सर्पों के फन में अमृत होता तो उनके विष क्यों होता ? और यदि स्वर्ग में अमृत होता तो वहां अल्पायु क्यों होती ? कारण कि पुन्य पूरे होने पर फिर मृत्यु लोक में आना पड़ता है, इसलिये सच्चा अमृत श्री राम नाम में तथा भक्तों के कंठ में ही रहता हैं, अगर अमर बनना चाहते हो तो इस को पी लो। जिसने अमृत पी लिया, उसे फिर संसारी वस्तुओं से क्या मतलब जिसने मिश्री का स्वाद चख लिया, तब उसे गुड़ का सीरा कब अच्छा लगेगा और जिस किसी ने गुलाब, चम्पा जुही, चमेली आदि की सुन्दर सुगन्धित फूलों की मालायें पहिन लीं फिर उन्हें कुरूप कागज के फूलों की मालायें कैसे भा सकती हैं पुरुषार्थ करना जीव का धर्म एवं कर्त्तव्य है, जब जीव पुरुषार्थ हीन बन जाता है तब भगवान किसी न किसी रूप में उसकी रक्षा जरूर करते हैं।

दान धर्म—सज्जनों ! संसार में रहकर जो आप लोग दान धर्म कर रहे हैं यह तो तुम्हारा स्वभाविक कर्त्तव्य है इसे करना ही चाहिये कर्त्तव्य करने पर उतना पुन्य नहीं होता जितना न करने पर पाप लगता है, और आप लोगों को जो यह अभिमान हो जाता है कि हम बड़े उदार और दानी हैं सच तो यह है कि न तो आप कोई देने वाले हैं और न कोई लेने वाला है, यह तो उस प्रभु की लीला है। और उस लीला क्षेत्र के आप भी एक कर्मचारी हैं, कर्त्तव्य और भावना के अनुसार वह प्रभु सब को नचा रहे हैं प्रभु ने अगर आपको अन्नदान करने के कार्य में नियुक्त किया है तो वही करना होगा इच्छा न होने पर भी करना होगा इधर जो आप का अन्न गृहण करता है अगर वह सोचे कि मैंने अपने कला कौशल एवं बुद्धिमता से यह वस्तु प्राप्त की है तो नितान्त उसकी भूल है। तुम गृहण करने वाले कौन ? भगवान ही तुम्हारे हमारे पालक पोषक एवं उद्धारक हैं, जो कुछ उन्हों ने कर्मानुसार उसके भाग्य में लिख दिया है वही मिलता है। तब तुम दिन रात उस प्यारे प्रभु का भजन, पूजन, चिन्तवन छोड़ कर उदर पोषण में क्यों निमग्न रहते हो ?:—

गम रिजिक का खा रहा क्यों अरे गाफिल,
देता है जो सब को क्या न देगा तुझ को"।
कर्म से मिलता है सब, है कर्म की महिमा अपार,
कोई कुछ देता है या लेता है, सब कर्मानुसार"।



❀ सच्चा सुख तथा शान्ति कहाँ ❀

——:❀:——

इस संसार चक्कर में फँसा हुआ जीवात्मा अज्ञानांधकार में फँसने के कारण भव सागर के दुखों को तो सहन कर रहा है परन्तु अपने स्वरूप को नहीं पहिचानता और दिन रात सच्चे सुख और शान्ति की ही चाहना किया करता है जो कि सहज और आसान काम नहीं हैं, दुनिया के खटखटे प्रभु का दरवाजा खटखटाने नहीं देते इच्छा ही मनुष्य को बरबाद करती है। चाह रूपी कीचड़ दिल से बाहर निकाल दो, जहाँ मन शुद्ध हुआ तभी सच्चा सुख और परमानन्द एवं शान्ति भी प्राप्त हो सकेगी।

"चाह चमारी चूहड़ी सब नीचों में नीच,
है तो पूर्ण ब्रह्म तू जो चाह न होती बीच"।

जहां सुख है ही नहीं वहां सुख को खोजना ऐसा है जैसे तप्त मरूभूमि में जल को समझ कर भटकना यह दुनिया सुलगती हुई भट्टी है, जिसमें दुःख की लपटें उठा करती हैं यह कोई सच्चा सुख नहीं, सच्चा सुख तो भगवान के नाम, रूप लीला, धाम एवं सत्संग में ही मिलेगा। उस प्रेम सरोवर का गोता लगाये बिना सच्चा सुख कहाँ ? परन्तु आप लोगों ने उस सरोवर में गोता लगाने का इरादा ही कब किया है। अभी तो आप सरोवर किनारे की कीच और दलदल ही में फँस रहे हैं। किसी का जन्म श्रेष्ठ कुल में हुवा। अथवा ऐश्वर्य्य, विद्या, तथा लक्ष्मी की बात तो सब मादक वस्तुएं हैं। इनके मद में रत

हुवा प्राणी किसी को भी अपने समान न समझ कर संसार में सभी का अपमान (तिरस्कार) करता है, तब वह सबके सामने प्रभु के सुमधुर नामों का निर्लज्ज होकर कीर्तन भजन कैसे कर सकता है बिना भगवान को पुकारे भगवान आते नहीं, भगवान को भूलाने वाले धन, वैभव, गुणों का अभिमान एवं इच्छायें ही हैं जिनके कारण भगवान इनके समीप नहीं आते, इसलिये हमको इन वस्तुओं की कदापि चाहना न करनी चाहिये यदि भगवान को ऐश्वर्य्य ही प्रिय होता, वैभव से ही आप प्रसन्न होते। तो आप दुर्योधन के सुन्दर एवं स्वादिष्ट छप्पन भोगों को छोड़ कर गरीब विदुर के घर सागपात खाने क्यों जाते। "दुर्योधन घर मेवा त्यागी-साग विदुर घर खायो"। इससे तो पता चलता है कि भगवान अकिंचन प्रिय है, दीनों के नाथ हैं निर्धनों के धन एवं कंगालों की सम्पति हैं, जिस किसी ने भवसागर से पार कर देने वाली औषधी का सेवन किया हो तो कोई विरला ही प्रभु प्यारा या अपनी मैय्या का दुलारा उस सच्चे सुख को जान सकता है। वह औषधी क्या है? और कहाँ मिलती है? वह प्रभु का मधुर नाम उनकी भक्ति एवं सच्चा प्रेम है यह औषधी पूर्वाचार्य्यों और उपकारी संतों के पास रहती हैं। जो कि श्रद्धालु जिज्ञासु को ही मिल सकती है, पहले मनसे विषय विकार रूपी काँटे, झांकर, कचड़ा, कूड़ा को हटा कर उसमें बोलते पुरुष श्री सीताराम जी को बसावे, जिसने चिउंटी से लेकर ब्रह्मा तक को बनाया है, तभी सच्चा सुख और शान्ति प्राप्त होगी, मगर जब तक वैराग्य रूपी सर्प नहीं काटता, तब तक होश भी नहीं आता!

सज्जनों! जब तक जगत की लालसा कम न होगी तब तक सच्चा सुख, शांति कहाँ संसार में सर्व श्रेष्ट सुख क्या है? भगवत भजन और संतों का मिलना और दुख क्या है? उनका बिछुड़ना!

धन, बल, राज पर गर्व करने वाले भोगी जन यदि अपने मुख को दर्पण द्वारा तनिक देखें तो उनको मालूम हो जायगा कि उनके भाग्य में वास्तविक सुख और शान्ति ख्याल ही ख्याल है। सच्चा सुख तथा प्रसन्नता तो इन्हें नाम मात्र छू भी नहीं गई, वह सुख जिसे संसारिक लोग सुख कहते हैं वह रोग एवं मृत्यु प्राप्त करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं।

"फिरते हैं सुख की खोज में दिन रैन,
फिर भी मिलता नहीं किसी को चैन।"
"मच रहा है जगत में हाहाकार,
रण स्थल बना हुआ है सारा संसार"।

यह संसार मदारी का थैला है, तमाशा है, झूँठा है और सब सामान जादू का है। संसार के सभी भोग्य पदार्थ अनित्य एवं बिजली की तरह चंचल हैं, शरीर भी कच्चे घड़े के समान जरा सी ठेस लगते ही नष्ट हो जाने वाला है। "कुछ भरोसा नहीं है प्राणी का, मानों एक बुलबुला है पानी का"। फिर इस झूठे संसार में सच्चा सुख कहाँ?

"सुख चाहो तो नित्य ही करिये प्रेम पुकार,
भक्ति ज्ञान बिनु हैं वृथा भोगों के भंडार"।
"सुख चाहें तो हृदय से भजें श्री सीताराम,
जगत बिछौना काल का मिथ्या स्वप्न समान"।

यह संसारी भोग्य पदार्थ क्षणिक दुखदाई नश्वर एवं बन्धन के हेतु हैं। जब तक इनसे विमुख होकर भगवान के सन्मुख हो उनसे कोई नाता जोड़कर प्रेम न करोगे तब तक इस जीव का कल्याण और सच्चा सुख कहाँ और सच्चे सुख बिना फिर शांति कहाँ? इसलिये महावीर बजरंग बली की शरण लो जो कि—

"महावीर रणधीर जगत में अंजनी पुत्र कहलाते हैं,
बाँह पकड़ कर रसिक जनों को प्रभु समीप पहुँचाते हैं।"

देखिये ! भोग्य की समस्त सामग्रियां सदा से मनुष्यों को खाती आई हैं और आगे भी खाती ही रहेंगीं। संसार में जितने भी झगड़े फसाद नजर आते हैं इन सब की जड़ भोग्य ही है। भोग्य के लिये एक जीव दूसरे को मार रहा है फिरभी मनुष्य भोग्य को नहीं भोग सकता, उल्टा भोग्य ही मनुष्य को भोग लेता है। इसलिये मनुष्य मात्र को भोगराग से बच कर भगवान की शरण लेनी चाहिये। उन्हीं के मधुर नामों का कर्तन, श्रवण, स्मरण करते रहना बस यही सच्चा सुख है। इस सुख की थाह नहीं, भोग तो आसक्ति एवं बन्धन का कारण हैं और भगवत प्रेम मुक्ति का, यह कैसी विचित्र लीला है भारी आश्चर्य और खेद तो इस बात का है कि मनुष्य दूसरों को लूटमार कर भी सुख और शान्ति से जीना चाहता है। किसी जमाने में परमात्मा की प्राप्ति के निमित्त भजन और तप होते थे, मगर आज भोगों की प्राप्ति हेतु हो रहे हैं। भोगों की प्राप्ति करने कराने के लिये जीवन और धर्म की बाजी तक लगाये बैठे हैं, और इसी को धर्म समझा जाता है। शोक !

हम आज सैकड़ों आशाओं की फाँसी में बँधे हुये काम क्रोधादि साधनों से कामभोगार्थ, अन्याय पूर्वक अर्थ (धन) की प्राप्ति के उपाय में लग रहे हैं, मोह ने हमें घेर लिया है, अभिमान ने अन्धा कर दिया है, लोभ ने हमारी वृत्ति को बिगाड़ा तो इधर लोभ ने हमें उनमत्त बना दिया है यदि भोग पदार्थों को एक बार ठुकरा कर हम भगवान में प्रेम करें, भगवान के निमित्त जगत के सारे कार्य करें तो अनन्त ऐश्वर्य सच्चा सुख और शान्ति हमारे पीछे दौड़ी दौड़ी खुशामद करती फिरे, परन्तु दुख है कि संसारी लोगों को वास्तविक जीवन की कुछ भी परवाह या चिन्ता

नहीं है स्वयं ही मृत्यु को ढूंढ़ कर अपने पावों कुल्हाड़ी मार रहे हैं।

प्रभु को अपनी सत्य प्रतिज्ञा (सकृदेव प्रपन्नाय त्वास्ममिति-चयाचित) के पालन की जितनी परवाह है उतना पक्का भरोसा हमें है ही कहाँ ? यदि एक बार विश्वास हो जाय तो बेड़ा ही पार हो जाय इसलिये जो प्रभु सतत स्मरण करने योग्य हैं उन्हीं का अहर्निश स्मरण, भजन पूजन, करैं। जब तक हम प्रभु का भजन स्मरण न करेंगे तब तक जीवन मरण का धन्धा कदापि छूट नहीं सकता। माया का जाल टूट नहीं सकता, तब सच्चा सुख और शान्ति कहाँ।

यह संसार नाशवान है और सब मायारूप है।—

"लाई हयात आये कजा ले चली चले,
न अपनी खुशी आये न अपनी खुशी चले"।

यहाँ जीव अपने कर्मफल भोगने के लिये नाना योनियों में जन्म लेते हैं और उस जन्म का भोग समाप्त होने पर खाली हाथ वापस लौट जाते हैं।

"यह दुनिया एक मुसाफिर खाना है,
यहाँ सब झूंठी है वस्तु, यह झूठा कारखाना है"।
"मृत्यु की बैठी है बिल्ली लगाये घात हरदम,
करोड़ों खा गई मूसे फिर तेरा क्या ठिकाना है"।
"रहोगे कब तलक भूले यहाँ दुनियाँ के धंधों में,
दो रोजा जिन्दगी है 'अधिकारी' आखिर सब छोड़ जाना है"।

मनुष्य के जीवन का एक मात्र कर्त्तव्य परममधुर भगवान के शुभनामों का गुण गान करना उनकी दिव्य ललित लीलाओ का चिन्तवन करना साथ ही साथ उनके परम माधुर्य्य में आनन्द-मय गुणों का स्मरण करना ही है इससे मोह रूपी रात्रि का पौह

फट जाता है। और भजन करते करते समस्त पाप ताप नष्ट होकर उसके हृदय में दिव्य प्रकाश भी होने लगता है। यदि इस जन्म में भगवत प्राप्ति हो गई तो क्षण भर का जीवन भी बहुत है, और यदि न हुई तब तो एक कल्प की आयु भी निरर्थक है।
ज्जनों !

"लिया दिया तेरे संग चलैगा, दाता रहैगा नाम"।

मुख से लिया हुआ भगवान का मधुर नाम और हाथों से दिया हुआ दान, केवल यही (लिया दिया) साथ में जाता है और संसार में दाता (दानी) नाम रह जाता है, बाकी तो सब का सब यहीं धरा रह जाता है संग में कुछ भी नहीं जाता !

"तुलसी इस संसार में भये हैं नृपति अनेक,
मैं मेरा कहते गये ले न गये तृण एक"।

"We will leave all behind except Bhajan and charity".

जिसे देखो संसार में सच्चा सुख और शान्ति को ही प्राप्त करने की धुन में लगे हैं। परन्तु इसके विपरीत सम्पूर्ण संसार में हर एक मनुष्य को दुख और भय ही दिखाई दे रहा है। ब्रह्मा से लेकर चिउंटी तक सब मृत्यु के भय से दुखी हैं। इन्द्र दुखी हैं कि कहीं स्वर्गलोक जाता न रहे, गरीब दुखी हैं कहीं रोटी न छिन जाय, जिनके पुत्र नहीं वह पुत्र के लिये दुखी हैं, जिनके विशेष परिवार है वह भी रोग, धन चिन्तन एवं राग द्वेष से दुखी हैं, जिधर भी आंख उठाकर देखो उधर दुख ही दुख नजर आता है, सुख है ही कहाँ ? आज जिस मनुष्य के द्वारा कुछ सुख मिल भी गया, कल वही दुख का कारण बन जाता है।

"हम जानी हम ही पर बीती, एक दिन सब ही पर बीती"।
"सूखत ताल कमल मुरझाने जल सूखत मछली पर बीती"।

"सूरज चन्द्र आकाश तपत हैं, ग्रहण लगे उनहूँ पर बीती"।
"कहत कबीर सुनो भाई साधो जन्मत ही ते हम पर बीती"।

पाठकों ! जिस सिकन्दर बादशाह को सर्व सामर्थ सम्पन्न सम्राट होने का भारी अहंकार था। वही एक दफा जब ईरान के राजकुमार से मिलने एक कब्रस्तान में उसके समीप पहुंचा तो उसे वहाँ कुछ जप करते देखा। जब उसने सिकन्दर का कोई आदर नहीं किया और अपनी धुन में लगा रहा तब सिकन्दर बोला। राजकुमार मैं संसार का सम्राट हूँ जो कुछ तू चाहे मांग ले मैं तुझे दे सकता हूं। यह सुनकर बालक मुस्करा दिया फिर सिकन्दर ने दूसरी बार उससे मांगने के लिये कहा, तब वह बालक (राजकुमार) बोला अच्छा अगर तुम सब कुछ दे सकते हो तो मुझे तीन चीजें दो—

(१) वह जवानी दो जिसमें बुढ़ापा न आवै (२) वह आयु दो जिसमें मृत्यु का भय न हो (३) वह सुख दो जिसमें दुख का भय न हो। इतना सुनकर सिकन्दर बादशाह गम्भीर दृष्टि से विचार करने लगा। फिर कुछ मौन रहने के बाद कहने लगा कि यह तीनों चीज मेरे हाथ में नहीं है इसलिये मैं नहीं दे सकता। उस बालक ने फिर मुसकराते हुये कहा। तब तो तुम भी भिखारी हो, मैं तो उस शहन्शाह से मिलना चाहता हूँ जहाँ से यह तीनों चीजें प्राप्त होती हैं। इसलिये उन्हीं का जप कर रहा हूँ। यह सुनकर बादशाह सिकन्दर आश्चर्य्य में डूब गया और लज्जित होकर फिर कहने लगा कि राजकुमार यह शमशान है। चारों तरफ खोपड़ियाँ पड़ी हैं, तुम चलो मेरे महल में रह कर भजन करो, ईश्वर तो सर्व व्यापी है, वहाँ भी आ जायगा, बालक बोला मैं यहाँ इन खोपड़ियों को देख देख कर संसार की अनित्यता का ज्ञान प्राप्त कर रहा हूं कि इनमें बड़े बड़े अंहकारी

सम्राटों की खोपड़ियां भी हैं, यही दशा मेरी भी होने वाली है, अब महल तक जाने आने का समय कहाँ ?

"ऊँचे ऊँचे मकान थे जिनके आज वह तंग गोर में हैं पड़े,
कल जहाँ पै गुल व शगूफा थे आज देखा तो खार बिल्कुल हैं"।

"Let me live unseen unknown".

इतना सुनते ही सिकन्दर का सारा घमण्ड चूर-चूर हो गया और शरमिन्दा होकर अपने महल को वापस लौट गया। इस बालक की भांति जिसके हृदय में वैराग्य उदय हो जाय वही मानों मुक्ति की पहिली सीढ़ी पर पहुँचा, ऐसा ज्ञानी भाला किस चीज के लिये सुखी होगा, और फिर उसे दुःख कहाँ ? सज्जनों ! जिसने भगवत प्रेम सुधा का ज़रा सा भी पान कर लिया हो तो उसकी दशा बड़ी ही विचित्र हो जाती है, प्रेम है तो बड़ा ही मीठा और स्वादु, परन्तु अपना तन, मन, धन सर्वस्व सौंप देने पर ही तो सर्व स्वतन्त्र प्रभु ऐसे भक्तों के प्रेमपाश अर्थात् प्रेम की दृढ़ जंजीर में बंध जाते हैं, प्रभु और कुछ न देख कर भक्त का केवल प्रेम भाव ही देखा करते हैं।

"भोग है सोने की थाली में या जामें गिल में है,
प्रभु देखते हैं ये कि कितना प्रेम इसके दिल में है"।

और भगवान कहते हैं !

"कि भाव बिन थूँकों नहीं गाड़ी भरे सामान पर,
मगर रीझ जाता है दिल मान के इक पान पर"।

सज्जनों ! जैसे कि सर्प के विष से व्याकुल हुये पुरुष को मिश्री कड़वी लगती है, और जैसे नेत्र रोग वाले को दूध भी पीला दिखाई देता है, वैसे ही जब मनुष्य इन्द्रियों का गुलाम बन जाता है, तब वह भी अपने ज्ञान को खोकर भगवान तक

को भूल जाता है, इसीलिये उसको भगवत वार्ता, भगवत भजन एवं कथा इत्यादि कुछ भी प्रिय नहीं लगते ! इसके फल स्वरूप न जाने कई बार नर्क, गर्भ, एवं मृत्यु की विषम वेदनायें उसको भोगनी पड़ती हैं। संसार में कौन किसका है, यह तो मुसाफिर-खाना है, मुसाफिर आते हैं एक जगह रहते हैं, तरह तरह के सम्बन्ध जोड़ते है। फिर अपने अपने समय पर सब अपनी अपनी राह चल देते हैं। संसार का यह नाता स्थाई थोड़े ही है आज जो पुत्र बना है, सम्भव है वही कभी पिता बना हो, एवं कभी हमारा शत्रु या मित्र भी बना होगा।

जितने भी मेलों के ऐश्वर्य हैं, यह सब भगवत प्राप्ति के पथ के ठग हैं। चित्त की शान्ति के लिये समस्त कामनाओं का त्याग जरूरी है, त्याग से शान्ति मिलती है। जब चित्त शान्त हुआ तब तो समझो सुख ही सुख है, नहीं तो दुख ! एवं शान्ति बिना वैराग्य कहाँ ? और विषयादिकों में वैराग्य हुये बिना ईश्वर में अनुराग कहाँ ? संसारी कर्मों एवं विषयों में मन को फँसाना ही बन्धन है, जब कि विषयों से मन को हटा कर उसे भगवत भजन में लगाते हुये, लीलाओं का विस्तार करना बन्धन को छुड़ाने वाला होता है। मनुष्य वासनाओं के वशीभूत होकर रेशम के कीड़े की भाँति स्वयं ही जाल बनाता है, और स्वयं ही उसमें फँस भी जाता है, कोई किसी को नहीं फंसाता सब अपनी वासना से फँसते हैं। भीतर जन्म जन्मान्तरों के संस्कार भरे रहते हैं इसलिये पारीस्थीती, काल और वस्तु को पाकर वे संस्कार जाग्रत होकर अपना फल भी दिखाने लगते हैं।

जिस वक्त तक शरीर में बल और शक्ति है, बुद्धिमानों को चाहिये कि अपनी भलाई के निमित्त उपाय सोच रक्खें, वरना

घर जलने के वक्त कूप खोदने की जानमारी से लाभ ही क्या ?

"कल पे न डालिये कल-यह कल आये आये न आये"।

"क्या भरोसा है इस दम का यह दम आये-आये न आये"।

कल किसने देखी है ? कौन जानता है कि पलके बाद क्या होगा ? एक दिन मृत्यु अवश्य होगी, और कब होगी इसका हमें तुम्हें कुछ भी पता नहीं है जन्म लेने के दिन ही मौत का टिकट भी मनुष्य को मिल जाता है। इसका भी पता नहीं कि "कब नकारा कूँच का बाजे"। अब तो होश हवास दुरुस्त बैठे हो, शायद अगले ही पल में तुम्हारी मृत्यु हो, तब तो तुम्हारे सभी काम ज्यों के त्यों धरे ही रह जायगें। अभी तो काम से हमें तुम्हें पल भर की फुरसत नहीं मिलती, उस समय तो सदा के लिये छुटटी मिल जायगी, अभी शरीर के आराम के लिये बड़े-बड़े सुन्दर महलों में मुलायम २ गद्दों पर हम आप सोते बैठते हैं। उस समय निर्जन बन के अन्दर डरावने मरघट में खुली जमीन पर यह स्वर्ण सा सुन्दर शरीर दो मुट्ठी राख हो कर उड़ेगा, और सारे अरमान दिल ही दिल में रह जायगें, सारी शेखी चूर-चूर और सारी हेकड़ी काफूर हो जायगी, तुम्हारी मद भरी, गर्व भरी एवं रिस भरी आँखें हमेशा के लिये मुँद जायेंगी, यहाँ से परलोक जाने पर यहाँ के कमाये हुये कर्मों का भयानक फल (दुष्परिणाम) जब सामने आयेगा तब तो तुम काँप उठोगे, और दण्ड भोगने का समाचार सुनते ही मूर्छित हो जाओगे। ये संसार दुःख रूप है यहाँ कोई किसी का नहीं भगवत चरणों में मन लगाना परम सुख तथा भगवान से विमुख होना ही परम दुख है, मनुष्य का शरीर तो केवल भगवत भजन के लिये ही है, नहीं तो पशु पक्षी एवं तृण कूड़ा करकट से भी तिरस्कृत है।

"भगवत भजन तजि जे सुख चहत ते सब राक्षस प्रेत,
व्यासदास के उर में ठौठो-मोहन यह कह देत"।
तेबर राक्षस, कूकर, गदहा, ऊँट, वृषभ, गज बोक,
व्यास जो नाम तजि भटकत, ता सिर पनहीं ठोक"।
"व्यास सुरसिकन की रहन, बहुत कठिन है बीर,
मन आनन्द न घटै छिन, सहे जगत की पीर"!

यह शरीर भी स्वभाव से ही रोग शोक और चिन्ताओं का घर है, इस में भी सुख कहाँ ? इसे भी कोई पूर्णतया सुखी नहीं बना सकता। कारण कि यह मलीन है, कैसे भी सुन्दर सुगन्धित स्वच्छ स्वादिष्ट पदार्थ क्यों न हों, जहां वह पेट में गये, कि देखने में बुरे दुर्गन्ध युक्त मल बन गये, संसार में सभी वस्तुयें सुन्दर एवं निर्मल हैं। एक यही देह ही इतनी मलीन और अपवित्र है कि इसके संसर्ग मात्र से सभी दूषित एवं बदबूदार बन जाते हैं, इस शरीर से सदा मल ही निकलता रहता है रोम-रोम से मल बहता रहता है, कानों से, आँखों से, नाक के दोनों छेदों से, जिह्वा से, दाँतों से और होठों से, भद्दा बदबूदार मल बाहर आता ही रहता है। पेट तो मल का थैला ही समझो मलमूत्र द्वारों से मल निकल कर आस पास की पवित्र भूमि को भी अपवित्र (अशुद्ध) बना देता है ! कितना भी सुगन्धित, शीतल गंगा जल क्यों न हो, पीते ही थोड़ी देर में वह बदबूदार मूत्र बन जायगा। रोम रोम से पसीना भी दुर्गन्ध पूर्ण निकलता है ! वायु कितनी निर्मल है, किन्तु उसका जब शरीर में संसर्ग हो जाता है, तो अपान द्वार से कितनी बदबूदार वायु हो कर निकलती है।

इस अपवित्र एवं मलीन देह को सुखी बनाने के निमित्त मनुष्य अपने भाइयों सगे सम्बन्धियों एवं स्वजन, प्रिय मित्रों

तक के रक्त से अपने हाथ रंगते हुये हिचिकता भी नहीं और न ही भगवान से डरता है। तब भी कुछ उचित कहा जा सकता था, जब कि यह शरीर सदा बना रहता! परन्तु यह शरीर तो क्षणभंगुर है।

अनेकों पाप कर्म करके इसे पाला पोसा मगर प्राणों के पृथक होते ही यह बेकार बन जाता है अपने किसी भी काम में नहीं आता, और अन्त में इसकी तीन ही गति हैं।

(१) पड़ा-पड़ा अगर सड़ गया तो कीड़े पड़ जाते हैं। (२) सियार, कुत्ते आदि मांस भोजी जीवों ने खा लिया तो उनके पेट में जाते ही विष्टा हो जाता है। (३) और अगर किसी ने इसको जला दिया तो दो मुट्ठी भस्म हो जाती है।

ऐसे इस प्रकार के अनित्य शरीर के पोषण के निमित्त किया हुवा पाप कदापि क्षमा नहीं हो सकता। बल्कि उसका फल दण्ड अवश्य भोगना ही पड़ता है। यह संसार कर्म भूमि है जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल भी पाओगे।

"As you sow, so shall you reap".

इसलिये निरन्तर शुभ कर्मों का करना ही उचित है। परन्तु शोक है कि संसारी लोग रात्रि दिवस दुनिया के धंधों एवं पेट पालने की फिकर और चिन्ता ही में डूबे रहते हैं। यदि एक दो घंटे भी प्रति दिन नियम पूर्वक भगवान के ध्यान में नहीं लगा सकते, तो ऐसे मनुष्य जीवन को धिक्कार है। इस से तो फिर पशु ही अच्छे हैं क्या मनुष्य जीवन का यही फल है ?

"जिन्दगी बा बंदगी है जिन्दगी, जिन्दगी बे बंदगी शरमिन्दगी"।

सज्जनों! अब तो बहुत सो चुके, अपना जन्म अकारण खो चुके! ज़रा जागो निद्रा को त्यागो जब जागे तभी सवेरा समझ कर लग जाओ उस प्यारे प्रीतम के स्मरण भजन में। यदि

ऐसा न हुवा तब तो अन्त में यमराज की कचेहरी में जबाब देते नहीं बनेगा। अभी तो भजन करने की फुरसत ही नहीं मिलती, परन्तु जब यमराज के दूतों के लट्ठ चलेंगे, तो मार खाते समय क्या बहाना करोगे हमको फुरसत नहीं है। इसलिये भाइयो! जगतजाल से कुछ समय निकाल कर नित्य प्रति कुछ न कुछ सत्संग भजन कर लिया करो जिस से फिर इस जन्म मरणरूपी काल कोठरी में न आना जाना पड़े अगर न माने तो हाथ मल मल पछताओगे, और जन्म मरण चौरसी लाख के चक्कर में पड़कर भारी दुख उठाओगे, देखिये संसार के सब भोगी सदा रोगी रहा करते हैं। और उनको रात दिन दुख सुख की भट्टी में जलना पड़ता है। मगर भगवत भक्त सदैव एक रस और आनन्द मग्न रहा करते हैं। यह संसार दुख रूप है नश्वर है यहां कोई सुखी नहीं, इसलिये हृदय को भक्ति भावना से भरना और भगवत भजन करना ही सार है। यह कब होता है, जब कि भगवत कृपा होती है या पूर्व संस्कार जाग्रत हो उठते हैं। जिस प्रकार हजारों वर्ष के अन्धेरे घर में भी दीपक जलाने से तुरन्त प्रकाश हो जाता है ठीक उसी प्रकार हजारों जन्म जन्मान्तरों के पाप ताप भी भगवान की एक बार की कृपा दृष्टि से ही दूर हो सकते हैं। भगवान ही इस जगत में एक सत्य सनातन वस्तु हैं, और सब तो केवल उनकी चलती फिरती छाया ही समझो। कारण कि:—इस अनित्य जगत में क्षण भंगुर जीवन पाकर कोई भी प्राणी सुखी नहीं रहता, इसलिये सारा जीवन दुखमय ही कहा गया है। जन्म काल में अनेकों तरह की पीड़ायें होती हैं, इस जीवन की मध्यम अवस्था भी बहुत ही कराल है कभी मिलन है तो कभी वियोग है, कभी माता, पिता, भाई बन्धु, स्त्री, पुत्रादि सम्बन्धियों की मृत्यु चिन्ता हला रही है तो कभी ज्वर खाँसी आदि रोगों के लिये औषधी

पर औषधी मंगाई जा रही हैं, कभी सिर में दर्द है तो कभी मानसिक व्यथा ही दिल को सता रही है, जला रही है, जब देखो चिन्ता है, आलस्य है, शोक है, सन्ताप है, काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा, अहंकारादि, अविद्या माया के वश में पड़ कर दूसरों का अनिष्ट करते हुये अपना भी अनिष्ट कर लेना महान पाप हैं। जिसका जीवन पर्य्यन्त पछताने के सिवाय न कोई चारा है न कोई उपाय है।

—:०:—

❀ पाश्चात् विद्या एवं शिक्षा ! ❀

जब से पाश्चात् विद्या का इस भारतवर्ष में सिक्का जमा (प्रवेश हुआ) तब से हमारे नई रोशनी के कुमारों की आखें ऐसी चौंधिया गई हैं कि वह अपने सनातन धर्म के समस्त सिद्धाँतों एवं धार्मिक कार्यों को भूल कर भगवान से भी विमुख हो गये और भजन, पूजा, पाठ, दान पुन्य, तीर्थ व्रत, भगवत-भागवत को भी घृणा की दृष्टि से अवलोकन करने लगे। केवल इतना ही नहीं इस अंग्रेजी शिक्षा दीक्षा के प्रभाव से उनके विचारों ने भी ऐसा पलटा खाया कि उन्हें अब अपने देश का भेष-भूशा, खान पान, आचार विचार, रहन सहन यहाँ तक कि कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

गौर करने से आपको मालूम हो जायगा कि वास्तव में यह पाश्चात् विद्या हमारे देश, हमारे धर्म, धन, सुख और जीवन को भी बरबाद करने वाली निकली। इस शिक्षा ने तो हमारा सर्वस्व नष्ट कर दिया। हमारा सामाजिक एवं राजनैतिक पतन तो इसके

द्वारा हुआ ही है परन्तु सबसे अधिक कुठाराघात हमारे "धर्म" के ऊपर किया है जिससे हम अपनी पुरानी संस्कृति और सभ्यता को एक दम भूल गये हैं, विधर्मी लोगों के संसर्ग से हमारी धारणा भी नष्ट होकर पेट पालना ही बाकी रह गया है और श्रद्धा हीन होकर नास्तिक बन रहे हैं लोगों की प्रवृत्ति प्रतिदिन अधर्म की ओर बड़े वेग से बढ़ रही है समस्त दिव्य शक्तियों का ह्रास हो रहा है परलोक का विश्वास भी ढीला हो रहा है, मनुष्य पुरुषार्थ हीन हो गये हैं। बल, पराक्रम नहीं रहा बुद्धि मलीन हो गई है, भाग्य हीन और सदाचार हीन बनकर दुष्कर्म करने लगे हैं। यही कारण है कि बहुत से अकाल में ही काल के कवल बन रहे हैं।

यह भी कितनी भूल और शर्म की बात है कि अब वह लोग अपनी बुद्धि के सामने अपने बड़े बूढ़ों एवं पूर्वाचार्यों तक को बुरा भला एवं मूर्ख तक कहने में नहीं हिचकिचाते। प्राचीन बहु-मूल्य रत्नों को तो इन्होंने निकम्मा और मोलहीन समझकर ठुकरा दिया है तथा समुद्रपार के चमकीले भड़कीले कांचों को अपनाने में ही अपना गौरव समझते हैं। वह अंग्रेजी नाविलों और बे अर्थ के किस्से कहानियों को पढ़ सुन कर तो चकित रह जाते हैं, परन्तु अपने प्राचीन शास्त्र, पुराण, धार्मिक ग्रन्थ एवं इतिहासों को झूठे गपोड़े कहने में भी नहीं लजाते।

सज्जनों! सनातन धर्म ऐसी कोई वस्तु तो है नहीं कि इसको ताक में रक्खा रहने दे, और किसी विशेष अवसर पर इसको पहिन लिया करें, अगर यह लोग जरा भी अपने धर्म ग्रन्थों को पढ़ने सुनने की ओर झुकते, तब इन्हें पता चलता कि इनमें कैसे कैसे सुन्दर अनमोल्य रत्न हीरे जवाहरात भरे पड़े हैं जिनको न तो कोई गणना है न ही कोई सीमाँ! कितने शोक

एवं दुख का विषय है कि अन्य देशों के अन्यमतावलम्बी लोग तो हमारे देश भारतभूमि से शिक्षा दीक्षा गृहण करके भक्ति और मुक्ति तक को प्राप्त कर लें। और हम लोग अपने ही खजाने से बेपरवाह रह कर वंचित बने रहें, यह हमारा दुर्भाग्य नहीं है तो और है ही क्या ? काल धन्य तेरी माया, भ्रमर तो दूर से कमल का रस ले जाय, और मेंढक पास में रहने पर भी टर्राता हुआ खाली रह जाय।

महान पुरुषों का कथन है कि उस समाज से बढ़ कर अभागा और कोई समाज नहीं है, जिसके पास अपना इतिहास न हो। यदि इतिहास होते हुये भी उससे लोग लाभ न उठावें तब तो यथार्थ में वह समाज जीवित रहने पर भी मृत प्राय है।

"History is the record of progress alone."

हमारा तो कर्त्तव्य था कि हम लोग उन महान पुरुषों के चलाये हुये सनातन धार्मिक सिद्धान्तों पर स्वयं आचरण करते, तथा अपने बाल बच्चों को भी उन पर अमल करने के लिये बाध्य करते, एवं उनका उपकार मानते हुये आजन्म उनके ऋणी व आभारी बनते कि जिन्होंने देश और धर्म के निमित्त कितनी कठिनाईयों का सामना करते हुये अपने बहुमूल्य जीवन तक को भी निछावर कर डाला परन्तु कितने दुख का विषय है कि किसी उपकार के बदले अपने पूर्वाचार्य्यों का अपकार करना उनको मूर्ख बनाना यही कर्त्तव्य बाकी रह गया है, ऐसा क्यों हुआ ? अपने पूर्वाचार्य्यों व भगवान के उपकारों को भूलने और धर्म कर्म को तिलांञ्जलि देने का ही यह दुशपरिणाम है। हिन्दू जाति जब तक अपने धर्म कर्म का पालन करती रही संसार शिरोमणि बनी रही, जब से आलस्य उन्मादवश अथवा म्लेच्छों के संसर्ग से अपने इस पवित्र धर्म को खो बैठी तभी से

इस जाति का तेज नष्ट हो कर पतन भी होने लगा कहावत है कि

"धन देकर तन रखिये तन तजिये रखिये लाज,
धन तज तन तज लाज तज रखिये धर्म सों काज"।

"When wealth is lost nothing is lost, when health is lost, sc me thing is lost and when charactor is lost all is lost."

इस भारत वर्ष को ऐसे कुपूतों की वृद्धि एवं सुपूतों के अभाव से ही विदेशियों की गुलामी के जंजीरों में भी जकड़ना पड़ा ! इसकी पवित्र भूमि पददलित हुई और अनेकों सुपूत भी इनके हथियारों के निशाने बने। हां ! ठोकरें खा खाकर भी हम अभी तक नहीं चेत पाये कि हमारा लक्ष्य क्या है ? हाय ! वह देवभूमि भारत जिस के लिये देवता भी तरसा करते हैं वही आज अधर्म एवं परस्पर फूट के कारण लड़ाई का घर तथा म्लेच्छ भूमि बन रही है।

अभिमान तथा बिद्या के मद में चूर आज कल के युवक इस बात को भी भूल गये हैं, कि इस संसार में कोई अमर नहीं रहा जो आया है वह एक दिन जायगा भी जरूर, और इस परिवर्तन शील संसार में सदा किसी भी पदार्थ की एक सी ही दशा कभी रह नहीं सकती।

"ऐ गाफिल घड़ियाल तुझे देता है मुनादी,
गरदों ने घड़ी उम्र की तेरे एक और घटा दी"।

सज्जनों ! दुनिया में किसी चीज को कयाम नहीं, यह सराय फ़ानी चन्दरोज़ा ज़िन्दगानी है। इस लिये इसमें फँसे रहना सरासर जहालत की निशानी है। इन्सान कर ही क्या सकता है ? इन्सान जरा सी देर में बच्चा से जवान ऐय्याश, मुफलिस जरदार, पीर, फक़ीर, जईफ, सुफेद-पोश वगैरह

बहुरूपीये नट और गिरगिट की मानिन्द कई सूरतें दिखला मल्कुलमौत नगर रूपी ओट में छिप जाता है।

"जहाँ पर एक दिन वे मिशाल जाहोजलाली होती है, वहाँ एक दिन जरूर पायमाली भी होती है।" "जहाँ खुशी होती है वहाँ मातम भी होता है" "सुख के बाद दुख-दुख के बाद सुख भी होता है! ऐसे ही जहाँ पर एक दिन जंगल होता है, वहाँ पर कभी न कभी दबदबे के साथ मंगल भी होता है! "महल तो होते है खंडर फिर वही खंडर कभी महल भी होता है। हमेशा किसी की हालत एकसाँ नहीं रहती दिनों की गर्दिश अपने खेल दिखाती है, कमी शाह को गदा तो गदा को शाह बनाती है। "किस को बताऊँ किसको दिखाऊँ निशान को, गज भर जमीन चाट रही है जहान को"। "जहाँ बजती है शहनाई वहाँ मातम भी होते है, और जहाँ होती है हंसाई वहाँ रुलाई भी होती है"। "प्रभु को जो मंजूर होता है वही कर दिखाता है, जहान में कुदरत उसकी कान कोई पार पाता है"।

पृथिवी गोल है, संसार चक्र बार-बार घूमता रहता है आज जिसे हम छोड़कर चल दिये कालान्तर में हम फिर वहीं पहुँच जाते हैं। कल जिस से हम डरते थे आज वही हमसे डरता है, कल जिसके डर से बड़े बड़े चक्रवर्ती काँपते थे आज वही साधारण मनुष्यों से अपमानित होता दिखाई पड़ता है। "जब आते हैं दिनों के फेर, मकड़ी के जाले में फँसते हैं शेर"। यह सब समय की महिमा है। काल भगवान की क्रीड़ा है, समय बड़ा बलवान है वही सब कुछ करा लेता है! ज़माने की गर्दिश ने लाखों चालें बदली हज़ारों के सिरों से ताजे शाही उतार कर कासाये गदाई (भीख माँगने का पात्र) उनके हाथों में दिया! लाखों को अगर यतीम बनाया तो करोड़ों को बेवा बनाने में भी कसर बाकी नहीं छोड़ी परन्तु संसार की कोई भी शक्ति भारत के गौरव को मिटा नहीं सकी काल की भी क्या विचित्र गति

है। कल जो माला माल था सर्व शिरोमणि था आज वही सब का तिरिस्कार भाजन बन दर-दर भटकता फिरता है। कल जो दूसरों का मुख ताकते थे, बदन पर जिन के वस्त्र का नामो निशान न था आज वही सर्व शिरोमणि समझे जाते हैं करोड़पती-अरबपती धन्नासेठ कहलाते हैं। काल धन्य तेरी माया।

—:०:—

❀ अवतार ❀

ऐ भारत माता तू धन्य है, तेरी महिमा का कोई पार पा सके, यह शक्ति भला किसमें है ? तेरे उदर में से ऐसे २ बलवान एवं प्राक्रमी योधा, सत्यवादी, चक्रवर्ती, राजेमहाराजे, जगद्‌गुरू, आचार्य्य, योगिराज, यति, सार्वभौम, भगवद् भक्त, अवतारी, महानपुरुष, प्रभावशाली दानवीर एवं धर्मवीर इत्यादि पैदा हुये जिन्होंने समय समय पर अपने अपूर्व चमत्कार दिखलाये और दुष्टों का दलन करते हुये तेरे बोझे को भी हलका किया। जिनकी दृढ़ता और शक्ति के सामने अन्य धर्मावलम्बी भी दाँतों तले उँगली दबाकर इस भारत की मुक्त कण्ठ से भूरि भूरि प्रशंसा करते हैं।

भारत का यह सौभाग्य रहा है कि संकटकाल में इसके हारे हुये मन को प्रोत्साहन देने एवं प्रेरणा करने के निमित्त अनेक संत जनों एवं महापुरुषों ने जन्म लेकर हमारा भारी उपकार किया है। हमारा देश सैकड़ों वर्ष गुलाम रह कर भी अपनी भाषा संस्कृति तथा भेषादि की जो रक्षा कर सका. इसका कारण केवल इन महान पुरुषों की तपश्चर्य्या ही तो है। इसलिये हमारा कर्त्तव्य है कि हम इन दिव्य विभूतियों एवं महान पुरुषों

का अभिवन्दन करें। जिन्होंने जगत उद्धारार्थ अनेक चेष्टाओं द्वारा इस भूतल पर हमारी रक्षा करते हुये सुख शान्ति एवं प्रेम भक्ति का साम्राज्य स्थापित किया।

हिन्दू धर्म पर अनेक आक्रमण हो चुकने पर भी अपनी दृढ़ता के कारण हमारा भारत अभी तक अचल रूप से संसार में वर्तमान है, और अनन्त काल पर्यन्त ऐसे ही वर्तमान रहेगा। कारण कि हिन्दुओं के समस्त कार्य भगवताराधना एवं उपासना से भली भांति ओत प्रोत रहते हैं। भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज के अवतार को लाखों वर्ष गुजर चुके हैं। इस भारत भूमि में कई प्रकार की मत मतान्तर रूपी वायु के चलने पर भी अभी तक हमारा सनातन धर्म रूपी दीपक जगमगा रहा है और ऐसे ही जगमगाता भी रहेगा। क्योंकि जिनके एक मात्र भगवान रक्षक हों तो उनका कभी अनिष्ट सम्भव ही नहीं है।

" जब जानकी नाथ सहाई करें, तब कौन बिगाड़ करै नर तेरो"।

सामयिक कारणों द्वारा उत्पन्न अधर्म वेग जब जोरों से टक्कर लेने लगता है और अनेक सुदृढ़ धर्मास्तम्भों की नींव समूल हिलने लगती है उस समय अपनी प्रिय रक्षित वस्तु की रक्षा के निमित्त स्वयं श्री सर्वेश्वर को चिन्ता होती है। इस कर्म भूमि पर या तो उन्हें स्वयं अवतार लेना पड़ता है अथवा चिर सेवक नित्य पारषदों में से किसी को धर्म कार्य पूर्ति अर्थ, इस मृत्युलोक में प्रकट होने के लिये आज्ञा देनी पड़ती है। तब भगवत प्रेरणा से भगवान के परिकर आचार्य्य का अवतार धारण कर उस दिव्य धाम का दिग्दर्शन मात्र कराने अवश्य आते हैं। और उस दिव्य धाम का उनके स्वामी सहित पूरा पूरा पता भी बता जाते हैं फिर भी अभागे मनुष्य जब सचेत नहीं होते तब विवश होकर स्वयं आचार्य्य रूप में, स्वस्वरूप में, उपदेशक रूप में, श्री लीला

स्वरूप में, अथवा कोई पूर्णावतार धारण कर किसी भी उपयोगी रूप में भगवान को अवतरित होना पड़ता है। अवतार लेने के पश्चात् इस लीला भूमि में अपने अनन्त ऐश्वर्य की झांकी द्वारा अपने भक्तों के भाव दृढ़ करते हुए अपने स्वभाव वश दुष्टों का संहार तथा भक्तों की रक्षा भी करनी पड़ती है। इस प्रकार आर्तहरण, अशरण शरण, दीनबन्धु अपनी भक्त बत्सलता का पूर्ण परिचय देते हुये समयोचित नाना प्रकार के रूप धारण कर भूमि भार निवारणार्थ इस पृथ्वी तल पर अवतीर्ण होते हुये अपनी दिव्य शक्ति का आधार लेकर लीला का प्रारम्भ किया करते हैं। प्रभू की यह यात्रा केवल जन उद्धार के ही निमित्त हुआ करती है! "श्री भगवानो वाच :—

"घटने लगता है धर्म और बढ़ने लगते हैं पाप जभी,
अवतार रूप में हे अर्जुन आ जाते हम यहीं तभी"।
"करके उद्धार साधुओं का हम दुष्टों का वध करते हैं,
युग युग में धर्म बचाने को अवतार लिया हम करते हैं॥"

संसारी लोगों का दुख मिटकर भूले भटके जीवों को मार्ग दिखाना जो अवतार का मुख्य ध्येय है उसी के अनुसार अपने भक्तों का उद्धार करते हुये धर्म की स्थापना करके भगवान दुष्टों का दलन भी करते हैं। भगवान की शक्ति की महिमा अनन्त है जिसकी कोई सीमा नहीं इसलिये प्रभु सगुण स्वरूप धारण करके जो लीला करते हैं उससे समस्त पाप ताप छूट जाते हैं!

"लीला सगुण जो कहहिं बखानी, सोइ स्वच्छता करइ मल हानी"।

अपने भक्तों के भाव प्रेम से प्रभावित होकर साक्षात अनादि, अनन्त, सच्चिदानन्द आनन्दकन्द भगवान को उनकी अभिलाषा पूर्ण करने के निमित्त ही अनेक रूप से कलावतार, अंशावतार

आवेशावतार आदि विविध भेदों से अवतीर्ण होना पड़ता है। भक्तजन अपने अतुलनीय प्रेम द्वारा निगुण प्रभु को सगुण अलौकिक को लौकिक एवं अगोचर को दृष्टिगोचर बना ही लेते हैं। नटवर की कलाबाजी और लीलाधारी की लीला ही तो ठहरी, जो भगत के आधीन होकर स्वयं अजन्मा होने पर भी जन्म लेते व पुरुषोत्तम होकर भी साधारण लोगों की तरह कार्य करते हुये दिखाई देते हैं।

भगवान के भिन्न भिन्न अवतार, कोई तो धर्म की रक्षा के लिये कोई दैत्यों के विनाशार्थ, कोई वरदान को सत्य करने के निमित्त, कोई भक्तों को सुख देने को, और कोई श्राप को सत्य करने के लिये बतलाते हैं। किन्तु कुछ लोगों का कथन है कि यह सब कार्य तो प्रभु अपने संकल्प मात्र से ही बिना अवतार लिये ही कर सकते हैं। देखिये सज्जनों! धर्म रक्षण एवं अधर्मियों का नाश करना यह तो गौण कार्य्य हैं। वास्तव में प्रभु के अवतार का मुख्य प्रयोजन है लीला इत्यादि! अर्थात् प्रेमवश इस धरा धाम पर प्रगट हो, भाँति भाँति की क्रीड़ा एवं कानों को सुख देने वाली और हृदय में अमृत रस का संचार करने वाली सुखमय लीलायें कर करके भक्तों को सुख देना, भगवान के लीला चरित्रों में रस ही रस भरा है, बार बार सुनने पर भी तृप्ति नहीं होती, जितनी बार सुनो उतनी तृष्णा बढ़ती ही जाती है (जैसे कि तृषा रोग में जितना भी पानी पिओ उतनी ही प्यास बढ़ती जाती है) इसलिये जो उन चरित्रों को पढ़ते सुनते और अनुमोदन समर्थन करते हैं वह सदा के लिये इस संसार सागर से पार होकर प्रभु के परमधाम को प्राप्त होते हैं। भगवान के अतिरिक्त यह कार्य्य (लीला) कोई दूसरा नहीं कर सकता। इसलिये भगवान को स्वयं मानवीय तन में इस अवनीतल पर प्रकट होना पड़ता है।

बड़े बड़े ऋषि महर्षि भी घोर तप करके जिन सच्चिदानन्द, आनन्दकन्द प्रभु से मुक्ति की याचना करते हैं वही प्रभु ऐसे दयालु और कृपालु हैं कि अपने ऐश्वर्य को छिपाकर भक्त वत्सलता के पीछे अपने महत्व को भी एक दम भुला देते हैं। भक्ति से प्रसन्न हो प्रेम के वशीभूत होने के कारण स्नेह वश भगवान पाण्डवों के सेवक, पहरेदार, मन्त्री, दूत, सारथी इत्यादि सब कुछ बने। किंतु यह सब करने पर भी उनके महत्व में कोई अन्तर नहीं आया, वह तो आकाश की भाँति उसी प्रकार निर्लेप निर्मल बने रहे, यही तो भगवान की अद्भुत क्रीड़ा है। भगवान के अवतार का मूल कारण एक मात्र अपने भक्तों एवं अपने सेवकों को सुखी करने उन्हें संसारी अविद्या, कामना और कर्म बन्धन से बचाने के निमित्त ही आपकी यह लीला है आपके चारु चरित्र कर्म नहीं हैं बल्कि कर्मों को काटने की छेनी हैं और आप की मधुर ललित लीलायें लोगों के अशुभों को दूर करके संसार के आवागवनों को भी छुड़ाने वाली है।

मूर्ति पूजा—देखिये! रावण जो चारों वेद और छहों शास्त्रों का प्रकाण्ड पंडित था वह भी निरन्तर शिवलिङ्ग की पूजा किया करता था, उसका उनमें इतना प्रेम था कि वह एक क्षण भर के लिये भी अपने से पृथक न करता था तभी तो वह इतना बलवान धनवान एवं कीर्तिवान हो गया था, भगवान श्री राम चन्द्र महाराज को भी रावण पर विजय प्राप्त करनी थी इसलिये श्री शिवजी को प्रसन्न करने के निमित्त युद्ध के समय भगवान को भी श्री रामेश्वर जी में श्री शिव जी की स्थापना करनी पड़ी भगवान श्री रामचन्द्र महाराज का जीवन एक आदर्श जीवन है, भगवान ने मूर्ति पूजा करने के बहाने से मानो प्रजा को शिक्षा दी कि जिससे हर एक मनुष्य श्रद्धा पूर्वक भगवान की पूजा करके संसार में सुख एवं परलोक में सदगति प्राप्त कर सके।

❀ निन्दक महाशय के दो प्रश्न ❀

"ओह समय तेरा प्रभाव बलवान है, ऐ काल चक्र तू भी प्रधान है।"

आज हमारा देश जोरों से नास्तिक वाद की ओर जा रहा है, हम मनमुखी बनकर अपने कर्त्तव्य को भूल रहे हैं परमाचार्यों के आदर्श अपने सामने न रखने के कारण ही हमारा पतन हो रहा है तभी तो प्रति दिन अनेकों भारतवासी अपनी सनातन प्रथा को ठुकरा कर धर्म शास्त्रों की आज्ञा का भी उल्लंघन करने पर उतारू हो रहे हैं यहाँ तक कि जिन श्रीरामकृष्ण लीला स्वरूपों के द्वारा भगवत भक्तों को श्री नाम, रूप, लीला, धाम की साधना का पूरा २ अवलम्ब प्राप्त होता था। यह लोग तो लीला स्वरूपों के भी कट्टर विरोधी बनने लगे, ठीक है— कलिराज अब इतना भी न करेंगे तो और करेंगे ही क्या ? हा ! इसी का नाम है कलियुग, कि जिस के समय में अमृत तो विशवत् एवं विष अमृत तुल्य प्रतीत होने लगे, आज के जगत में संत महात्माओं की ओर लोगों की कुछ क्रूर दृष्टि हो गई है, मगर वे नहीं जानते कि केवल एक भगवान को छोड़ कर संसार के प्राणीमात्र गुण अवगुण के दोषी है, तब अपने अन्धेरे को न देख कर दूसरे के अंधेरे का प्रदर्शन रचना यह कहाँ की सत्यवादिता एवं बुद्धिमता है। दुनियाँ के चक्कर में पड़ा हुआ कोई भी व्यक्ति क्यों न हो निर्दोष नहीं रह सकता इसलिये अपने दोषों को छिपा कर दूसरे के दोषों को प्रकट करने की चर्चा करना यह किसी भले मनुष्य को उचित नहीं है। धन व जवानी की मस्ती हुकूमत का घमण्ड अपने आप को मानव संसार का अन्नदाता समझने वाले ब्राह्मण और साधु संतों के लिये यह

साक्षात द्वेश की मूर्ति पाश्चात्य शिक्षा में रंगे हुये एक निन्दक महाशय।

१—अपने भाषण में लीला बिहारी स्वरूपों की निन्दा करते हुये इस बात की तर्कना कर रहे थे, कि इस कलियुग में भगवान के लीला स्वरूपों में कोई भी सिद्धि गुण चमत्कार एवं प्रभाव देखने को नहीं मिलता, यह तो केवल खेल तमाशा हो गया है, इससे मुफ्त में पैसे की बरबादी एवं समय की भी खराबी होती है, अतः ऐसी रामकृष्ण लीलाओं एवं झूला झांकियों का दर्शन करना कराना व्यर्थ है।

२—केवल निराकार भगवान की साधना ही सत्य एवं श्रेयस्कर है, बाकी इसके अतिरिक्त शेष सब मार्ग एवं साकार साधनायें भी असत्य हैं, यह केवल ढोंग मात्र है, इससे कुछ लाभ नहीं हो सकता।

पाठको! यद्यपि कलियुगी जीवों की प्रवृति निन्दा एवं पाप कर्मों में अधिक रहा करती है वह परमार्थिक कार्य्यों को ढोंग, दम्भ, वृथा बकवाद समझने लगते हैं। फिर भी भगवतानुरागी बड़भागी लोगों के दिलों में धार्मिक चर्चा का बीज बना ही रहता है इसका नाश कभी नहीं होता, अगर नाश हो जाय तब तो समस्त लीला ही समाप्त हो जाय।

तर्क करते समय भगवान के कुछ भावुक रसिक जनों ने निन्दक महाशय जी को बहुत देर तक भली भांति समझाया बुझाया, परन्तु वह तो जरा भी टस से मस नहीं हुये, बराबर अपनी हठ पर तुले रहे और किसी की एक भी नहीं मानी ठीक है मानते भी कैसे। एक तो अंग्रेजी शिक्षा दूसरे नवीन समाज की दीक्षा तीसरे जवानी का मद, चौथे धन का अभिमान, हुकूमत का अहंकार इतना होने पर भी अगर उनके विचार

सनातन धर्म से बिपरीत न हुये तो फिर होंगे ही कब ?

जिन श्री लीला विहारी स्वरूपों द्वारा सनातन धर्मावलम्बी भक्त जनो को परमानन्द प्राप्त होता है, ऐसे लीला विहारी स्वरूपों की ओर जो लोग निन्दनीय संस्कार के कारण विषय विष के ही कीड़े बने हैं। सद्शास्त्र एवं धर्मचर्चा आदि से कोसों दूर रहने वाले तथा खानपान और मौज उड़ाने को ही अपने जीवन का ध्येय समझने वाले महाशय क्या कभी लीला स्वरूपों के प्रेमी या भावुक बन सकते हैं ? कदापि नहीं ! यद्यपि सूर्य भगवान का परम प्रकाश समस्त विश्व के लिये समान है किन्तु उल्लू अपने स्वभाव से ही सूर्य के प्रकाश से कुछ भी लाभ उठा नहीं सकता। और जिस प्रकार परम पुनीत मानसरोवर में रहने वाला हंस अपने हंस स्वभाव से मिले हुये क्षीर नीर को (दूध-जल) पृथक पृथक कर देता है तो क्या एक मल भक्षी काग हंसवत आचरण कर सकता है ? और भी सुनिये, यदि किसी कारण वश एक विष्ठा का कीड़ा सुमन पर जा बैठे तो क्या वह रसग्राही भ्रमर के समान सुमन रस गृहण करने की क्रिया को कर सकता है ? कभी नहीं ! इसलिये जो मनुष्य अपने निन्दनीय संस्कारों के कारण मन्द मलीन बुद्धि के अनुसार व्यर्थबाद विवाद किया करते हैं, भगवान को, उनके अवतारों को, लीला विहारी स्वरूपों को, एवं उनके मधुर चरित्रों को कुछ भी नहीं जानते मानते, उसका कारण केवल यह है कि इन्होंने "स्वप्नेहुँ सन्त सभा नहिं देखी"। कभी कोई सत्संग नहीं किया, और न ही संतों से कभी संसर्ग हुआ है इसलिये ऐसे वह लोग जो साधु संतों के दर्शन मात्र से नाक भौं सिकोड़ते हों, तब वह लीला स्वरूपों की महिमा को क्या जान सकते हैं ? "महली की गति महली जाने, क्या जाने भेड़ चरावन हारो।" ऐसे ही व्यक्तियों के लिये तो गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज ने भी कहा है कि—

"ते जड़ जीव निज आतम घातीं, जिन्हें न रघुपति कथा सुहातीं"।

बड़े आश्चर्य का विषय है कि जब मारीच एक राक्षस होते हुये भी श्री भगवान रामचन्द्र जी महराज को महावन के वृक्ष वृक्ष में देखता है तो हमारी समझ में नहीं आता कि मनुष्य शरीर पाकर भी लोग इस दिव्य तत्व से क्यों वंचित हैं। मेरा तो यह अनुमान है कि इस लीला के रहस्य आनन्द एवं सुख को तो कोई विरले ही भाग्य भाजन श्रद्धालु भगवान के प्रेमी दास ही प्राप्त कर सकते हैं, भोंगो के दास लीला स्वरूपों की कदर को क्या जानें ? विषयी एवं प्रेमी में कौड़ी मोहर का अन्तर होता है। मेढ़क रूपी प्रेमाधिकारी तो इस संसार में बहुत मिलेंगे परन्तु मछली के सदृश प्रेमी कोई कोई मिलेगा। कामान्ध लोग लीला स्वरूपों के अनूपम रहस्य एवं साकार उपासना के भेदों को नहीं जान सकते। इस प्रेम रहस्य का अधिकारी तो वही हो सकता है, जिसके नेत्रों में पीड़ा होगी, प्रेम की कषक एवं उसकी टीस बड़ी मीठी होती है, प्रेमी के दर्द का मर्म भी तो कोई कसकीले हृदय वाला ही जान सकता है हर एक नहीं, जिसके हृदय में प्रेम देव की कृपा नहीं, वह प्रेम की महिमा को भला क्या समझे :—

"चाहनहोर सुख सम्पति के जग में मिलत घनेरे,
कोऊ २ मिलत कहीं प्रेमी नगर नगर सब हेरे"।

विषयाशक्ति एवं भगवत प्राप्ति यह दोनों एक साथ नहीं रह सकते, इसका इकट्ठा रहना असम्भव है।

"जहाँ काम तहाँ राम नहिं, जहाँ राम नहीं काम"।
"तुलसी कबहूँ कि रह सके, रविरजनी एक ठाम"॥

जिसके हृदय में उस रसराज के रस सुधामई एक बिन्दु का भी प्रवेश नहीं हुवा वह भला प्रेम रस के मर्म को क्या समझ सकता है ?

"भगवत रसिक-रसिक की बातें--रसिक बिना कोऊ समझ सकै न"।

"विरोधी एवं निन्दकजनो का यह दुराग्रह करना कि केवल निराकार भगवान की साधना ही सत्य एवं श्रेयस्कर है, शेष सब मार्ग एवं साकार साधनायें भी असत्य है यह केवल ढोंग मात्र है इससे कुछ लाभ नहीं"।

यह उनकी भारी भूल और सरासर जबरदस्ती है, सत्य का गला घूंटना है, किसी की सच्ची श्रद्धा एवं द्रढ़ भावना को ठुकराना, कुचलना और सीधे मार्ग में रोड़े अटकाना है, किसी के धर्म पर जबरन आघात करना उचित नहीं है, सभी धर्म मार्ग अपने २ स्थान पर सत्य हैं, ईश्वर प्राप्ति के जुदे जुदे मार्ग, परमात्मा से मिलने के लिये अनेक साधन अनेक उपाय तथा अनेक मार्ग हैं। इसलिये जो भी जिस किसी को प्रिय व सुलभ प्रतीत हो उसके लिये तो वही हितकर एवं श्रेयस्कर हो सकते हैं। देखिये! निगुण उपासक की साधना अत्यन्त कष्ट दायिनी होती है, जब की उसकी अपेक्षा साकार उपासना अत्यन्त सुलभ, सरल एवं रसमई है, श्रीमद्भगवद् गीता में भगवत मुख वाक्य है कि समस्त देहधारी (मुझ में चित्त लगाने वाले) प्रेमी जनों का मैं इस मृत्यु लोक संसार से शीघ्र ही उद्धार करता हूं।

"जब तक है मन में अभिमान तब तक होता मुशकिल ज्ञान"।
जिनका है निर्गुण में प्रेम उनका दुर्घट साधन नेम"।
"मन टिकने को नहीं आधार, इससे साधन कठिन अपार-
सगुण ब्रह्म का सुगम उपाय, भवसागर से तुरन्त पार हो जाय !
"यह है सब से उत्तम ज्ञान-इससे अर्जुन तू कर मेरा ध्यान"।
फिर होवैगा मोहे समान-यह कहना मेरा सच्चा जान"।

लगन की आग का धुँवा कौन देख सकता है? इसे या तो वह देखता है जिसके अन्दर वह जल रही हो, या फिर वह

देखता है जिसने आग सुलगाई हो। अनुराग का बन्धन बहुत कठिन होता है। ज्ञानमद की धूल जब प्रेम के आँसुओं से धुल जाती है तब मालूम पड़ता है कि निर्गुण, सगुण क्या है। एवं ज्ञान व प्रेम में क्या अन्तर है।

❀ लीला मंडलियाँ ❀

सज्जनो ! कलियुग के प्रभाव से अयोग्य एवं अपात्र लोगों के हाथों में पड़ने के कारण कुछ लीला मंडलियों की सोचनीय दशा हो रही है, बड़े दुख का विषय है कि इन लीला कर्त्ताओं में प्रेम भाव का अभाव होकर धर्मभाव का भी लोप होता जा रहा है व्यवसाय ही प्राधान रह गया है। इन्हें लोक परलोक का भय भी नहीं रहा, यद्यपि वह इसको भी भलीभाँति समझते हैं कि हम मर्यादा से गिर रहे हैं। परन्तु अर्थ लाभ के लोभ में पड़ कर इस प्रकार अज्ञानी एवं अंधे हो गये हैं कि सब कुछ समझते हुये भी समझना और देखते हुये देखना भी नहीं चाहते। इसका मूल कारण यह है कि वह अपने आदर्श से पतित हो गये हैं। भगवत भक्तों का कर्त्तव्य तो भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज एवं श्री कृष्ण भगवान को येन केन प्रकारेण रिझाना, लाड़ लड़ाना एवं खुश करना ही है। परन्तु लीला कर्त्ता धन के लालच में पड़ने से इस राह को भूलकर दुनियाँदारों के रिझाने एवं प्रसन्न करने में ही लिप्त हो गये हैं। इसलिये हमें तो ऐसी नाटकी, नौटकी एवं स्वाँग खेलने वाली मंडलियों से प्रयोजन ही क्या है जहाँ न तो कोई धर्म कर्म या भाव भक्ति ही है और न ही लीला स्वरूपों के खानपान जात पांत एवं उनके सदाचार का ठिकाना ? ठीक भी है जो लोग केवल स्वार्थी एवं

टके के गुलाम बनकर बिना बुलाये द्वार द्वार घूमने फिरने वाले इन्हें न बातों से मतलब ही क्या ? और ऐसे इन स्वरूपों में भाव, भक्ति, प्रेम, आवेश, चमत्कार भी कहाँ ? इधर हमारा भी ऐसी मंडली वालों से सम्बन्ध ही क्या ? इन मंडलियों की लीला में एवं प्रेमी जनों के हृदय अन्दर छिपी हुई लीला में तो जमीन आसमान का अन्तर है ।

मैं तो यहां केवल उन भगवद् भक्तों के करने योग्य ही लीलाओं का वर्णन करूँगा जो कि परोपकार दृष्टि से दूसरों को तो परमानन्द एवं सुख प्रदान करते ही हैं परन्तु स्वयं भी भगवत प्रेम में निरन्तर मग्न होकर छके रहते हैं इस प्रकार की कुछ भावुक मडलियाँ श्री अयोध्या जी, श्री मिथिला जी, श्री वृन्दाबन, या श्री काशी जी (रामनगर) में ही देखने को मिल सकती हैं। और इन्हीं में से कोई कोई चमत्कारी लीला स्वरूपों के शुभ दर्शन भावुक भक्तों को भी हो सकते हैं ।

❀ भावना का अटल सिद्धान्त ❀

भावना का खेल नितान्त मधुर है, भावना भक्ति है तो भाव प्रेम है । इसलिये जो प्रेमी नहीं, वह भक्त नहीं हो सकता, और जो भक्त नहीं वह प्रेमी नहीं हो सकता । आवश्यकता है निरन्तर भावना का श्रंगार करके भाव में प्रवेश करने की, इसमें प्रवेश करते ही जीव चिन्मयता का अनुभव करने लगता है। प्रेम और भक्ति में कोई अन्तर नहीं, (प्रेम बिना भक्ति नहीं और भक्ति बिना नहीं प्रेम) । सच्चे प्रेम एवं भाव भक्ति के बिना मानव हृदय हृदय ही नहीं है बल्कि अत्यन्त कठोर पाषाण है । जिसके

हृदय में प्रेम है वही जीता जागता इन्सान है, जिसके हृदय में प्रेम नहीं वही मृतक समान है।"

भावना के विषय में ऋषि मुनियों का अटल सिद्धांत यह भी है कि सुन्दर काम करने वाले के विचार यदि अपवित्र हैं तब तो एक दिन वह जरूर पापों की ओर झुकेगा, और यदि पाप करने वाले के विचार पवित्र हुये तो वह भी शीघ्र संत जनों जैसे आचरण करने लगेगा। इसलिये हमारे धर्म शास्त्रों ने किसी भी कर्म को भला या बुरा न मान कर भावना के ही दर्जे को सबसे श्रेष्ठ मानते हुये भावना की ही प्रधानता रक्खी है। भगवान को जो कोई जिस भावना से भजते हैं उन्हें उसी भावना के अनुसार ही दर्शन भी होते हैं!

यह जीव किसी प्रकार से जब किसी भावना की ओर चलता है तो भगवान भी उसकी ओर चलते हैं। यदि जीव एक पग बढ़े तो भगवान निन्नानवे पग आगे बढ़कर उसके समीप आ जाते हैं। देखिये! कथा तो सभी सुनते हैं किन्तु उसमें भावना और विश्वास होते ही सिद्धि मिलती है, मन्त्र में, अनुष्ठान, औषधी में, शुभ कर्मों में भावना को ही प्रधान माना गया है। इसलिये अपने साधन पर जिसे पूर्ण विश्वास होगा वही तो दूसरों का भी कल्याण कर सकता है! जो स्वयं उसका आचरण नहीं करता, उसमें भावना और विश्वास नहीं रखता, दूसरों से उसे करने के लिये वाध्य करता है तो उसके कहने का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु यह नियम है कि अनुभवी पुरुषों के वचनों का ही भारी प्रभाव पड़ा करता है।

कर्म ऊँचा भी हो, और भावना नीची हो तो वह कर्म नीच बन के नर्कों में ले जाता है जैसे कि यज्ञ, दान, इत्यादि कर्म तो सब ऊँचे हैं परन्तु उसके फल स्वरूप में अगर किसी शत्रु के

नाश करने कराने की कामना पैदा हो गई तब तो उस उत्तम कर्म का फल भी तमोगुणी हो जाता है। इसलिये हमारी शुभ कामना ही हमें दुष कर्म से छुड़ाकर ऊँचे चढ़ा सकती है। और अशुभ भावना नीचे की ओर घसीट लाने में देरी भी नहीं लगाती तभी तो निष्काम कर्म योग की इतनी भारी महिमा मानी गई है। परन्तु आज कल हम लोग किसी के मानसिक भावों की ओर न देख कर केवल उसके बाहरी रंग ढंग को देखते ही भला बुरा राग अलापना आरम्भ कर देते हैं। जोकि भारी अनुचित है। आज भी ऐसे महान पुरुष एवं लीला स्वरूप पड़े हैं, कि जिनके जीवन को देखकर उनके हृदय के भावों का पता लगाना कठिन ही नहीं बल्कि टेढ़ी खीर है उनकी देख रेख एवं जांच पड़ताल में जब कि बड़े बड़े तत्ववेत्ता भी चक्कर में पड़ जाते हैं, तब साधारण लोगों की कौन कहे ?

इस भारतवर्ष में इसी घोर कलियुग के दौर में इस समय भी सच्चे साधु एवं ईश्वर प्राप्त महान पुरुषों का अभाव नहीं है। अनेकों सिद्ध महान पुरुष गुप्त प्रकट रूप से संसार में विचरते हुये भगवान के साकार स्वरूप का आनन्द ले रहे हैं! अर्थात् ऐसे सिद्धों की भी कमी नहीं है, जो कि भगवान का साक्षातकार न कर चुके हों। जब कि अनेकों पाखण्डी और धूर्तलोग भी इसी साधु वेष में छिपे छिपे अपनी आयु के दिन बितीत कर रहे हैं। इसी प्रकार यद्यपि भावुक लीला मंडलियों में चमत्कारी लीला स्वरूपों का मिलना असम्भव नहीं तो कठिन जरूर है। परन्तु श्रद्धा पूर्वक खोज से मिलना कठिन भी नहीं है। यदि आप की अभिलाषा तीव्र है, लगन सच्ची है तो सच्चे संत एवं चमत्कारी लीला स्वरूप आप को घर बैठे ही मिलेंगे। अधिक क्या कहूँ स्वयं भगवान को संत और लीला स्वरूप बन कर आप को दर्शन देने के निमित्त संसार में आना पड़ेगा। कारण कि

भगवान तो पुरुष के विश्वास में ही विराजमान हैं ! आत्मविश्वास सफलता की कुंजी विजय का मूल मन्त्र एवं परमात्मा को खैंचने वाला चुम्बक है।

"सिद्क और यकीन के बिन दिलवर मिले कहाँ,
गो जंगलों में वर्षों सिर को पटक रहा"।

बिना विश्वास और श्रद्धा के कोई भी काम पूरा हो नहीं सकता। महान पुरुषों ने जो कुछ भी प्राप्त किया है, जो कुछ भी कर दिखाया है वह केवल उनके अपूर्व विश्वास का ही तो फल है। विश्वासी पुरुष तो बड़े भारी पर्वत को भी अपनी जगह से हिला सकता है। प्रार्थना एवं आर्तनाद द्वारा साकेत पुरी में विराजमान भगवान उसके प्रेम पाश में बंध कर तुरन्त खिंचे २ आ सकते हैं। भगवान भक्त के वश में होने के कारण कभी इसकी अवहेलना नहीं करते ! कारण कि दीन हीन भक्त की सच्ची पुकार सप्त लोकों का भेदन करती हुई भगवान के कर्ण कन्दरों में तुरन्त पहुँच जाती है, इसलिये साधक के गद्‌गद्‌ होकर पुकारने पर प्रभु कभी विलम्ब नहीं करते। और नंगे ही पावों दौड़े २ चले आते हैं, सज्जनों ! इसमें आवश्यकयता हैं, सच्ची लगन की--सच्ची व्याकुलता एवं सच्ची तड़प की ! मन की कचाई दूर किये बिना भगवत प्राप्ति असम्भव है।

"बिनु बिश्वास भक्ति नहीं, तेहि बिन द्रवहिं न राम,
रामकृपा बिनु स्वप्नेहु जीव न लह विश्राम।"

कई विचारों के वशीभूत आज मेरी अभिलाषा जाग्रत हुई है, सज्जनों ! सुनिये यों तो सैकड़ों भावुक लीला स्वरूपों के अनुपम चमत्कारी सिद्धियों तथा भविष्य वाणियाँ को अनेकों प्रेमी जन देख सुन चुके होंगे। परन्तु मैं इस समय विहौती भवन श्री अयोध्या जी के एक अनूपम चमत्कारी ब्राह्मण बालक श्री

मणीराम जी तिवारी (लीला स्वरूप) की जीवनी को लिखकर विरोधी जनता को यह दिखाना चाहता हूं कि जिस प्रकार पृथ्वी शूर वीरों, दानवीरों, एवं धर्म वीरों से कभी खाली नहीं रही इसी प्रकार चमत्कारी एवं प्रभावशाली लीला स्वरूपों, एवं महां पुरुषों से भी यह भारत भूमि न तो कभी खाली रही है और न ही कभी खाली रहेगी। समय समय पर प्रत्येक भावुक लीला स्वरूपों में आवेश आया ही करता है किसी में कुछ कम किसी में अधिक, इसका अनुभव भी किसी बड़भागी और भगवत कृपा पात्र को ही हुआ करता है सबको नहीं, कर्महीन लोग तो इस आनन्द और सुख से सदा बन्चित ही रहा करते हैं, और रहेंगे भी कारण कि—

"सकल पदार्थ हैं जगमाहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं।"

और कलिमल ग्रसित कर्महीन अभागे जीवों का इतना सुन्दर भाग्य ही कहाँ कि उस प्यारे का दर्शन कर पायें। पास में रहने वाले भी जब कि माया के परदे में छिपे उस लीला धर प्रभु की ओर देखना तक भूल जाते हैं। तब दूसरों का तो कहना ही क्या ?

भगवत भक्तों के जीवन चरित्रों को पढ़ने सुनने से भारी आनन्द सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है इनकी कथायें तो संसार ताप से सन्तप्त जीवों को जीवन दान देने वाली होती हैं। यह तो मार्ग ही अलौकिक है। इसे वही पा सकते हैं, जिनको भक्ति सागर में गोते लगाने का पूरा २ शौक हो, उत्कठ अभिलाषा एवं प्रबल इच्छा हो! जो दृढ़ विश्वासी श्रद्धालु एवं लगन के सच्चे भावुक जिज्ञासु होते हैं वह अनुभवी महान पुरुषों की वाणी का परम उज्जल प्रकाश पाकर इस भवसागर को अनायास ही पार करते हुये भगवान के समीप पहुँच जाते

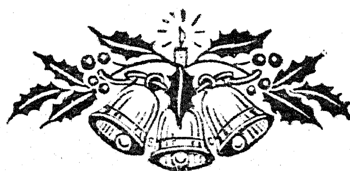
हैं, श्रद्धा और विश्वास मनुष्य के भीतिरी नेत्रों को खोल देते हैं, जब कि श्रद्धा विश्वास रहित मनुष्य परमार्थ के मार्ग पर सदा अन्धों कीतरह राह ही टटोला करते हैं।

सज्जनों! मेरे जैसे साधारण व्यक्ति का ऐसे अनूपम लीला स्वरूप बालक (श्री सिद्ध किशोरी जी) की जीवनी लिखने का साहस करना यह उपहास नहीं तो और क्या है? परन्तु लेखनी लिखने के लिये हठ पर तुली है मानती नहीं है, "इसलिये छमहहिं सज्जन मोरि ढिठाई।" दुरजन तो हँसेंगे ही, किन्तु इससे क्या? मुझे प्रसङ्ग वश लिखने का अवसर प्राप्त होने के कारण स्वयं कृत कृत्य होने एवं अपनी वाणी को भी पवित्र करने के निमित उनके चरित्रों का कुछ संक्षेप से ही दिग दर्शन मात्र कराना आवश्यक प्रतीत हुआ है। भला "सागर को गागर में कैसे भरा जा सकता है" यदि मैं "उनके सात वर्ष के स्वरूपाई के समस्त चरित्रों को लिखने बैठूँ तो उसे लिखता ही रह जाऊँ! सुनिये, मुझे बचपन से लेकर आज तक (इस समय मेरी आयु लगभग ७० वर्षकी है) श्री लीला बिहारी स्वरूपों के सम्पर्क एवं सेवामें हीअधिकतर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनमें से कई स्वरूपों के अलौकिक चमत्कारी चरित्रों का अनुभव मुझे कई बार हुआ है, किसी में कुछ कम किसी में कुछ अधिक किन्तु सब से अधिक अनुभव तो श्री सिद्ध किशोरी जी के ही चरित्रों में हुआ। इस विषय में मेरा पूरा अनुभव है इसलिये लीला स्वरूपों के विरोधी जनों के सम्मुख इसी कलियुगऔर इसी भारत भूमि में ही मैं अनेकों ऐसे प्रेमी भक्तों के शुभनाम गिनाने को तैयार हूँ कि जिनको प्राय: लीला बिहारी स्वरूपों में ही लीला-धारी भगवान के शुभदर्शनों का कई बार अलभ्य लाभ प्राप्त हुआ है तथा उन्हीं के दर्शनों एवं चरित्रों द्वारा वह कृतार्थ होकर होकर पूर्ण मनोरथ भी हुये हैं। आज दिन भी ऐसे २ लीला

स्वरूपों के चमत्कार कई जगह नजर आते सुने गये हैं। क्यों न हो! भावग्राही भगवान भक्त की दृढ़ भावना अनुकूल ही उसको फल देते हैं, इस लीला विहारी सरकार को वश करने के लिये केवल सच्चे प्रेम और दृढ़ भक्ति की ही आवश्यकता है धन की नहीं, वैभव या धन के वश में कदापि नहीं हो सकते। और अन्तर्यामी होने के कारण इनके सामने किसी का छल, कपट, दम्भ भी नहीं चल सकता।

यदि ऐसा न होता तो लाखों करोड़ों मनुष्य इन लीला विहारी श्री राम कृष्ण भगवान की साधना में अहिर्निश लगे न रहते, थक थका कर बैठ ही जाते, तथा इनके लिये लालायित रहने वालों का नाम व निशान तक मिट जाता, मगर ऐसा तो है नहीं। श्री राम कृष्ण लीला मंडलियों, रहस्य मंडलियों, भक्त मंडलियों, झांकी एवं कीर्तन मंडलियों की तथा इनके साथ साथ इनके प्रेमी भक्त जनों, सेवकों एवं दर्शकों की भी भारत में इस समय कमी नहीं है किन्तु पहिले से तो प्रतिदिन अधिकता ही देखी जाती है।

जिनको विश्वास न हो वह श्री अयोध्या जी, श्री मिथिला जी, श्री सीता मढ़ी, श्री रामनगर (काशी) श्री चित्रकूट कर्वी स्थान, श्री मथुरा, वृन्दाबन, वर्सांना आदि में जाकर श्री राम कृष्ण लीला मंडलियों की अनेकों अद्भुत लीलाओं के सुखों का अनुभव करें।



❀ जन्म भूमि, बाल्यकाल एवं नामकरण ❀

प्रेमी सज्जनों ! आप लोगों को उकताने और घबड़ाने की आवश्यकता नहीं ! आप अपने मन मन्दिर को पवित्र बनालें, और जरा सावधान होकर सुनें मैं आप सब को एक बिल्कुल सच्चा वृतान्त जिसे १५।१६ वर्ष हुये सुनाता हूँ, यह न तो कोई किस्सा है न गप्प। और न ही उपन्यास, यह तो एक ऐसे सुपात्र कुलीन ब्राह्मण बालक (श्री लीला स्वरूप) की चमत्कारी जीवन झांकी है जिनके अनेकों अनूपम चमत्कारी सिद्धियाँ और भविष्य वाणी तक कई लोगों को दृष्टि गोचर हुई हैं, इन चरित्रों की सत्यतासिद्ध करने कराने वाले अभी सैकड़ों मनुष्य वर्तमान हैं, जिनको उन लीला स्वरूप की सेवा दर्शन तथा कृपा का लाभ भी प्राप्त हुआ है।

जिला छपरा के अन्तर्गत माणीपुर ग्राम है। उस ग्राम में एक बड़भागी भागवत भक्त पं० ट्रिघेश्वर तिवारी जी निवास करते थे जो कि धन धाम से सम्पन्न थे, आप की धर्म निष्ठा अत्यन्त प्रशंसनीय थी जिस प्रकार धर्म को आप अपना सर्वस्व समझते थे, उसी प्रकार उनकी धर्म परायणा पत्नी श्रीमती श्री जुगुल सहचरी जी भी समझती हैं। आप दोनों के दीक्षा गुरु साधु भूषण पूज्य पुजारी श्री रामशंकरशरण जी महराज हैं, सब से श्रेष्ट बात तो यह है कि आप दोनों भगवान के प्रिय अनन्य भक्त साथ ही साथ कट्टर गुरू भक्त भी रहे। यही कारण है कि इन्होंने ऐसे अनूपम रूप राशि पुत्र रत्न को प्राप्त कर भारत के इतिहास में अमरता प्राप्त करते हुये समस्त लीला मंडलियों को भी गौरव प्रदान किया। आप दोनों की निरन्तर

यही हार्दिक अभिलाषा रही, कि हमारा पुत्र प्रभु का प्यारा दुलारा भक्त बने इसलिये प्रभु कृपा से आगे चल कर इनकी मनोकामना पूर्ण रूप से सफल हुई जिस किसी का परम सौभाग्य होता है, वही ऐसे सुपुत्र की प्राप्ति भी कर सकता है।

भगवान कभी भी किसी चीज़ का बीज नाश नहीं होने देते, बीज नाश हो जाय, तब तो समस्त क्रीड़ा ही समाप्त हो जाय परन्तु क्रीड़ाप्रिय भगवान ऐसा चाहते नहीं, वह तो नित्य नवीन क्रीड़ा एवं लीला करने के आदी हैं, देखिये ! किसान यद्यपि अपने खेत को काट लेता है, खेत में दाना भी नहीं छोड़ता, परन्तु घर में छिपा कर कुछ बीज आगे के लिये अवश्य रख छोड़ता है। ताकि समय पर यही बीज फिर वृक्ष होकर फलने फूलने लगें। इसी प्रकार भगवान ने भी लीला मंडलियों के गौरव अर्थ "श्री सिद्ध किशोरी" रूपी बीज को सुरक्षित रख छोड़ा था। जो कि भगवान की असीम अनुकम्पा द्वारा ही वैसाख शुक्ल पक्ष नौमी सम्वत् १६८० को पंडित सिधेश्वर तिवारी जी के घर में फल फूल कर पुत्र रत्न रूप में प्रकट हुआ इनके शुभ जन्म की चर्चा थोड़ी ही देर में आस पास के ग्रामों तक फैल गई। सगे सम्बन्धी सब एकत्रित होने लगे। घर में अनेक प्रकार की मंगल बधाइयाँ होने लगीं। खूब गाजे बाजे बजने लगे, इनके माता पिता ने अपनी शक्ति से अधिक उत्साह दिखलाया ! आगन्तुक ब्राह्मणों अभ्यागतों एवं अनाथों को भी सुन्दर भोज और दान दक्षिणा से भली भाँति सन्मानित किया जिस किसी ने जो कुछ भी याचना की उन्होंने सब को दिया उनकी ऐसी उदारता को देखकर सभी ब्राह्मण तथा याचक बहुत ही सन्तुष्ट हुये और अन्तः करण से नवजात शिशु की मंगल कामना करते हुये भाँति भाँति के आशीर्वाद भी देने लगे।

तेजस्वी, अलौकिक, आभासम्पन्न दिव्य पुत्र के चिरंजीवी रहने के निमित्त इनके माता पिता भी अहर्निश भगवान से प्रार्थना करने लगे। इनके माता पिता एवं परिवार के लोग शिशु के मुख मंडल को निहार निहार कर आनन्द विभोर हो जाया करते थे, इन्हें अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करते और बिछोह एक पल का भी सहन न कर सकते थे। बाल अवस्था प्रभुदत्त एक अनूठा रत्न है, इस अवस्था के समान दूसरा कोई भी अवस्था नहीं होती, पुत्रों के ऊपर माता की तो स्वभाविक ममता होती ही है, इसलिये माता के आनन्द का पता लगाना इस जड़ लेखनी का काम नहीं, यह तो कोई पुत्र वत्सलाही अनुभव कर सकती है। बालक अति सुन्दर होने के कारण सब को प्रिय लगते थे, इनको बाल्यकाल से ही खेल कूद लड़ाई झगड़ा रोना धोना तनिक भी प्रिय न था घर में ही रहकर अपने माता पिता की गोदी में खेलते और उनको सुख देते थे, आपके बाल्यकाल के चरित्रों को विस्तार के भय से अधिक न लिख कर केवल इतना ही लिखा जाता है कि आप के बाल चरित्र भी अद्भुत एवं अपार थे। क्यों न हो? संस्कारी बालकों के बचपन भी तो निराले और अनोखे ही हुआ करते हैं, इसी प्रकार आप का लड़कपन माता पिता की देख रेख में बहुत ही आनन्द से व्यतीत होता रहा! बालक का जन्म पुष्य नक्षत्र में हुआ था जिस किसी का जन्म जैसे नक्षत्र में होता है, जीवन भर उसे वैसी ही घटनाओं का सामना भी करना पड़ता है। जन्म के शुभाशुभ पैदा होते ही प्रतीत होने लगते हैं, छठी के दूध का प्रभाव प्रारम्भ से ही प्रकट होने लगता है। भला! नक्षत्र का फल कैसे अन्यथा हो सकता है।?

जब बालक की अवस्था चार महीने की हुई तब शुभ मुहूर्त में इनका नाम संस्कार किया गया विद्वानों ने श्री ज्योतिष शास्त्र

के अनुसार इनका शुभनाम "श्री मणी राम जी" रक्खा ! जो कि अनुपम मणि ही निकले। अब माता पिता के लाड़ प्यार में यह धीरे २ बढ़ने लगे, इनका सलोना मुख मंडल मानों लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने का एक जादू भी जानता था जो कोई एक बार इन्हें देख लेता बरबस मोहित हो जाता, आपके विशाल एवं रतनारे नेत्रों के साथ साथ भोलापन तथा मन्द मन्द मुसकान भी गजब की थी, विचित्र गम्भीरता एवं तेज भी बचपन से ही मुखड़े पर चमकने लगा था, सुन्दर मुखारविन्द और रसीले रंगीले नेत्रों के दर्शन मात्र से लोगों के दुख दर्द भाग जाते थे ? इनकी मधुर एवं मन्द मन्द मुसकराहट सब के जी को चुराने का हुनर भी जानती थी। आपकी बुद्धि बड़ी ही तीक्ष्ण थी, और आप बड़े साहसी एवं निडर भी थे। तेज व प्रभाव में भी कुछ कम न थे, तभी तो आपके सामने बोलने का किसी को साहस तक नहीं होता था।

बालकों की बाल्य लीला भी बड़ी ही विचित्र हुआ करती है तथा इनका प्रत्येक कार्य्य मनमोहक एवं आकर्षक होता है। जब कि साधारण बालकों का व्यवहार इतना मनोरम, सरस, सरल और भोला भाला होता है, तब तो ऐसे अलौकिक चमत्कारी बालकों का व्यवहार और भी विचित्र होना ही चाहिये ! आपके मधुर कोमल बचनों के साथ साथ मधुर मनोहर हंसन तो पत्थर हृदय को भी पानी पानी कर देती थी बाणी क्या थी ? मानों सुधा से सानी हुई संजीवनी थी, हृदय को प्रेम से प्लावित करने वाली थी, जिसको सुनते ही प्रेमी जन मुग्ध हो जाते थे। न जाने इनमें कौन सी मोहनी शक्ति थी, जिसके कारण साधारण लोग भी इनकी तरफ खिच कर इनके अलौकिक आनन्द का अनुभव करते हुये कृत्य कृत्य होकर इन्हीं के प्रेमी बन जाते थे, इनकी

तिरछी चितवन तो गजब की थी, जो सब को घायल कर देती थी, आप अपने माता पिता के परम प्रिय लाड़ले पुत्र थे। आपका रूप लावण्य भी अद्वितीय था तभी तो जो कोई देखता चकित रह जाता। इस प्रकार ललित बाल्य जीवन का सुख अनुभव दिव्य दाम्पत्ति कर ही रहे थे कि अचानक इनके दीक्षा-गुरू महाराज पुजारी श्री रामशंकरशरण जी श्री अयोध्या जी से इनके शुभ सदन में पधारे, विधिपूर्वक आपका आगत स्वागत हुआ, उस समय बालक की आयु केवल ४ वर्ष की थी बालक ने अपनी मोहनी झाँकी दिखाकर श्री पुजारी जी के मन को तो चुरा ही लिया। जब बालक की अवस्था छः वर्ष की हुई उस समय भी श्री पुजारी जी इनके ग्राम में पधारे, तब इनके माता पिता एवं परिवार के कुछ लोगों की श्री अयोध्या जी के दर्शनार्थ प्रबल इच्छा जाग्रत हो आई तो श्री पुजारी जी महराज के साथ २ प्रस्थान भी कर डाला, श्री अयोध्या जी पहुँच श्री विहौती भवन में ही निवास कर दर्शनों का आनन्द लेने लगे बालक श्री मणिराम जी की छटा ऐसी अनोखी एवं मोहनी थी कि उनकी उपमाँ किसी दूसरे बालक से क्या हो सकती है? तभी तो एक स्त्री ने इनका दर्शन करते ही प्रेमावेश में आकर कह डाला था कि न जाने इनकी माता ने बेटा क्या जना है एक जादू की पिटारी जनी है, और साथ ही साथ इनके मुख पर भी ऐसा कौन सा मसाला पोत दिया है कि जो भी इन्हें देख लेता है उसको पागलों की सी दशा हो जाती है, इनके सौंदर्य्य माधुर्य्य की अनुपम सुन्दर छटा को निहार कर सजीव तो निर्जीव एवं निर्जीव सजीव बन जाते हैं। इनके गम्भीर सुशील एवं सर्व प्रिय संकोची स्वभाव से संत महन्त एवं सभी प्रेमी लोग सन्तुष्ट रहते थे।

एक दिन श्री हनुमान बाग में श्री विहौती भवन समाज के

श्री जुगुल सरकार की झाँकी होनी थी और भोजन का निमन्त्रण भी था प्रस्थान करते समय श्री मणीराम जी भी हठ पकड़ कर मचलने लगे कि हम भी दर्शनार्थ श्री हनुमान बाग में चलैंगे, इनके कुछ चञ्चल स्वभाव के कारण श्री पुजारी जी को साथ ले जाने में संकोच था, अपने माता पिता के समझाने पर भी जब यह बालक नहीं माने और अधिक मचल कर रोने भी लगे तब श्री पुजारी जी में यह शक्ति कहाँ थी कि इनकी इस प्रकार की तीव्र एवं उत्कट अभिलाषा को टाल सकें। इनको भी पीली धोती पीला कुरता पहना पीला ही साफा भी बाँध कर संग में ले गये यद्यपि बालक का स्वभाव चंचल था, परन्तु श्री हनुमान बाग में पहुँच कर बराबर तीन घण्टे तक शान्ति पूर्वक सरकारी झांकी का अवलोकन करते रहे, आज के इस प्रकार के शान्ति स्वभाव को देख कर इनके माता पिता को भारी आश्चर्य्य हुआ, इधर श्री पुजारी जी भी इसका कारण सोचने लगे, तब इनको अनुभव हुआ कि श्री हनुमान बाग के सिद्ध श्री हनुमान जी के प्रभाव से ही इस बालक का चंचल स्वभाव भी जाता रहा है, आप इतने मधुर भाषी थे कि जो सन्त एक बार भी आप की मधुर वाणी को सुन लेता मुग्ध हो जाता। आप की मन्द मन्द मुस्कान में अनुपम मोहनी थी, ऐसा जादू और टोना भरा था जिसके कारण आपको उस दिन चारों तरफ से श्री हनुमान बाग के सन्तों ने भी घेर लिया आप के सुन्दर भोले भाले स्वरूप को निहारते हुये मन ही मन श्री सिद्ध हनुमान जी से प्रार्थना भी करने लगे कि यदि कहीं इस बालक को श्री जानकी जी का स्वरूप बनने की प्रेरणा कर दें तब तो मानों एक विलक्षण सुख और आनन्द की वर्षा होने लगे, कारण कि श्याम वर्ण श्री राम जी के साथ अगर यह गौर वर्ण बालक श्री जानकी जी का स्वरूप धारण

करने लगें तब तो इस श्याम गौर जुगुल जोड़ी की झाँकी अधिक सुन्दर एवं मोहनी प्रतीत होगी, श्री हनुमान जी महाराज ने सन्तों की इस प्रेम भरी प्रार्थना को सुना और खूब सुना। सज्जनो ! आगे चल कर हुआ भी ऐसे ही, "होनहार बिरवान के होत चिकने २ पात"

एक दिन श्री बिहौती भवन में दर्शनार्थ आये हुये श्री काशी जी के एक उत्तम ज्योतिषी जी की दृष्टि इस बालक पर पड़ी उन्होंने इनकी हस्त रेखा के साथ साथ इनकी जन्म कुण्डली को भी देखा और कहने लगे कि इस बालक को कोई साधारण बालक न समझना, यह तो कोई अलौकिक चमत्कारी सिद्ध पुरुष होगा, भगवत् भक्त होकर अपने कुल को भी उज्वल करैगा।

❀ यज्ञोपवीत एवं भगवत शरणागति संस्सकार ❀

अब बालक की अवस्था ७ वर्ष से कुछ अधिक हुई इसमें गर्भाधान का समय मिला कर ८ वर्ष की आयु में इनका उपनयन सस्संकार विधि पूर्वक अच्छे संत महात्माओं के समक्ष में श्री अयोध्या जी में ही सम्पन्न हुआ, उस समय बालक श्री मणीराम जी की हठ थी कि हमको यज्ञोपवीत के साथ २ तिलक कंठी गुरुमंत्र भी दिया जावै, तब इनके माता पिता परस्पर विचार करने लगे कि भगवत शरणागति भी आवश्यक है, कारण कि प्रभु शरणागति ग्रहण किये बिना संसार सागर से पार जाने की इच्छा करना केवल अज्ञानता ही है, प्रभु शरणागति भवसिन्धु से पार करने वाली एक दृढ़ नौका है, इसका आश्रय लेने से मनुष्य निर्भय हो जाते हैं। यद्यपि वैष्णवी श्री गुरू दीक्षा ग्रहण

करने के निमित्त किसी देश, काल, पात्र एवं नियम की आवश्यकता नहीं है, जैसे कि कोई भी कहीं पर किसी भी समय अमृत पान करे तो वह निसन्देह अमर हो ही जायगा। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य कहीं पर किसी भी समय प्रभु शरणागत होगा तो निसन्देह वह प्रभु प्रिय है, एवं प्रभु को प्राप्त कर ही लेगा, तथापि भाग्य वश अगर किसी अच्छे देश, अच्छे समय में कोई अच्छा सत्पुरुष भगवत शरणागत होता है तो उसमें कुछ अधिक ही गौरव प्रतीत होता है, इसलिये बालक की अधिक रूचि एवं हठ देखकर इनके पूज्य पिता जी की अनुमति अनुसार तीर्थ भूमि श्री अयोध्या जी में ही शुभ मुहूर्त पर अपने गुरू देव द्वारा इनको भी श्री वैष्णवी गुरू दीक्षा दिलाई गई।

माणीपुर ग्राम में श्री लीला स्वरूपों की प्राण प्रतिष्ठा एवं बिवाह-कलेवा उत्सव

माणीपुर ग्राम में पं० श्री सिधेश्वर तिवारी जी ने अपने मकान के समीप एक विशाल पक्का सुन्दर विवाह मंडप तैयार करवाया और उसमें श्री पुजारी जी महराज के स्वरूपों द्वारा ही श्री राम विवाह कलेवा उत्सव कराने का निश्चय भी किया, सूचना पाते ही श्री पुजारी जी अपने परिकर सहित पधारे उस समय इनके श्री जुगुल सरकार नवीन थे, अभी इनकी प्रतिष्ठा भी नहीं हुई थी, केवल यज्ञोपवीत और गुरूदीक्षा ही इनको दी गई थी, जिस समय श्री अवधविहारी शरण जी को श्री राम जी के निमित्त एवं श्री कमला शरण जी बालक को श्री किशोरी जी के निमित्त प्रतिष्ठा करने का विचार हुआ श्री पुजारी जी

ज्यों ही उनको स्नान के बाद पीतवस्त्र धारण कराकर चौकी पर विराजमान करके उनकी प्रतिष्ठा आरम्भ करना ही चाहते थे कि इधर बालक मणीराम जी मचल कर रुदन भी करने लगे श्री पुजारी जी का हाथ पकड़ कर कहने लगे कि श्री किशोरी जी की प्रतिष्ठा हमारी की जाय, और यह विवाह उत्सव भी हमारे द्वारा किया जावै, यदि ऐसा न हुआ, तो हम अन्नजल का परित्याग कर देंगे और कूप में गिरकर अपनी इस देह को भी नष्ट कर देंगे बहुत कुछ समझाने बुझाने पर भी किसी की एक न मानी और ठीक है मानते भी कैसे ? श्री हनुमान बाग के श्री सिद्ध हनुमान जी महराज के सन्मुख की गई महात्माओं कीप्रेमपुकार क्या निष्फल जा सकती थी ? बालक की इस प्रकार की उत्कट एवं तीव्र अभिलाषा को अब ठुकराने की शक्ति किसमें थी, बालक के विशुद्ध भाव एवं स्वच्छ प्रेम की सबने भूरि २ प्रशंसा की, इनके हार्दिक भावों को देख श्री पुजारी जी भी मुग्ध हो गये इनको तो भारी सुख मिला अन्तिम निर्णय इन्हीं को श्री किशोरी जी का शृंगार किया गया और इन्हीं के द्वारा यह विवाह उत्सव भी आरम्भ हुआ, जिस समय श्री अवधविहारी शरण जी को श्री राम जी का एवं श्री मणी· राम जी को श्री किशोरी जी का शृंगार किया गया, उस समय की छटा को भला यह जड़ लेखनी क्या लिख सकती है ? श्री श्याम गौर जुगुल सरकार की, इस अनूपम झांकी को निरख कर सब प्रेमी जन मुग्ध हो गये, दर्शकों की अपार भीड़ थी, साधू सन्तों की भी उस समय एक भारी जमात पहुँच गई थी, स का। तिवारी जी ने कई दिनों तक भली भाँति स्वागत सत्कार भी किया, उस दिन की झांकी के पश्चात् रात भर झूलन उत्सव हुआ, जिस से सब को परमानन्द की प्राप्ति हुई दूसरे दिन सन्ध्या समय कुछ प्रेमी भक्तों की अभिलाषा हुई कि

आज श्री किशोरी जी को श्री राम जी का एवं श्री राम जी के स्वरूप को श्री किशोरी जी का शृंगार करके झूला की झांकी की जाय, पुजारी जी जब श्री किशोरी जी को श्री राम जी का शृंगार करने लगे, त्यों ही श्री किशोरी जी ने श्री पुजारी जी का हाथ जोरों से पकड़ लिया, और निडर होकर धड़ाके के साथ कहने लगीं कि महराज जी, कल तो हमारी श्री किशोरी जी की प्रतिष्ठा होकर हमारा श्री किशोरी जी का ही शृंगार हुआ था फिर आज ऐसा अनुचित एवं विधि निषेध कर्म क्यों किया जाता है ? क्या यह कोई खेल तमाशा या नाटक मंडली है ? हम तो केवल श्री किशोरी जी का शृंगार छोड़ कर जीवन पर्य्यन्त कोई दूसरा शृंगार एवं कोई दूसरी भावना को भी स्वीकार न करेंगी चाहे कुछ भी क्यों न हो। बस फिर क्या था समस्त प्रेमी समाज एवं सन्त महन्त इनकी इस प्रकार की वार्ता सुनकर कृत कृत्य हो गये और इनके सच्चे दृढ़ भाव व प्रेम की भूरि २ प्रशंसा करने लगे। श्री पुजारी जी भी इनकी इस अद्भुत भावना की सराहना करते भये बोले सरकार ! जैसी आपकी आज्ञा है वैसा ही होगा, इस प्रकार इनका श्री किशोरी जी का शृंगार होकर रात भर जुगुल सरकार की झूला की झांकी हुई, कई दिन तक झूला और झांकियाँ होती रहीं, तत्पश्चात् पंचमी के दिन श्री विवाह उत्सव छठी को कलेवा सप्तमी को जुगुल झांकी एवं अष्टमी को चौथारी उत्सव होकर उत्सव समाप्त हुआ, उसके एक दो दिन बाद श्री पुजारी जी ने श्री अयोध्या जी के लिये प्रस्थान किया वहाँ से चलते समय श्री किशोरी जी ने भी आसन बाँध लिया और साथ में चलने को तैयार हो गईं, जब माता पिता ने इनको श्री अवध जाने से रोका तब तो हठ पकड़ मचल कर रोने लगीं कि अब हम घर पर कदापि न रहैंगी, श्री अवध ही में जाकर वहाँ भी जन्मभर

श्री किशोरी जी का ही श्रृंगार धारण करेंगी उस समय किसी को इस गूढ़ शब्द (जन्मभर) का अर्थ ही न मालूम हुआ, और चूंकि श्री लीलाधर प्रभु ने इन्हें तो इस जगत के रंग मंच पर एक आदर्श स्थापन करने तथा श्री लीला स्वरूपों को गौरव देने के निमित्त ही इस संसार में भेजा था तब यह अपने घर में कैसे रुक सकती थीं ? इनका हठ देख कर इनकी माता की बिरहाग्नि की ज्वाला भड़क उठी, परन्तु अपने प्रिय पुत्र की अभिलाषा एवं हठ को भी टाल न सकीं, इसलिये इनके माता पिता दोनों ने प्रसन्नता पूर्वक इन का हाथ श्री पुजारी जी को सौंपते हुये प्रार्थना की कि हे गुरुदेव ! यह बालक आपका है, इनको ले जावें, पढ़ावें, लिखावें, अथवा स्वरूप बनावें, हमको इसमें कोई आपत्ति न होगी, उस समय आपकी आयु केवल ८ वर्ष की थी, श्री अयोध्या जी में पहुँच कर सर्व प्रथम श्री मणीराम जी का श्री किशोरी जी का श्रृंगार श्रावण शुक्ला हरियाली तीज को होकर प्रथम मुहूर्त झूलन का श्री मणीपर्वत में हुआ, आप प्रेम पूर्वक वहाँ झूला झूलीं, फिर स्थान मे झूलन भर झूला होता रहा उस समय केवल जुगुल सरकार समाज में रहते थे, प्रतिदिन निरन्तर अष्टयाम विधि हुआ करती थी, हर मास की पंचमी, छठ को निरन्तर विवाह कलेवा उत्सव हुआ करता था, आपका बराबर ७ वर्ष तक श्री किशोरी जी का श्रृंगार हुआ, तब तक निरन्तर अष्टयाम विधि भी होती रही, इस समय उसी समाज में चार जुगुल अर्थात् आठ स्वरूप चार सरकार, चार श्री महरानी जी निरन्तर रहत हैं।

नोट— सज्जनो ! श्री बिहौती भवन के वर्तमान संचालक महंत एवं मालिक जो कुछ भी हैं श्री रामशंकर शरण जी महराज हैं, इनको मालिक या महन्त कहने से दुख होता है। इसलिये इनको श्री पुजारी जी कह कर लिखा जायगा और अब

यहाँ से आगे बालक श्री मणीराम जी को भी सिद्ध श्री किशोरी जी के नाम से सूचित किया करेंगे।

श्री सिद्ध किशोरी जी को घर में इनके परिवार के लोग कभी कभी भोली भाली बातों पर बुड़बक भी कह दिया करते थे, ठीक है यही दशा प्रायः पहले समस्त सिद्ध महान पुरुषों की हुआ करती हैं, पीछे जब उनका प्रभाव चमकता है, तब तो बड़े २ विद्वान एवं महात्मा भी उनको प्रणाम करते और उन्हीं बुड़बुकों से शान्ति तथा मुक्ति का मार्ग पूँछा करते हैं, आगे चल कर इनकी भी यही दशा हुई, वास्तव में आप कभी तो इतनी सुन्दर एवं बुद्धिमत्ता की बातें कह देती थीं कि अच्छे २ विद्वान और पंडित लोग भी उनको सुनकर चकित हो आप की प्रशंसा करने लगते, और कभी तो इतनी भोली भाली बातें किया करती थीं, कि इनको लोग नादान ही समझते थे! परन्तु किसी को यह क्या मालूम था कि भविष्य में इनका भाग्य भानु किस अलौकिक आकाश में चमक कर क्या क्या रंग लाने वाला है।

यह जगत ऐसा विकट और अगाध सागर है कि इसकी थाह का पता लगाना साधारण जीवों के लिये कठिन ही नहीं, किन्तु असम्भव है, संसारी अनुभव शून्य उपदेशक लोग उपदेश दे देकर हार जायें, लाखों पुस्तकें लिख डालें, परन्तु वर्तमान समय में सर्व साधारण मनुष्यों के हृदय पर इनका प्रभाव इतना नहीं पड़ सकता जितना कि प्रभु के सन्देश वाहक (प्रति निधियों) के बचन का पड़ता है भगवान की असीम कृपा जब जीवों के उपर होती है तभी तो ऐसे २ महान पुरुषों का प्राकट होता है, ऐसे ही महान पुरुषों का जीवन नींव के पत्थर के समान होता है, जिनके आधार पर दुनिया टिकती है जो

कोई ऐसे महान पुरुषों के आचरणों का आश्रय गृहण कर लेते हैं। वह स्वयं तो तर ही जाते है, परन्तु दूसरों को भी इस भव सागर से तारने में समर्थ बन जाते हैं। बस! ऐसे २ महान पुरुष ही जगत के आधार एवं आदर्श हुआ करते हैं। जिनमें से साक्षात एक हमारी सिद्ध किशोरी जी भी थीं महान उदार दयालु एवं अति कोमल आप का हृदय था, जिस पर आप की दया दृष्टि हो गई उस का तो बेड़ा ही पार होगया आप के गुणों का कथन करते ही हृदय गदगद होकर वाणी भी पवित्र हो जाती है, और मारे प्रेम के शरीर के रोमाञ्च तक खड़े हो जाते हैं, हृदय निर्मल होकर सच्चे भावुक प्रेमी को साक्षात श्री किशोरी जी की ही दिव्य झांकी नेत्रों के सामने झलक दिखा जाती है, वह बालक क्या थे आनन्द एवं स्नेह की एक सजीव मूर्ति थे, स्त्री पुरुष बच्चे बूढ़े जो कोई भी उनके सम्पर्क में आते मुग्ध हो जाते, एवं एक अलौकिक आकर्षण का भान करने लगते, आप की कृपा दृष्टि एवं आशीर्वाद द्वारा ही कई दुखी जनों के जीवन आनन्द मय हो गये थे।

धन्य है वह स्थल जहाँ उस बालक का शुभ जन्म हुआ और धन्य है वह भूमि जहाँ प्रभु के प्यारे उस बालक ने लीला स्वरूप के भेष में भ्रमण करके प्रेमी जनों को घर बैठे ही प्रेमामृत का पान कराया "अहो भाग्य! कि कुआँ प्यासे के पास आया।" धन्य हैं वे प्राणी जिन्होंने उनका शुभ दर्शन किया और धन्य हैं वे पुरुष जिन्होंने उनकी तन, मन, धन से सेवा करते हुये कृपा प्राप्ति का पूरा पूरा लाभ उठा कर अपना जन्म सफल किया और महान धन्य हैं उनके भाग्यशाली माता पिता जिन्होंने ऐसे अलौकिक अवतारी बालक को जन्म दिया, तथा लालन पालन कर उनकी बाल कालीन लीलाओं को प्रतिदिन देखने का सौभाग्य प्राप्त किया। अहा! संसार में वह कुल धन्य है, श्रेष्ठ है, पवित्र

है जिसमें ऐसे २ चमत्कारी और संस्कारी भगवत भक्त उत्पन्न हों। सज्जनों एक उदर से उत्पन्न होने पर भी सब के भाग्य अलग २ हुआ करते हैं—

"दो फूल साथ फूले, किस्मत जुदा जुदा है।
एक सेहरे में जा लगा, एक कब्र पर चढ़ा है।"
"दो भाई थे हकीकी, किस्मत की देखो यह खूबी।
एक शाहे तख्ते वाला, एक बे नवा गदा है।"

यदि कोई प्रभावशाली हुआ तो कोई प्रभाव हीन, कोई शक्ति शाली निकला तो कोई निर्बल, इसी प्रकार कोई यदि प्रकाशवान निकला तो कोई प्रकाश हीन।

हाय शोक! जैसे समुद्र से उत्पन्न होने वाले चन्द्रमा को उसमें रहने वाले जल जन्तुओं ने अमृत मय न समझ कर अपने ही सदृश जल जन्तु माना था ठीक वैसे ही संसारी लोगों में से भी श्री सिद्ध किशोरी जी को किसी ने अपना भाई तो किसी ने अपना पुत्र, किसी ने अपना सगा सम्बन्धी तो किसी ने अपना मित्र ही मान कर पुकारा एवं पुचकारा। इनके यथार्थ स्वरूप को किसी ने नहीं पहिचाना, ऐसा क्यों हुआ? केवल यही कह कर संतोष करना पड़ता है कि वह अपना यथार्थ रूप (कुछ इने गिने बड़ भागियों को छोड़ कर) दूसरे किसी को दिखाना ही नहीं चाहती थीं, सब लोगों के दिलों में अपनी माया का परदा ऐसा डाला कि इतना प्रभाव, इतना ऐश्वर्य्य, इतना चमत्कार प्रकट करने पर भी लोगों ने केवल यही समझा कि यह भी दूसरे बालकों के भाँति एक सुन्दर बालक हैं।

सज्जनो! मेरे पास इस समय श्री सिद्ध किशोरी जी के दो सौ से अधिक चरित्र हैं, अगर इन सबको लिखने लगूँ तो एक भारी ग्रन्थ बन जायगा। इसलिये इस समय १०८ चरित्र ही लिखकर विश्राम लूँगा।

❀ चमत्कारी चरित्र ❀

चरित्र नं० (१) श्री सिद्ध किशोरी जी की श्री माता जी जो अभी जीवित हैं और १५, १६ वर्ष से बिहौती भवन में रहकर श्री अवध वास कर रही हैं, उनका कथन है कि जब श्री किशोरी जी की अवस्था ६ वर्ष की थी ग्राम के कुछ बालकों ने उनसे कहा कि आप अपनी माता जी के कुछ रुपये चुपके से उठा लाओ, उनको आज इस खेत में बोकर सींच देंगे तो दो तीन महीने के बाद वह बड़े भारी पेंड़ होकर हजारों रुपयें फलने फूलने लगेंगे, इतना सुनते ही किशोरी जी अपने भोले स्वभावानुसार अपने घर से पन्द्रह बीस रुपये उठा लाईं और उन बालकों को देकर खेत में बोने को कहा। वह लड़के चालाक थे, उनके सामने रुपये बोकर जल सींच दिया, किन्तु रात को वह लड़के सब रुपये खेत में से निकाल २ अपने घर ले गये, दूसरे दिन जब उनकी माता जी को पता मिला तो उनके पूँछने पर सत्य सत्य सब समाचार कह सुनाया।

(२) एक दिन नाऊ ने आकर श्री पुजारी जी को एक शुभ संदेश सुनाया कि आज रात को श्री किशोरी जी की चचैरी बहिन की लड़की पैदा हुई है। पुजारी जी ने श्री किशोरी जी से कहा कि प्रसाद रूप में इस नाऊ को कुछ देकर विदा कर दें। श्री किशोरी जी ने एक धोती, एक लोटा और एक रुपया देकर कहा कि जाओ हमारी चचेरी बहिन का जितना फिनसा (दूध) हो वह हमारे पास शीघ्र ले आओ उसकी खीर बनाकर छोटे २ बच्चों को खिलाऊँगी, इतना सुनते ही जो वहाँ उपस्थित थे सब

हँस कर कहने लगे। आप तो बहुत ही भोली भाली हैं फिनसा गऊ भैंस के दूध का होता है क्या कहीं स्त्रियों के थन के दूध का फिनसा हुआ करता है ? इस पर श्री किशोरी जी मुसकरा दीं, कि हमें इस बात का ज्ञान नहीं है।

(३) हमारे श्री वैष्णव विरक्त समाज में एक परम प्रसिद्ध महात्मा श्री धर्म भगवान जी भी हैं जो बाल अवस्था में एक अद्वतीय चमत्कारी श्री राम जी के स्वरूप का श्रृंगार धारण कर चुके हैं। आपने भी अनेकों विचित्र चमत्कार दिखाये थे। तभी तो आज भी अच्छे २ महान पुरुष आप को उसी प्रकार गौरव की दृष्टि से निहारते तथा आपका उचित व्यवहार सत्कार भी करते हैं। आप श्री सद्गुरु सदन (गोलाघाट) एक एकान्त कुटिया में भजन करते हुये श्री अवध वास कर रहे हैं। आपका आचार-विचार, साधुता, पवित्रता एवं दयालुता भी अकथनीय है। लीला स्वरूपों की परख करने के आप पक्के जौहरी हैं, यों तो आप मर्यादा पूर्वक रहने वाले समस्त लीला स्वरूपों के बड़े भावुक प्रेमी एवं श्रद्धालु हैं ही, समय अनुकूल इन सब का लालन पालन लाड़ प्यार आप के द्वारा हुआ ही करता है, परन्तु जो कुछ भी सेवा लालन, पालन, लाड, प्यार प्रेम एवं दुलार आपने श्री सिद्ध किशोरी जी का किया। उतना किसी दूसरे स्वरूप का नहीं हुआ। आप को एक समय श्री किशोरीजी में साक्षात श्री जनक नन्दनीजू का भान हुआ तभी से आपने इनको श्री सिद्ध किशोरी जी के नाम से पुकारना आरम्भ कर दिया था, और आपने अपनी अनुमती (दो शब्द) में भी श्री सिद्ध किशोरी जी को मुक्त कंठ से शाक्षात श्री जनक नन्दनी जू लिखा है। आपका कथन है कि जैसे सूर्य के उदय होने पर सरोवर में स्थित कमल खिल जाते हैं उसी प्रकार श्री सिद्ध किशोरी जी के बाहर से आगमन की सूचना पाते ही उनके भक्त

प्रेमी जनों का संकुचित कमल रूपी मन खिल जाया करता था तथा इतने छोटे बालक के ऐसे अद्भुत पराक्रम एवं सिद्ध चमत्कारों को देख सुनकर लोग चकित हो असमञ्जस में पड़ जाया करते थे यदि उनसे कोई शंका समाधान करता तो तुरन्त उनके प्रश्नों का उत्तर बड़ी सुन्दरता एवं सरलता के साथ किसी को संक्षेप में तो किसी को विस्तार पूर्वक देकर सन्तुष्ट कर देती थीं उनकी मन्द मन्द मुसकराहट तो मन में मानों मिश्री ही घोल दिया करती थी और उनका अनुपम रूप भी आँखों में चुभ जाने से सर्वत्र सुख ही सुख प्रतीत होने लगता था। आप इतनी संस्कारी एवं होनहार थीं कि किसी के मन की बात को जान लेना तो आप के लिये बच्चों के खेल की भांति एक साधारण सी बात थी, और इनके सत्संग की जब कभी गुलाल उड़ती तो उसमें कई प्रेमी ऐसे रंग जाते कि जीवनभर अनुराग की लाली न छूट सके बल्कि गहरी ही होती जाय।

(४) श्री धर्म भगवान जी का कथन है कि एक दिन श्री सद्गुरू सदन में श्री पुजारी जी ने विनोदार्थ हास विलास करते हुये भरे दरबार में श्री राम जी दूल्हा सरकार से पूँछा कि आप के बाबू जी (पिता) भी हैं या आप की माता ने केवल खीर खाकर ही आप को जन्मा है। और यदि हैं तो उनको शीघ्र बुलवाइये, भाँवरी में उनका रहना अति आवश्यक है, श्री रामजी ने उत्तर दिया कि हाँ हमारे बाबू जी हैं वह इस समय सन्ध्या बंदन कर रहे हैं, उस समय श्री लक्ष्मण किला के पूज्य पंडित राज श्री जानकीवर शरण जी महाराज के कृपापात्र श्री स्वामी सत्याशरण जी महाराज जो कि भगवान के जगमोहन में बैठे भजन करते हुये विवाह लीला का भी आनन्द ले रहे थे, श्री राम जी ने इनकी तरफ उंगली से संकेत करते हुये पुजारी

जी को दिखलाया कि वह हमारे श्री बाबू जी बैठे भजन कर रहे हैं, इधर श्री स्वामी जी महराज की तरफ भी इशारा करते हुये उनसे भी कहा कि देखिये बाबू जी, यह मिथिला वासी लोग हमारी हँसी उड़ा रहे हैं कि तुम्हारे बाबूजी नहीं हैं इसलिये आप कृपया यहाँ शीघ्र पधारें-बस ! फिर क्या था श्री स्वामी जी महाराज भगवत् भागवत के परमानुरागी तो थे ही एवं आप की श्री लीला स्वरूपों में भी पूर्णश्रद्धा, भावना थी ही संकेत पाते ही आप तुरन्त श्री राम जी के समीप पहुँचे वात्सल्य भावना का आवेश होने के कारण आपने उनको अपनी गोदी में उठा लिया, और बेटा २ कह कर प्रेम पूर्वक उनको पुचकार ने लगे, आप बड़े भजनानन्दी प्रभावशाली एवं परोपकारी दयालु संत हैं तबसे आप प्रति वर्ष प्रधान श्री राम बिवाह पंचमी उत्सव पर श्री अयोध्या जी विहौती भवन में चक्रवर्ती श्री दशरथ जी की भावना का बहुमूल्य राजसी शृंगार धारण कर विवाह उत्सव में सम्मिलित हुआ करते हैं, इस समय आप की आयु लगभग ६० वर्ष की हैं, श्री जुगुल सरकार के अनुग्रह एवं आशीर्वाद से आप का मंगल विग्रह इस समय भी ऐसा सुन्दर और सुडौल है कि आप चक्रवर्ती ही प्रतीत होते हैं, धन्य हैं आप और अति धन्य है आप की इस सुन्दर भावना एवं इस सच्चे प्रेम को, आप की गुरू भक्ति भी अद्वितीय है आप के द्वारा श्री गुरू पूर्णिमा के दिन अपने गुरूद्वारा में की गई गुरू गादी पूजन का दृश्य तो देखते ही बनता है, लिखा नहीं जा सकता उस समय की आप की भावना एवं निष्कपट सेवा और भेंट पूजा को देख कर कहना पड़ता है कि आप परमउदार एवं दयालु संत होने के अतिरिक्त बड़े साहसी, सदाचारी एवं परम त्यागी भी हैं, केवल इतना ही नहीं बल्कि आप के निकट वर्ती सेवकों के द्वारा यह भी मालूम हुआ कि आप का मानसिक

पूजन अहर्निश चला करता है। ठीक भी है क्योंकि यदि आप की भावना और साधना ऐसी न होती तो श्री राम जी के लीला स्वरूप श्री चक्रवर्ती जी का पद आप को दे कर अपने पूज्य पिता जी कैसे बनाते।

(५) श्री धर्म भगवान जी का कथन है एक दिन प्रातःकाल श्री राम जी महाराज को बड़े जोरों से ज्वर चढ़ आया, वैद्य जी के बुलाने का विचार हुआ, तो श्री किशोरी जी ने कहा कि न तो वैद्य जी को बुलाया जाय, और न ही कोई औषधी मंगवाई जाय मैं स्वयं श्री राम जी को श्री भक्तमाल की कुछ कथा सुना कर तुरन्त आरोग्य करती हूँ। सज्जनो! किशोरी जी ने श्री राम जी को ज्यों ही थोड़ी देर तक भक्तों की कथा सुनाई, कथा सुनते २ ही वह तुरन्त अच्छे होगये, न तो वैद्य जी को बुलाना पड़ा और न ही किसी औषधी का सेवन कराना पड़ा। श्री सिद्ध किशोरी जी ने स्वयं वैद्य बनकर श्री भक्त चरित्र रूपी औषधी खिलाकर श्री रामजी को अच्छा कर भगवत चरित्रों की महिमा को प्रकट कर दिखाया, यह है इनकी बाल्य लीला का विनोद।

(६) श्री धर्म भगवान जी का कथन है कि श्री काशी जी में बाँस फाटक के समीप एक भक्त बलदेव खोंचा वाला रहता है, एक दिन वह श्री अयोध्या जी के दर्शनार्थ आया सर्व प्रथम श्री बिहारी भवन में चला गया ज्योंही श्री सिद्ध किशोरी जी ने कृपा पूर्वक उसको देखा और बुलाकर एक बीड़ी पान अपने कर कमलों द्वारा उसे दिया, न जाने उस पान में क्या जादू था या श्री किशोरी जी के स्पर्श में कोई टोना ही था, कि वह भक्त तो लट्टू हो गया और जितना भी घी में सेंका हुआ चना और चूड़ा संग में भगवान के भोग के लिये लाया था और किसी मन्दिर में न देकर सब सामग्री उसने यहाँ श्री जुगुल सरकार की भेंट कर दी श्री जुगुल सरकार ने भी अपने उस भक्त के उपहार को बड़े

प्रेम से स्वीकार करते हुये भोग लगाया और प्रसादी समस्त उपस्थित जनों को बँटवा दी, वह भक्त बावला सा बन गया। उसका श्री सिद्ध किशोरी जी के दर्शनार्थ श्री अवध में तीन चार बार प्रतिमास में आना जाना बराबर जारी रहा, श्री सिद्ध किशोरी जी को इस भक्त का यह उपहार अन्य बहुमूल्य मिठाइयों से भी अधिक प्रिय लगा तभी तो उसको प्रेरणा कर बुला लिया करती थीं और भक्त भी दौड़ा २ चला आता था, यह है इनकी विलक्षण बाल लीला।

(७) श्री धर्म भगवान जी का कथन है कि पंडित लवकुश शरण जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर उन दिनों श्री अवध निवास के निमित्त गोलाघाट स्थान के समीप अपना ही मकान बनवाकर रहते थे, आप श्री सिद्ध किशोरी जी का दर्शन करते ही उनके प्रभाव से ऐसे प्रभावित हुये एवं उनके आकर्षण से ऐसे जकड़ गये कि दिन भर में जब तक दो तीन बार उनका शुभदर्शन न कर लेते तब तक आपको कल न पड़ती थी, उनको कुछ खिलाये पिलाये बिना स्वयं भी कुछ ग्रहण न करते थे। इस प्रकार का अधिक स्नेह होने के कारण श्री पुजारी जी की अनुमति अनुसार आप ने प्रतिदिन श्री जुगुल सरकार को कुछ पढ़ाना, लिखाना भी आरम्भ कर दिया था, इसी बहाने से आपको प्रतिदिन इनका शुभदर्शन भी हो जाता था। आप ने श्री किशोरी जी से पुत्री का नाता दृढ़ कर लिया था तभी तो वे भी आपको बाबू जी (पिता जी) कहा करती थीं। और आप उन्हें बिटिया बिटिया कहते थे। श्री सिद्ध किशोरी जी के प्रति डिप्टी साहब को इस प्रकार की सच्ची भावना एवं अटूट श्रद्धा विश्वास को देख सुन कर श्री धर्म भगवान जी का भी आप से परम स्नेह हो गया था, एक समय श्री लवकुश शरण जी बीमार पड़ गये,

उस समय हमने सवारी भेज कर श्री सिद्ध किशोरी जी को बुलवा कर उनसे प्रार्थना की कि आपके प्रेमी श्री लवकुश शरण जी इस समय बहुत अस्वस्थ हैं। कृपया आप उनके समीप जाकर उनके सिर पर अपना हस्तकमल फेर कर उनको शीघ्र निरोग होने का आशीर्वाद दें उनकी पत्नी श्री विमलादेवी को भी जो बहुत घबरा रहीं हैं, सान्त्वना दे आवैं जिससे उनका हार्दिक दुख, चिन्ता और घबड़ाहट दूर हो जावै।

देखिये सज्जनों! श्री धर्म भगवान जी एवं पंडित जी का परस्पर श्री किशोरी जी से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध और प्रेम होते हुये भी श्री सिद्ध किशोरी जी ने उनकी बात को एक कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया, न तो किसी को अशीर्वाद दिया और न ही किसी को दिलासा! अपने भवन को वापस लौट गईं, थोड़ी देर के बाद जब श्री धर्म भगवान जी को इस बात की सूचना मिली तो आप भी बड़ी असमञ्जस में पड़कर सोचने लगे कि आज ऐसा क्यों हुआ इसमें कारण क्या है, इसी उधेड़ बुन में सोचते विचारते रात्रि के नौ बज गये, जब न रहा गया तो विवश होकर आपने श्री पुजारी जी को बुलवा कर उनसे सब वृतान्त कह कर उनको एक प्रकार का उलहना दे डाला, इतना सुनते ही श्री पुजारी जी से भी बर्दाश्त न हुई वह भी तुरन्त वहाँ से चल दिये, श्री लवकुश शरण जी की रोग पीड़ित दशा को देखते हुये दुखी होकर स्थान पर पहुँचे एवं श्री किशोरी जी से यों कहने लगे कि देखिये सरकार! श्री लवकुश शरण जी तथा श्री धर्म भगवान जी आप से कितना प्रेम करते हैं, आप में कितनी भारी श्रद्धा रखते हुये आप को कितनी ऊँची दृष्टि से देख कर आपका कितना मान सम्मान भी किया करते है किन्तु आपने जो आज उनकी बात को काट दिया

है यह उचित नहीं किया, उनको भारी खेद हुआ है तभी तो रात्रि के समय बुलाकर हमको उलहना दिया है, यदि आप पंडित जी को आशीर्वाद और उनकी स्त्री को कुछ दिलासा देकर चली आतीं तो आपका इसमें क्या बिगड़ जाता ?

श्री पुजारी जी की इन सब बातों को ध्यान पूर्वक सुनकर श्री सिद्ध किशोरी जी ने उत्तर दिया कि महाराज जी श्री धर्म भगवान जी तो ठहरे दयालु महात्मा, जब उनसे श्री पंडित जी का कष्ट सहन न हुआ तो झट हमको बुला कर उनको आशीर्वाद देने के लिये अनुरोध किया, परन्तु उन्होंने इस रहस्य को नहीं विचारा कि इसमें होनहार क्या है ? आज रात्रि के ३ बजे ब्रह्म मुहूर्त में पंडित जी साकेत लोक पहुँच जायँगे, तब हम आशीर्वाद कौन को दें, उन्होंने कई बार हमारे चरण पकड़ २ कर हमसे प्रार्थना की है कि बिटिया अब शीघ्र हमको साकेत लोक में भिजवा दो, हम यहाँ रहना नहीं चाहते, सज्जनों इतना सुनते ही श्री पुजारी जी चुप लगाके अपने आसन पर जा सोये, सबेरे गोला घाट की ओर स्नानार्थ जाते समय श्री पुजारी जी को मालूम हुआ कि रात्रि के ठीक ३ बजे श्री लवकुशशरण जी का शरीर शान्त हो गया।

आहा ! सच है कि भगवान अपने विशेष प्रिय भक्तों को इसी जन्म में अधिक कष्ट भुगवा कर उनको कर्म मुक्त कर देने के पश्चात् अपने दिव्य धाम में ले जाते हैं। यदि श्री सिद्ध किशोरी जी उनसे पिता पुत्री के नाते को निभाती हुई भी उनको अपने दिव्य लोक साकेत में अपने सामने न भिजवा देतीं तो यह नाता झूठा पड़ जाता, इसी भावना की पूर्ति के कारण ही तो आप को यह लीला रचनी पड़ी।

(८) श्री धर्म भगवान जी का कथन है कि एक समय

नवहाई स्थान के श्री महन्त जी महाराज के अधिक अस्वस्थ होने पर हमने श्री सिद्ध किशोरी जी से उनके आरोग्यअर्थ प्रार्थना करते हुये निवेदन किया था, कि यदि श्री महाराज जी शीघ्र स्वस्थ हो गये तो उसके उपलक्ष में हम आप के ही समाज द्वारा श्री चित्रकूट श्री जानकी कुंड पर उत्साह पूर्वक श्री बिवाह कलेवा उत्सव करावेंगे।

दया की भंडार श्री सिद्ध किशोरी जी की असीम अनुकम्पा द्वारा श्री महाराज जी नवहाई में शीघ्र अच्छे हो गये। इसलिये हम सब अपनी प्रतिज्ञानुसार श्री बिहौती भवन समाज के संग चित्रकूट श्री जानकी कुंड में पहुंचे। उत्सव दूसरे दिन से प्रारम्भ होने लगा उस समय स्वामी श्री सत्याशरण जी महाराज भी हमारे संग थे। श्री जानकीकुंड से थोड़ी दूरी पर महात्मा महावीर दास जी से महात्मा विदेहीवल्लभ दास जी तर्क द्वारा अपनी यह शंका प्रकट कर रहे थे कि सब लोग श्री किशोरी जी को सिद्ध किशोरी जी कहते हैं, यदि हमको भी कोई चमत्कार दिखावेंगी तभी हम भी उनको सिद्ध समझेंगे, इधर श्री जानकी कुंड पर श्री जुगुल सरकार के साथ २ और भी ६०/६५ प्रेमी जन कुल्ला प्रभाती कर रहे थे और नहाने की तैयारी थी कि अन्तर्यामिनी श्री सिद्ध किशोरी जी कुल्ला प्रभाती कर चुकने के बाद अकेली दौड़तीं तुरन्त उस जगह जा पहुँचीं जहाँ पर यह दोनों महात्मा परस्पर तर्क बितर्क कर रहे थे, वहाँ जा कर पीछे से महात्मा विदेहीवल्लभ दास जी की चुटिया पकड़ कर एक साधारण झटका भी दिया, जब महात्मा जी ने पीछे की तरफ श्री सिद्ध किशोरी जी को देखा तो कुछ लज्जित हुये इधर श्री किशोरी जी ने उनसे कहा कि आपने घर द्वार छोड़ा, माता पिता से मुख मोड़ा, अब बाबा जी हो गये तब भी शंका बनी है। बस! जाओ भगवान का भजन करो, अब

इस प्रकार का तर्क और शंका कभी मत करना। इतना सुनते ही महात्मा जी के होश उड़ गये, चरण पकड़ कर क्षमा मांगी तब श्री सिद्ध किशोरी जी ने भी उनके सीस पर अपना कर कमल फेरा और वहां से दौड़ी दौड़ी फिर श्री जानकी कुंड पर आ गईं और स्नान करने लगीं, साधूओं की डाक बड़ी ज़बरदस्त होती है, यह घटना संध्या समय तक समस्त कुटियों और गुफाओं में फैल गई। सज्जनो! श्री सिद्ध किशोरी जी के स्पर्श में भी स्पर्शमणि एवं बिजली जैसा प्रभाव था, जिससे लोग कुछ से कुछ हो जाया करते थे, जिन २ बड़भागियों को आप के स्पर्श का कभी सौभाग्य होता तो वह भी भावाविष्ट होकर अपूर्व प्रेम रस आनन्द में छक जाते !

(६) श्री धर्म भगवान जी का कथन है कि पंडित दुर्गादत्त जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर उन दिनों श्री अवध वास करते थे आप लीला बिहारी स्वरूपों के अनन्य भगत और कट्टर प्रेमी तो थे ही, एक समय आप श्री मिहोती भवन समाज के साथ २ श्री जुगुल सरकार की सेवा व दर्शनार्थ श्री चित्रकूट में भी चले आये वहाँ से उत्सव की समाप्ति पर जब समाज इलाहाबाद पहुँचा तो डिप्टी सा० श्री जुगुल सरकार को नवीन जोड़ा पहनाने के निमित्त ताँगे पर बैठा कर बाज़ार ले गये, बाज़ार में ताँगे पर बैठे हुये जाते जब एक मुसलमान सौदागर ने निहारा तो देखते ही उनको श्री सिद्ध किशोरी जी की आभा ने ऐसा आकर्षित किया कि वह चुम्बक की भांति अपनी दूकान से उठकर सरकारी ताँगे के समीप जा पहुँचा, श्री जुगुल सरकार को सलाम करने के बाद डिप्टी सा० से पूँछा, हुजूर कहिये, यह दोनों साहबज़ादे किनके हैं? कहाँ से तशरीफ लाये हैं, और कहाँ पर तशरीफ़ ले जाने का इरादा है डिप्टी सा० ने उत्तर दिया कि यह दोनों साहबज़ादे श्री अवधेश जी महाराज के

हैं, चित्रकूट से तशरीफ़ लाये हैं और श्री अयोध्या जी वापस तशरीफ़ ले जाने का इरादा है, इस वक्त मैं इन दोनों राजकुमारों को मखमली कामदार जूते पहनाने की ग़रज़ से बाज़ार में लाया हूँ, सौदागर ने डिप्टी साहब से कहा कि मैं हुजूर की भी तारीफ़ सुनना चाहता हूँ, डिप्टी सा० ने कहा कि मैं रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर हूं, मगर इस वक्त इन दोनों राजकुमारों की गुलामी (खिद्‌मत) में रहता हूँ, इतना सुनते ही उस सौदागर ने अपनी दूकान की तरफ़ इशारा करते हुये कहा हुजूर मेरी यही दूकान है, मेरे पास आला से आला कीमती जूते मौजूद हैं, आप बराय मेहरबानी मेरी दूकान पर तशरीफ़ ले चलें, इतना कहकर वह श्री जुगुल सरकार को अपनी दूकान पर ले गया, उनको सुन्दर कुर्सियों पर बैठा कर नीम पागल की तरह किस्म २ के जूते अपने हाथों से सरकारी चरणों में पहनाने लगा उसको अपने तन बदन का होश न था, थोड़ी देर के बाद दो जोड़ा जूते पसन्द हुये, उनका दाम बताने और लेने से सौदागर ने इन्कार किया, और कहने लगा कि हुजूर इन दोनों राजकुमारों को मेरी तरफ़ से यह दोनों जोड़ी जूते बतौर सौग़ात पेशे खिद्‌मत हैं, इनको कबूल फरमाया जावे ऐनखावन्दी होगी, और आप का शुक्रिया अदा करूँगा, परन्तु श्री सिद्ध किशोरी जी ने इनको मुफ्त लेना पसन्द नहीं किया इसलिये कुछ इलायची प्रसाद देते समय २०) बीस रुपये के नोट भी सौदागर के हाथ में दे डाले, वह रुपये लेने से बहुत इनकार करता रहा डिप्टी सा० ने उनको वापस न लेकर उस सौदागर को समझाया कि इन रुपयों को प्रसाद समझकर अपने खज़ाने में रखलो इससे तुमको भारी बरकत होगी, बरकत के लालच की वजह से उस सौदागर ने उन रुपयों को लेकर अपने खज़ाने में रख लिया, श्री जुगुल सरकार के जाते समय सौदागर ने एक ठंडी

साँस भर कर वाह "शुभान तेरी कुदरत" कह कर चुप लगा गया और बहुत देर तक सड़क पर खड़ा २ श्री जुगुल सरकार की झांकी को देखता ही रह गया, कहाँ तो श्री जुगुल सरकार और कहाँ एक मुसलमान सौदागर ? भगवान की लीला भगवान ही जानें ! बिना श्रृंगार के दर्शन करने पर जब कि सौदागर की यह दशा हो गई, अगर कहीं वह श्री जुगुल सरकार के श्रृंगार रूप में दर्शन कर लेता तो न जाने उसकी क्या हालत होती ?

(१०) श्री धर्म भगवान जी का कथन है कि हमने आज तक श्री रामलीला अथवा श्री कृष्ण लीला मंडली के किसी भी स्वरूप को श्रृंगार भेष में किसी दूसरे व्यक्ति का झूंठा खाते न तो स्वयं देखा है और न ही किसी से सुना है परन्तु कानपुर में सेठ हुलासी लाल रामदयाल बादशाही नाका के मन्दिर में श्री विवाह कलेवा उत्सव होते समय श्री सिद्ध किशोरी जी ने श्रृंगार स्वरूप में मेरे ही सामने स्वामी श्री सत्याशरण जी महराज से भोजन करते समय कहा था कि आपने श्री जुगुल सरकार की सीत प्रसादी बहुत दिन तक सेवन की है आज हम दोनों स्वरूपों की आपकी प्रसादी पाने के लिये उत्कट अभिलाषा प्रकट हुई है। परन्तु श्री स्वामी जी महाराज ने उनके इस प्रस्ताव को स्वीकार करने में भारी संकोच प्रकट किया और प्रार्थना की कि सरकार ऐसा उचित नहीं है, परन्तु श्री सिद्ध किशोरी जी की अभिलाषा कैसे टल सकती थी ? तुरन्त जुगुल सरकार ने अपने थाल छोड़ दिये और स्वामी जी के थाल में दोनों सरकार भोजन करने लगे, धन्य है ! आपकी अनुपम कृपा की। आप जिस किसी को अपना लेते हैं फिर त्यागते कब हैं ? इसप्रेम भरी भावना से दर्शक गण एवं प्रेमी जन अति मुग्ध, निहाल एवं कृत कृत्य हो

गये, और कई प्रेमी लोग सरकारों की निछावरें कर करके गाने बजाने वालों को भेंट करने लगे।

(११) गाडरवाला (सी. पी). के महन्त श्री शत्रुघ्न दास जी जो इस समय पं० श्री अखिलेश्वर दास जी "व्यास" श्री अयोध्या जी के शुभ स्थान में निवास कर रहे हैं आप का कथन है कि एक समय श्रावन के झूलन उत्सव का दर्शन करने के निमित्त हम श्री अयोध्या जी में रुक गये। और नित्य प्रति प्रत्येक स्थानों में जा जाकर झूलन का दर्शन करने लगे। एक दिन श्री बिहौती भवन में भी जाने का विचार हुआ, चलते समय अपने मन में यह संकल्प किया कि आज तो आदि से अन्त तक केवल वहाँ के ही झूला का दर्शन करेंगे। हमने पहिले कभी यहाँ के दर्शन नहीं किये थे इसलिये लीला बिहारी के यहाँ खाली हाथों जाना उचित न समझ कर उनके लिये आध सेर मलाई बाजार से एक कुल्हड़ में खरीद कर उसे अपनी साफी में लपेट लिया रास्ते में वर्षा होने लगी जिससे बिहौती भवन तक पहुँचते २ हमारा अचला बिल्कुल भीग गया। मन्दिर में पहुँच कर ज्योंही मैंने श्री जुगुल सरकार को दण्डवत् प्रणाम किया त्यों ही श्री सिद्ध किशोरी जी ने मेरे ही सामने श्री राम जी से कहा कि यह महन्त जी हम दोनों के लिये मलाई लाये हैं, और एक नया पीला रंगा हुआ अचला अन्दर से मँगवा कर हमको देकर कहा कि आप इस गीले अचले को उतार कर इसको पहिन लें, मैंने वह अचला लेने से इन्कार किया तब अन्तर्यामिनी श्री सिद्ध किशोरी जी कहने लगीं, महन्त जी आपका संकल्प है आदि से अन्त तक झूला दर्शन का ! तब गीले अचले को पहन कर आप तीन चार घण्टे तक यहाँ कैसे बैठ सकेंगे, इतना सुनकर सज्जनो ! मैंने अचला लेकर पहिन लिया, और मलाई भेंट करके प्रार्थना की कि कल बाजार से एक नया अचला खरीद कर सेवा में

अर्पण करूंगा, परन्तु श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है यहाँ तो हजारों अचले प्रेमी लोगों को प्रसाद रूप में बाँटने के निमित्त रक्खे रहते हैं। श्री महन्त जी का कहना है कि इस प्रकार के श्री सिद्ध किशोरी जी के मुख वाक्य सुन कर एवं उनके अन्तर्यामीपने के चमत्कारी चरित्र को प्रत्यक्ष देख सुन कर मैं तो उन पर मुग्ध हो गया, मैंने उनके चरण पकड़ लिये, और उस समय मुझे अपने शरीर की भी सुध बुध नहीं रही, मुझे भारी अचम्भा यह था कि श्री किशोरी जी मेरे हृदय के संकल्प को कैसे जान गईं, और केवल एक अचला पहिने देख कर मुझे महन्त कैसे कह डाला! और उनको इसका भी कैसे भान हो गया कि कुल्हड़ में मलाई लाये हैं और हमारे ही निमित्त लाये हैं, हो सकता था कि मलाई हम अपने लिये ले आये हों, और कुल्हड़ में भी अनेक प्रकार की मिठाई नमकीन इत्यादि वस्तुयें रक्खी जा सकती हैं, इन्हीं सब बातों को विचारने पर हमको मानना पड़ा कि वास्तव में उनको जो श्री सिद्ध किशोरी जू कहा जाता है, सो अक्षरशः सत्य है।

(१२) महात्मा रामदास जी (विह्वल प्रेमी) श्री जानकीघाट निवासी श्री अवधवासी का कथन है कि एक समय श्री जनकपुर के प्रेमी समाज की फाल्गुन मास में श्री बिहार कुण्ड पर बड़े समारोह के साथ श्री रूप सखी जी की होली का उत्सव मनाने का विचार हुआ अकस्मात श्री मिहौती समाज भी उसी समय श्री जनकपुर धाम में पहुँच गया! यद्यपि श्री जुगुल सरकार के चारों जोड़ों के अतिरिक्त होली की समस्त सामिग्री भी एकत्रित हो चुकी थी, वहाँ के प्रेमी समाज ने श्री मिहौती भवन जुगुल सरकार के समीप पहुँच कर श्री पुजारी जी से अपनी उत्कट अभिलाषा प्रकट की कि यदि आप भी इस महोत्सव में सम्मिलित होने की कृपा करदें तो अहोभाग्य! और

इस उत्सव में भी पूर्णानन्द एवं सुख की वर्षा होगी इतना सुनते ही श्री सिद्ध किशोरी जी ने अपनी सिद्धि द्वारा वर्णन किया कि आप लोग कितना भी उपाय क्यों न करें इस वर्ष तो यह उत्सव कदापि हो न सकेगा किन्तु अगले वर्ष यही उत्सव बड़े उत्साह एवं समारोह के साथ होगा, महात्मा रामदास जी का कथन है कि समस्त सरकार एवं होली की सामिग्री उपस्थित होने पर भी श्री सिद्ध किशोरी जी के कथनानुसार अनेक प्रकार के उपाय एवं प्रयत्न करने पर भी कोई सफलता प्राप्त न हुई किसी विशेष कारण वश उत्सव को स्थगित ही रखना पड़ा और वही उत्सव दूसरे वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णमासी को बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुवा, देखा सज्जनों ! इसको कहते हैं भविष्यवाणी एवं अन्तर्यामीनी पने का चमत्कार !

(१२) श्री माधुरी कुंज के वर्तमान महन्त रसिक राज श्री मैथिलीशरण जी (भक्तमाली) का कथन है, श्रावण का मास था, श्री बिहौती भवन में उस दिन आठ झूले पड़े थे मेरी एक दिन प्रबल इच्छा हुई कि वहाँ जाकर दर्शन कर आऊँ परन्तु किसी कार्य वश जा न सका और मेरे मन का अरमान मन ही मन में रह गया जिससे हमको भारी पछतावा भी हुआ। परन्तु सबके हृदय की जाननहारी श्री सिद्ध किशोरी जी हमारे दिल के अरमान को भी जान गईं इसीलिये दूसरे दिन सन्ध्या समय पटने के एक बाबू द्वारा हमें सन्देशा भिजवाया कि आज झूला की अन्तिम झाँकी है महन्त जी के दर्शन योग्य है उनको अपने ही साथ लिवा लाओ आज वह अवश्य अवैंगे, और बाबू जी से यह भी कहा कि कल श्री माधुरी कुंज के महाराज जी हमारे पास दर्शनार्थ आ रहे थे परन्तु किसी ने उनको कार्य विशेष से रोक लिया इसी से वह नहीं आ सके थे, उनके हृदय में भारी खेद हुवा और रात भर पछताते भी

रहे! श्री महन्त जी का कथन है कि किशोरी जी का इतना सन्देश पाते ही मैं उन बाबू जी के साथ मन्दिर में गया वहाँ जाकर अन्तिम झूले का आदि से अन्त तक दर्शन किया। श्री सिद्ध किशोरी जी ने बड़े उत्साह एवं प्रेम पूर्वक अपने गले से उतार कर माला प्रसादी हमको दी। फिर पान इलायची देकर इत्र से भी स्वागत किया, अपने ऊपर श्री सिद्ध किशोरी जी का इतना भारी अनुग्रह देखकर हमको भारी सुख मिला, उनकी इस प्रकार की अन्तर्यामी घटना को देखकर मैं तो उन पर मुग्ध हो गया। इसी प्रकार दूसरे सन्त महात्मा भी कई चमत्कारी चरित्र देख सुन कर उनके प्रेमी बनने लगे। तभी से बहुत लोग किशोरी जू को श्री सिद्ध किशोरी जी कह कर पुकारने लगे।

(१४) श्री महन्त महाराज की दूसरी घटना का वर्णन इस प्रकार से हैं, श्री मिथिला निवासी एक सन्त (जो कि विहौती भवन में ठहरे हुये थे) मेरे पास आये, और एकान्त में गुप्त रूप से मुझ से सम्बन्ध लेने एवं उपासना का विषय जानने के निमित्त प्रार्थना की परन्तु समय के संकोच वश हम उनकी इच्छा की पूर्ति न कर सके! वह निराश हो कर चले गये। ऐसे सच्चे सन्त की सच्ची हार्दिक अभिलाषा भला श्री किशोरी जी से कैसे छिप सकती थी, अन्तर्यामिनी श्री सिद्ध किशोरी जी ने उन महात्मा जी को तीसरे दिन अपने निकट बुलवा कर कहा कि आप किशोरी जी की उपासना के विषय में कुछ जानना चाहते हैं, और सम्बन्ध पत्र लेने की भी आप के मन में उत्कट अभिलाषा है इसलिये आप देरी न करैं तुरन्त श्री माधुरीकुंज के महारजा जी के पास जाकर उनसे सम्बन्ध पत्र ले कर उपासना के विषय में भी सब कुछ पूँछ लें, ऐसे सुयोग्य महान पुरुषों का मिलना

कठिन है, बस ! इतना सुनते ही वह संत श्री महाराज जी के समीप पहुँचे उनको एकान्त में बुलाकर सब गुप्त रहस्य कह सुनाया और कहा कि यह समस्त भेद मैंने श्री किशोरी जी से गुप्त ही रखा था, परन्तु न जाने हमारे हृदय का भाव उनको किस प्रकार से मालूम हो गया कि हमें आज आप के पास सम्बन्ध पत्र लेने के लिये बाध्य किया है, श्री महाराज जी का कथन है कि उस संत के द्वारा समाचार सुनते ही हम बड़ी असमंजस में पड़ गये कि यह बात क्या है ? उसी समय हमको हृदय में तुरन्त कुछ भान हुआ, मानो श्री सिद्ध किशोरी जी हमसे कुछ बात चीत कर रही हैं, तभी हम ताड़ गये कि यह कोई साधारण बालक नहीं, किन्तु साक्षात श्री किशोरी जी बालक स्वरूप में अपनी लीला कर रही हैं, हम तुरन्त सब कार्य छोड़ कर उन सन्त जी के साथ २ श्री सिद्ध किशोरी जी के समीप पहुंचे और जाकर उनसे पूँछा कि क्या इन संत जी को सम्बन्ध पत्र देने के लिये आप ही की आज्ञा है ? इतना सुनते ही श्री किशोरी जी ने मुस्का कर हम से कहा कि सन्त जी ने तो सब कुछ कहा ही होगा, अब मैं अधिक क्या कहूँ। आहा ! क्यों न हो जिन की इच्छा प्रबल एवं भावना विशुद्ध हो तो उनके लिये संसार में कौन सा कार्य्य असम्भव है ? सन्त जी पर श्री किशोरी जी की इस प्रकार की असीम कृपा देख कर हमसे भी रहा नहीं गया यद्यपि उस समय एक आवश्यक कार्य में लगे थे, उसको अधूरा छोड़ कर पहले उन संत जी को उपासना का विषय समझा कर फिर सम्बन्ध पत्र भी दे दिया श्री किशोरी जी की इस प्रकार की दया एवं अन्तर्यामी पने का चमत्कार देख सुन कर हमें तो बड़ी भारी प्रसन्नता हुई, और हमारी श्रद्धा उनमें पहिले से अधिक बढ़ने लगी।

(१५) बाबू मन्नूलाल घड़ीसाज श्री अयोध्या निवासी का

कथन है कि लीला स्वरूपों में मेरी भाव भक्ति अथवा श्रद्धा कुछ भी नहीं थी एक दिन स्वाभाविक सड़क पर से बाजे गाजे की आवाज सुनकर मैं बिहौनी भवन मन्दिर में चला गया तो देखा जुगुल सरकार की झांकी का उत्सव समाप्त हो चुका था और श्री सिद्ध किशोरी जी अपने कर कमलों द्वारा कुछ प्रेमियों को, किसी को पान, किसी को इलायची, इत्र और किसी २ को गुलाब का फूल देकर विदा कर रही थीं। मन्नू बाबू का कहना है कि मैं उस समय मन्दिर में खड़ा २ दूर से यह चरित्र देख रहा था, और अपने मन ही मन में अनुमान कर रहा था, कि हमको भी यदि बुलाकर यह स्वरूप कुछ प्रसाद दे दें तब तो मैं समझूंगा कि लीला स्वरूपों में भी आवेश होता है और अगर खाली हाथ जाना पड़ा तो इसको केवल खेल तमाशा ही समझूंगा। सज्जनो! मैं इतना विचार ही रहा था कि श्री सिद्ध किशोरी जी ने एक बालक द्वारा मुझे अपने समीप बुलवाया, ज्योंही मैंने सिंहासन के समीप पहुँच कर केवल दिखलावे मात्र ही प्रणाम किया, अन्तर्यामिनी श्री सिद्ध किशोरी जी मेरे हृदय की बात को भी ताड़ गईं थीं तभी तो हमसे कहा कि आप इसकी चिन्ता न करें हमारे दरबार से खाली कैसे जा सकते हैं। यह गुलाब का फूल है इसको ले जाओ, इसको अपने सिर पर रख कर टोपी लगा लिया करो। घड़ीसाज जी का कथन है कि मैं वह फूल लेकर अपने घर चला आया और सरकारी आज्ञानुसार जब कभी कहीं जाता होता तो उस गुलाब के फूल को सिर पर रख कर ऊपर से टोपी लगा लिया करता था, वह गुलाब का फूल सात आठ दिन तक ज्यों का त्यों हरा भरा बना रहा, और सुगन्धि भी देता रहा, इसका कारण सोचते २ एक दिन हमको दिल में शंका हुई कि यह कोई चमत्कार नहीं है केवल सिर के पसीने की तरी के कारण यह फूल नहीं कुम्हलाया थोड़ी देर

बाद ही क्या देखता हूँ कि वह गुलाब का फूल कुम्हला कर बिल्कुल सूख गया और उसकी सुगन्धि भी जाती रही। फूल की यह दशा देखते ही मैं तुरन्त श्री सिद्ध किशोरी जी के समीप पहुँचा तो मेरे कहने से पहिले ही उन्होंने झट से कह डाला कि आपके मन में शंका उत्पन्न होने के कारण ही इस फूल की यह दशा हुई है। ज्योंही श्री सिद्ध किशोरी जी ने मेरे हृदय की बात कह डाली मैं उनके इस प्रकार के अन्तर्यामीपने के अद्भुत-चमत्कार को प्रत्यक्ष देखकर अति प्रभावित हुआ और नित्य प्रति उनके दर्शनार्थ मन्दिर में जाने आने लगा, यद्यपि श्री सिद्ध किशोरी जी इस समय दृश्य स्वरूप में नहीं है परन्तु मैं प्रतिदिन नियम पूर्वक श्री कनक भवन महल में जाकर श्री कनक भवन बिहारिन बिहारी जू के दर्शन कर आया करता हूँ, मुझे इनके दर्शन मात्र से ही श्री सिद्ध किशोरी जी के दर्शनों का भान होकर चित्त सुखी एवं शान्त बना रहता है।

(१६) पं० सीताबल्लभ शरण जी का कहना है कि यद्यपि बाल्यावस्था से ही मैंने वैष्णवी गुरू दीक्षा गृहण कर ली थी, परन्तु मेरे विचार कुछ आर्यसमाजी लोगों के से थे, इसलिये लीला स्वरूपों में मेरी भावना या श्रद्धा न थी। श्री पुजारी जी महाराज बिहौती भवन से कुछ पूर्व परिचय होने के कारण उनके समाज में रह कर कुछ सेवा करने लगा। और उनके श्री जुगुल सरकार लीला स्वरूपों को कुछ हिन्दी भी पढ़ा दिया करता था। एक दिन की घटना है कि श्री जुगुल सरकार शृंगारी जी और मैं हम चारों बैलगाड़ी द्वारा नड्ढा ग्राम से वहावल (चम्पारन) जा रहे थे! बैलगाड़ी में श्री सिद्ध किशोरी जी से मैंने कुछ पढ़ने को कहा तो मुझे उत्तर मिला "हम सब कुछ पढ़े है।" मैंने जवाब दिया कि आप कुछ भी नहीं जानतीं, इस प्रकार परस्पर तर्क वितर्क होने लगे। फिर मैंने कहा कि देखिये!

किशोरी जी यदि कोई कहे कि हमने सफेद भैंस देखी है तो उसको मान लेना जिस प्रकार असत्य है, उसी प्रकार आप का यह कहना भ कि हम सब कुछ पढ़ो हैं असत्य है। तब किशोरी जी ने कहा कि भैंस सफेद भी तो होती हैं, मैंने कहा कि नहीं आज तक मैंने काली छोड़ कर सफेद भैंस कभी नहीं देखी। उस समय सामने से तीन भैंस आ रही थीं, मैंने कहा यदि इन तीनों भैंसों में से आप हमको एक भी सफेद भैंस दिखला दें तब तो हम मान लेंगे, कि आप सिद्ध हैं और सब कुछ पढ़ी हैं, श्री किशोरी जी ने कहा। अच्छा! तुम अपनी दोनों आँखें बन्द कर लो, थोड़ी देर के बाद हुक्म हुआ कि आँखें खोलो, तो क्या देखता हूँ कि वह तीनों काली भैंसें बिल्कुल सफेद रंग की हो गई हैं तब तो मैंने लज्जित हो कर उनके चरणों को पकड़ते हुये अपने अपराध को भी क्षमा कराया। बस! उस दिन से मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि यह तो साक्षात श्री किशोरी जी हैं। और बालक के रूप में लीला कर रही हैं। सज्जनो! उसी दिन से मैं उनको बालक न समझकर देव भावना की दृष्टि से अवलोकन करने लगा। उनकी सीथ प्रसादी को भी उनके हाथों से छीन २ कर खाने लगा, जिसको पहिले मैं लड़कों की झूठन समझ कर छूत मानता, और निरादर कर दिया करता था। इस प्रकार की उनकी प्रतिदिन आश्चर्यजनक घटनायें हुआ ही करती थीं। कहाँ तक लिखा जाय! अगर सब लिखने बैठें तो लेखक जी लिखते २ थक जायँगे और पाठक गण भी पढ़ते २ हार जायँगे।

(१७) श्री जानकी घाट निवासी जयपुर मन्दिर के महन्त श्री राम किशोरी वरशरण जी महाराज का कथन है, हमारे मन्दिर की फुलवारी में एक आँवले का पेड़ है जो कुछ बड़ा होकर सूख गया था, वह कई बार सींचने पर भी जब हरा

नहीं हुआ, तो उसका हमारे दिल में भी भारीखेद हुआ, परन्तु अपने भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली श्री सिद्ध किशोरी जी हमारे मन के भाव को भी ताड़ गईं, तभी तो एक दिन जब कि हमारे मन्दिर में जुगुल सरकार की झांकी होनी थी, श्री सिद्ध किशोरी जी शृंगार स्वरूप से अकस्मात फुलवारी में चली गईं, और हमसे पूँछा कि क्या इस आँवले के पेड़ को आपने जल नहीं दिया, जो यह सूख गया है मैंने उत्तर दिया कि सैकड़ों घड़े जल इस में सींचा गया है मैंने स्वयं भी कई बार अपने हाथों से सींचा, परन्तु यह हरा नहीं होता ! इतना सुनते ही श्री किशोरी जी ने एक अपूर्व कौतुक रचा। मेरे ही द्वारा लोटा डोरी मँगवा कर अपने कर कमलों द्वारा केवल पाँच लोटे जल से उस पेड़ को सींचा और हमसे कहा कि महंत जी, अब खेद करने की आवश्यकता नहीं यह पेड़ शीघ्र हरा भरा होकर फलने फूलने भी लगैगा। न जाने श्री किशोरी जी के कर कमलों में क्या जादू था अथवा कोई टोना ही था कि उन्होंने हथेली पर सरसों जमा दिया, अर्थात् पाँच छह दिन के ही पश्चात् वह पेड़ हरा भरा होकर कुछ दिन बाद फूल फल भी देने लगा। मैंने (लेखक) कई प्रेमी भावुक जनों को उस पेड़ की प्रदक्षणा एवं आलिङ्गन भी करते देखा है। क्यों न हों प्रथम तो यह पेड़ श्री महंत जी को अति प्रिय था। दूसरे श्री सिद्ध किशोरी जी के हस्तकमलों का भी उसमें स्पर्श हो गया था इसलिये प्रतिदिन प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में श्री महन्त जी उटकर सर्व प्रथम उस पेड़ की प्रदक्षणा कर उसका आलिङ्गन करते हुये बहुत देर तक श्री जुगुल नाम की रटन लगाने के पश्चात् ही कोई दूसरा कार्य करते हैं।

जैसे लोभी आदमी को धन के अतिरिक्त दूसरा कोई पदार्थ अच्छा नहीं लगता वैसे ही श्री महंतजी महाराज को भी श्री

किशोरी जी का दर्शन एवं उनका भाषण छोड़कर और कुछ भी प्रिय नहीं लगता था। तभी तो जब देखो आप के स्थान मे श्री जुगुल सरकार की बांकी झांकी ही हो रही है। श्री सिद्ध किशोरी जी के प्रति आप का इतना सच्चा हार्दिक प्रेम था कि अब भी उनकी चर्चा चलते समय आप के नेत्र आँसुओं की झड़ी लगाना आरम्भ कर देते हैं स्वयं कई बार इसका अनुभव मुझे भी हुआ है। (लेखक)

(१८) श्री महन्त जी का कथन है कि मेरे एक सुपात्र शिष्य अवध बिहारी शरण भी हैं। इसके हृदय में एक समय प्रबल इच्छा जाग्रत हो उठी कि मैं अनशन द्वारा ही श्री किशोरी जी का दर्शन प्राप्त करूँ, मैंने इसके इस प्रस्ताव का विरोध किया, और उसको आज्ञा दी कि तुम प्रेम पूर्वक कुछ मन्त्र अनुष्ठान प्रारम्भ कर दो, यदि तुम्हारा प्रेम सच्चा होगा, तो श्री किशोरी जी स्वयं आकर तुमको दर्शन देंगी, कारण कि भगवत नाम को सार्थक करने के लिये नामी को स्वयं जापक के समीप पहुँचना ही पड़ता है। और याद रक्खो, जैसे २ मनुष्य दीन बनता जाता है, वैसे ही भगवान भी उसके समीप आते जाते हैं, इसमें पूर्ण साहस, उत्साह, श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है। सज्जनो! इस प्रकार की गुरू आज्ञा पाते ही उनके प्रिय शिष्य श्रद्धा पूर्वक उत्साह से कुछ मन्त्र अनुष्ठान करने पर डट ही तो गये, ज्यों २ महात्मा जी का अनुष्ठान बढ़ा त्यों २ उनके दिल से न मिटने वाली लगन और न बुझने वाली प्रेमाग्नि बढ़ती ही गई यहाँ तक कि विवश होकर श्री सिद्ध किशोरी जी को श्रृंगार रूप से दोपहर के समय उन महात्मा जी के आसन पर स्वयं पधार कर दर्शन देना ही पड़ा, ऐसा अद्भुत चरित्र देख कर महात्मा जी तथा इनके गुरू महराज चकित एवं मुग्ध हो गये और विधि पूर्वक धूप, दीप, आरती, पूजन इत्यादि करके उनको भोग लगाते

हुये प्रेम पूर्वक स्थान पर भिजवाना भी पड़ा। क्यों न हो ! जब कि बिना बुलाये ही भगवान अपने भक्तों की प्रबल जिज्ञासा के आकर्षण में खिंच कर उनके पास चले जाते हैं। तब इनके मन्त्र अनुष्ठान द्वारा बुलाने पर श्री सिद्ध किशोरी जी भला कब रुक सकती थीं—(लेखक)।

(१९) श्री जानकी शरण मधुकरिया जी का कथन है कि श्री रामप्रिया निवास में एक सन्त श्री मैथली शरण जी रहते थे। एक दिन उनकी बछिया खो गई उसके बिछोह में अपने प्रतिज्ञा की, जब तक बछिया न मिलेगी तब तक भोजन न करूंगा। उनकी इस प्रकार की दृढ़ प्रतिज्ञा ने श्री सिद्ध किशोरी जी के हृदय में जाकर मानों सूचना पहुँचाई तभी तो श्री किशोरी जी ने तीसरे ही दिन महात्मा जी को सन्देश भेजा कि आज आप को भोजन अवश्य करना होगा, घबरायें नहीं, आपकी खोई हुई बछिया मातगयंद के जंगल में घास चरती आप को आज सन्ध्या समय मिल जायगी। सज्जनो ! ठीक हुआ भी ऐसे ही। श्री सिद्ध किशोरी जी के कथनानुसार मातगयंद के समीप उनकी बछिया घास चरती हुई मिल गई। यह है अन्तर्यामीपने का चमत्कार !

(२०) राय साहब पं० रुद्रदत्त सिंह जी शर्मा रिटायर्ड दीवान लुगासी स्टेट का कथन है कि जब मैं वहाँ दीवान के पद पर नियुक्त था, मैंने उस समय श्री बिहौती भवन समाज को श्री अवध से यहाँ कृपाकर पधारने के निमित्त प्रार्थना पत्र भेजा तो अपने दयालु स्वभाव वश श्री युगुल सरकार अपने परिकर सहित लुगासी में पधारे। द्व बारह दिन तक बिवाह—कलेवा उत्सव, झूला, झाँकी इत्यादि भी हुईं। जिससे अपूर्व आनन्द प्राप्त हुआ। एक दिन वहाँ के जेल को देखने के निमित्त श्री किशोरी जी ने अपनी इच्छा प्रकट की तो श्री जुगुल सरकार को जेल दिखलाया गया। उस समय ज्यों ही एक वृद्ध पुराने कैदी ने श्री

जुगुल सरकार के दर्शन किये, हाथ जोड़ कर उठ खड़ा हुआ और श्री जुगुल सरकार को छवि निहारने लगा इधर श्री किशोरी जी को भी उस पर दया आ गई जब उसका कष्ट इन्हें असह्य हो गया तो दीवान साहब से पूंछने लगीं क्या आप इस कैदी को छोड़ नहीं सकते ? दीवान साहब ने उत्तर दिया कि इस समय आप मालिक हैं, हम तो सेवक हैं जैसी आज्ञा होगी पालन किया जायगा। श्री सिद्ध किशोरी जी का संकेत पाते ही वह कैदी तुरन्त राज दया (Royal mercy) में छोड़ दिया गया। दूसरे दिन श्री किशोरी जी ने दीवान साहब को अपने पास बुलाकर उनसे पूंछा कि आप वैष्णव होकर भी लोगों को सजा देते और उनको जेल में बन्द करते हैं, दीवान साहब ने उत्तर दिया कि सरकार आप की ही तो आज्ञा है न ? कि दुष्टों को दण्ड देना चाहिये। अगर ऐसा न किया जावे तब तो दुष्ट लोग आपके प्रिय भक्तों को कष्ट देने लगेंगे। इसलिये जो दुष्ट लोग हैं केवल उन्हीं को तो दण्ड दिया जाता है।

(२१) राय साहब का कहना है कि नवम्बर सन् १९३६ में सर्व प्रथम श्री विहौती भजन समाज का श्री विवाह - कलेवा-उत्सव चित्रकूट श्री जानकी कुंड में हुआ। तब मैं भी सरकारी सेवा में था। उत्सव के पश्चात कुछ दिनों तक सरकारी झांकियाँ चौबे श्री दरयाव सिंह जू जागीरदार साहब रियासत पालदेव के मकान पर भी हुईं, वहाँ से श्री पुजारीजी महराज को केवल एक दिन के लिये किसी आवश्यक कार्य वश श्री अयोध्या जी जाना था करवी स्टेशन से रात्रि के ढाई बजे की गाड़ी से सवार होना भी निश्चय हो गया था। उस रात्रि को डेढ़ बजे उत्सव समाप्त हुआ दो बजे पुजारी जी ने श्री किशोरी जी से श्री अयोध्या जी जाने के निमित्त आज्ञा मांगी। राय साहब का कथन है कि उस समय घड़ी में ढाई बजने वाले थे मैंने कहा

कि गाड़ी का मिलना असम्भव है परन्तु श्री किशोरी जी ने महराज जी से कहा कि पहिले कुछ ब्यालू कर लो फिर चले जाना, गाड़ी आप को मिल जायगी, श्री पुजारी जी भोजन करके श्री जागीरदार साहब की मोटर गाड़ी द्वारा कर्वी स्टेशन पर पहुँचे तो मालूम हुआ कि गाड़ी लेट है इसलिये डेढ़ घण्टा तक स्टेशन पर रेलगाड़ी को परखना पड़ा। देखिये ! श्री सिद्ध किशोरी जी का अन्तर्यामीपना कितना सच्चा निकला कि "आप ब्यरू करके चले जायँ गाड़ी आपको मिल जायगी।"

(२२) श्री रुद्रदत्त सिंह जी का कथन है कि श्री जानकी घाट जयपुर मन्दिर में श्री जुगुल सरकार की झाँकी होनी थी मेरे बड़े भाई स्वर्गीय पं० दुरगादत्त जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर की एक पुरानी मोटर थी जिसका नाम श्री किशोरी जी ने बुढ़िया मोटर रखा था, झब्बा ड्राइवर उसी मोटर पर श्री जुगुल सरकार को जयपुर मन्दिर में लाया। झाँकी होते समय श्री मान महाराजा बहादुर रियासत पन्ना के मंझले भाई साहब पन्ना से अपनी नवीन मोटर द्वारा जयपुर मन्दिर में पधारे, वहाँ श्री जुगुल सरकार की झाँकी का दर्शन कर अति आनन्दित एवं प्रभावित भी हुये। झाँकी समाप्त होने पर श्री जुगुल सरकार को उसी बुढ़िया मोटर पर सवार होते देख महाराजा बहादुर पन्ना के भाई साहब ने श्री जुगुल सरकार से प्रार्थना की। कि डिप्टी साहब की मोटर पुरानी है और हमारी नवीन है। आप कृपया इस पर विराजमान हो जायँ तो पहिले आपको हम स्वयं बिहौनी भवन तक पहुँचा दें, फिर हम पन्ना चले जायंगे। परन्तु बहुत कुछ कहने सुनने पर भी श्री किशोरी जी ने इसको स्वीकार नहीं किया और उत्तर दिया कि हमको पुरानी एवं गरीबों की ही मोटर प्रिय है, जिससे प्रतिदिन काम पड़ता है। केवल थोड़े ही समय के लिये राजा महाराजाओं की नवीन मोटर पर बैठकर पुरानी

मोटर का तिरस्कार कर देना उचित प्रतीत नहीं होता। श्री सिद्ध किशोरी जी का इस प्रकार का भावपूर्ण हृदयउद्गार देखकर पन्ना नरेश के भाई साहब तो मुग्ध हो गये, एवं अमीरों से अधिक गरीबों पर ही प्रेम भाव और दया को देख सुनकर श्री सिद्ध किशोरी जी की आप भूरि भूरि प्रशंसा भी करने लगे ?

(२३) राय साहब का कथन इस प्रकार से है कि एक समय जैपुर मन्दिर में झांकी हो रही थी। मैं बुखार के कारण वहाँ दर्शनार्थ नहीं जा सका। थोड़ी देर के बाद मन में विचार हुआ कि चलो किसी सवारी द्वारा सरकारी झांकी का दर्शन करके बैठूँगा नहीं वापस लौट आऊँगा। जब मैं वहाँ पहुंचा तो दर्शकों एवं साधु सन्तों की अपार भीड़ थी, सम्पूर्ण आँगन एवं मन्दिर की छतें भी खचाखच भर चुकी थीं। श्री जुगुल सरकार के समीप पहुँचने तक का जब रास्ता न मिला तो मैं सब के आखीर व सब के पीछे बैठ गया। श्री किशोरी जी ने मुझे देखा और श्री पुजारी जी से कहा कि वह देखो मंझले बबुआ आइलेन उनको हमारे पास बुलाईं। इतना सुनते ही श्री पुजारी जी आये और मेरा हाथ पकड़ कर श्रीं जुगुल सरकार के निकट ले गये। श्री सिद्ध किशोरी जी ने पहिले मेरी हालत पूँछी फिर पान, इलायची देकर मेरे सिर पर हाथ भी फेर दिया और कहा कि यहाँ बैठ जायें। न जाने उस पान में कोई वशीकरण था अथवा इलायची में कोई टोना या उनके हस्त कमल में ही कोई जादू था। कि मेरा १०३ डिगरी का बुखार उस समय कहाँ भाग गया ! मेरा चित्त बिल्कुल शुद्ध हो गया। मानो मुझे बुखार बिलकुल था ही नहीं, और मैंने अन्त समय तक बैठ कर वहाँ सरकारी दर्शन किया। मुझे कोई भी कष्ट प्रतीत नहीं हुआ किन्तु भारी आनन्द एवं सुख ही मिला ! क्या कहूँ उनकी मधुर प्रिय वाणी इतनी सरस और चित्त को स्वतः अपनी ओर

आकर्षण करने वाली थी ! मनुष्य इसको सुनते मात्र मुग्ध हो जाया करते थे। इनके विषय में जो कुछ भी कहा जाय वह कम है। देखिये ! चन्द्र चकोरों को बुलाने कभी नहीं जाता, और न कमल ही भौरों को निमंत्रण भेजता है ! इनकी शीलता एवं सौरभ ही उन्हें स्वयं आकर्षित कर लेते हैं। इसी प्रकार इनके अलौकिक चमत्कारों को देख सुनकर जहाँ तहाँ भी यह जातीं वहाँ प्रतिदिन सैकड़ों ताप ग्रसित जीव इनके समीप दर्शनार्थ आते। बहुत तो इनके दर्शनमात्र से सुखी हो जाते। और कुछ लोग आशीर्वाद द्वारा ही अपने मनोरथ को पाते थे।

(२४ दीवान सा० लुगासी का कथन है कि एक समय श्री बिहौती भवन समाज की इच्छा श्री जनकपुर की चौरासी कोसी परिक्रमा करने की हुई। उस समय श्री किशोरी जी की अवस्था लगभग १२ वर्ष की थी। ऐसा शुभ अवसर पाकर हम सब का विचार भी परिक्रमा करने का हो आया, तो हम सब लोग भी बाल बच्चों समेत इस समाज के साथ २ जनकपुर चल दिये। फाल्गुन शुक्ला २ को प्रातःकाल से तो परिक्रमा आरम्भ होनी थी, इधर एक दिन पहिले परीवा की शाम को ही हमारे नाती अवधू आयू ११ वर्ष (अवधशरण जोकि आज कल तहसीलदार हैं) को १०४ डिगरी ज्वर हो आया। वह बेहोश हो गया। उसकी यह दशा देखते ही हम सब का चित्त भी उदास होने लगा। मैंने तुरन्त श्री सिद्ध किशोरी जी के समीप पहुँच कर उनको इस घटना की सूचना देते हुये प्रार्थना की; कि हमारे बड़े भाई डिप्टी दुर्गादत्त जी तो कल आपके संग परिक्रमा में चले जायँगे। और मैं यहाँ ही रह कर बालक की देख रेख और इलाज कराऊँगा। कारण कि ऐसी बीमारी की दशा में यह बालक पैदल परिक्रमा कैसे कर सकेगा ? श्री सिद्ध किशोरी जी उस बालक से

प्रतिदिन प्रेमपूर्वक खेला करती थीं भला इन्हें अवधू के बिना अकेले कल कैसे पड़ सकती थी; इसलिये उनका दुःखद समाचार सुनते ही श्री किशोरी जी मेरे संग तम्बू में पहुँचीं। जहां अवधू सो रहा था। और जाते ही उसका हाथ पकड़ कर उसको जगा दिया, उसके सिर पर अपना हस्तकमल फेरा और अवधू चलीं खेलीं। यह कह कर उसके साथ खेलने भी लग गईं। उसको कुछ पसीना आया, और बुखार जाता रहा ! प्रातः काल से परिक्रमा आरम्भ हो गई और वह बालक भी चौदह दिन तक चौरासी कोस पूरी परिक्रमा पेदल आनन्द पूर्वक कर आया ! सज्जनों ! इसको कहते हैं सिद्धाँई का अपूर्व चमत्कार, केवल सिर पर हाथ फेरते ही ज्वर दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ; और मारे डर के फिर निकट नहीं आय। इधर श्री जनक पुर की यात्रा में हम लोगों को प्रत्यक्ष देखने में आया ! ज कहीं भी श्री सिद्ध किशोरी जी पधारतीं आपका दर्शन करते ही, अच्छे संत महन्त भी आपका खड़े, होकर आगत स्वागत करते ! और विधिवत् मान सम्मान सहित आपको आसन देते ! क्यों न हों ! भला सुर्य उदय होने पर कमल हँस कर स्वागत करने में कब चूकते हैं ? ऐसा सलोना सुकुमार भोला बच्चा उस पर इनके पवित्र आचरण, शील, स्नेह, एवं दयालु स्वभाव को देख सुनकर समस्त प्रेमी जन आप पर सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहते थे ! अच्छे २ अहलकार सेठ साहूकार, एवं हाकिम तक भी जो उस समय परिक्रमा कर रहे थे, आपके बचनामृत का पान करके कृतार्थ हो जाया करते थे मगर हाँ कोई विरला पाखण्डी या अभागा ही ऐसा हो सकता है जिसको पक्षपात ही भाता हो और केवल वही आपके आकर्षण से बचा भी हो तो उसकी बात दूसरी है ! और वह लोग भी कितने अभागे हैं। जो कि समीप रहने पर भी उनके स्वरूप से

वञ्चित रहे। यह तो केवल सरकारी लीला एवं उनकी माया ही थी।

(२५) राय सा० पं० रुद्रदत्त सिंह जी (जो कि इस समय श्री अयोध्या राज के परसनल असिस्टेन्ट हैं) का कथन है! कि मैं एक दिन बिहौता भवन में श्री सिद्ध किशोरी जी के समीप बैठा बैठा कुछ वार्तालाप कर रहा था। अकस्मात पटना (बिहार) लेजिसलेटिव एसेम्बली के स्पीकर श्री रामदयालु सिंह जी भी वहां पहुँच गये (जो कि श्री किशोरी जी के अनन्य भक्तों में से थे) और श्री किशोरी जी से प्रार्थना करने लगे कि सरकार! श्री पुजारी जी महाराज से ज्ञात हुआ है कि अब कुछ ही दिनों पश्चात् आपका श्रृंगार विसर्जन होकर अन्तम आरती होने वाली हैं! आपने सात वर्ष तक निरन्तर सिंहासन पर विराजते हुये समस्त प्रेम जनों को सुख दिया है। हम लोग अब आपको नीचे धरती पर बैठना नहीं देख सकेंगे। इसलिये मैं दो चार दिन में एक अंग्रेजी पढ़ने वाले मास्टर को पटना से बुलवाता हूँ आप उनसे कुछ अंग्रेजी भी पढ़ सीख लें। जिससे हम लोग आपको सिंहासन पर नहीं तो कुर्सी पर तो बैठा देख सकेंगे? अर्थात् आपको किसी आफिस में बाबू की जगह दिलवा देंगे। तब आपको कुर्सी तो अवश्य मिल ही जायगी। इतना सुनते ही श्री सिद्ध किशोरी जी ने मन्द मन्द मुस्कान युक्त स्पीकर सा० को उत्तर दिया कि आप हमारे लिये इस बात को तनिक भी चिन्ता न करें। हम सदा से सिंहासन पर बैठी हैं और अन्त तक सिंहासन पर ही बैठेंगी। आप हमको अंग्रेजी पढ़ाने का कष्ट न करें! बस इसके कुछ दिनों पश्चात् आपने स्पीकर सा० को पटना से बुलवाकर अपनी अन्तिम लीला उनको दिखलाई हस्ती दी। अन्तिम समय में उनसे यह भी कहा कि देखिये! हमारा बिसर्जन धरती पर नहीं बल्कि आपके ही

सामने एक बड़े भारी बितान पर होने वाला है। आप श्री पुजारी जी को भी बुला कर अब हमारे अन्तिम विसर्जन के लिये श्री सरयू जी के तट पर आरती की तैयारी भी करालें।

आपका शील भी सराहनीय था, ठीक भी है। शीलरूपी शैल पर चढ़ता हुआ मनुष्य बन्दनीय होता है जैसे कि चन्द्रमाँ। दुखी एवं गरीबों के साथ तो आपका विशेष ही प्रेम और सरलता का बर्ताव हुआ करता था। कभी भूल कर भी किसी से आप का रूखेपन का व्यवहार देखने में नहीं आया, आप का सिद्धांत यह था कि सब में परमात्मा का निवास समझ कर सब का मान सम्मान करो, और किसी का भूल से भी अपमान मत करो। जो कोई आप से एक बार भी वार्तालाप कर लेता मुग्ध हो जाता! कहाँ तक कहूं, आपके अनमोल बोल सुन सुनकर प्रेमी लोग तो गद्गद् हो जाया करते थे।

जिनके हृदय में भगवान के प्रति सच्चा प्रेम है। सच्चा विश्वास और पूर्ण श्रद्धा है भला वह फिर किसी दूसरे के प्रति कब निर्भर रह सकता है। और जिस किसी को भगवान के प्रेमी भक्त अथवा सेवक बनने का पद प्राप्त हो गया, उसको कोई दूसरा पद प्राप्त होने से प्रतिष्ठा व गौरव का अनुभव कब हो सकता है? बस, यही दशा हमारे स्पीकर साहब की थी। अंग्रेजी जीवन में पले हुये स्पीकर साहब का श्री सिद्ध किशोरी जी के प्रति सच्चा प्रेम, श्रद्धा एवं सेवा नये युग के लिये अनुकरणीय है।

सज्जनो! संस्कारी एवं परोपकारी महान पुरुषों का प्रभाव छिपा नहीं रहता। समय समय पर प्रकट हुआ ही करता है। क्योंकि उनके जन्म जन्मान्तरों का योगबल एवं आत्म बल सदैव उनके साथ ही रहता है। जो कि अवसर पाते ही अपना काम कर दिखाता है। गुप्त दान एवं गुप्त सेवा आपको अधिक प्रिय थीं, श्री किशोरी जी कहा करती थीं कि जो कोई

केवल लोगों को दिखाने के निमित्त किसी की सहायता करता है वह तो उसका ताप मिटाने के लिये नहीं किन्तु उसको जलाने के लिये आग जलाता है।

(२६) श्री शर्मा जी का कथन है कि हमारे मकान पर एक दिन श्री बिहौती भवन श्री युगुल सरकारों का झूला उत्सव भादों में होना था, परन्तु किसी विशेष कारण वस भादों में न होकर पूस में होना ही निश्चित हुआ हमारे भाई साहब पं० श्री दुर्गा-दत्त जी के मन में कुछ दुख इसलिये हुआ कि यदि यही झूला कहीं वर्षा ऋतु में पड़ता तो कैसा ही अपूर्व सुख मिलता। अन्तर्यामिनी श्री सिद्ध किशोरी जी ने झूले पर विराजते ही ऐसी अनोखी लीला रची कि चारों ओर से अकस्मात बादल छा गये और वर्षा होने लगी, इतना देखते ही सब प्रेमी जनों के मन प्रफुल्लित हुये और भाई साहब तो मारे प्रेम के बेसुध होकर श्री किशोरी जी के चरनों में ही लोटने लगे उनकी खुशी की कोई सीमा न थी।

(२७) संगीत रत्न महात्मा महावीर दास जी का कथन है कि श्री किशोरी जी ने अपने अद्भुत आकर्षण से अपने प्रेम पाश में हमको इतना कसकर बाँधा कि सन् १६३४ से सन् १६३६ तीन वर्ष तक हमारा छूटना कठिन हो गया था अर्थात तीन वर्ष तक मुझे भी श्री जुगुल सरकार की सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनकी लिखित जीवनी को हमने श्री भैया जी से सुना है। जितने भी चरित्र इन्होंने संग्रह करके लिखे हैं उनमें से कई चरित्र तो हमारी उपस्थिति में ही हुये थे। उनको कहाँ तक दुहराया जाये। एक अपूर्व एवं विलक्षण चमत्कार उनमें यह भी था कि जो कई बार प्रेमी जनों को भी दृष्टि गोचर होता रहा है, जिस समय श्री किशोरी जी शृंगार धारण कर लेतीं तब तो श्री राम जी से चार अंगुल छोटी प्रतीत होने लगतीं, परन्तु बिना

शृंगार के श्री राम जी से दो अंगुल बड़ी दिखाई देती थीं।

(२८) सांगीत रत्न जी का कहना है कि अकस्मात एक समय मेरा विचार उठा कि ग्वालियर कालेज में जाकर कुछ सांगीत विद्या एवं पक्के गाने भी सीखकर कोई परीक्षा भी दे डालूं। इस आशय को लेकर मैंने दूसरे ही दिन श्री किशोरी जी से प्रार्थना भी की कि सरकार! मुझे आशीर्वाद के साथ २ प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा दे दी जाय तो मैं ग्वालियर जाने के लिये प्रस्थान कर दूं। इतना सुन कर श्री किशोरी जी ने टाल मटोल करते हुये मेरे हाथों में अपनी सीथ प्रसादी दे दी और कहा कि जाने के लिये फिर देखा जायगा। मेरे हृदय में ग्वालियर जाने की उत्कट अभिलाषा हो रही थी, मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि जब तक ग्वालियर जाने की आज्ञा न होगी तब तक अन्न जल न करूंगा। भक्तों के हृदय की जाननहारी अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी ने जब मेरी हार्दिक अभिलाषा को जान लिया तो उसी समय प्रसन्नता पूर्वक मुझे आज्ञा दी कि पहिले इस प्रसादी को सेवन कर लो तब तुम्हारे मन की सब अभिलाषायें पूर्ण हो जायंगी। कारण कि तुमने तीन वर्ष तक प्रेम पूर्वक हमारी तन, मन से सेवा की है, और चलते समय यह भी कहा कि यद्यपि ग्वालियर के सांगीत महाविद्यालय में तुम्हारा प्रवेश होना कठिन है क्योंकि तुम्हारी आयु वहाँ के नियम से अधिक हो चुकी है तथापि मैं प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देकर आशीर्वाद भी देती हूँ कि ग्वालियर जाते ही आप कें समस्त मनोर्थ पूर्ण हो जायंगे। परन्तु पहिले हमको इतना तो बताओ कि गानविद्या से क्या २ लाभ होता है। मैंने इस प्रकार निवेदन किया कि भक्ति मार्ग में गायन विद्या को एक बहुत बड़ा महत्व दिया गया है इसका कारण यह है कि अनुराग से चित्त की एकाग्रता हो जाने का नाम ही भक्ति है, और चित्त को एकाग्र करने के लिये गान विद्या

जितनी उपयोगी है ऐसा कोई दूसरा साधन नहीं नजर आता, गान की यह प्रत्यक्ष महिमा है कि अत्यन्त चञ्चल हिरन भी अपनी चौकड़ी भूल कर सिर नीचा लटकाये मस्त होकर खड़ा रहे। और अत्यन्त तमोगुणी सर्प भी सिर हिलाता हुआ परमानन्द में मग्न दीख पड़े। उत्तम गान के समय विज्ञ और अज्ञ सब प्रकार के मनुष्यों को आत्म स्मृति एवं जगत विस्मृति कम से कम कुछ क्षणों के लिये हो जाना एक अनुभव सिद्ध बात है। जो कि बरसों तक ध्यान लगाने के परिश्रम से भी होती दिखाई नहीं पड़ती। इसलिये विद्वान महात्माओं का कथन है कि गन्धर्व शास्त्र का पूर्ण विद्वान बिना परिश्रम ही मोक्ष पा जाता है। देखिये ! भक्ति शास्त्र के परम आचार्य श्री नारद जी महाराज ने तो और सब साधनों को छोड़ इस गान विद्या को ही अपनाया है। ठीक भी है, भक्ति परमानन्द रूपा है एव गान भी आनन्द का एक प्रधान चिन्ह है।

श्री वृज गोपियों ने सब उपायों से खिन्न हो कर गोपिका गीत के बल ही पर तो भगवान को प्रकट किया, एवं मीराबाई ने भी गान के पदों द्वारा अपने आप को भगवत स्वरूप में लीन किया था। किसी के चित्त को एक तरफ खींच लेना यही राग रागिनी का काम है। तभी तो गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज ने पदावली, गीतावली, विनयपत्रिका द्वारा एवं श्री सूरदास जी महाराज ने भी गान के पदों में ही भक्ति मार्ग का खूब प्रवाह बहाया है। इसके अलावा श्री चैतन्य महाप्रभु आदि ने भी गानआत्मक कीर्तन के प्रचार को ही अपना लक्ष्य माना है।

देखिये सरकार ! स्वांस को बनाये रखने और उसे अनन्त बनाये रखने के लिये भी गाने के महत्व को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता, गाना जीवन में निश्चित रूप से प्रसन्नता की

वृद्धि करता हुआ स्वास्थ को भी लाभ पहुँचाता है। महावीर दास जी का कथन है कि श्री किशोरी जी उसे सुनकर अति प्रसन्न हुई। और मुझे आशीर्वाद के साथ २ कुछ अपनी सीथ प्रसादी व कुछ रेल खर्चा भी देकर बिदा किया। सन् १९३७ में तारीख को ग्वालियर जाते ही मुझे श्री माधवसंगीत महा विद्यालय के प्रधान जी ने प्रसन्नता पूर्वक भर्ती कर लिया। मेरी आयु के बारे में किसी प्रकार की कोई भी जाँच या पूँछ पाँछ तक नहीं की! यह केवल श्री सिद्ध किशोरी जी की असीम अनुकम्पा नहीं तो और क्या था? जिस किसी को विश्वास न हो। वह मेरे पास आकर मेरे उपाधि पत्र को देख सकता है, जिसमें आयु का खाना आज तक बिल्कुल खाली पड़ा है। ग्वालियर में ६ वर्ष तक रहकर मैंने गान विद्या के अतिरिक्त कई प्रकार के वाध्य यन्त्र (साज़) भी सीखे। और यह भी श्री किशोरी जी की ही कृपा है कि सन् १९४३ में मैंने उपरोक्त महा विद्यालय में द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण होते हुये "संगीत रत्न" की उपाधि भी प्राप्त की। यह सब सरकारी कृपा का ही फल है। मुझ में इतनी योग्यता कदापि न थी। श्री किशोरी जी की दयालुता, उदारता, अनुकम्पा इत्यादि की जितनी भी प्रशंसा की जाय वह थोड़ी है। उत्तर प्रत्युत्तर करने में भी आप हाजिर जवाब रहा करती थीं आप की विचार धारा बड़ी ही प्रभाव-शाली एवं मांगलीक होती थी, जो कि संसारी लोगों के अनिष्ट दूर करने में समर्थ थी। इसी कारण से आप हर समाज के लिये परम श्रद्धा की पात्र थीं। और प्रेमी भक्त जनों की दृष्टि में तो आप परम प्रसिद्ध एवं अधिक गौरव शाली और अग्रगण्य प्रतीत होती थीं जितनी मान प्रतिष्टा (आदर सत्कार) आप की होती थी इसकी सीमा ही नही है। कहाँ तक कहूं जैसे खिले हुये कमल के आस पास भौंरे मडराते रहते हैं। इसी प्रकार

प्रेमीजन आपके चारोंओर झुंड के झुंड मड़राया करते और आप के बचनामृत में स्नान करते ही तृप्त होजाते थे। आपकी वाणी में भी वह शक्ति थी कि जिससे जो कुछ भी कह दिया वह अवश्य हो ही जाता था। कितना भी असाध्यकार्य क्यों न हो, वह आप के केवल बचन मात्र से ही पूर्ण हो जाया करता था। आप के आर्शीर्वाद एवं बचन द्वारा ही कई लोगों के लड़के उत्पन्न हुये तो कई लोग अदालत से मुकदमा जीत गये। कई मनुष्यों को मन वांछित फल की प्राप्ति हुई। इन्हीं अलौकिक चमत्कारों एवं सिद्ध प्रभावों के कारण आप का शुभ नाम "श्री सिद्ध किशोरी जी" पड़ गया था।

प्रिय सज्जनो एवं पाठको ! श्री अवध बासी संत महावीर दास जी (सांगीतरतन) कई वर्षों से मेरे (लेखक) पूर्ण परिचित हैं। मुझे यहाँ उनके विषय में यह कहना है कि वास्तव में आप पर श्री सिद्ध किशोरी जी की अनुपम ही कृपा हुई है। मैंने कई बार आपको भगवान के मन्दिरों मे गाते बजाते देखा है, सचमुच ! इस समय तो आप सांगीत कला के पूर्ण कलाधार हैं। श्री जुगुल रस सुधा सिन्धु माधुरी में डूबते समय तो आपकी सांगीत गति का एक अलौकिक स्वरूप हो जाता है। गानविद्या से जैसा आपका प्रेम है वैसा ही आपको भावुक हृदय भी भगवान ने दिया है। आपके मधुर गान, ताल एवं अलाप को सुनकर मनुष्य साँगीतानन्द में निमग्न हो जाते हैं। जनता को आनन्द में विभोर तथा प्रेम से तृप्त कर देना यह आपकी पूर्ण योग्यता एवं हृदय की तन्मयता को प्रकट करता है। मैं तो अपनी शुभ कामनाओं सहित आपकी गान विद्या का आदर पूर्वक स्वागत करता हुआ प्रेमी पाठकों से भी अनुरोध करता हूँ कि जिस किसी को परमानन्द की आवश्यकता हो। गान विद्या का अभ्यास अवश्य करना चाहिये। जो कोई

जो कोई भी जिज्ञासु आपके समीप पहुँच जाता है आप उसे परमार्थ रूप से प्रतिदिन प्रेम पूर्वक गाना बजाना सिखा देते हैं। धन्य है आपकी इस प्रकार की उदारता को—लेखक।

(२६) श्री जानकी घाट अवध निवासी महात्मा श्री सियाराम दास जी ~~[illegible]~~ जी का कथन है, कि बिहौती भवन समाज को एक समय श्री रामदैनीसिंह जी हेडक्लर्क डी० आई० जी० पुलिस मुजफ्फरपुर के निमंत्रण में उनकी जन्म भूमि ग्राम विन्द्रावन में १०—१२ दिन के लिये जाना था। मैं भी उनके साथ २ चला गया। जाते ही उत्सव प्रारम्भ होने लगा। नौ दिन तक श्री राम नाम अखण्ड कीर्तन के अतिरिक्त श्री रामअर्चा पूजन, श्री राम विवाह और कलेवा उत्सव भी हुवा उन दिनों मेरी कर्मकाण्ड में अधिक रूचि रहती थी इसलिये मैं स्वयंपाकी भी था, एक दिन की घटना है मैंने सत्तू अपने भगवान के भोग के लिये तैयार किया। उसमें तुलसी छोड़ आँख मूँद भगवान् का ध्यान करने लगा जब मेरी आँख खुली तो क्या देखता हूँ कि श्री सिद्धकिशोरी जी आसन पर आसीन हो बड़े प्रेम से सत्तू आरोग रही हैं! इसी प्रकार जब दुबारा भगवान् को भोग लगाने लगा तो अब की बार भी फिर वही दशा देख कर मुझे दुःख हुआ! और मैंने श्री पुजारी जी से सब वृतान्त कह सुनाया पुजारी जी ने हमारे सामने श्री किशोरी जी को समझाया कि बार बार महात्मा जी को कष्ट क्यों देती हैं? तब श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि आप हमको तो ताड़ना कर रहे हैं, किन्तु महात्मा जी से क्यों नहीं कहते कि वह ध्यान करते समय हमको क्यों बुलाते हैं। बस इतना सुनकर श्री पुजारी जी ने कहा कि यदि यह आपको बुलावें तो भी आप न जावें, श्री किशोरी जी ने कहा कि हमसे ऐसा नहीं हो सकता हमको तो जहाँ कोई पुकारेगा हम वहां अवश्य जायँगीं। सज्जनो

श्री किशोरी जी के तेज से प्रभावित होकर महात्मा जी चुप होकर लज्जित भी हो गये, और उनके उसी सत्तू प्रसादी का प्रेम पूर्वक भोजन करने लगे।

(३०) दूसरी घटना इस प्रकार है। जब यही समाज श्री गया जी पहुँचा। वहां भी मैंने खिचड़ी बना थाल में परोस उसमें तुलसी दल डाल कर अपने भगवान श्री सालिगराम जी को भोग लगाते समय उनका ध्यान करने लगा, अपने नियमानुसार मैंने भगवान श्री राम जी एवं श्री किशोरी जी से प्रार्थना की कि भगवन् आज देर हो गई है अपराध क्षमा करें। सज्जनो! यद्यपि उस समय श्री जुगुल सरकार अपने भंडार में भोजन कर रहे थे। भोग लगाने के बाद जब आँखें खोली तो श्री सिद्ध किशोरी जी को प्रेम पूर्वक खिचड़ी आरोगते देखा और जब उनके भंडार की तरफ जाकर देखा तो वहाँ श्री जुगुल सरकार भोजन कर रहे हैं। जब जुगुल सरकार भोजन करके अपने पलंग पर शयन कर गये! तब सुन्दर अवसर देख कर मैंने जो खिचड़ी बटलोई में बाकी बची थी उसी को अपने भगवान को फिर भोग लगाई। अब की बार भी जब आँख खोली तो इधर श्री किशोरी जी को खिचड़ी आरोगते देखा और उधर जाकर देखता हूँ तो अपने पलंग पर सो रही हैं, इस घटना की सूचना मैंने तुरन्त श्री पुजारी जी को दी पुजारी जी ने उस समय कई प्रेमियों को दिखलाया। इस रहस्य को देख कर सब लोग चकित हो गये। किसी की कुछ भी हिम्मत बोलने की न रहा। और उस समय श्री सिद्ध किशोरी जी की वाणी केवल देव वाणी ही थी। कर्मकाण्डी जी का कथन है। कि सिद्धकिशोरी जी के उस समय के तेज एवं आभा से मैं इतना प्रभावित हुआ कि उनके आकर्षण से मैं अपने आप को भी भूल गया, मेरा स्वयंपाकीपना और कर्मकाण्ड भी बिल्कुल फीका पड़ गया। मैं जो

पहिले उनकी प्रसादी को लड़कों का जूठन कहा करता था उसी दिन से मैं उनकी सीथ प्रसादी को उनके हाथों से छीन २ कर खाने लगा। इस घटना की खबर समस्त ग्राम में फैल गई। तब से बहुत सी जनता नित्यप्रति इनके दर्शनार्थ आने लगी।

श्री सिद्धकिशोरी जी के आचार-विचार, शुद्धता, परोपकार, उदारता, दयालुता, भजन एवं पूजा पाठ को देख २ कर तो अच्छे २ सन्त महात्मा भी मुग्ध हो जाया करते थे।

(३१) शृंगारी श्री रामविलास शरण जी का कथन है कि श्री सिद्धकिशोरी जी अपने अन्तर्यामीपने के कारण सबके हृदय की गती मती पहिचानती थीं और उनके सुधार की युक्ति भी किया करती थीं, एक दिन एक महात्मा आप की सेवा म पहुँचे उनका मुख देखते ही आप ताड़ गईं कि इसका आचरण कुछ खराब है (कारण कि मुख तो मानसिक विचारों का दर्पण है मन में अच्छे बुरे जैसे भी विचार उठेंगे वैसे ही भाव भी मुख पर व्याप्त हो जायेंगे) आप ने मनोहर वचनों द्वारा उसको बहुत समझाया बुझाया परन्तु जब वह नहीं माना, तो कह दिया कि जाओ आज से मरते दम तक तुमको कभी श्री अयोध्या जी का दर्शन न मिलेगा।, लगभग २० वर्ष हो चुके हैं वह आज तक श्री अयोध्या जी दर्शनार्थ कभी नहीं आया, मैं यहाँ उसका नाम प्रकट नहीं करना चाहता। बहुत लोग तो उनको जानते भी हैं।

(३२) शृंगारी जी का कहना है कि श्री जानकी घाट के समीप श्री चारुशिला बाग में श्री जुगुल सरकार की झांकी होती थी। वहाँ पहुंचते ही शृंगार होने लगा, मैं श्री जुगुल सरकार का मुख शृंगार कर रहा था तो परस्पर होड़ बंध गई श्री रामजी कहने लगे कि वस्त्र शृंगार पहले हमारा होगा, इधर श्री सिद्ध

किशोरी जी का कथन था कि पहिले हमारा होगा, श्री किशोरी जी ने पहिले अपने वस्त्र शृंगार वक्स से निकाल लिये, और ताला बन्द करके चाबी शृंगारी जी को दे दी इधर श्री राम जी चाबी लेकर ताला खोलने लगे, ताला खोलते खोलते स्वयं जब हार गये तब शृंगारी जी तथा और प्रेमी ताला खोलने लगे, मगर ताला किसी से भी नहीं खुला, तब तक श्री किशोरी जी का सम्पूर्ण वस्त्र शृंगार भी धारण हो गया, अब तो विवश होकर जब श्री राम जी ने हार मानी तब श्री किशोरी जी ने अपने चरण का अंगूठा ताले से छूकर कहा कि खुल जा, बस इतना कहना ही था कि ताला तुरन्त खुल गया। इस प्रकार का अद्भुत चमत्कार देखते ही समस्त उपस्थित प्रेमी दर्शक गण चकित हो गये, श्री सिद्ध किशोरी जी की भूरि भूरि प्रशंसा करने लगे! और उनके उस चरण कमल को जिसके स्पर्श मात्र से ताला खुल गया था, धो धोकर चरणामृत लेने लगे। पाठको! महात्माओं का संसर्ग सभी को लाभ दायक होता है। सज्जनों का संग प्राप्त करके जब कि साधारण लोग भी महत्ता को प्राप्त करते हैं। तब ऐसे संस्कारी, चमत्कारी सिद्ध बालकों का तो कहना ही क्या?

(३३) शृंगारी जी का कथन है कि श्री अयोध्या जी रायगंज के एक महात्मा श्री रामचरण दास जी ने वैसाख शुक्ला अष्टमी प्रातः काल ही बिहौती भवन में पहुँच कर श्री किशोरी जी से प्रार्थना की कि यदि आज रात्रि को हमारे स्थान में श्री जुगुल झांकी का प्रेमी जनों को दर्शन हो जाय तो अहोभाग्य समझूंगा। श्री किशोरी जी ने प्रसन्नता पूर्वक इसको स्वीकार कर लिया और महात्मा जी भी शाम तक झांकी का समस्त प्रबन्ध करके सवारी लेकर जब आये यो क्या देखते हैं कि श्री सिद्धकिशोरी जी को बहुत ज़ोरों से ज्वर चढ़ रहा है, महात्मा जी को देखते ही श्री किशोरी जी चलने को तैयार हो गईं यद्यपि उन महात्मा जी ने

पुजारी जी और मैंने भी बल पूर्वक बहुत ही उपाय किये कि आज झांकी स्थगित रक्खी जाय, परन्तु दया सागरी श्री किशोरी जी को अपने वाक्य दान की भारी चिन्ता लगी थी इसलिये किसी की एक भी नहीं मानी !' और वही की जो दिल में थी ठानी। शृंगार और परिकर सहित उन महात्मा जी के स्थान में पहुँच कर बुखार की दशा में ही अपना शृंगार कराना आरम्भ करा दिया, श्री चन्द्रिका धारण होते ही न जाने बुखार और जाड़ा कहाँ भाग गया ? तीन घंटे तक आनन्द पूर्वक झांकी हुई व्यारू भी हुई, परन्तु चन्द्रिका के उतरते ही तुरन्त जाड़े का बुखार चढ़ना पुनः आरम्भ हो गया।

(३४) वैसाख शुक्ला ९ को श्री जानकीनौमी प्रधान उत्सव श्री विदेही भवन में होने के कारण श्री जुगल सरकार की झांकी भी होनी थी परन्तु श्री किशोरी जी को ज्वर जोरों से चढ़ रहा था, इसलिये पुजारी जी ने आज की झांकी स्थगित रखने का निश्चय कर लिया, परन्तु श्री सिद्ध किशोरी जी को जब यह खबर मिली तो हठ पूर्वक आप मचल गईं कि झांकी कदापि रुक नहीं सकती। और सन्ध्या होते ही आप शृंगार घर में पहुँच कर श्री पुजारी जी को बाध्य करने लगीं कि आज जानकी नौमी है, इसलिये पहिले हमारा शृंगार होना चाहिये तब श्रीराम जी का ! आप की इस प्रकार की प्रबल एवं उत्कट अभिलाषा को टालने की शक्ति किसमें थी, शृंगार होना प्रारम्भ हो गया। ज्यों ही श्री चन्द्रिका धारण हुई, कल की तरह आज भी न जाने आप का जाड़ा (ज्वर) कहाँ भाग गया ! आज का उत्सव चार पाँच घंटे तक आनन्द पूर्वक होने के बाद रात को व्यारू में फलाहार का भोग भी लगा, शृंगार विसर्जन होते ही उनको ज्वर फिर से चढ़ आया, किन्तु केवल एक ही घंटे के लिये रहा। और फिर उसके बाद बिल्कुल जाता रहा,

सज्जनो ! आपको वाक्यदान की हमेशा भारी चिन्ता बनी रहती थी, इसीलिये आपने यह विचित्र लीला रची, आप की दुखी एवं निर्बल जीवों पर तो सदैव ही भारी अनुकम्पा एवं दया रहती थी, इसलिये किसी को कुछ तो किसी को कुछ आप वितरण किया ही करती थीं, आप के दरबार से कभी कोई याचक आर्त अथवा अभ्यागत भूखा प्यासा नहीं जाता था, आप सबके मनोर्थ पूर्ण कर दिया करती थीं। आप का ऐसा नम्र एवं दयालु स्वभाव देखकर ही तो आपके गुरू देव श्री पुजारी जी महाराज ने आप को समस्त भंडार एवं खजाने तक की चाबी भी सौंप रखी थी। सज्जनो ! मनुष्य के हृदय में युग २ के जन्म जन्मान्तरों के संस्कार सञ्चित रहते हैं। और जिनके संस्कार साधना के, भजन के, या भगवत भक्ति के हुआ करते हैं छिपाये से छिपते नहीं, तभी तो भगवान भी अपनी साधना एवं प्रेम की पूँजी उनको सौंप देते हैं। यदि श्री पुजारी जी ने अपने भंडार एवं खजाने की चाबी श्री सिद्धकिशोरी जी को सौंप दी तो कौन बड़ी बात हुई ? आप के हस्त कमल में तो एक ऐसी रेखा पड़ी थी कि आप जितना भी अन्न धन एवं वस्त्रादि लुटातीं उससे कहीं अधिक आ भी जाता था, दरबार में कभी किसी वस्तु की कमी न पड़ती थी।

(३५) श्री अयोध्या जी बिन्दौती भवन के बर्तमान संचालक पुजारी श्री रामशंकर शरण जी महाराज का कथन है कि किसी समय हमारे समाज को निमंत्रण में श्री राजगृही जाना पड़ा, ज्येष्ठ का महीना था एक दिन वहाँ तप्त कुंड के दर्शनार्थ एवं स्नान करने के लिये हम सब वहाँ गये। उस तप्त कुंड में श्री राम जी केवल दो ही गोते लगा कर तुरन्त बाहर निकल आये जब कि उसी कुंड में श्री किशोरी जी ने पचासों डुबकियाँ लगाईं लगभग आधा घंटा तक स्नान करने से न तो उकताईं

और न घबराईं, इस प्रकार की आश्चर्य मई घटना को देख सुन कर सब प्रेमी और दर्शकगण मूक से रहगये, और श्री किशोरी जी की बड़ी प्रशंसा भी करने लगे।

(३६) श्री पुजारी जी का कथन है, माघ का महिना था, ठंडी अधिक पड़ रही थी, श्री जुगुल सरकार ने एक दिन प्रातः काल हमसे श्री सरजू स्नान करने के निमित्त कहा, ठंडी अधिक होने के कारण ऊनी वस्त्र एवं अग्नि की अंगीठी का भी प्रबन्ध करके प्रेमी लोग सरकार के साथ गये। श्री राम जी ने श्री सरजू जी में केवल चार पाँच गोते लगाये, ऊनी कपड़े पहिन कर अंगीठी भी तापने लगे, इधर श्री सिद्धकिशोरी जी एक घण्टा तक आनन्द पूर्वक श्री सरयू जी में स्नान करतीरहीं, पचासों डुबकियाँ लगाईं न तो ऊनी वस्त्र पहिने और न ही अग्नि को तापा। इस प्रकार का अपूर्व प्रभाव एवं साहस देख कर प्रेमी लोग उन पर नौछावर हो गये।

(३७) श्री पुजारी जी का कहना है कि एक दिन बिहौती भवन मन्दिर की छत पर से एक कबूतर जगमोहन में गिरते ही मर गया (इधर मन्दिर में झांकी होनी थी और श्री सिद्ध किशोरी जी का शृंगार भी हो चुका था) यह देखते ही श्री सिद्ध किशोरी जी के दयालु हृदय पर भारी ठेस लगी, उनको झांकी तो भूल गईं, अपने दयालु स्वभाव के वशीभूत होकर उस मरे कबूतर को अपने रेशमी रूमाल में बाँध कर श्री लक्ष्मण शरण जी के हाथों में दे दिया और कुछ संतों को संग में लेकर वैसे ही शृंगार स्वरूप से आप भी श्री सरयू तट पर पधारीं, और स्वयं अपने कर कमलों द्वारा उस कबूतर की लाश को श्री सरयू जी में प्रवाह करते हुये उसको अशीर्वाद और तिलांजलि भी दी, न जाने इसमें क्या गुप्त रहस्य था, प्रभु की लीला प्रभु ही

जाने। इतने पर भी जब आप को संतोष नहीं हुआ, तो कबूतर की तेरही के दिन उसके कल्याणार्थ स्थान में कुछ साधू संतों को निमन्त्रित करके उसका भंडारा भी करा दिया, अन्त में उस कबूतर की जय बुलाकर सब महात्माओं को कुछ भेंट बिदाई दे दिला कर ही विदा किया। अहा! एक पक्षी के लिये भी आप का इतना प्रेम और उस पर इतनी दया व अनुकम्पा। धन्य है आपके इस प्रकार के कोमल हृदय एवं दयालु स्वभाव को!

पाठको! श्री सिद्ध किशोरी जी को हमारे समाज में सात वर्ष स्वरूप बनते व्यतीत हुये परन्तु हमने आप के मुखारविन्द पर कभी किसी प्रकार की चिन्ता, फिकर, दुख, शोक, मलाल, नहीं देखा आप निरन्तर प्रसन्न चित्त एवं परमानन्द में ही मग्न रहा करती थीं! आप का हृदय अहर्निश प्रफुल्लित दिखाई पड़ता था। घण्टों तक श्रृंगार धारण करके झूला झूलने या झाँकी में भी आपका चित्त कभी दुखी या उदास नहीं देखा गया यदि आपको कभी दुख होता था तो केवल गरीबों एवं दुखियों की दयनीय दशा को देख २ कर। संसार क्या है, इसका तो आप को कुछ भान ही न था, घर का क्या हाल चाल है इन बातों की आप को कभी परवाह तक न रहती थी, अपने शुद्ध अन्तःकरण का परिचय देते हुये यदि किसी प्रेमी ने आपको प्रेम पूर्वक मैया मैया कह दिया तो उसको बेटा बेटा कह कर या दुलरुवा कहते हुये अपनी गोदी में बैठा लेने में भी आपको कभी कोई संकोच न होता था आपके प्रधान दुलरुवा तो पटना श्रीकिशोरी बाग निवासी श्री जगत बाबू ही हैं, जिनको अपनी प्यारी मैया (श्री सिद्धकिशोरी जी) की गोदी में बैठने का कई बार सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं इस जीवनी के लेखक (भैया श्री लक्ष्मी निधि जी) भी जब कभी श्री किशोरी जी को श्री बहिन जी कह कर बुलाते तो भरे दरबार में निःसंकोच मैया २ कह कर उनकी

गोदी में भी आन कर बैठ जातीं, केवल इतना ही नहीं उनके मुँह तक को चूमने लग जातीं, आप को इस प्रकार सँकोच भी नहीं होता था। कारण कि आप का हार्दिक भाव तथा प्रेम कोई बनावटी तो था नहीं बिल्कुल सच्चा ही था, इसके अतिरिक्त आप अपने अन्तर्यामी पने के कारण भी पहिले सब प्रेमियों की हार्दिक भली बुरी भावनाओं को अच्छी प्रकार टटोल कर तब उनसे व्योहार, एवं प्रेम-बर्ताव करती थीं। उनके गुणों का कहाँ तक वर्णन करूँ, जब उनकी याद आ जाती है, तो हृदय फटने लगता है। जैसे देखने में श्री सिद्धकिशोरी जी सुन्दर थीं उससे भी कहीं अधिक उनका सरल हृदय था, व्योहार और बर्ताव से भी अति सुन्दर थीं। यदि सरल हृदय न हो और कितनी भी सजावट की जाय, तो सब की सब व्यर्थ और दुख प्रद होती है।

(३८) श्री हनुमत निवास में शृंगारी श्री रामानुज दास जी रहते हैं। श्री पुजारी जी का कथन है कि उनके दिल में यह शंका उत्पन्न हुई कि विहौली भवन की श्री किशोरी जी यदि हमको भी कोई चमत्कार दिखावैं तभी हम उनको "श्री सिद्ध किशोरी जी" कहैंगे; एक दिन श्री युगुल सरकार श्रावण मास में श्री सद्गुरु सदन में झूला झूल रहे थे, अकस्मात रामानुज-दास जी भी पहुँच गये और श्री रामायण गान करने लगे, रामायण गान होने के पश्चात् श्री सिद्धकिशोरी जी ने उन को अपने पास बुला कर उन का हाथ पकड़ एक बीड़ा पान देते हुये कहा कि आप तो महात्मा हैं, और लीला स्वरूपों के शृंगारी भी हैं! आप के मन में इस प्रकार की शंका का उत्पन्न होना उचित नहीं था। जाओ फिर इस प्रकार की शंका अपने मन में कभी नहीं लाना। इतना सुनते ही शृंगारी जी ने लज्जित होकर सरकारी चरण पकड़े और तब से आप

नित्य प्रति दर्शनार्थ बिहौती भवन आने जाने लगे। शृंगारी जी का कहना है कि न जाने श्री सिद्धकिशोरी जी में क्या आकर्षण था, क्या जादू था, कि जब तक मैं प्रति दिन उनका दर्शन न कर लेता मुझे कल ही न पड़ती थी।

(३६) श्री पुजारी जी इस प्रकार कथन कर रहे हैं कि जिस की इच्छा विशुद्ध एवं विश्वास प्रबल होता है। उसके लिये संसार में कोई भी कार्य असम्भव नहीं रहता, श्री सिद्ध किशोरी जी के अनन्य प्रेमी, श्रद्धालू भक्तवर श्री विभूति झा जी जो कि पहिले श्री गया जी में डिप्टी मजिस्ट्रेट थे और आज कल जिला मजिस्ट्रेट हैं अपने मकान पर श्री सिद्ध किशोरी युगुल सरकार द्वारा श्री विवाह-कलेवा उत्सव एवं झांकियों का पूर्णानन्द प्राप्त करते २ श्री सिद्धकिशोरी जी में पूर्ण श्रद्धा के अतिरिक्त आप को इस बात का भी अनुभव हो गया था कि किशोरी जी जो बात भी अपने मुखारविन्द से कह देंगी वह कभी निशफल नहीं होगी, इसी दृढ़ विश्वास के आधार पर ही आप ने उस समय परीक्षा दे कर उस में उत्तीर्ण होने के लिये श्री किशोरी जी के चरणों में नम्र प्रार्थना भी की, यद्यपि आप का उस समय की दी हुई कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण होना असम्भव था, तथापि आप का सच्चा प्रेम श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास देख कर श्री सिद्धकिशोरी जी ने आप के मस्तक पर अपना कर कमल फेरते हुये परीक्षा उत्तीर्णार्थ आशीर्वाद दे ही तो दिया, और आप भी कृत कृत्य हो गये, आप के हृदय में दृढ़ विश्वास जम गया कि श्री सिद्ध किशोरी जी का आशीर्वाद कभी निष्फल नहीं जा सकता।

श्री पुजारी जी का कथन है कि कुछ दिन बाद हमको बाबू बल्लभ सहाय जी वकील के निमन्त्रण में देवरिया जाना पड़ा

यहाँ से विदा होकर वहाँ पहुँचने पर उत्सव आरम्भ होने लगा श्री गया जी से देवरिया में एक पत्र श्री मजिस्ट्रेट साहब का हमारे नाम पहुँचा, उसमें लिखा था कि दुर्भाग्य वश हम परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुये। उसी रात को शृंगार हो चुकने के पश्चात् मैंने वही पत्र श्री किशोरी जी की सेवा में उपस्थित करते हुये प्रार्थना की कि आपने मजिस्ट्रेट साहब को गया जी में विना सोचे समझे आशीर्वाद तो दे दिया था कि आप पास हो जायँगे परन्तु वह लिखते हैं कि हम पास नहीं हुये, अब वहाँ के लोग आपकी कितनी हँसी करते होंगे, उस पत्र को देखते ही श्री सिद्ध किशोरी जी ने तुरन्त उत्तर दिया कि हम इस पत्र को नहीं मानतीं यह झूठा है श्री झा जी कदापि फेल नहीं हो सकते। वे तो पास हो चुके हैं। इधर चार पाँच दिन के पश्चात् श्री झा जी का फिर दूसरा पत्र आता है, उसमें लिखा था कि श्री सिद्ध किशोरी जी के आशीर्वाद एवं कृपा द्वारा हम पास थे, हमारा नम्बर भूल से अखबार में नहीं निकला था, इसी से हमने अनुमान कर लिया था कि हम फेल हो गये, किन्तु आज परीक्षा गजट देखने से मालूम हुआ कि हम पास हैं। देखिये सज्जनो! श्री सिद्ध किशोरी जी का अन्तर्यामीपना एवं भविष्य वाणी कितनी सच्ची निकली, उन्हों ने तो पहिले ही कह दिया था कि "श्री झा जी तो पास हो चुके हैं। वह कदापि फेल हो नहीं सकते।"

(४०) श्री पुजारी जी का कथन है कि श्री गया जी में बाबू राघो जी (पेशकार साहब) के मकान पर श्री जुगुल सरकार की रात्रि समय झाँकी हुई, श्री सिद्ध किशोरी जी की आज्ञानुसार ही ब्यारू में साग पूड़ी न वन कर केवल चारसेर दाल चावल की खिचड़ी और साग ही हमारे समाज के लिये बना था, झाँकी में दर्शनार्थ बहुत से साधु महात्मा एवं कई परिचित प्रेमी दर्शक

भी एकत्रित हो गये थे, झाँकी समाप्त होने पर जब ब्यारू की तैयारी हुई तो बहुत से प्रेमी दर्शक एवं साधु संत भी प्रसाद सेवनार्थ पंगत में बैठ गये, मूर्ति अधिक हो जाने के कारण इधर मुझे संकोच था कि सामान कम पड़ जाने से भारी हँसी होगी, उधर सब के हृदय की जाननहारी श्री सिद्ध किशोरी जी ने अपनी सिद्धाई का एक अपूर्व चमत्कार दिखलाया, मुझे अपने समीप बुला कर आज्ञा दी कि जो कोई भी भोजन के निमित्त पंगत में बैठ जावे उसको प्रेम से ब्यारू कराया जावे किसी का निरादर न होने पावे तो सामान में कभी कमी न पड़ेगी। सज्जनो! उस समय गिनने पर मालूम हुआ कि पंगत में छिहत्तर (७६) मूर्ति थे, सब ने पेट भरकर खिचड़ी, साग का भोजन किया छिहत्तर मूर्ति छक गये। सामान कम नहीं पड़ा। बल्कि एक थाली खिचड़ी बच भी गई, इस अनुपम चमत्कार को देख सुन कर लोग दंग रह गये।

(४१) श्रावणमास के झूलन महोत्सव पर जब कि श्री जुगुल सरकार झूला झूल रहे थे। तब हमारे श्री वैष्णव समाज के वयोवृद्ध, वीतराग पूज्यपाद पं० श्री रामवल्लभा शरण जी महाराज श्री जानकी घाट निवासी भी दर्शनार्थ पधारे, भगवत भागवत् के अतिरिक्त आप तो श्री लीला विहारी स्वरूपों के भी भावुक थे ही कारणकि (आपको एक समय श्री लीला स्वरूपों ने प्रत्यक्ष दर्शन भी दिया था। और उनकी आज्ञा आपके लिये हो चुकी थी कि जिस समय लीला स्वरूपों का शृंगार हुआ हो, उस समय उनमें एवं मन्दिर की मूर्तियों में कोई भेद भाव न समझना चाहिये; यदि कोई अभाव करता है, या ग्लानि करता है तो उसको भारी अपराध लगता है; और इसके साथ ही साथ आपको यह भी सरकारी आज्ञा मिली थी कि आप संसारी लोगों को कथामृत पिला पिला कर तृप्त करो इतना

कह के श्री जुगुल सरकार लीला स्वरूप अन्तर्ध्यान हो गये थे। तब से आप शृंगार किये हुये स्वरूपों को साक्षात पूर्णब्रह्म साकेताधिपति ही मानने लगे थे। श्री रामायण प्रेस लहरिया सराय द्वारा छपी हुई श्री महराज जी की जीवनी देखो पेज नं० ४४) श्री सिद्धकिशोरी जी की ज्यों ही आप पर दृष्टि पड़ी, बड़े प्रेम उत्साह से उनका हाथ पकड़ कर अपने झूले के समीप बिछे हुये सुन्दर कालीन पर सादर बैठाया, फूल माला इलायची पान द्वारा सत्कार करके इत्र से भरी हुई शीशी लेकर अपने ही कर कमलों द्वारा श्री महाराज जी की सुफेद दाढ़ी को इतना तर किया; कि उसमें से इत्र की बूँदें टपकने लगीं। श्री महराज जी भी अपने ऊपर सरकारी कृपा को देख कर कृत कृत्य हुये। प्रेम पूर्वक श्री जुगुल सरकार की रूप छटा का अवलोकन करते २ भावावेश हो गये। सरकारी अधरों पर मधुर मुसकान एवं बड़े २ नेत्र कमलों की कटीली चितवन निहारते २ तथा उनके दूसरे अंगों की मनोहरता को भी देख २ कर आपकी तृप्ति ही नहीं होती थी। आनन्द का श्रोत आपके हृदय में उमड़ने लगा; रात्रि के दो बजे झूला समाप्त होने पर ही आपने श्री जुगुल सरकार को अपने हृदय से लगाया एवं श्री सिद्धकिशोर जी के कुशल व्यवहार की भूरि २ प्रशंसा करते हुये विदा होकर अपने स्थान पर पहुँचे।

(४२) श्री पुजारी जी का कथन है कि हमको किसी आवश्यक कार्य के निमित्त बरेली अन्तर्गत उनई रिआसत में जाना था। रविवार का दिन था हमने श्री सिद्धकिशोरी जी से जाने के लिये आज्ञा मांगी तो उत्तर मिला कि आप जा सकते हैं। परन्तु इस बात को भी भूलना नहीं कि आपके पीती सुन्दर पाण्डेय जी जो कि कई दिनों से बीमार पड़े हैं वे आज से पाँचवें दिन गुरुवार साढ़े सात बजे शाम को इस लोक से विदा होने वाले

हैं। आपको यदि गुरुवार से पहिले वापस आ जाना हो तब तो ठीक है नहीं तो इनके लिये कफ़न आदि सामिग्री का प्रबन्ध करके तब जाना। देखिये पाठको। श्री सिद्धकिशोरी जी के कथनानुसार गुरुवार को साढ़े सात बजे शाम को पाण्डेय जी हमेशा के लिये इस लोक से विदा हो ही तो गये। अब जरा विचारिये तो, कि पाँच दिन पहिले किसी का मरण समय निश्चित कर लेना क्या कोई साधारण बात है? इस प्रकार की भविष्यवाणी भला सिद्ध पुरुषों के अतिरिक्त किसी की क्या मजाल है कि कह सकैं।

(४३) श्री पुजारी जी का कहना है कि एक समय रिआसत उनई (जो कि बरेली से लगभग १६ मील है) में हमारे समाज को निमंत्रित होकर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुवा। वहाँ पहुँचने पर कई दिनों तक श्री विवाह-कलेवा एवं झाँकियों का अपूर्व आनन्द हुवा। विदाई के समय स्टेशन तक पहुँचाने के लिये श्री राम जी ने तो घोड़े की सवारी पसन्द की श्री किशोरी जी ने सेजगाड़ी की। वहाँ से विदा होकर हम लोग जब कुछ दूर पहुँचे तो श्री किशोरी जी ने घोड़े पर चढ़ने की इच्छा प्रकट की; परन्तु श्री राम जी उनको घोड़ा देना नहीं चाहते थे मेरी प्रार्थना पर उन्होंने कुछ समय के लिये घोड़ा श्री किशोरी जी को दे दिया, और स्वयं सेजगाड़ी में बैठ गये। घोड़ा बड़ा चञ्चल था; इसलिये मैंने महात्मा श्री महाबीर दास जी से कहा कि आप भी इस घोड़े पर सवार होकर श्री किशोरी जी को अपनी गोदी में लैं लें। दोनों घोड़े पर सवार होकर चलने लगे थोड़ी देर के बाद श्री राम जी सेजगाड़ी से उतर कर अपना घोड़ा वापस लेने के लिये मचलने लगे। परन्तु श्री किशोरी जी घोड़ा नहीं देना चाहती थीं। फिर दोबारा श्री राम जी ने श्री किशोरी जी तथा श्री महाबीर दास जी से कहा कि मान जाओ

घोड़ा हमें वापस दे दो नहीं तो मन्त्र रूपी बाण चला कर तुम दोनों को हम नीचे गिरा देंगे। जब घोड़ा नहीं दिया तो श्री राम जी ने एक ऐसा संकेत किया कि वह दोनों घोड़े पर से नीचे गिर पड़े मगर चोट किसी को भी नहीं लगी। इधर घोड़ा खाली देख कर श्री राम जी घोड़े पर सवार हो गये। और श्री सिद्धकिशोरी जी सेजगाड़ी में बैठ गईं अब तो श्री किशोर जी ने भी सेजगाड़ी में बैठे २ श्री राम जी को चुनौती दी कि आप ने तो धोखा देकर हमको घोड़े से नीचे गिराया है इसलिये अब आप भी सावधान हो जाँय हम बदला जरूर लेंगी, आपको भी घोड़े से नीचे गिराये बिना नहीं मानेंगी। सज्जनों यद्यपि उस समय श्री राम जी कुछ सम्भल कर सावधानता पूर्वक घोड़े पर डटे हुये थे परन्तु इधर से श्री किशोरी जी का संकेत पाते ही वे भी नीचे गिर पड़े उनको भी कहीं चोट नहीं लगी। और घोड़े को बाँस बरेली स्टेशन तक खाली ही चलना पड़ा। श्री जुगुलसरकार सेजगाड़ी द्वारा स्टेशन तक पहुँचे। सज्जनो। यों तो श्री राम जी श्री अवधविहारीशरण जी श्री मनमोहन सरकार श्री साकेतविहारीशरण जी श्री जुल्फ वाले सरकार श्री मौरसर वाले सरकार एवं इन सब की श्री किशोरी जी के भी चमत्कारी चरित्र बहुत से हैं। परन्तु भैया लक्ष्मीनिधि जी (लेखक) इस समय तो श्री सिद्धकिशोरी जी की जीवनी को ही लिख रहे हैं। इसलिये केवल उन्हीं के चरित्रों का वर्णन हो रहा है।

(४४) डी. आई. जी पुलीस मुजफ्फरपुर के बड़े बाबू श्री रामदैनी सिंह जी का कथन है, कि सन् १६३६ में कसियावे जिला मुंगेर में एकादशी के दिन से गंगा तट पर श्री सीतारामी यज्ञ प्रारम्भ होना था, उसके अन्त में विहौती भवन समाज को भी परिकर सहित निमंत्रण था। जिस समय हम वहाँ पहुँचे

तो जुगुल सरकार सवारी पर से नीचे उतर कर यज्ञभूमि तक पैदल चलने लगे, इन की सादी पोशाक पीताम्बर, चौबन्दी, दुपट्टा, सिर पर ज़रीदार टोपियां, मस्तक पर चन्दन का तिलक केसर की खौर, घुँघराले चिकने केस, हाथों में चाँदी की मूठ लगी सुन्दर छड़ियाँ तथा चरणों में मखमली जड़ाउ जूते पहिने देखकर कुछ देहाती लोग इनकी मनोहर मुसकान एवं श्याम-गौर सुन्दर झांकी निहारते ही ऐसे प्रभावित हुये, उन्हें उस समय ऐसा भान होने लगा, मानो यह दोनों सुन्दर सुकुमार बालक आज इस यज्ञभूमि के हवन कुंड से ही प्रकट हुये हैं, प्रेमावेश में आ उन लोगों ने गाँव में जाकर हल्ला मचा दिया कि आज हवन कुंड में से दो सुन्दर बालक प्रकट हुये हैं, पटना लेजिसलेटिव एसम्बली के स्पीकर बाबू रामदयालु सिंह जी, पं० श्री दुर्गादत्त जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर श्री मस्तराम जी श्री वैष्णव दास जी श्री जटिल बाबा जी और भी कई महात्मा व प्रेमी लोग श्री जुगुल सरकार के साथ २ चल रहे थे। ज्यों ही देहाती लोगों में इस घटना की चर्चा फैली, जिस किसी ने भी सुना, सब दर्शनार्थ जिस दशा में थे घरों से दौड़े आये, जनता की अपार भीड़ जमा हो गई जिसकी कोई गणना न थी! यहाँ तक कि हम लोगों को यज्ञभूमि तक जाना कठिन हो गया। रास्ते ही में सब देहाती लोगों ने श्री जुगुल सरकार को चारों ओर से घेर लिया। भीड़ को हटाने के लिये प्रबन्ध कर्ताओं ने विवश होकर लाठियों से भी काम लिया, परन्तु उस समय वहाँ किसी की दाल न गली। दर्शक लोग टस से मस न हुये। सब अपनी जगह पर दर्शनार्थ डटे रहे! केवल इतना ही नहीं, लाठियों की मार एवं धक्कों मुक्कों को सहन करना तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर किया मगर बिना दर्शन किये घरों को लौट जाना किसी को भी स्वीकार न हुआ, स्पीकर

सा० के कई सिपाहियों द्वारा भी काफी प्रबन्ध होने पर जब कोई सफलता प्राप्त न हुई, श्री जुगुल सरकार बराबर उसी प्रकार रास्ते में ही रुके रहे, तब तो सब प्रेमी लोग बड़ी असमंजस में पड़ गये कि अब क्या करना उचित है।

सज्जनो ! आर्त एवं दीन दुखी भक्त की करुण पुकार और प्रार्थना को आर्त हरण दीन बन्धु भगवान भला कब टाल सकते हैं ? एवं किसी प्रेमी की सच्ची लगन और पुकार क्या नहीं कर सकती ! उसी समय श्री किशोरी जी ने अपने कर कमलों के इशारे मात्र से समस्त खड़े हुये दर्शकों को ढारस देते हुये अपनी अपनी जगह पर बैठ जाने की, आज्ञा प्रदान की, सरकारी संकेत पाते ही सब लोग तुरन्त बैठ गये, दो कुर्सियाँ मँगवाई गईं, किसी मकान की छत पर रखवा कर श्री जुगुल सरकार को उन पर विराजमान करा दिया गया, इस प्रकार समस्त दर्शकों को श्री जुगुल सरकार ने अपना शुभ दर्शन देकर कृतार्थ किया, जब दर्शन करके सब लोग अपने २ घरों को चले गये, तभी श्री जुगुल सरकार अपने परिकर सहित यज्ञ भूमि तक पहुँच सके, इस प्रकार निरन्तर सात दिन तक हजारों जनता प्रतिदिन दर्शनार्थ एकत्रित होती रही, उनमें से कोई कोई तो यज्ञभूमि का दर्शन करता, नहीं तो सब लोग श्री जुगुल सरकार के दर्शनार्थ आते, और दर्शन करके वापस अपने घरों को लौट जाते।

जिस दिन सरकार वहाँ से दूसरी जगह जाने के लिये प्रस्थान करके रेलवे स्टेशन पर पहुँचे तो जन्ता की अधिक भीड़ के कारण रेलगाड़ी को भी आधा घंटा तक रुकना पड़ा। किसी की बरात को उसी गाड़ी से जाना था समस्त बराती लोग अपने सामान सहित रेलगाड़ी में बैठ गये जब दूल्हा को कहार लोग पालकी द्वारा स्टेशन के समीप लाये तो लोगों की भीड़ भाड़ के कारण रास्ता न मिलने से कहारों

ने दूल्हा की पालकी को वहाँ रख दिया, और कुछ आगे बढ़ कर वह कहार भी श्री जुगुल सरकार की अनुपम झांकी का दर्शन करने लगे, कहार लोग दर्शन करने में इतने मग्न हो गये कि वह अपने दूल्हा की पालकी की सुध भी भूल गये, परिणाम यह हुआ कि समस्त बराती तो रेलगाड़ी से चले गये, मगर दूल्हा साहब अकेले पालकी में बैठे रह गये। इधर श्री किशोरी जी को दूल्हा की दशा देखकर दया आई और उन्होंने उसको भोजन के अतिरिक्त एक लोटा और गिलास भी दे दिया, कारण कि दूल्हा को गाड़ी कई घण्टे बाद मिलनी थी।

(४५) बाबू रामदैनी सिंह जी का कथन है कि बेगूसराय के समीप एक तलरथ स्टेशन है। श्री बिहौती भवन समाज वहाँ पहुँचा तो रेलगाड़ी छूट गई थी, वहाँ के स्टेशन मास्टर साहब ने ज्योंही श्री जुगुल सरकार की अनुपम सुन्दर छटा को अवलोकन किया। आप तो देखते मात्र ही ऐसे आकर्षित एवं मोहित हुये कि अपने शरीर की सुध बुध भी भूल गये, आपने बड़े प्रेम उत्साह के साथ समस्त समाज के भोजन एवं आराम करने का प्रबन्ध कर दिया, गाड़ी आते ही हम लोग तलरथ से चल कर सलोना स्टेशन पर पहुँचे। उस समय वहाँ के स्टेशन मास्टर श्री ब्रह्मदेव नारायण जी थे। उन्होंने केवल आगत स्वागत ही नहीं किया, वह तो श्री पुजारी जी महाराज के शिष्य भी हो गये।

शकरपुरा स्टेट के राजा साहब की वर्ष गाँठ के उपलक्ष में हमारे समाज को निमंत्रण मिल चुका था इसलिये वहाँ पहुँचकर कई दिन तक श्री विवाह-कलेवा उत्सव झाँकियाँ भी हुईं। राजा साहब ने अपनी सेवा और उदारता का पूर्ण परिचय दिया, खूब प्रेम से सेवा की! किसी दिन दोपहर के समय

श्री पुजारी जी को अपने किसी शिष्य के अधिक आग्रह करने पर सरकारी आज्ञा लेकर केवल तीन चार घण्टे के लिये समीप के एक ग्राम में जाना था, उनके चले जाने के पश्चात् चार अनाथ स्त्रियाँ पहुँचीं जिनके शरीर पर केवल एक एक फटी पुरानी साड़ी थी, उनकी इस प्रकार की दैन्य एवं सोचनीय दशा भला श्री सिद्धकिशोरी जी से कब देखी जा सकती थी ? आपने उन चारों को तुरन्त अपने समीप बुलाकर कुछ जलपान कराया और चार नई साड़ियाँ भी उनको पहना दीं, और घर में ले जाने के लिये कुछ चावल दाल भी गठरी में बाँधकर उनको दे दिये, आहा धन्य कितनी उदारता है कितनी निःस्वार्थ दया है, ठीक भी है। उदारता एवं दयालुता तो अनाथ, गरीब, तथा दुखी की सेवा करने पर ही शोभा देती है, भरे को अधिक भरने में भला कौन सी उदारता है ? श्री सिद्धकिशोरी जी को दूसरों को खिलाने में बहुत ही सुख मिलता था, सच है खाने का आनन्द तो जीव का है, एवं खिलाने का आनन्द ईश्वर का। जिसको खिलाने का स्वाद मिल गया तब उसके स्वयं खाने का स्वाद भी फीका पड़ जाता है, ठीक यही हाल श्री किशोरी जी का था। सन्ध्या समय जब श्री पुजारी जी अपने सेवक के घर से लौट कर आये तो आते ही तुरन्त उन्हें सब वृतान्त कह सुनाया, श्री महराज जी सुनकर अति प्रसन्न हुये और प्रसन्नता के मारे श्री किशोरी जी को प्यार से गोदी में ले लिया।

(४६) कानपुर हटिया बाजार के भक्त श्री रामकृपालशरण जी का कथन है कि एक समय हम चार मूर्ति कानपुर से श्री अयोध्या जी दर्शनार्थ गये, और कुछ काल रह कर दर्शन किये। घर लौटते समय श्री अयोध्या जी से चार पीतल के साधू-शाही बड़े लोटे बाजार से खरीदे उनको श्री सरयू जी में माँज धोकर शुद्ध किया तब यह निश्चय किया मि इन नये लोटों में पहिले भगवान को

कुछ दूध भोग लगा दें, बाजार से उन चारों लोटों में दूध लिया गया, तब हम लोग श्री विहौती भवन पहुँचे। वहाँ जाकर श्री पुजारी जी से उस दूध को श्री जुगुल सरकार के भोग लगाने के निमित्त प्रार्थना की, श्री पुजारी जी दूध को देखते ही अपना मत्था ठोंक कर आँसू बहाने लगे, हमने उनसे पूछा कि इसका क्या कारण है क्या हमसे कोई अपराध हो गया है ? महाराज बोले नहीं, आपसे क्या अपराध होना था, आप तो बड़ भागी हैं, जो आज श्री किशोरी जी की अभिलाषित वस्तु को भोग के निमित्त लाये हैं, हम ही अभागे हैं जो हमसे आज श्री किशोरी जी की आज्ञा की अवहेलना हो गई, आज प्रातः काल श्री किशोरी जी ने बड़ी कृपा कर केवल आध सेर दूध मँगवाने की हमें आज्ञा दी थी, हम दूध मँगवाना भूल गये। आपसे पहिले भी तीन प्रेमी दूध ला चुके हैं (वह देखो कड़ाही में औट रहा है) इधर आप लोग भी दस सेर दूध ले आये हैं आज तो शाम तक दूध ही दूध आवेगा, यही तो श्री सिद्धकिशोरी जी की विचित्र लीला है। हम लोग बात चीत कर ही रहे थे कि इतने में दो प्रेमी आये वह भी दो लोटों में कुछ दूध ही ले आये। दूसरे दिन मालूम हुआ कि उस दिन सवेरे से रात्रि तक जो कोई भी प्रेमी दर्शनार्थ आया कोई दूसरी वस्तु न लाकर केवल दूध ही दूध सरकारी भोग के लिये लाया। सज्जनो ! इसी को कहते हैं "उर प्रेरक रघुवंश विभूषण"। यदि श्री सिद्ध किशोरी जी की प्रेरणा न होती तब आज सब प्रेमी कोई दूसरी वस्तु न लाकर दूध ही दूध क्यों लाते।

(४७) श्री लक्ष्मण शरण जी का कथन है कि श्री हनुमत निवास में एक परम प्रसिद्ध पूज्य महात्मा श्री रामकिशोरशरण जी महाराज निवास करते हैं, मैं निरन्तर उन्हीं की सेवा में रहा करता था, और अब भी उन्हीं की सेवा में रहता हूं।

सम्वत् १९९० में श्री सिद्धकिशोरी जी के कुछ चमत्कार देख सुन कर उन्हीं की सेवा में निरन्तर रहने लगा, जिससे श्री महाराज जी की सेवा भी कुछ काल के लिये मुझ से छूट गई। एक दिन श्री किशोरी जी ने मेरे राम से पूँछा कि आप अपने घर कब जाओगे ? मैंने उत्तर दिया कि जिस घर को छोड़ आया। फिर वहाँ क्या जाना। दुबारा श्री किशोरी जी ने संकेत करतेहुये कहा, कि साधुओं का घर श्री मिथिला जी है। उसी घर में तुम्हें अवश्य और शीघ्र जाना पड़ेगा, यद्यपि श्री महाराज की सेवा छोड़ कर मेरे मन में कहीं भी जाने का कभी विचार नहीं उठता था, मगर यह श्री सिद्धकिशोरी जी की ही लीला थी, उन्हें अपने बचन को सत्य करना था! इसलिये दूसरे ही दिन से मेरा चित्त उचाट होकर श्री मिथिला जी के स्वप्न देखने लगा। दो चार ही दिन में श्री मिथिला जी के दर्शनों की लालसा अधिक बढ़ने लगी, मैंने कार्तिक शुक्ल अक्षयनौमी को श्री अयोध्या जी की चौदह कोसी परिक्रमा की, और श्री जुगुल सरकार के चरण स्पर्शकर उनकी आज्ञा और आशीर्वाद ले दूसरे ही दिन श्री जनकपुर (मिथिला) के लिये प्रस्थान कर दिया अपने आधार के निमित्त मैंने केवल श्री जुगुल सरकार की फ़ोटो साथ में ले ली, इसी प्रकार श्री जनकपुरी के दर्शन करके मैं फिर कुछ दिन पश्चात् श्री अयोध्या जी लौट आया, सज्जनो ! श्री महाराज जी की सेवा को छोड़ कर कहीं भी बाहर जाने का मेरा, कदापि स्वप्न में भी संकल्प नहीं हुआ था, यह तो केवल श्री सिद्धकिशोरी जी की भविष्यवाणी की लीला एवं वाक्यसिद्धि का चमत्कार ही था, जिसने प्रत्यक्ष मुझे श्री महाराज जी की सेवा से पृथक कर श्री जनकपुर में भेज दिया।

(४८) श्री लक्ष्मण शरण जी का कहना है कि एक दिन रात्रि के आठ बजे थे श्री सिद्धकिशोरी जी ने मुझे बुला कर

कहा कि तुम नित्य प्रति सेवा के लिये कहा करते हो, क्या आज हमारी सेवा करने को आप स्वीकार करेंगे ? मैंने उत्तर दिया अहोभाग्य ! जो भी सेवा होगी, तुरन्त बजा लाऊँगा। तब श्री किशोरी जी ने आज्ञा दी कि अच्छा जाओ—मूँग की दाल की कुछ ताजी पकोड़ी बना कर लाओ, मैंने उत्तर दिया कि अब आठ बजे हैं, मूँग की दाल कब भीगेगी, कबपिसैगी, कब पकौड़ी तैयार होंगी; इसलिये कल बना कर सेवा में अर्पण करूँगा। अभी वार्तालाप हो ही रही थी कि अकस्मात श्री हनुमत निवास के श्री उर्मिला शरण जी आ पहुँचे। और करवद्ध प्रार्थना करने लगे कि श्री जुगुल सरकार के लिये मूँग की दाल के गरम २ पकौड़े मैं स्वयं अभी बना कर लाया हूं। कृपा करके इनको स्वीकार किया जाय, श्री जुगुल सरकार उनके इस उपहार को लेकर सेवन करने लगे। तो इतने में पं० दुर्गादत्त जी का नौकर पहुँचा। वह भी डिप्टी साहब की ओर से मूँग की दाल के पकौड़े ही ले आया, उसको भी सरकार भोग लगाने लगे इधर ज्यों ही नौ बजे कि श्री लौकुश शरण जी के मकान से भी मूँग की दाल के पकौड़े ही पहुँच गये।

इस प्रकार का अपूर्व चमत्कार देखकर मैं तो लज्जित हुआ, सरकारी चरणों में गिर कर क्षमा माँगी, अब तो मेरी श्रद्धा उनमें प्रति दिन बढ़ने ही लगी और मैं श्री सिद्धकिशोरी जी को पूर्ण आदर की दृष्टि से देखने लगा, मुझे कई बार का अनुभव है कि जो भी इच्छा आप की होती वह अवश्य पूरी हुआ करती, कभी निसफल नहीं जाती थी।

(४६) श्री लछमन शरण जी का कथन है कि रात के ११ बजे थे और सब लोग शयन कर चुके थे, श्री किशोरी जी शयन करना ही चाहती थीं, कि एक परदेसी कहीं से आकर उनके

समीप बैठ गया, जब कई बार कहने पर भी वह बाहर नहीं गया तब श्री किशोरी जी ने उससे प्रेम पूर्वक पूँछा, सच २ बताओ तुम कौन हो, यहाँ किस लिये आये हो और तुम बाहर क्यों नहीं जाते ? उसने कहा कि मैं चोर हूं। मेरे पास खर्चा नहीं रहा, बताओ अब मैं कहाँ जाऊँ। देखा पाठकों ! यदि कोई दूसरा होता तो चोर २ कह कर शोर मचा देता और उसको पकड़वा कर पुलिस के हवाले कर देता परन्तु श्री किशोरी जी ने भारी साहस करते हुये अपने दयालु एवं भोले स्वभावानुकूल उस चोर से कहा कि हमारे पास तो केवल शृंगार ही रक्खा है, उसको लेकर तुम क्या करोगे ? यदि कुछ कपड़ों की आवश्यकता हो तो साड़ी और धोती मैं तुमको दे सकती हूं। और यदि रुपये पैसे की आवश्यकता है तो श्री हनुमत निवास में चले जावो वहाँ खूब धन मिलेगा। ज्योंही वह चोर उठ कर चरण स्पर्श कर जाने लगा, तब उसको फिर बुला कर कहा कि देखो श्री हनुमत निवास के महराज जी सिद्ध महापुरुष हैं, उनके स्थान में बहुत से साधू संत भी रहते हैं, अगर पकड़े गये तो वहाँ खूब पिटोगे भी ! इसलिये पं० लवकुश शरण जी के मकान पर (गोला घाट) चले जाओ वहाँ कुछ माल टाल तुम को मिल हीजावेगा। देखा पाठको ! सब लोग तो सो गये थे अकेली श्री किशोरी जी ने (जिनकी आयु केवल उस समय १० वर्ष की थी) एक चोर को किस चतुरता एवं बुद्धिमता से अपने मकान से बाहर कर दिया, ज्यों ही चोर बाहर निकला आप भी दरवाजा बन्द करके अपने पलंग पर शयन कर गई। श्रावन मास था रात्रि के बारह बज गये थे, श्री लवकुश शरण जी सद्गुरु सदन में झूलन उत्सव के आनन्द में मग्न हो रहे थे, इधर सचमुच वही चोर श्री सिद्ध किशोरी जी के वचनों का विश्वास करके उनके मकान पर पहुँच ही तो गया। और जो कुछ भी जेवर, रुपया- पैसा उसके हाथ

लगा लेकर चम्पत हो गया। प्रातःकाल श्री किशोरी जी को सूचना मिली। कि रात्रि के समय आपके बाबू जी (लवकुश शरण जी के घर चोरी हो गई है, यह सुन कर श्री किशोरी जी मुसकराईं, और कहने लगीं कि मैंने ही तो उस चोर को चोरी करने के निमित्त अपने बाबू जी का घर बताया था, इस प्रकार के भोलेपन के वचन श्री किशोरी जी के मुखारविन्द से सुनकर डिप्टी साहब तो मुग्ध हो कर हँसने लगे और उनको चोरी होने का समस्त दुख भी भूल ही तो गया। सरकारी लीला को सरकार ही जानैं, इसमें क्या रहस्य था दूसरा कोई क्या जाने।

(५०) एक दिन की घटना इस प्रकार है कि श्री पुजारी जी महाराज को चलती गाड़ी में कुछ पिसी हुई हलदी की जरूरत थी, जब पं० सियावल्लभ शरण जी से मांगी तो उन्होंने कहा कि हम सब मसाला हलदी मिर्च इत्यादि महावल मन्दिर में दे आये है हमारे पास इस समय रंगबदल (हलदी) तनिक भी नहीं ।

श्री महाराज जी का चित उदास देख कर श्री सिद्धकिशोरी जी ने तुरन्त पिसी पिसाइ हल्दी एक पानी पीने वाले गिलास में से ही प्रगट करके दिखा दी। बस इतना देखते ही रेलगाड़ी के भी सब यात्री दंग से रह गये और इनकी भारी प्रशंसा करने लगे।

(५१) लक्ष्मणशरण जी का कहना है कि मुझे भी श्री जुगुल सरकार की सेवा में चार पाँच वर्ष तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जब तक श्री जुगुलसरकार श्री अवध में विराजते मैं बराबर उनकी सेवा में नित्य प्रति जाता।

श्री हनुमत निवास स्थान का प्राचीन नियम चला आता था कि भादौं की पूर्णमासी के बाद जो भी पहिला मंगल का दिन

पड़े, उसी मंगल को मन्दिर भगवान के झूलन के साथ २ एक झूला लीला विहारी स्वरूपों का भी अवश्य पड़ता और उसी रात को सरकार झूला झूल कर विस्राम करते और उसी अन्तिम झूला माना जाता है।

एक समय की बात है। कि श्री हनुमत निवासी साधुओं में दो पार्टी हो गईं, एक पक्ष वाले तो श्री सिद्धकिशोरी जी के लिये और दूसरे श्री पंजाबी भगवान के लिये लालायित थे। वर्तमान संत सेवी महन्त श्री रघुनन्दन शरण जी जो श्री लीला विहारी स्वरूपों के भी भावुक प्रेमी हैं, अपनी उदारता का पूर्ण परिचय देते हुये यह निश्चय किया कि इस साल दोनों झूले सजाये जावें लीला स्वरूपों के दोनो जुगुल यहाँ पधार कर झूलें। भविष्य के लिये भी लीला विहारी स्वरूपों के दोनों झूलों का नियम बाँध दिया। जो कि अभी तक बराबर चल रहा है। उसी समय श्री विहौती भवन के श्री पुजारी जी एवं श्रृंगारी स्वामी दास जी को भी निमंत्रण भेजा गया, इधर दोनों पक्ष के प्रेमी साधुओं ने अपने अपने श्री जुगुलसरकारों के निमित्त दोनों झूले बड़े प्रेम से सजाये, जिन पर सन्ध्या समय दोनों श्री जुगुल सरकार पधार कर झूलने लगे। रात्रि के नौ बजते ही श्री अयोध्या जी के एक नामी कथक "बल्देव" जी ने भी मन्दिर में पहुँच कर अपना गाना बजाना आरम्भ कर दिया। सर्व प्रथम उनका गाया हुआ पद था।

"कौशिल्या के कुँवर पर मुकदमा हम चलायेंगे।
न लेंगे माले मनकूला न गै़र मनकूला
दो तरफा जुल्फ की कुर्की सिया बर की हम करायेंगे"।

इतना सुनते ही श्री पंजाबी भगवान ने कथक से कहा कि हमारी जुल्फ की कुर्की मत कराओ इसके बदले में हमसे कुछ इनाम ले लो। इनसे प्रसाद इनाम एवं फूल माला लेकर कथक

लगा लेकर चम्पत हो गया। प्रातःकाल श्री किशोरी जी को सूचना मिली। कि रात्रि के समय आपके बाबू जी (लवकुश शरण जी के घर चोरी हो गई है, यह सुन कर श्री किशोरी जी मुसकराईं, और कहने लगीं कि मैंने ही तो उस चोर को चोरी करने के निमित्त अपने बाबू जी का घर बताया था, इस प्रकार के भोले पन के वचन श्री किशोरी जी के मुखारबिन्द से सुनकर डिप्टी साहब तो मुग्ध हो कर हँसने लगे और उनको चोरी होने का समस्त दुख भी भूल ही तो गया। सरकारी लीला को सरकार ही जानैं, इसमें क्या रहस्य था दूसरा कोई क्या जाने।

(५०) एक दिन की घटना इस प्रकार है कि श्री पुजारी जी महाराज को चलती गाड़ी में कुछ पिसी हुई हलदी की जरूरत थी, जब पं० सियावल्लभ शरण जी से मांगी तो उन्होंने कहा कि हम सब मसाला हलदी मिर्च इत्यादि महाबल मन्दिर में दे आये है हमारे पास इस समय रंगबदल (हलदी) तनिक भी नहीं।

श्री महाराज जी का चित उदास देख कर श्री सिद्धकिशोरी जी ने तुरन्त पिसी पिसाइ हल्दी एक पानी पीने वाले गिलास में से ही प्रगट करके दिखा दी। बस इतना देखते ही रेलगाड़ी के भी सब यात्री दंग से रह गये और इनकी भारी प्रशंसा करने लगे।

(५१) लक्ष्मणशरण जी का कहना है कि मुझे भी श्री जुगुल सरकार की सेवा में चार पाँच वर्ष तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जब तक श्री जुगुलसरकार श्री अवध में विराजते मैं बराबर उनकी सेवा में नित्य प्रति जाता।

श्री हनुमत निवास स्थान का प्राचीन नियम चला आता था कि भादों की पूर्णमासी के बाद जो भी पहिला मंगल का दिन

पड़े, उसी मंगल को मन्दिर भगवान के झूलन के साथ २ एक झूला लीला विहारी स्वरूपों का भी अवश्य पड़ता और उसी रात को सरकार झूला झूल कर विसराम करते और उसी अन्तिम झूला माना जाता है।

एक समय की बात है। कि श्री हनुमत निवासी साधुओं में दो पार्टी हो गईं, एक पक्ष वाले तो श्री सिद्धकिशोरी जी के लिये और दूसरे श्री पंजाबी भगवान के लिये लालायित थे। वर्तमान संत सेवी महन्त श्री रघुनन्दन शरण जी जो श्री लीला विहारी स्वरूपों के भी भावुक प्रेमी हैं, अपनी उदारता का पूर्ण परिचय देते हुये यह निश्चय किया कि इस साल दोनों झूले सजाये जावें लीला स्वरूपों के दोनो जुगुल यहाँ पधार कर झूलें। भविष्य के लिये भी लीला विहारी स्वरूपों के दोनों झूलों का नियम बाँध दिया। जो कि अभी तक बराबर चल रहा है। उसी समय श्री विहोनी भवन के श्री पुजारी जी एवं श्रृंगारी स्वामी दास जी को भी निमंत्रण भेजा गया, इधर दोनों पक्ष के प्रेमी साधुओं ने अपने अपने श्री जुगुलसरकारों के निमित्त दोनों झूले बड़े प्रेम से सजाये, जिन पर सन्ध्या समय दोनों श्री जुगुल सरकार पधार कर झूलने लगे। रात्रि के नौ बजते ही श्री अयोध्या जी के एक नामी कथक "बल्देव" जी ने भी मन्दिर में पहुँच कर अपना गाना बजाना आरम्भ कर दिया। सर्व प्रथम उनका गाया हुआ पद था।

''कौशिल्या के कुँवर पर मुकदमा हम चलायेंगे।
न लेंगे माले मनकूला न गैर मनकूला
दो तरफा जुल्फ की कुर्की सिया बर की हम करायेंगे''।

इतना सुनते ही श्री पंजाबी भगवान ने कथक से कहा कि हमारी जुल्फ की कुर्की मत कराओ इसके बदले में हमसे कुछ इनाम ले लो। इनसे प्रसाद इनाम एवं फूल माला लेकर कथक

जी अब दूसरे भूले के समीप पहुँचे, और वहाँ भी यही पद गया, उधर से भी उतना इनाम इनको मिल गया दूसरी बार फिर कथक जी श्री पंजाबी भगवान के समीप गये तो पहले से दूँना इनाम, प्रसाद इनको मिला, इसी प्रकार दूसरे भूला से भी दूना ही मिला, ऐसा होते होते परस्पर होड़ बँध गई। अब तो दोनों तरफ के प्रेमी भी सरकारी निछावरें करने लगे, कथक जी की मुट्ठी खूब गरम हो गई, फिर अपने उदार स्वभाव के अनुकूल श्री पंजाबी भगवान जी ने अपनी स्वर्ण की अंगूठी उतार कर कथक को देने का संकेत किया तो दूसरी तरफ से भी श्री सिद्धकिशोरी जी के सरकार कब चूकने वाले थे, उन्होंने तो अपने स्वर्ण के कड़े उतार कर देने का इशारा किया, शृंगारी स्वामीदास जी इस प्रकार का परस्पर सरकारी संकेत देख कर घबरा उठे और तुरन्त इसकी सूचना श्री धर्मभगवान जी को (जो कि वहीं उपस्थित थे) दे दी। तब श्री धर्म भगवान जी ने अपनी तीव्र बुद्धि द्वारा दोनों जुगुल के श्री सरकारों को समझाया, कि आप तो दोनों शहन्शाह हैं आपको क्या परवाह है, परन्तु परस्पर होड़ में बिचारे शृंगारी पिस जांयगे। इसलिये अब आप कथक को आभूषण देने की हठ न करें। हाँ ! अगर प्रेमी सन्त चाहें तो आपकी न्योछावर करके कथक को रुपया पैसा अपनी ओर से दे सकते हैं इसमें कोई आपत्ति नहीं है। श्री धर्म भगवान जी के स्वभाव तथा प्रभाव से समस्त लीला स्वरूप एवं शृंगारी परिचित थे ही, इसलिये उनके न्याय को टाल नहीं सके। यदि उस समय श्री धर्म भगवान जी पहुँच कर इस प्रकार निर्णय न कर देते तो थोड़ी ही देर में श्री सिद्धकिशोरी जी के भूले के श्री जुगुल सरकार का हजारों रुपयों का जेवर कथक की भेंट हो जाता कारण कि श्री सिद्ध किशोरी जी ने पहिले से ही अपने पुजारी महाराज से निश्चय

कर रक्खा था कि आज परस्पर की होड़ में हम पीछे न रहेंगे, हम दोनों स्वरूप समस्त आभूषण उतार कर कथक की भेंट कर देंगे, इस प्रस्ताव को श्री पुजारी जी ने भी श्री सिद्ध किशोरी जी की रुचि पर ही रख छोड़ा था कि जैसी आपकी इच्छा हो करें, हमको इसमें कोई भी आपत्ति नहीं है, हमको तो केवल सरकारी प्रसन्नता में ही प्रसन्नता है। फिर आपकी प्रसन्नता के सामने भला यह आभूषण किस गिनती में हैं।

सज्जनो ! इसी प्रकार भूला भूलते भूलाते प्रातःकाल होगया, न तो श्री जुगुल सरकार भूला भूलने से उकताये, और न ही दर्शक एवं प्रेमी जन बैठने से घबड़ाये, अन्तिम आरती के समय जब कथक जी ने पद गाये, तो दोनों तरफ से प्रेमियों द्वारा सरकारी न्योछावरें होने लगीं, यहाँ तक कि कथक जी की अधूरी थैली भी अब पूरी भर गई और सब लोग सरकार की जय जयकार मनाते हुये अपने २ घरों के लिये विदा हो गये।

(५२) श्री हनुमत निवास के वर्तमान महन्त श्री रघुनन्दन शरण जी के एक शिष्य थे जिनको सब लोग बंसी वाले बाबा कहा करते थे, वह प्रथम श्रेणी के नक्काल और विदूषक भी थे, एक दिन सन्ध्या समय श्री विहौती भवन में श्री जुगुल सरकार की झाँकी होनी थी, श्रृंगार हो ही रहा था, कि अचानक बंशी बाबा पहुँच गये। श्री सिद्धकिशोरी जी ने इनको देखते ही अपने समीप श्रृंगार घर में बुलवा लिया और उनको कुछ नकलें और जानवरों की बोलियाँ सुनाने के लिये आदेश दिया; महात्मा जी अपना कर्त्तव्य दिखाने लगे, इधर इनकी वजह से श्रृंगार में देरी होने लगी, उधर दर्शकगण जल्दी मचाने लगे, तो श्री पुजारी जी ने दो तीन बार श्रृंगारी जी को जल्दी श्रृंगार करने की सूचना भेजी, परन्तु जब उनकी बात की कोई सुनाई न

हुई, तो पुजारी जी कुछ रुष्ट होकर शृंगार घर में पहुँच गये। पहिले तो नकाल जी को फिर मुझको भी (ल० शरण) शृंगार घर से बाहर निकाल कर शृंगारी जी को जल्दी शृंगार करने के लिये कह कर चले आये। इस प्रकार की घटना से श्री सिद्ध किशोरी जी के चित्त पर भारी धक्का लगा। आप ने दुखी होकर शृंगारी जी से कहा कि आप नीचे जाकर समस्त दर्शकों को सूचना दे दें कि वह सब अपने २ घरों को वापस लौट जावें आज झाँकी नहीं होगी, दर्शकगण शृंगारी द्वारा इस सूचना को पाते ही पुजारी जी के समीप जाकर इसका कारण पूछने लगे। तब श्री पुजारी जी ने श्री सिद्ध किशोरी जी से शृंगार घर में जाकर रुष्ट हो जाने का कारण पूँछा तो उत्तर मिला कि यह कोई नाटक मण्डली अथवा मदारी का खेल तमाशा तो है नहीं, हमने न तो कोई टिकट बेचा है और न किसी से कोई रुपया-पैसा ही लिया है। तब हमको क्यों बार २ दबाव दिया जाता है कि जल्दी करो जल्दी करो। हमारी प्रसन्नता एवं सुख में जब कि दर्शकगण इस प्रकार की बाधा पहुँचायेंगे, जब स्वयं हमारा ही चित्त प्रसन्न न होगा, तो हम दूसरों को क्या सुख दे सकेंगे। इस में भाव भक्ति कहाँ रही ? यह तो नाटक जैसा केवल स्वाँग और खेल तमाशा ही हो गया। प्रेमियों को तो हमारी रुचि के ही अनुकूल रहना चाहिये। दबाव देकर हम पर शासन करने का किसी को कोई अधिकार नहीं है। हम किसी के बन्धन में कैदी बन कर नहीं रहना चाहतीं। यह लो अपना शृंगार, बस इतना कह कर श्री सिद्धकिशोरी जी अपना शृंगार उतार २ कर फेंकने लगीं, यह दृश्य देखते ही समस्त प्रेमी जन काँपने लगे। एवं बहुत से दर्शकगण तो श्री जुगुल सरकार के चरणों में गिर कर गिड़गिड़ाने एवं अपने अपराधों की क्षमा माँगने लगे, उधर श्री पुजारी जी ने भी नम्रता पूर्वक प्रार्थना की कि सरकार ! भूल

हो गई है। क्षमा किया जाय, भविष्य में फिर ऐसा अनुचित कार्य कभी न होगा, सरकार की रुचि के प्रतिकूल कोई भी कार्य न होकर आपकी रुचि अनुकूल ही सब कार्य होंगे; इतना सुनते ही श्री सिद्धकिशोरी जी का दुखी हृदय कुछ शान्त हुआ, तुरन्त वंशी बाबा को बुलवाया, वह आये और उनसे फिर कुछ नकलें सुनने लगीं, और यह भी कहा कि जिस किसी को दर्शन करना हो वह नीचे जाकर बैठें, और जिसको घर जाना हो वह अपने घर चले जावें, एक घण्टा के बाद शृंगार होकर झांकी होगी, श्री किशोरी जी के प्रभाव से प्रभावित होकर समस्त दर्शक गण लज्जित हुये, सबने क्षमा माँगी और नीचे जाकर बैठ गये। थोड़ी देर में शृंगार होकर जुगुल झांकी होने लगी।

सज्जनो देखा ! श्री सिद्धकिशोरी जी का इतनी छोटी अवस्था में भी कितना भारी प्रभाव, साहस एवं निडरपन था, इस घटना से तो मानो आपने समस्त भावुक लीला कर्त्ताओं को एक प्रकार का उपदेश ही दे डाला, कि श्री लीला विहारी सरकारों की प्रसन्नता एवं सुख में ही सब लोगों को अपनी प्रसन्नता एवं सुख मानना चाहिये न कि अपने सुख एवं आनन्द के लिये सरकारों को अनुचित दबाव देकर उनको संकुचित, दुखी करके, उन पर शासन करना। श्री लीला विहारी स्वरूपों से इस प्रकार का अनुचित व्यवहार एवं बर्ताव करना तो भारी अनर्थ एवं अमंगल का ही सूचक होता है। ऐसा व्योहार करने वाले शृंगारी, व्यास, अथवा सेवक, प्रेमी कहे जाने के अधिकारी नहीं हो सकते, किन्तु वह तो केवल स्वार्थी और टके के गुलाम ही कहे जा सकते हैं। पाठको ! इसी को धर्म की आड़ में पाप कहा जाता है, इसलिये ऐसे लोग किसी पुन्य के भाजन न बनते हुये, भारी पाप और अपराध के भागी बनकर नर्क गामी भी होते हैं। इसके लिये चरित्र नं० ४१ को अवलोकन करैं। लेखक !

(५३) श्री बृज वृन्दावन निवासी सन्यासी महात्मा श्री मस्तराम जी (पंजाबी) का कथन है कि विहौती भवन समाज में श्री सिद्धकिशोरी जी के अनोखे पवित्रभाव, शील स्नेह तथा सरल स्वभाव में बाल्यकाल से ही कोई ऐसा आकर्षण, चुम्बक, अथवा जादू था, कि जिसके कारण केवल मुझे ही नहीं किन्तु मेरे और भी दो साथियों (सन्यासी महात्माओं) श्री वैष्णव दास जी एवं श्री जटिल बाबा जी को लगभग पांच छै वर्ष तक श्री जुगुलसरकार की सेवा में निरन्तर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, श्री भैया जी (अधिकारी श्री रामगोपाल दास जी) द्वारा लिखित उनकी इस पावन जीवनी के कई चमत्कारी चरित्र तो हम तीनों की उपस्थिति में ही हुये थे। इसके अतिरिक्त इनके और भी अनेकों चरित्र हैं। कहाँ तक लिखा जाय। इनका तो प्रतिदिन कोई न कोई विचित्र चरित्र हुआ ही करता था। जिसको देख सुन कर लोग चकित हो जाते थे। यदि इनको चरित्रों की खाँनि कहा जाय तो भी कुछ अनुचित न होगा। ये देखने में तो एक बालक थे, परन्तु कोई साधारण बालक न थे वे तो बालक रूप में साक्षात् श्री जनक दुलारी ही थीं, जो कि हम जैसे संसारी पामर जीवों के कल्याणार्थ ही इस मृत्यु लोक में पधारी थीं। और अपने अद्भुत चरित्रों द्वारा भक्तों को शिक्षा दीक्षा दे दिला कर फिर तुरन्त अपने साकेत धाम को (हम सब की दृष्टि से ओझल होकर) चली गईं।

आपकी इस प्रकार की असीम अनुकम्पा द्वारा श्री लीला मण्डलियों को भी महान गौरव की प्राप्ती हुई है। आपकी अमर कीर्ति को सुन कर प्रेमी एवं दुखी जन भी सब आपके दर्शनार्थ बहुत दूर २ से आते और आपके वचनामृत का पान करते ही कृतार्थ एवं पूर्ण मनोरथ हो जाते थे। एक समय आपकी भारी ख्याति सुनकर श्री विन्द्रावन से तो परम

आदरणीय वीतराग महात्मा श्री उड़िया बाबा जी महाराज झूंसी (प्रयाग) से परम पूज्य प्रातःस्मरणीय ब्रह्मचारी श्री प्रभुदत्त जी महाराज एवं ग्वालियर से मानस मार्तन्ड महात्मा श्री रामदास जी महाराज भी श्री अवध धाम में आपके दर्शनार्थ पधारे थे। श्री सिद्धकिशोरी जी का शील स्नेह, सुन्दर व्यवहार एवं सरल स्वभाव देख कर तीनों महानुभाव बड़े ही प्रेम एवं शिष्टाचार पूर्वक आप से मिले। उनके हर्ष एवं हुलास का पारावार न था, आपके वर्ताव एवं स्वभाव से तो सब सन्तुष्ट एवं मुग्ध थे! विदा होते समय सबने आपकी मुक्त कंठ से भूरि २ प्रशंसा की; श्री ब्रह्मचारी जी महाराज को एक बार श्री सीतामढ़ी में और एक दो बार श्री प्रयागराज एवं श्री अवध में भी श्री सिद्धकिशोरी जी के शुभ दर्शन हुये थे। इसके लिये इनकी लिखित भूमिका को अवश्य पढ़ें।

(५४) श्री मस्तराम जी का कुछ अपने विषय में भी वर्णन है कि मैं कोई भारी विद्वान पंडित या व्याख्यान दियाकर तो था ही नहीं, मैं तो केवल एक साधारण बुद्धि का अल्पज्ञ जीव हूँ, यह तो केवल श्री सिद्धकिशोरी जी की असीम कृपा एवं आशीर्वाद का ही फल है। उन्होंने मुझे ऐसी वाकय शक्ति प्रदान कर दी थी जिसके कारण मुझे आज तक अनेक धर्म सभाओं में निमंत्रित होकर जाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। केवल इतना ही नहीं श्री सिद्धकिशोरी जी के कथनानुसार मुझे तो थोड़े ही दिनों में "व्याख्यान केसरी" की उपाधि भी मिल गई थी, जिस के कारण मेरी राजनैतिक क्षेत्र से लेकर भक्ति क्षेत्र तक पहुँच हुई। यदि श्री किशोरी जी की इतनी अनुकम्पा न होती तो मैं सच कहता हूँ कि मैं कदापि स्वयं इस योग्य न था, और न ही किसी साधना द्वारा मेरी इतनी ख्याति हो सकती थी। मैं तो निरन्तर उन्हीं की जय जयकार मनाता हुआ उन्हीं के

वल भरोसे पर निश्चिन्त हो आनन्द पूर्वक विचरा करता हूँ।

यों तो भगवान की अपने समस्त जीवों पर निरन्तर कृपा बनी ही रहती है वह किसी भी प्राणी का कभी अनिष्ट नहीं चाहते, परन्तु मैं तो अपने को विशेष बड़भागी मानता हुआ उनका आजन्म आभारी और ऋणी भी हूँ, मैं अनेकों जन्मों में भी उनके उपकारों से उऋण हो नहीं सकता।

आप में एक विशेष गुण यह भी था कि आप कभी किसी भी वस्तु की किसी प्रेमी से याचना न करती थीं, यदि कोई प्रेमी आप को सेवा के निमित्त बाध्य करता तो आप उनसे सर्व प्रथम यह प्रश्न किया करती थीं, कि आप हमको बालक मानते हैं या किशोरी जी ? यदि किशोरी जी मानते हैं, तो बताओ किशोरी जी के दरबार में किस चीज की कमी है, जो आपसे याचना करैं। ऐसी भावना वालों को तो हम से ही याचना करनी चाहिये। बस इतना सुनते ही प्रेमी लोग निरुत्तर होकर लज्जित हो जाया करते थे।

माया के मोहक प्रलोभन को इस प्रकार ठुकरा देना क्या कोई साधारण बात है ? और सच भी है।

"बिन माँगे मोती मिलैं, माँगे मिले न भीख"।

बिना माँगे ही जब कि सरकारी दरबार में अनेक प्रकार की वस्तुयें भक्तों द्वारा प्रतिदिन पहुँच जाया करती थीं, तब उनको माँगने की आवश्यकता ही क्या थी। और जो कोई परमार्थ पथ पर अग्रसर होते हैं, उनकी दृष्टि लक्ष्मी के बिलासों पर कभी भी नहीं अटकती। इस के साथ२ बालकपने में भी जैसी जिसकी आदत पड़ जाती है वह अन्त तक नहीं छूटती, श्री सिद्धकिशोरी जी के बालकपन से ही उदारता

दयालुता एवं परोपकार करना उनके जीवन का एक व्रत ही था। तब वह किसी से किस चीज की याचना करतीं।

(५५) महात्मा मस्तराम जी का कथन है कि जिस समय श्री विहौती भवन समाज ने श्री जनकपुर धाम (मिथिला जी) की चौरासी कोसी परिक्रमा की थी, उस समय समाज के साथ कई वैष्णव साधू थे, किन्तु मैं केवल एक ही सन्यासी साधू सरकारी सेवा में था। परिक्रमा होरही थी। एक दिन कुछ वैष्णव साधुओं से मेरा व्यक्तिगत तकरार हो गया, तो उन्होंने इसका बदला चुकाने के लये श्री किशोरी जी को बाध्य किया कि या तो मस्तराम को अपने समाज से पृथक कर दें। या वह सन्यास धर्म को छोड़ कर कंठी तिलक धारण करके वैष्णवी दीक्षा को ग्रहण करलें। तब श्री सिद्धकिशोरी जी ने उत्तर दिया कि परिक्रमा पूरी होने पर ही इसका न्याय होगा, जब परिक्रमा पूरी हो गई तो किशोरी जी ने सब वैष्णवों को एकत्रित करके एक दरबार किया और सब से पूँछा कि आप लोग हमको बालक मानते हैं। या किशोरी जी ? यदि बालक मानते हैं तब तो मैं न्याय कर ही नहीं सकती। श्री महराज जी के पास जाकर जो कुछ कहना है उनसे कहो। और यदि किशोरी जी मानते हैं तो तुम सबको वचनबद्ध होकर पहिले यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि मैं जो कुछ भी न्याय करूँगी वह सब को मान्य होगा। आपके मुख वाक्य सुनते ही सब ने मुक्त कंठ से कहा कि हम तो आपको साक्षात् श्री किशोरी जी ही मानते हैं। आप जो कुछ भी न्याय करेंगी। वह हम सब प्रसन्नता पूर्वक बिना किसी आना-कानी के मानने को तैयार हैं। हमारा तो सर्वस्व तन, मन, धन केवल आपकी अज्ञा पर निछावर है ! समस्त वैष्णवों को वचनबद्ध करके आपने ऐसा सुन्दर न्याय किया कि जिसको देख सुन कर समाज के साथ २ परिक्रमा करने

वाले अन्य महात्माओं के अतिरिक्त स्पीकर साहब, डिप्टी साहब, राय साहब, दीवान रुद्रदत्त सिंह जी, श्रीमान मुंसिफ साहब, डाक्टर साहब एवं श्री दारोगा जी इत्यादि भी चकित एवं मुग्ध हो गये।

सर्व प्रथम आपने मस्तराम को अपने समीप बुला कर आज्ञा दी कि तुमको सन्यासी भेष त्याग कर वैष्णवी भेष धारण करते हुये वैष्णवी दीक्षा भी गृहण करनी होगी। फिर वैष्णवों से कहा कि आप सब लोगों को अपनी २ कंठी माला यज्ञोपवींत के अलावा शिखा को भी उतार कर श्री दूधमती गंगा के अर्पण करते हुये मस्तक का चन्दन, तिलक भी गंगा जी में धो देना होगा, उसके बाद कापाय वस्त्र पहन कर सन्यास को गृहण करना होगा। इतना सुनते ही मस्तराम जी ने प्रसन्नचित्त से आप के चरणो को पकड़ कर निवेदन किया, सरकार ! मेरा समस्त शरीर आप के ही अर्पण है, आप स्वयं अपने कर कमलों द्वारा जो भी चाहें करें, मुझे कोई आपत्ति नहीं है, उधर दूसरी पार्टी वाले साधुओं के मुख फीके पड़ गये, गर्दनें नीचे झुक गई और सब मौनी बन कर बैठ गये, किसी के मुख से हाँ या न कुछ भी नहीं निकला, श्री किशोरी जी के बारम्बार पूँछने पर वह कहने लगे कि सरकार ! श्री गुरू महाराज की दी हुई कंठी तिलक को त्याग कर हम सन्यास कैसे गृहण करें, इस भारी असमञ्जस के कारण शोकोसोच सागर में गोते खा रहे हैं, अपने कल्याण का कोई मार्ग हमको नहीं सूझता, इसलिये आप हमारे अपराधों को क्षमा करती हुई हमारी रक्षा करें, बस यही करबद्ध प्रार्थना है। तब श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि न तो आप लोगों को पहिले मस्तराम से विरोध करते समय सूझ आई और न ही हमसे प्रतिज्ञा करते समय कुछ सोचा विचारा।

यदि आप सबको मेरा समझौता स्वीकार नहीं था, तो

पहिले ही मना कर देना था। झूँठी प्रतिज्ञा करके अब झूँठा आडम्बर क्यों रच रहे हैं। जिस समय आप लोगों ने मस्त-राम को समाज से पृथक करने अथवा उसको वैष्णव बनाने का प्रस्ताव मेरे सामने रखा था, तो क्या उस समय आप सब की बुद्धि जंगल में घास चरने चली गई थी। क्या आप सब लोग यह नहीं जानते थे कि मस्तराम को भी तो उनके गुरू जी महाराज ने हीं सन्यास धर्म की दीक्षा दी है। तब इनको कंठी, तिलक धारन कराकर वैष्णवी दीक्षा कैसे दी जा सकैगी ? देखिये ! आप सब की प्रार्थनानुसार यदि मुझे एक सन्यासी को वैष्णव बनाने का अधिकार है तो आप सब की प्रतिज्ञानुसार मैं आप सब वैष्णवों को सन्यासी भी बना सकती हूँ। मस्तराम की प्रतिज्ञा कितनी सच्ची और दृढ़ है कि वह तो हमारी आज्ञानुसार श्री वैष्णवी दीक्षा गृहण करने को तैयार हैं। और आप लोग प्रतिज्ञा करके भी मेरी आज्ञा का उल्लंघन करते हुये टाल मटोल कर रहे हैं। इसका कारण केवल इतना ही है, कि मस्तराम ने तो हमको हृदय से श्री किशोरी जी मान लिया है और आप सब ने केवल ऊपर से तो हमें श्री किशोरी जी मान रखा है। परन्तु हृदय से बालक मानते हैं।हमें जब न्यायाधीश बनाया गया है, तो हम अन्याय कैसे करें। अब यदि सचमुच आप लोग सोच सागर में गोते खाते २ घबड़ा गये हों तो परस्पर मिलजुल कर सब लोग हमारी सेवा में रहैं। अगर मेरा यह अन्तिम न्याय भी स्वीकार न हो, तो मस्तराम को समाज से पृथक कराने वाले स्वयं इस समाज से शीघ्र पृथक हो जायँ। इतना सुनते ही सब लज्जित हुये और श्री किशोरी जी के चरणों में गिरते हुये अपने अपराधों की क्षमा मांगी और मस्तराम जी को सबने वारी २ गले लगाया, और परस्पर प्रेम पूर्वक रहने को वचन देकर अपनी

२ सेवा में लग गये, मानो कोई झगड़ा था ही नहीं। न्याया-धीश श्री सिद्धकिशोरी जी के जयजयकार के नारे लगा २ कर सब महात्मा श्री जुगुल नाम का कीर्तन करने लगे।

सज्जनो! न्याय हो तो ऐसा हो, न्यायाधीश के लिये तो न्याय प्रियता इतनी होनी चाहिये कि शत्रु की भी प्रशंसा करे, एवं मित्र की बुरी बात की भी वकालत न करे। श्री सिद्धकिशोरी जी ने ऐसा ही किया, किसी का भी पक्षपात न करते हुये ऐसा सुन्दर न्याय किया कि शत्रु मित्र सब को उनकी प्रशंसा करने में कोई आपति नहीं हो सकती।

(५६) श्री मस्तराम जी का कथन है कि श्री जनकपुर धाम की चौरासी कोसी परिक्रमा समाप्त होने के पश्चात् इस समाज को माणीपुर ग्राम (श्री सिद्धकिशोरी जी की जन्म भूमि) निमंत्रण में जाना पड़ा, जहाँ कई दिनों तक रह कर श्री विवाह-कलेवा उत्सव बड़ी धूम धाम से पूर्ण हुआ, इस समय सरकारी सेवा में दस वैष्णव और मैं अकेला एक सन्यासी (मस्तराम) भी था। एक दिन श्री किशोरी जी ने सब प्रेमियों की प्रेमपरी-क्षार्थ एक अनोखे चरित्र की रचना की, शाम के पांच बजे अपने समाज के समस्त प्रेमियों के सहित अपने ही गन्ने के खेत में से एक गन्ना तोड़ कर कुँवे की मुड़ेरी पर बैठ उसको चूसने लगीं, सब प्रेमी खड़े २ सरकारी दर्शन कर रहे थे, आप ने उस आधे चूसे हुये गन्ने को जान बूझ कर ही कुँवे में गिरा दिया, और लगीं रोने। कि हाय २ हमारा गन्ना कूप में गिर पड़ा है, कोई प्रेमी इसको शीघ्र निकाल दे। सब प्रेमियों ने कहा, सरकार गन्ने की कौन कमी है, हजारों गन्ने तो इसी खेत में लगे हैं, इससे भी अच्छा गन्ना (ऊख) हम अभी लाते हैं। आप गन्ने के लिये रुदन क्यों कर रही हैं। परन्तु आप

का हठ था कि नहीं हम दूसरा गन्ना नहीं लेंगी, वही कुँवे में गिरा हुआ गन्ना निकाल दो।

सज्जनो! कुवाँ कुछ गहरा था। जब कि रस्सा भी वहाँ रखा था, परन्तु किसी की हिम्मत उस कुँवां में उतरने की न पड़ी। उसी समय मस्तराम जी भी स्नान करके वहाँ आ पहुँचे। समाचार मिलने पर जब श्री सिद्धकिशोरी जी का रोना उनसे सहन न हुआ तो आपने आव देखा न ताव तुरन्त छलाङ्ग मार कर कुँवें में कूद ही तो पड़े। उनके कूदते ही इधर से तुरन्त श्री किशोरी जी ने रस्सा कुँवें में लटकवा दिया, जिसके सहारे वह प्रसादी गन्ना लेकर ऊपर चढ़ आये। आप ने मस्तराम को शीघ्र गले से लगा लिया और वही गन्ना प्रसादी रूप में देकर और अधिक प्रसन्न होती हुई उनको आशीर्वाद भी दिया कि तुम्हारी वाक्य-शक्ति के कारण साधुसमाज तथा गृहस्थ समाज में भी भारी प्रतिष्ठा होगी, उसी समय से मुझ पर श्री सिद्ध किशोरी जी की अनूपम कृपा हो ही तो गई। सज्जनो! यह है श्री सिद्धकिशोरी जी की प्रेम परीक्षा लीला।

(५७) श्री मस्तराम जी का कथन है कि वैसाख ज्येष्ठ के दिनों में मैं प्रति दिन श्री जुगुल सरकार के निमित्त केवल बादाम, मिश्री की ठंडाई दो गिलास तैयार करके उनको पिला दिया करता था, एक दिन ठंडाई सेवन करते समय दो बाहरी प्रेमी भी आ पहुँचे, और श्री जुगुल सरकार से प्रसादी रूप में थोड़ी सी ठंडाई की याचना की तो जुगुल सरकार ने तुरन्त आधा २ गिलास ठंडाई प्रसादी रूप में उनको दे दिया, खैर, दो तीन दिन की तो कोई बात ही न थी, किन्तु यह दोनों प्रेमी प्रति दिन ठंडाई के ही समय आते और आधा २ गिलास प्रसादी ठंडाई पी कर चल देते, मैं तो केवल श्री जुगुल सरकार

के ही निमित्त इतना परिश्रम करके ठंडाई बनाता था, जब वह दोनों प्रेमी प्रति दिन आने लगे, तो एक दिन मुझे मन में कुछ दुःख तो ज़रूर हुआ, यद्यपि मैंने किसी से कुछ कहा नहीं, परन्तु अपने सेवकों के मन की गति को जानने वाली श्री सिद्धकिशोरी जी ने मेरे मन की गति को भी जान लिया, तभी तो एक दिन ऐसी विचित्र लीला रची, कि वह दोनों प्रेमी छक गये, घटना इस प्रकार है। एक दिन श्री किशोरी जी ने मुझे आदेश किया कि आजठंडाई नहीं बनाना, कल देखा जायगा। उस दिन ठंडाई नहीं बनी, परन्तु उन दोनों प्रेमियों को यह क्या मालुम था कि आज ठंडाई नहीं बनी, वह तो अपने समय पर आ ही डटे। देखा कि अभी ठंडाई नहीं बनी, वह प्रसादी ठंडाई की प्रतीक्षा कर ही रहे थे, कि श्री किशोरी जी ने उन दोनों प्रेमियों द्वारा नीम की कुछ कोमल २ पत्तियाँ मँगवाईं, और उनको आज्ञा दी कि इसको पीस छान कर दो गिलास ठंडाई शीघ्र तैयार कर दो, नीम की ठंडाई तैयार होने पर श्री जुगुल सरकार ने केवल आधा २ घूँट उसमें से स्वयं पान किया, बाकी सब प्रसादी उन दोनों प्रेमियों को दे दी, सरकारी प्रसादी का निरादर न हो! इसलिये किसी न किसी तरह वह दोनों प्रेमी आँख मूँद कर उस कड़वी ठंडाई को पी तो गये, परन्तु कल से फिर कभी भी उन दोनों का शुभ दर्शन ठंडाई के समय नहीं हुआ, वह डर गये ऐसा नहीं कि फिर भी कभी नीम की ठंडाई पीनी पड़े। प्रभु के खेल बड़े विचित्र और निराले होते हैं, उन की लीला भी बड़ी अनोखी है, न जाने वह कब क्या और क्यों करते थे ? इसी प्रकार उनके कई विनोद नित्य प्रति हुआ ही करते थे कहाँ तक लिखा जाय।

(५८) श्री लक्ष्मीप्रसाद जी वर्मा क्लर्क दफ्तर सुप्रिन्टिन्डेन्ट आर० एम० एस० पटना से आप पत्र द्वारा श्री सिद्ध

किशोरी जी के दो चरित्र लिखते हैं। फाल्गुन के महीने में चन्द्र-गृहण के अवसर पर जब कि श्री सिद्धकिशोरी जी भी श्री महाराज जी के साथ हमारे ग्राम में थीं, गृहण में श्री महाराज जी, श्री राम जी तथा श्री सिद्धकिशोरी जी एवं अन्य लोगों के साथ २ हम लोग भी श्री नारायणी गंगा (गण्डकी) में स्नान करने गये थे, स्नान होने के बाद वहाँ रामायण गान होने लगा, इधर उधर के घाटों पर जो दूसरे गाँव के कुछ लोग स्नान कर रहे थे वह भी रामायण गान सुनने के लिये आ गये। करीब पचास ६० आदमियों की भीड़ थी, अन्त मे श्री महाराज जी ने एक पुड़िया किशमिश की जेब से निकाल कर श्री किशोरी जी को दी और सब लोगों में प्रसाद बाँट देने के लिये कहा, मैंने देखा कि उस पुड़िया में मुश्किल से करीब बीस पचीस किशमिश थीं, मगर जितने भी वहाँ आदमी थे सब को प्रसादी मिल गई, और अन्त में करीब दस बारह किशमिश बच भी रहीं, इस घटना को देख कर हम लोग सब अवाक से रह गये।

(५९) दूसरी घटना ! श्री लक्ष्मी प्रसाद जी का कथन है कि सन् १९३८ के फरवरी महीने की बात है कि मैं उस समय मैट्रिक (Matric) परीक्षा की तैयारी में लगा था, यों तो मुझे श्री रामायण कीर्तन के प्रति रुचि बहुत जोरों की थी, मगर जब मैं दसवीं क्लास में आया तो मेरी रुचि और भी बढ़ी एवं अध्ययन के बजाय मेरा मन इधर अधिक खिचने लगा, हमारे ग्राम के पूज्य बाबू श्री रामदेनी सिंह जी की कृपा से जो, कि अभी डी० आई० जी पुलिस मुजफ्फर पुर के बड़े बाबू हैं। पूज्य श्री १०८ श्री महाराज जी, श्री जुगुल सरकार के साथ जिनमें श्री किशोरी जी का स्वरूप श्री सिद्ध किशोरी जी थीं, हमारे ग्राम विन्द्रावन में पधारे और नित्य झाँकियों द्वारा नगर वासियों को कृतार्थ करने लगे, मैं उस समय श्री महाराज जी का शिष्य नहीं था, मगर न

जाने मेरा मन श्री सिद्धकिशोरी जी की तरफ क्यों खिंचने लगा ? जब तक सरकार वहाँ रहे, तब तक मुझे खाना-पीना, पढ़ना-लिखना करीब करीब सब भूल गया, आठों पहर श्री जुगुल सरकार के दर्शनों के लिये मेरा मन लालायित रहने लगा, जब सरकार पन्द्रह दिन तक आनन्द की वर्षा करते हुये हम सब को कृत कृत्य करने के बाद हमारे ग्राम से विदा हुये, तो और लोगो की तरह मैं भी श्री महाराज जी की चरण रज लेने लगा, उसी समय रामदैनी बाबू जी ने श्री महाराज जी से कहा ! कि इस लड़के ने रात दिन सरकारी सेवा में रह कर लिखना पढ़ना भी सब बन्द कर दिया है, कल इसको परीक्षा में जाना है, आप आशीर्वाद दें कि पास हो जाय, तब महाराजजी ने मुझे कहा कि तुम जाकर श्री सिद्ध किशोरी जी के चरण छुओ, मैं जब उनके चरण छूने लगा, तब श्री महाराज जी ने भी श्री सिद्धकिशोरी जी से प्रार्थना कर दी, कि सरकार इसको आशीर्वाद दिया जावै। श्री सिद्धकिशोरी जी ने ज्योंही मुझे आशीर्वाद देकर मेरी पीठ पर हाथ फेरा तो तुरन्त मुझे यही मालूम पड़ा कि मैं निश्चय ही पास हो जाऊँगा, इसी विश्वास के साथ मैं मुजफ्फरपुर यूनीवर्सिटी परीक्षा देने के लिये चल पड़ा, परसों से इम्तिहान आरंभ होना था, ऐसा संयोग हुआ कि मैं अपनी सीट भी मुजफ्फरपुर जिला स्कूल में खोजने के निमित्त न जा सका। परीक्षा के प्रथम दिन मुझे डेरे पर कुछ देर भी हो गई और मैं जिला स्कूल में कुछ विलम्ब से पहुँचा, बाहर के लोगों ने मुझे देखकर कहा, कि तुम जल्दी जाओ, परीक्षा आरम्भ हो गई है। यह सुनकर मुझे बड़ी घबड़ाहट हुई, तब श्री सिद्धकिशोरी जी की याद और ध्यान करने लगा, इस दशा में दौड़ते हुये स्कूल के मध्य में जो बड़ा हाल था, मैं उसमें पहुँचा, उसमें पाँच छह गार्ड थे, परीक्षा देर से आरम्भ हो चुकी थी, मुझे घबराया हुआ देख

कर एक गार्ड ने पूँछा क्या है ? मैंने उत्तर दिया कि परीक्षा देने आया हूं और मुझे अपनी सीट भी मालूम नहीं है, मेरा ऐड मीशन कार्ड देख कर उन्होंने कहा कि आप की सीट दो तल्ले पर है, और रास्ता भी बतला दिया, अब मैं दौड़ा २ उस कमरे में पहुँचा तो देखा कि गार्ड हमारा प्रश्न पत्र एवं प्रश्नोत्तर वापस लौटाने के लिये बाहर निकल रहे थे, उनके पूँछने पर भी मैंने घबड़ाते हुये यही कहा कि परिक्षा देने आया हूँ, देरी हो गई है (और हृदय से उस समय श्री सिद्धकिशोरी जी के चरणों का ध्यान करने लगा) तब प्रेम से उन्होंने मुझे धैर्य्य दिया और कहा घबड़ाओ मत ! शान्त हो जाओ, करीब पन्द्रह मिनट के बाद जब मैं शान्त हुआ तो उन्होंने मुझे परचा दिया। सज्जनो ! श्री सिद्धकिशोरी जी की असीम अनुकम्पा से ही मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ, और सेकंड डिवीजन (द्वितिय श्रेणी) में निकला।

(६०) पटना श्री किशोरी बाग से श्री जगत बाबू ने श्री सिद्ध किशोरी जी के विषय में दो तीन घटनायें पत्र द्वारा लिखकर भेजी हैं कि सन् १९३५ में नैपाल पहाड़ के एक महात्मा जी आये और उन्होंने मुझ से कहा कि तुम्हें थोड़े ही दिनों में श्री राम जी का शुभ दर्शन होगा, उस साल आश्विन मास में श्री राम-देनी बाबू के यहाँ श्री पुजारी जी महाराज बिहोती भवन (मेरे गुरुदेव) श्री जुगुल सरकार के सहित पधारे। तब मेरे मित्र रामबिलास बाबू मुझे यह कह कर ले गये। चलो मैं तुमको श्री रामजी का दर्शन कराऊँगा। मैंने वहाँ जाकर श्री जुगुल सरकार का ज्योनार के समय में दर्शन किया। उसी समय मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी (मैया के) कई प्रकार के दर्शन किये। उसके बाद जब मैंने दण्डवत किया तो आशीर्वाद मिलते ही मुझे पूर्ण शान्ति मिली, और तभी से मुझे यह अनुभव होने

लगा कि मुझे जीवन का फल मिल गया। तब से मेरी यही भावना है कि श्री किशोरी जी मेरी मैया हैं।

(६१) दूसरी घटना इस प्रकार है कि एक समय श्री सिद्ध किशोरी जी (मैया) मेरी संसारिक जन्मभूमि से रफीपुर गईं। मुझे भी अपने साथ ले लिया, वहाँ झाँकी हुई तो रात्रि को श्री किशोरी जी झांकी में ऊँघने की लीला करने लगीं। और सवेरे भी मुझसे एक बात नहीं बोलीं, मुझे इसका दुःख हुआ मैं श्री गुरू महाराज (श्री पुजारी जी) से आशीर्वाद लेकर रोता हुआ चल दिया। रास्ते में मैं अपने भाग्य को कोसता और कुढ़ता चला जा रहा था, भूख प्यास से व्याकुल होकर थक भी गया था, परन्तु मन में यह प्रण था कि जब मैया (श्री सिद्धकिशोरी जी) खिलायेंगी तभी खाऊँगा। और पियूँगा भी—

उसी समय एक आदमी ने आकर कहा कि तुम बहुत प्यासे हो, मैं जल भर कर लाया हूँ, वह बतासे और जल लाया और मुझे खिला पिला के न जाने कहाँ चल दिया, तब मार्ग में चलते समय मुझे यही भान हो रहा था कि मैया (श्री सिद्ध किशोरी जी) मुझे मना रही है, और मेरे साथ २ चल रही है और मैं उनसे रुठता ही जा रहा हूँ। उसी रात मैं पटना आ गया। खाना पीना सब छोड़ रखा था। यहाँ से दूसरे दिन पत्र पहुँचा कि सिद्धकिशोरी जी कुछ पूजा स्वीकार नहीं कर रही हैं पूजा का सामान तितर बितर कर देती हैं। बहुत आग्रह करने पर कहती हैं कि वहाँ (जगत बाबू) भूखा प्यासा पटना में तड़प रहा है, इसलिये मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता अतः तुम खूब खाओ पियो और लिख भेजो कि मैं खूब प्रसन्न होकर खाने पीने लगा, और दस्ती पत्र भी लिख भेजा कि मैं

खूब प्रसन्न होकर खाता पीता हूँ तो उसके बाद मैया ने स्वयं पत्र लिख कर मुझे श्री अयोध्या जी में बुलाया। तभी से सब सन्त समाज में यह बात फैल गई, कि यह जगत बाबू श्री सिद्ध किशोरी जी का प्रिय दुलरुवा है। मामा जी (भैया लक्ष्मी निधि जी) ऐसी अनेकों घटनायें हैं। कहाँ तक लिखूँ। भवदीय श्री माँ जी का दुलरुवा "जगत"।

(६२) प्रिय सज्जनो! श्री जगत बाबू वास्तव में श्री सिद्ध किशोरी जी के अनन्य सच्चे भक्त (दुलरुवा) हैं, आप इस समय पटना सेक्रेटेरियेट में मुलाज़िम हैं। आप का श्री किशोरी जी के प्रति प्रेम भाव, श्रद्धा एवं विश्वास अकथनीय है। तब से आज तक आप उनको माता की ही भावना से मान रहे हैं। इसलिये उन्हीं की असीम कृपा अब भी आप की समस्त मनोकामनाओं को बराबर पूर्ण कर रही है। आप यदि उनसे धन की याचना करते तो आज आप अवश्य करोड़पति होते। किन्तु आप की भावना है कि भगवान को ही मांगें। धन जैसी नाशवान तुच्छ वस्तु को क्या मांगना?

आप ने "श्री सिद्धकिशोरीजी" की स्मृति में अपनी फुलवारी का शुभ नाम श्री किशोरी बाग रक्खा है। उसी बाग में ही आप का शुभ निवास स्थान (क्वार्टर) भी है। आप के भजन पूजन का कमरा पृथक है। उसमें आपने श्री सिद्धकिशोरी जी के कई प्रकार के चित्रपट सिंहासन पर पधरा रक्खे हैं। आप प्रतिदिन सन्ध्या, सबेरे उन चित्रों की विधिवत् सेवा पूजा करके भोग राग भी प्रेम पूर्वक अपने हाथों से लगाया करते हैं। आप के उसी किशोरी बाग एवं पूजाभवन में दो तीन महात्माओं को श्री सिद्धकिशोरी जी का अपूर्व शुभ दर्शन भी प्राप्त हो चुका है, अभी ? सन १६५१ माघ मास में जब कि श्री

विहौती भवन के आठों सरकार मय परिकर आप के मकान पर पहुँचे थे तो उस समय मैं (भैया लक्ष्मीनिधि) भी सरकारी सेवा में था, आप के पूजा भवन में श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट का दर्शन करते मात्र ही आप के गुरुदेव (पुजारी श्री रामशंकर शरण जी महाराज) कुछ देर के लिये आवेश में आकर वेसुध हो गये, और उनकी अश्रुधारा भी चलने लगी थी। उनके पश्चात् मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी के उसी चित्रपट का दर्शन किया तो मेरी भी वही दशा हो गई। और मैं भी वेहोश होकर लेट गया था, जब उस समय श्री उर्मिला जी के स्वरूप ने अङ्क भर कर उठाया और कहा कि देखो भैया जी! मैं सिद्ध किशोरी आगई। चलो भोजन कर लो" जब मैंने आँख खोली तो क्या देखता हूँ कि श्री उर्मिला जी के ही स्वरूप में श्री सिद्धकिशोरी जी अपनी झाँकी दिखला कर छिप गई, उनका यह चमत्कार मुझे आप के पूजा भवन में ही सब स्वरूपों के एवं आप के सामने ही तो हुआ था (लेखक)

(६३) अधिकारी मौनी श्री हरिसेवक दास जी देवरही कुटी देवरिया से श्री सिद्धकिशोरी जी के समय की दो तीन घटनायें पत्र द्वारा इस प्रकार लिखते हैं। कि एक समय श्री विहौती भवन के श्री जुगुल सरकार का देवरही कुटी में श्री विवाह-कलेवा उत्सव हुआ। चौथारी उत्सव के उपलक्ष में जब कि श्री सिद्ध किशोरी जी दुरगा पूजन कर रही थीं, उस समय श्री दुरगा जी की मन्दिर मूर्ति के हाथ का झटका ऐसा लगा जिससे कुछ पुष्प भी विखर गये, उस समय वहाँ भटवां ग्राम निवासी श्री मंगल प्रसाद जी त्रिपाठी एवं बहुत से भक्त भी उपस्थित थे। श्री सिद्ध किशोरी जी में कोई ऐसा चुम्बक अथवा अकर्षण था कि उनके दर्शन मात्र से ही सब लोगों के समस्त शंसय छिन्न भिन्न हो जाया करते थे! और उनके मन में जो इच्छा हुआ करती थी,

वह अवश्य पूरी हो जाया करती थी। कभी निष्फल नहीं होने पाती थी।

(६४) श्री मौनी जी का कथन है कि एक समय जब कि हम लोग श्री चित्रकूट श्री जानकी कुण्ड पर थे, वहाँ भी कई दिनों तक विवाह कलेवा उत्सव एवं झाँकियाँ हुईं, एक दिन मुझे श्री किशोरी जी की आज्ञा हुई कि आप यहाँ किस लिये आये हैं? जाइये आज श्री हनुमान धारा आदि का दर्शन कर आइये। परन्तु मेरी इच्छा सरकार को छोड़कर कहीं भी अकेले जाने की नहीं थी। परतु दोबारा श्री किशोरी जी की मेरे लिये आज्ञा हुई, कि जाओ, दर्शन कर आवो, और लौटते समय हमारे भोग के लिये वहाँ के समीपी ग्राम से कुछ खोवा भी मोल लेते आना सज्जनो! मैं सेवा का तो नाम सुनते ही अति प्रसन्न हुआ, और दो बजे दिन के श्री जानकीकुण्ड से चल दिया, देवांगनां आदि में रात्रि हो गई, व्याघ्र आदि का सम्पर्क भी हुआ, परन्तु उसने हमको सताया नहीं, ठीक उसी समय इधर श्री सिद्धकिशोरी जी झाँकी स्वरूप में हँस २ कर श्री राम जी एवं प्रेमियों से कह रही थीं, कि मौनी जी इस समय वन विहार में हैं अर्थात् वन में व्याघ्र से खेल कर रहे हैं, मैं रात्रि को वहाँ से ग्यारह बजे वापस लौटा तो आते ही श्री किशोरी जी ने कहा कि क्या वन विहार कर आये हो। व्याघ्र देवता अच्छे तो हैं? पाठकों! श्री सिद्ध किशोरी जी के वर्तमान समय में उनकी सभी कीर्तियाँ अलौकिक थीं। कहाँ तक लिखी जायें।

(६५) श्री अवध मणिपर्वत निवासी बाबा रामचन्द्रदास जी (स्वयं पाकी) स्थान श्री पौहारी जी महाराज का कथन है कि मौनी हरि सेवक दास जी श्री पौहारी जी महाराज के कृपा पात्र हैं टहलते टहलते एक दिन वह आकस्मात बिहौती भवन में श्री जुगुल सरकार के दर्शनार्थ चले गये, दण्डवत् करते करते

ही श्री सिद्ध किशोरी जी ने इनको एक बीड़ा पान अपने कर कमलों द्वारा दिया, पान का बीड़ा लेते ही मौनी जी पर न जाने कौन सा जादू चढ़ बैठा, वह तो सरकार पर लट्टू हो गये, उनको खान पान और स्थान तक भूल गया, और वहीं निरन्तर सरकार की सेवा में रहने लग गये। स्वयंपाकी जी का कहना है कि लीला स्वरूपों के प्रति पहिले मेरी न तो श्रद्धा ही थी और न ही प्रेम था, इसलिये मैंने और दूसरे साधुओं ने भी मौनी जी को खूब समझाया-बुझाया कि गृहस्त बालकों की सेवा से क्या लाभ ? तुम तो विरक्त साधू हो इस लिये स्थान में चल कर भगवान एवं अपने श्री गुरू महाराज की सेवा पूजा करो, मगर मौनी जी नहीं माने, फिर भी कई बार उनको समझाया, उनकी भली भाँति हँसी भी उड़ाई कि विरक्त साधू होकर गृहस्थ लड़कों का जूठन खाते और उनकी सेवा करते हो, परन्तु तो भी वह टस से मस नहीं हुये, और अपनी सेवा पर डटे रहे, स्वयं पाकी जी का कहना है कि भक्तों के हृदय की जाननहारी श्री सिद्ध किशोरी जी को मेरे भी अहंकार एवं लीला स्वरूपों के प्रति अश्रद्धा को भङ्ग करना था, इसलिये मेरे लिये भी एक अनोखी लीला रची, एक दिन मुझे किसी साधू द्वारा अपने पास बुलवाया, मैंने सोचा शायद हमको बुलाकर मौनी जी को हमें सौपने का विचार हुआ है, इसलिये मैं तुरन्त उसी साधू के साथ साथ श्री सिद्ध किशोरी जी के पास चला आया, मुझे देखते ही उन्होंने मेरे हाथ में केवल दो इलायची दे दीं, फिर न जाने उन इलायचियों में कोई आकर्षण था, कोई टोना जादू, अथवा वशीकरण ही था, या श्री किशोरी जी के स्पर्श मात्र में ही कोई विजली के करन्ट का सा असर इनमें पहुँच गया था, मैं कुछ कह नहीं सकता, मेरी यह दशा हुई कि मैं उस दिन से प्रति दिन बिना बुलाये उनके दर्शनार्थ विहौती भवन में आने जाने लगा।

इसी प्रकार दो चार दिन के बाद उनसे एक क्षण भी पृथक होने को जी नहीं चाहता था, इसलिये उनके समाज भर की रसोई बनाकर उनको भोजन कराने की सेवा ही अपने मत्थे ले ली।

और भी जो कुछ सेवा मिल जाती तो उसको भी कर देता, इसी बहाने से दर्शन करके दिन बिताने लगा। जब उस समाज को श्री चित्रकूट जाने का निमंत्रण आया तो श्री सिद्धकिशोरी जी का विछोह मुझसे सहन न हो सका; चित्त बहुत दुखी और व्याकुल होने लगा; इसलिये मैं भी उनके साथ साथ चित्रकूट चला गया! सज्जनो मैं तो प्रतिदिन श्री मौनी जी को समझाता, उपदेश देता था कि लड़कों की सेवा छोड़ो उनका जूठन खाना बन्द करो; स्थान में चलकर अपना कार्य देखो; परन्तु मुझे क्या मालूम था कि मैं स्वयं भी श्री जुगुल सरकार की प्रेम पाश में ऐसा फंसूँगा कि निकलना भी कठिन हो जायगा।

लीलाधारी भगवान की लीला बड़ी विचित्र है, मैं समझ गया कि मेरे अभिमान को चूर करने के निमित्त ही सरकार ने यह लीला रची है; अब इन्हीं की सेवा सुश्रूषा से मेरा कल्याण होगा; इसलिये कुछ दिन साथ में रहकर सेवा कर लूँ, श्री चित्रकूट पहुँचते ही श्री जानकीकुण्ड पर कई दिनों तक बड़े समारोह के साथ विवाह-कलेवा उत्सव होता रहा; विवाह उत्सव समाप्त होने के पश्चात् समाज को पटना के विवाह उत्सव के लिये निमंत्रण में जाना था; प्रस्थान के समय हम लोग जल्दी जल्दी तैयारी करने लगे; तो श्री किशोरी जी ने कहा कि इतनी जल्दी क्यों कर रहे हो; धीरे धीरे अपना कार्य करो; कारण कि हम लोग आज गाड़ी पर सवार न हो सकेंगे। जब हम लोग गाड़ी के टाइम से एक घंटा पहिले कर्वी स्टेशन पर पहुँच गये! तब पूछने पर श्री किशोरी जी ने कहा कि हम लोग तो गाड़ी से पहले पहुँच गये, इससे क्या होता है, सामान की मोटर लारी रास्ते में

बिगड़ी पड़ी है, वह दो घंटा से पहिले तैयार न होगी; तब बिना सामान के हम लोग कैसे जा सकेंगे। इसलिये आज रात को कर्वी के धर्मशाला में ही निवास करना पड़ेगा, सो ठीक हुआ भी ऐसा ही, जिस लारी द्वारा हमारा सामान चित्रकूट से कर्वी स्टेशन आरहा था, उस लारी का एक पहिया रास्ते में फट गया उसके सुधारने में दो घंटा देर हो गई इसलिये हम लोग उस गाड़ी से नहीं जा सके, एवं कर्वी की प्रेमी जनता के आग्रह करने पर उस रात कर्वी स्टेशन की धर्मशाला में झांकी भी हुई।

कर्वी से रवाना होकर हम लोग इलाहाबाद पहुँचे—एक रात इलाहाबाद रह कर फिर पटना चले गये; तब मैं भी समाज के साथ २ पटना चला गया। वहां से वापस आने के लिये मेरा चित्त बहुत दुखी हुआ, इसलिये बहुत दिनों तक इनके साथ २ परदेश में भ्रमण करने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज कल समाज में आठ स्वरूप रहते हैं, परन्तु उस समय केवल श्री जुगुल सरकार ही रहते थे और प्रतिदिन अष्टयाम विधि भी होती थी। गरीबों, अनाथों एवं दुखियों पर तो श्री सिद्ध किशोरी जी की विशेष कृपा एवं अपार दया रहा करती थी। उनके दरबार से कोई याचक कभी खाली हाथ वापस जाते मैंने नहीं देखा। जो कोई जिस चीज की भी याचना करता वह अवश्य श्री सिद्धकिशोरी जी के द्वारा उसको मिल जाती। श्री पुजारी जी ने उनका इस प्रकार का दयालु स्वभाव देख सुनकर समस्त भंडार एवं खजाना उन्हीं को सौंप रखा था।

(६६) स्वयं पाकी जी का कथन है कि बिहार लेजिसलेटिव असेम्बली पटना के स्पीकर बाबू रामदयालु सिंह जी को मैंने पटना में देखा था; उनको लीला स्वरूपों के प्रति उस समय न तो कोई

श्रद्धा थी और न ही भाव भक्ति, अकस्मात एक दिन सरकारी झांकी में पहुँच गये, उस समय श्री सिद्ध किशोरी जी ने उनको अपूर्व चमत्कार द्वारा ऐसा आकर्षित किया कि वह स्वयं खिंचे हुये चले आये, और श्री जुगुल सरकार के चरणों में गिर पड़े घटना इस प्रकार है—

श्री जुगुल सरकार केवल दो ही थालों में बालभोग कर रहे थे; परन्तु स्पीकर साहब को श्री जुगुल सरकार के सम्मुख पूरे छप्पन थाल अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थों से सुसज्जित दृष्टि गोचर हुये। उन्होंने श्री जुगुल सरकार को उन सब थालों में से आजानु भुजा द्वारा सामग्री उठा २ कर आरोगते हुये स्वयं देखा केवल इतना ही नहीं, उस समय की माधुरी अनूपन छटा एवं मन्द मन्द मुसकान ने उन पर वशीकरण चला दिया, तभी तो सरकार की जुल्फ़ें जंजीर में वह ऐसे फंसे और जकड़ गये कि मरते दम तक उसमें से निकलना और छूटना उनके लिये असम्भव हो गया; यहाँ तक कि उनके घर भर के सब लोग श्री पुजारी जी महाराज के कृपा पात्र बन गये।

श्री लीलाविहारी सरकार के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा, प्रेम भक्ति थी कि जब तक आप यहां इस मृत्युलोक में रहे, प्रतिवर्ष सरकारों को कभी पटना में, कभी हाजीपुर में तो कभी अपनी जन्म भूमि में ही सादर बुलाते, उनका मान सम्मान करते हुये श्री विवाह कलेवा उत्सव का आनन्द भी प्राप्त करते रहे। धन्य है आपकी श्रद्धा, भाव, प्रेम और भक्ति को। यहाँ रह कर तो आप ने अपना लोक सुधारा, अब साकेत लोक में भी श्री सिद्ध-किशोरी जी के समीप उनकी सेवा में रहते हुये अपना परलोक सुधार रहे हैं। आपके घर के लोगों का तो यह नियम हो गया था, कि जब तक श्री जुगुल सरकार का दर्शन करके उनका चरणा-

मृत न ले लें, और उनको कुछ जलपान न करा दें; तब तक कोई जल भी न पीता था। आप सबकी साधु सन्तों में भी पूर्ण श्रद्धा थी। कोई अभ्यागत या अतिथि आपके द्वार से कभी खाली न जाता था।

आप से विदा होते समय ऐसा प्रतीत होता था, मानो घर से लड़की की विदाई हो रही हो, आप की भावना भी यही थी, आप श्री राम जी को अपना दामाद एवं श्री किशोरी जी को अपनी पुत्री मानते थे। तभी तो विदाई के समय अनेक प्रकार की वस्तुयें दहेज की तरह विदाई में भेंट किया करते थे।

(६७) बाबा राम चन्द्र दास जी का कथन है कि जिस समय मौनी हरसेवक दास जी अपने स्थान का सब कार्य छोड़ कर दिन रात श्री जुगुल सरकार की ही सेवा में रहने लगे। उस समय बहुत से साधु संत इनको दिक करने लगे और इनकी निन्दा शिकायत भी करने पर उतारू हो गये; तब सब के हृदय की जाननहारी अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी ने मौनी जी को अपने समीप बुलाया, और इनके हृदय को भी भली भांति टटोला, जब उनका हृदय कुछ संकुचित पाया तो पूँछा कि सच कहो तुम क्या चाहते हो, मौनी जी ने केवल श्री अयोध्या जी का बास, एवं सरकारी भक्ति को मांगा, परन्तु श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि जिस में हम तुम्हारा कल्याण देखैंगी वही करैंगी, कहिये आप को स्वीकार है? तब श्री मौनी जी ने चरण पकड़ कर प्रार्थना की, कि सरकार भला मैं आपकी आज्ञा का कैसे उल्लंघन कर सकता हूँ, इतना सुनते ही श्री किशोरी जी ने उनके सिर पर अपना हस्त कमल फेर कर आज्ञा दी कि अभी तुम को श्री गुरु सेवा ही करनी उचित है। इसी में आप का कल्याण आबरू एवं मान सम्मान होते

हुये कई स्थानों का पूर्ण अधिकार भी प्राप्त होगा, और यदि हठ पूर्वक मेरी आज्ञा को न मान कर हमारी ही सेवा में रहने का आग्रह किया तो तुमको हमारे बिछोह में अधिक पछताना और रोना भी पड़ेगा, कारण कि मैं यहाँ से बहुत जल्दी साकेत जाने वाली हूँ, फिर न जाने श्री किशोरी जी के उस वाक्य, स्पर्श, अथवा आशीर्वाद में ही कौन सी अपूर्व शक्ति थी या उच्चाटन ही था, कि मौनी जी उसी दिन श्री सिद्धकिशोरी जी से प्रसन्नता पूर्वक आशीर्वाद लेकर अपने श्री गुरु महाराज जी की सेवा में पहुँच कर तन-मन-धन से उनकी सेवा करने लगे।

सज्जनो ! इधर से ज्यों २ श्री सिद्धकिशोरी जी का आशीर्वाद फला त्यों २ उधर से श्री मौनी जी भी फले फूले, प्रतिदिन इनकी मान प्रतिष्ठा बढ़ने लगी, श्री पौहारी जी महाराज के समस्त स्थानों का कार्य एवं प्रबन्ध इनके हाथों में सौंपा गया, और यह वहाँ के प्रधान अधिकारी बना दिये गये। जिस समय श्री सिद्धकिशोरी जी अस्वस्थ रहीं, उस समय श्री मौनी जी ने उनकी तन, मन, धन, से सेवा की, और लगभग तीन हजार रुपये के आप ने उन के निमित्त दान पुन्य औषधी एवं भंडारा इत्यादि में भी खर्च करते हुये अपने सच्चे प्रेम, उदारता एवं त्याग का पूर्ण परिचय दिया।

(६८) श्री हनुमान प्रसाद जी हेड मास्टर हाई स्कूल गढ़ी-घाट पोस्ट सिंहपुर जिला बाँदा से पत्र द्वारा (लेखक जी को) लिखते हैं कि मैं श्री सिद्ध किशोरी जी के दो चमत्कारी चरित्र लिख कर भेज रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप इस लेख को भी उनकी जीवनी में छपाने के लिये स्थान देंगे। इसके अतिरिक्त और भी कई चरित्र हैं, मगर माँ (श्री किशोरी जी) के विषय

में अधिक क्या लिख सकता हूँ। मैं तो छुद्र बुद्धि वाला हूँ। मैं सन् १९३७ में प्राइमरी स्कूल ओरा से तनज्जुल होकर प्राइमरी स्कूल सीतापुर (चित्रकूट) में आ गया था, उसी साल श्री जानकी कुंड में विहौती भवन सरकारों द्वारा विवाह कलेवा उत्सव बड़े ही धूम धाम के साथ मनाया गया। बरात के लिये दो दिन पहिले से ही तैयारियाँ होने लगीं; मैं उस समय सेठ साधूराम तुलाराम के धर्मशाला में रहता था, रजौला जागीर से भी हाथी मँगाया जाना था, तथा दरी गलीचा आदि मँगाने की लिखा पढ़ी हम लोग कर रहे थे। उस समय श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपने मुखारविन्द से कहा था कि मास्टर साहब आप इतने परेशान क्यों हो रहे हैं? परसों इतना पानी होगा कि सामान सब भीग कर बिगड़ जायगा, हमने पूँछा कि क्या सचमुच वर्षा होगी? तो सरकार ने कहा कि हाँ खूब वर्षा होगी, आकाश बिल्कुल साफ था, कार्तिक का महीना था, बादल का कहीं नामो निशान न था, विवाह के एक दिन पहिले शाम तक आकाश निर्मल रहा, परन्तु दो बजे से हवा तेज चलने लगी, और सूर्योदय होते २ आकाश में बादल छा गये, और थोड़ी २ बूँदें भी पड़ने लगीं, धीरे २ जैसे सूर्य चढ़े पानी अधिक बरसने लगा, और दो घंटे दिन चढ़े तक तमाम गलियों में कीचड़ ही कीचड़ हो गया। बार-बार भक्तों के प्रार्थना करने पर श्री सिद्ध किशोरी जी ने मुस्कराते हुये केवल इतना ही कहा कि शादी विवाहादि शुभअवसरों में ऐसा होना मांगलिक है,

(६९) श्री हनुमान प्रसाद जी हेडमास्टर का कथन है कि मैं किसी कारणवश बोर्ड से ३०) माहवार से २०) माहवार पर तनज्जुल होकर जब सीतापुर (चित्रकूट) की मास्टरी पर आया था, उस समय दुखी दशा में मेरी बुद्धि भी ठिकाने नहीं रहती थी, अकस्मात मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी से एक दिन

प्रार्थना की, कि सरकार ! आप तो उत्सव समाप्त करके यहाँ से श्री अवध को जा रहे हैं, मुझे भी आशीर्वाद देते जावैं, ताकि मैं अपनी असली पोस्ट (हेडमास्टरी) पर चला जाऊँ, श्री माता जी ने कहा कि घबरायें नहीं, आप शीघ्र ही यहाँ से अपने असली पद पर चले जायेंगे। सज्जनो ! केवल आठ ही दिन के बाद हुकम आया कि आप अपील से बहाल कर दिये गये हैं, और प्राइमरी स्कूल पचोखर तहसील नरैनी की हेडमास्टरी पर आप ३०) माहवार पर मुकर्रर किये गये, श्री सिद्धकिशोरी जी के इन चरित्रों को देख कर हमें तो भारी सुख हुआ, और उनमें अटूट श्रद्धा बढ़ी, तब से मैं प्राय, श्री अवध में दर्शनार्थ आने जाने लगा।

(७०) श्री अयोध्या जी सद्‌गुरू सदन के श्री पुजारी जी महाराज का कथन है कि मेरे राम को भी शृंगारी पदपर बिहौती भवन में सरकारों की सेवा में दो तीन साल तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, मैंने उन के कई अनोखे चमत्कारी चरित्र देखे थे जिन को भइया जी (श्री राम गोपाल दास जी) ने उनकी इस पावन जीवनी में लिखा है।

(७१) पाठको ! अब मैं राम गोपाल दास (लेखक) चेला अनन्त श्री स्वामी महंत श्री जयदेवदास जी महाराज जमींदार, माफीदार, संस्थापक श्री जयदेव वैष्णव संस्सकृत कालेज कर्वी (चित्रकूट) श्री सिद्धकिशोरी जी के प्रति अपने हृदय के उद्‌गार प्रथम दर्शन एवं उनके कुछ चमत्कारी चरित्रों का भी वर्णन करूँगा, जिनका मुझे सरकारी सेवा में अनुभव हुआ था।

श्री अयोध्या जी से बिहौती भवन समाज नवम्बर १९३६ को श्री जानकीकुन्ड (चित्रकूट) पहुँचा तो दूसरे ही दिन मुझे श्री मस्तराम जी ने शुभ सन्देश सुनाया कि पूज्य श्री स्वामी जी

महाराज एवं श्री धर्म भगवान जी भी पधारे हैं कल कार्तिक शु; ५ से श्री राम विवाह-कलेवा उत्सव प्रारम्भ होगा, श्री स्वामी जी की आज्ञानुसार आप भी कल संध्या समय तक अवश्य वहां पहुँच जाना, साथ ही साथ श्री सिद्धकिशोरी जी की भारी प्रशंसा करते हुये यह भी कहा, कि इस समय का सुख, आनन्द, अकथनीय है ऐसा आनन्द आपको कभी न मिला होगा। मैं भी ३-४ वर्ष से श्री जुगुल-सरकार की सेवा में रहता हूँ। इस प्रकार की प्रशंसा सुनकर मेरे तो हृदय में सरकारी दर्शनों की उत्कट लालसा जग उठी, यहाँ तक कि उस रात्रि का कटना भी कठिन हो गया, दूसरे दिन श्री गुरू जी महाराज की आज्ञा लेकर कुछ भोग की भी सामिग्री साथ में ले ३-४ सन्तों के साथ २ में श्री जानकी कुँड पहुँचा तो देखा कि श्री रामजी महाराज का दुल्हा शृङ्गार हो चुका है और वह शृङ्गार-भोग भी आरोग रहे हैं। शृङ्गारी रामविलास शरण जी एवं श्री मस्तराम जी सेवा में उपस्थित हैं। मैंने भी तुरन्त एक थाल में कुछ सामिग्री सजाई और ज्यों ही श्री रामजी की सेवा में जाने लगा उस कोठरी के बाहर दरवाजे के समीप बैठे हुये एक बालक ने सहसा मुझसे कहा, "भैया जी दण्डवत्" मैंने भी कोई साधारण गृहस्थ बालक समझकर जै सीताराम कह दिया। और भोग का थाल लेकर कोठरी के अन्दर श्री रामजी के समीप चला गया। उनके सम्मुख भोग का थाल रखकर दण्डवत् प्रार्थना की, कि कर्वी स्थान से आरहा हूँ। कुछ देर हो गई है, क्षमा करते हुये इस भोग को भी स्वीकार किया जाय, तो बड़ी कृपा होगी। सरकार ने मेरी प्रार्थना को सुनकर उस भोग को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करते हुये प्रेम से आरोगा। श्री मस्तराम द्वारा मेरा परिचय कराये जाने पर फिर सरकार ने अपने कर कमलों से मुझे अपनी शीथ प्रसादी भी दी। अब दूसरा थाल श्री सिद्धकिशोरी जी के निमित्त मैंने

तैयार करके मस्तराम जी से जब उनका ठिकाना पूछा तो मस्त-राम जी ने मुस्कराते हुये मुझसे कहा कि इस कोठरी के बाहर ही तो सिद्धकिशोरी जी बिना श्रृङ्गार किये बैठी हैं क्या आपने उनको नहीं पहिचाना ? मैं भारी लज्जित हुआ, तुरन्त श्री सिद्ध-किशोरी जी से क्षमा माँगी और भोग का थाल उपस्थित करते हुये प्रार्थना की कि सरकार आपको पहिचान नहीं सका; इसलिये भूल के कारण दण्डवत् प्रणाम भी नहीं किया। इतना सुनते ही दयासागरी श्री सिद्धकिशोरी जी ने तुरन्त मेरा हाथ पकड़ कर अपने समीप बैठा लिया, और मेरे सिर पर अपने कर कमल का स्पर्श करती हुई बोलीं कि बहिन को भैया भले ही भूल जाय, परन्तु बहिन अपने भैया को कैसे भूल सकती है। मैंने फिर प्रार्थना की कि आज प्रथम ही सरकार का शुभदर्शन हुआ है। अज्ञानवस आपको न पहिचान सका; इसलिये क्षमा प्रार्थी हूँ, इस जीव का तो स्वभाव ही भूलने का है; मगर आप तो सर्वज्ञ हैं; फिर आप अपने जन को कैसे भूल सकती हैं आपके प्यार एवं अमृतभरी बोलन ने तो मेरे सूखे प्राणों को भी हरा भरा कर दिया है, और आपने जो मुझे भैया की उपाधि देकर सम्बोधित किया है; मैं एक अपराधी एवं अपात्र जीव भला इस योग्य कहाँ हूँ जो आपका भैया कहलाऊँ, मैं तो अपने क्षुद्र कर्मों के कारण आपको अपना मुख दिखलाने योग्य भी नहीं हूँ परन्तु यह आपकी असीम अनुकम्पा है कि आप जीवों के कल्याणार्थ उन पर सदैव दया दृष्टि एवं कृपा ही किया करती हैं। परन्तु कितने दुख का विषय है कि यह जीव आपके समस्त उपकारों को भूल कर आपकी आज्ञाओं की अवहेलना करता हुआ आपसे सदा विमुख रहता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसे चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है।

सरकार ! जिस किसी भी जीव की ओर आप की कृपा दृष्टि

हो जाय, अथवा जीव ही आप को अपनीं प्रेम भरी निगाह से देख ले, तब तो वह कृतार्थ ही हो जाये, भवसिन्धु में गोते खाता हुआ पार हो जाय, मैं तो आप के श्री चरणों की रज अपने सिर पर धारण कर आप को सादर सप्रेम प्रणाम करता हुआ प्रार्थना करता हूँ कि आप तो कृपा सागरी हैं, जीवों पर दया करना एवं उन्हें कुपंथ से हटाकर सुपथ पर लगाना तो आप का स्वभाव ही ठहरा , आपकी प्रत्येक चेष्टायें जीवों के कल्याण के ही निमित्त हुआ करती हैं, आपकी जो कुछ प्रशंसा की जाय, सो कम है, मेरी प्रार्थना को सुनते ही श्री सिद्ध किशोरी जू ने तो मानो पूर्ण दया का भंडार ही खोल दिया, कहने लगीं, भैया जी ! पापी हों, अधम हो, मार डालने योग्य हों, कैसे भीं अपराधी क्यों न हो, श्रेष्ट पुरुषों को ऐसे सभी जीवों पर करूणा ही करनी उचित है । कारण कि कोई किसी का अपराध नहीं करता । सब कोई अपना अपना कर्मफल भोगते हैं । और संसार में ऐसा भी कोई मनुष्य नहीं है कि जिससे भूल न होती हो ।

पाठको ! मैं इसी चिन्ता में रात दिन घुला करता था, कि मेरे जन्म जन्मान्तरों के पाप ताप कैसे दूर होंगे ? प्रथम तो मैं किसी साधना द्वारा इनकी निवृत्ति करने को असमर्थ. दूसरा मेरा अपना निजी भी कोई ऐसा प्रवल पराक्रम था ही नहीं, तीसरे मेरे ऐसे कोई सुकृत भी न थे, जो सरकारी शुभ दर्शन एवं सत्सङ्ग प्राप्त कर सकता, किसी साधना द्वारा भी यह कार्य होना असम्भव था, जिस पर भगवान कृपा करें, जिसे अपनायें. वही तो उनकी कृपा एवं प्रेम का भाजन होकर समस्त पाप ताप से भी छूट सकता है । श्री सिद्ध किशोरी जू के शुभ दर्शन करते ही मुझे तो निश्चय हो गया कि मेरे जीवन में यह स्वर्ण अवसर बड़े भाग्य से आया है । उनका निष्कपट व्यवहार, कृपा एवं स्नेह अपने ऊपर देख कर मुझे तो भारी प्रसन्नता हुई मेरे हृदय

की कलियां खिल गईं, मैं उन पर मुग्ध हो गया, एवं आपके दयापूर्ण श्री मुख वाक्य सुनते ही कुछ देर तक मैं तो मूक सा हो गया, मानो किसी ने मेरे मुख पर ताला लगा दिया हो, थोड़ी देर के बाद अनायास ही मेरे मुख से उनके प्रति यह शब्द निकले, अहा धन्य ! प्रभु की दया, अनुकम्पा, एवं कृपा की साक्षात मंगल मई मूर्ति माँ मैथिली जू ही हैं। क्यों न हो, दया एवं कृपा का पूर्ण विकास तो मात्र हृदय में ही माना गया है। वास्तव में यदि माता बच्चे के अपराध ही देखने लगे, तब तो दया धर्म का दिवाला ही निकल जाय। अहा कितनी उदारता है आप के कोमल अन्तःकरण में, भला बताओ तो सही, ऐसी रस पूर्ण माँ की गोदी में बैठने का व पुनः उनकी चरणों की रज में लोटने का किसका जी नहीं चाहता होगा। ऐ माँ श्री मैथिली जू, यद्यपि मैं कुपात्र हूँ तो भी बुरा भला जैसा भी हूँ आप ही का तो बालक और सेवक हूँ। बस यही प्रार्थना और विनय यही भिक्षा भी माँगता हूँ कि मेरी प्रेम रूपी लता को अब कृपा रूपी जल देकर विशाल किया जावे, बीच में कहीं मुरझाने न पावे, एवं अपना के फिर कभी त्यागना भी नहीं। सज्जनो ! मेरी प्रार्थना सुनने के बाद श्री सिद्धकिशोरी जी ने पहिले तो मेरा हाथ पकड़ कर अपने ही आसन पर बैठा लिया, और फिर प्रेम की अमृत धारा बरसाती हुई कहने लगीं, भैया जी ! आप सेवक कैसे हैं ? आप तो मेरे लक्ष्मीनिधि भैया है, देखिये, हमारी दोनों की माता श्री सुनैना अम्बा जू एवं पूज्य पिता श्री विदेह जू महाराज हैं। भैया जी। क्या आप भी अभी से विदेह हो गये जो अपने आप को एवं अपनी बहिन को भी भूल गये, "श्री सिद्धकिशोरी जू के निष्कपट प्रेम ने मुझे तो नहला दिया. मैं बड़ी असमञ्जस में पड़ कर सोचने लगा परन्तु कुछ निर्णय नहीं हो रहा था, कि मैं कौन हूँ।

इतने में मन्द २ मुसकान युक्त श्री किशोरी जू ने अपना प्रसादी आधा पान मेरे मुख में अपने ही कर कमलों द्वारा भर दिया तब तो मेरी आँखें खुल गईं, और मेरी पहिली भावना काफूर होकर श्री सिद्धकिशोरी जी मुझे मेरी प्रिय बहन नजर आने लगीं, और मैं उनका प्रिय भैया राजकुमार लक्ष्मी निधि।

पाठको ! मैं उस समय के सुख एवं हृदय आनन्द से आप लोगों को कैसे परिचित कराऊँ, जब कि हृदय के नेत्र नहीं, और नेत्रों का हृदय ही नहीं है, आहा ! लोहे को स्पर्श मात्र से कञ्चन बना डालना इस प्रकार का अनुपम चमत्कार तो मुझे केवल श्री सिद्ध किशोरी जू में ही प्रतीत हुआ। न जाने उस स्पर्श में कोई जादू था एवं पान में ही कोई वशी करण ? सीथ प्रसादी में क्या कोई टोना था ? या उस प्यार एवं स्नेह में ही कोई मोहनी मन्त्र, जिसने मेरी पहली दास भावना को बिलकुल ही भुला दिया। मैं इस योग्य कहाँ था कि श्री किशोरी जू का भैया कहला सकता ? परन्तु जिसे कृपाकर आप अपना लेवें, वही तो आप के अनुग्रह का पात्र बन सकता है। जिस प्रकार पारस लोहे की कुपात्रता पर ध्यान न देते हुये अपने स्वभाविक धर्मानुसार उसको स्वर्ण बना देता है। उसी प्रकार श्री सिद्धकिशोरी जू ने भी अपने दयालु स्वभाव वश मेरी कुपात्रता पर भी ध्यान न देते हुये मुझ कुपात्र को भी अपना कर अपना भैया बना ही तो लिया, अहा मैं आज अपने भाग्य की कहाँ तक प्रशंसा करूँ, मैं कितना भाग्यशाली हूँ। जो मुझे आप के दैव दुर्लभ शुभदर्शनों का सर्वोत्तम सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रतीत होता है कि मेरे पूर्वजों के पुन्य प्रताप एवं आप की असीम अनुकम्पा द्वारा ही मुझे यह शुभ अवसर प्राप्त हो सका, केवल अपने पुरुषार्थ से प्रयत्न करके यदि कोई आप को पाना चाहे, या आप से कोई दृढ़ नाता ही जोड़ना चाहै तो असम्भव

है। आप जैसे सिद्ध महान पुरुषों का दर्शन संसार पंक में फँसे हुये विषयासक्त हम जैसे प्राकृत पामर जीवों को होना असम्भव ही था

किन्तु अब तो मैं आप के शुभदर्शनों एवं दृढ़ सम्बन्ध होने से निश्चिंत हो गया। एवं मुझे यह भी पूर्ण विश्वास हो गया कि आप शाक्षात श्री जनक नन्दिनी जू हैं, आप ही संसार में फँसे दीन हीन, साधन हीनों पर कृपा करके अपने दर्शनों से उन्हें कृतार्थ करने के लिये कभी २ किसी न किसी स्वरूप में इस मृत्युलोक में चली आया करती हैं, आपने मेरे अवगुणों की तरफ ध्यान तक नहीं दिया। जो भाग्य देवताओं को भी दुर्लभ है। आज भाग्यवश मुझे स्वतः ही प्राप्त हुआ, अब तो मैंने आप की शरण गहली है, नाता भी दृढ़ हो गया है, इसलिये मुझे तो अपनी दुर्गीत का भय भी नहीं रहा, आप के वचन मुझे अत्यन्त सुखकर प्रतीत हो रहे हैं, आप का एक २ वचन मेरे अज्ञान को भगाने के लिये पर्याप्त है।

सज्जनो! श्री सिद्धकिशोरी जी के स्नेह से सने अत्यन्त मधुर अपनपौ से भरे वचनो को सुन २ कर मेरा तो हृदय भर आया, मेरे प्रेमाश्रुओं ने उनके चरण कमलों को भिगो दिया, और मेरे मन में उठने वाली समस्त शंकायें निर्मूल हो गईं। प्यारी बहन ने मुझे अपने वात्सल्य स्नेह से स्नान करा कर प्रेमसागर में निमग्न कर दिया, इधर बहनोई श्री राम जी भी तो कृपा और गुणों के सागर; दया के निधि तथा शोभा के धाम ही मिले, उनके पुनीत प्रेम एवं आश्वासन से भी मेरा समस्त शोक सन्ताप दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ।

सज्जनो! श्री जानकी कुण्ड पर कई दिन तक बड़े ही समारोह के साथ श्री विवाह, कलेवा, चौथारी उत्सव एवं रंगीली झाँकियाँ

भी हुई! यद्यपि समस्त जनता वाह २ करती रही, परन्तु मैं सच कहता हूं, कि श्री सिद्ध किशोरी जी की उस अमृत व प्रेम भरी मधुर वाणीं और शील सनेह मय स्वभाव के सामने मुझे तो उत्सव फीका ही लगा। उस समय के परमानन्द को मैं यहाँ लिख कर नहीं बता सकता। प्रत्येक सुहृद अपने हृदय से ही अनुमान करके जान लेंगे, कि उस समय कैसा आनन्द एवं सुख का प्रवाह बहा होगा। श्री किशोरी जी के उन प्रिय एवं मधुर बचनों की जब कभी याद आ जाती है तो उनके बिछोह से चिन्तित होने के कारण नेत्रों में आँसू भर आते हैं और उनकी याद में रोया करता हूँ "होने को तो हो ही जाता है निश दिन साँझ सवेरो। परन्तु श्री सिद्ध किशोरी जू बिन नीरस हैं जीवन मेरो।" मैं तो उन महात्माओं के भाग्य की सराहना किया करता हूँ। धन्य हैं वह सन्त, जिन्होंने निरन्तर श्री जुगुल सरकार की सेवा में रहकर सुख लूटा, और धन्य है उन सज्जनो को भी जो अनुभव की आँखों से उन्हें हर समय देखते हुये उन्हीं की नित्य लीला में मग्न रहते हैं। और परम धन्य हैं, ऐसे भाव भीने प्रेमी भक्त जन, जो निरन्तर उस लीलाधर प्रभु के श्री जुगुल नाम की रटन लगा कर प्रेम रस का आस्वादन करते हुये प्रेम विह्वल होकर कभी तो रुदन करते कभी हँसते तो कभी मस्त होकर नाचने भी लगते हैं। "प्रेम की अकथ कहानी-न जाने ज्ञानी ध्यानी।" सुर नर मुनि गये सब हार।" तब बताओ कि लेखनीं घुमाने वाला मुझसा एक अनाड़ी लेखक भला सरकार की लीला एवं महत्ता को क्या जान सकता है? हाँ तो कहाँ का प्रसङ्ग और कहाँ चला आया? मैं तो कुछ आगे बढ़ गया, खैर, बात भी तो है श्री विदेह राजकुमाँरी की, और मैं भी ठहरा उन्हीं का भूला भटका लाड़ला और पाला पोसा भैया लक्ष्मी निधि। तब तो आगे पीछे की कौन विचारे,

एवं ठीक भी है, आगे ही बड़ा हूँ न! राजकुमाँरों को तो आगे बढ़ना ही चाहिये, न कि पीछे हटना। पीछे को तो कायर लोग रहा करते हैं।

महोत्सव समाप्त होने के पश्चात् श्री जुगुल सरकार, उनके पुजारी जी श्री स्वामी जी, एवं श्री धर्म भगवान जी से भी बहुत विनय प्रार्थना की गई, कि यदि अधिक न हो सकै तो केवल तीन चार दिन के लिये तो स्थान कर्वी में पधार कर अपनी चरण रज द्वारा पावन करते हुये हमारे श्री गुरू महाराज जी को भी दर्शन देकर कृतार्थ करें। कारण कि श्री गुरू महाराज जी कुछ अस्वस्थ होने के कारण श्री जानकी कुण्ड पर आपके दर्शन करने से वञ्चित रहे हैं, परन्तु पटना से सरकारी तिलक आ चुका था, इस लिये हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई।

(७२) (१) जिस समय श्री बिहौती समाज श्री जानकी कुण्ड से कर्वी रेलवे स्टेशन पर पधारा, उस समय मैं भी सरकारी दर्शनार्थ स्टेशन पर पहुंच गया था। आज सरकार यहाँ से पटना के लिये प्रस्थान करेंगे, यह सुन कर उनके बिछोह में मेरा हृदय कातर होने लगा, जी तो चाहता था, कि उनके साथ २ पटना तक चला जाऊँ, परन्तु स्थान में श्री गुरू महाराज के अस्वस्थ होने के कारण श्री जुगुल सरकार ने आज्ञा नहीं दी, मेरी इस प्रार्थना पर "फिर सरकारी दर्शन मुझे कब प्राप्त होंगे"। श्रीं सिद्ध किशोरी जी ने उत्तर दिया कि कल इलाहाबाद में, कारण कि आज हमको गाड़ी न मिलने के कारण कर्वी में ही रहना होगा। और आप को गुरू आज्ञानुसार आज इलाहाबाद जाना होगा। यह सुनते ही मैं बड़ी असमञ्जस में पड़ गया कि मुझे कल इलाहाबाद में कैसे दर्शन होंगे। और अभी तो गाड़ी के आने में एक घण्टा की देरी है, गाड़ी भी इनको कैसे न

मिलेगी ? देखिये ! मोटर लारी जिसमें सामान लदकर चित्रकूट से आ रहा था, उसका एक चक्का रास्ते में फट गया, उसके ठीक कराने में काफी समय लग गया, यहाँ तक कि सवारी गाड़ी चली गई, और उसके एक घण्टा बाद ही इनके सामान की लारी स्टेशन पर आई।

उधर श्री चित्रकूट में इलाहाबाद मुट्ठीगंज के एडवोकेट बाबू रामनामाप्रसाद जी की बहिन का, जो कि कई दिनों से श्री जानकी कुँड पर सरकारी उत्सव का आनन्द ले रही थीं। परमाग्रह था कि पटना जाते समय केवल एक रात्रि के लिये इलाहाबाद में हमारे भाई साहब के मन्दिर में जुगुल झाँकी का आनन्द दिखाते हुये तब पटना जायँ ! जिसको श्री पुजारी जी ने स्वीकार भी कर लिया था ! अब देखिये, इधर तो वकील सा० की बहिन को इलाहाबाद जाना है। कल रात्रि को उनके मन्दिर में झाँकी होना निश्चित है। मुझे भी आज श्री गुरू महाराज ने किसी आवश्यक कार्यवश इलाहाबाद वकील सा० के मकान पर जाने के लिये आदेश दिया। अहा ! स्नेह का कैसा सुन्दर मेल (संयोग) होता है। एवं सिद्धकिशोरी जी की भविष्यवाणी भी किस प्रकार सिद्ध होती है कि "कल आप को इलाहाबाद में दर्शन होंगे !" केवल इतना ही नहीं; और भी देखिये तो आगे की घटना कितनी अपूर्व है। अब तो रात्रि की गाड़ी से मैंने भी वकील सा० की बहिन के साथ २ जाने का निश्चय कर लिया। जाते समय श्री किशोरी जी ने फिर मुझसे कहा आज तो आप वकील जी के यहाँ जा रहे हैं, और कल हमको भी उनके मन्दिर में रात्रि के नौ बजे पहुँचना है। क्या आप कोई सवारी लेकर स्टेशन पर हमको लेने के लिये आ सकेंगे ? मैंने उत्तर दिया कि अवश्य ! गाड़ी से पहिले एक घंटा स्टेशन में सवारी सहित पहुँचूँगा। परन्तु श्री सिद्धकिशोरी जी का कथन था कि भैया जी

आप स्टेशन पर नहीं आवेंगे। यद्यपि मैंने प्रतिज्ञा पूर्वक उनको विश्वास दिलाने के लिये भी कई वार कहा कि अवश्य आऊँगा परन्तु श्री किशोरी जी का वारम्वार यही कथन था कि आप नहीं आ सकोगे। परन्तु मुझे यह भी क्या मालूम था कि इसमें भी कोई रहस्य छिपा है। खैर, सरकार से विदा होकर हम दोनों इलाहाबाद पहुँचे। वकील सा० तो मुझे देखते ही बड़े प्रसन्न हुये; और कहने लगे कि अच्छा हुआ आप इस शुभ अवसर पर स्वयं आ गये। इसलिये कल की जुगुल झाँकी का सम्पूर्ण प्रवन्ध आपके ही जिम्मे रहेगा। मैंने भी इसको प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया, दूसरे दिन शाम के छै बजे तक तो मैंने सिंहासन आदि का प्रवन्ध किया और करीब आठ बजे दो मोटर गाड़ी लेकर स्टेशन जाने को तैयार हुआ तभी मुझे अचानक जाड़ा देकर बुखार आ गया शरीर तक की सुधि नहीं रही मुझे तो वकील सा० ने कम्वल उढ़ा कर सिंहासन के समीप ही सुला दिया। और स्टेशन पर सवारियाँ भिजवा दी। रात्रि के साढ़े नौ बजे समाज ज्यों ही मन्दिर में पहुँचा, तो आते ही सिंहासन के समीप मुझे सोया हुआ देखकर श्री किशोरी जी ने मेरे मस्तक पर अपना कर कमल फेरते हुये मुझे भैया २ कह कर जगा भी दिया, फिर कहने लगीं; कि आपने तो स्टेशन पर सवारी लाने की प्रतिज्ञा की थी; कहाँ गई वह आपकी प्रतिज्ञा। मैंने जो घटना थी, सब कह सुनाई; श्री किशोरी जी ने मेरी नाड़ी देखते ही कहा कि आपको बुखार कहाँ है? डाक्टर सा० जो समीप बैठे थे, उन्होंने कहा कि अभी इनको १०४ डिगरी का बुखार है। श्री किशोरी जी ने थर्मामेटर लगाने को कहा, जब थर्मामेटर लगाकर देखा गया तो बुखार बिल्कुल नहीं था। न जाने श्री किशोरी जी के स्पर्श मात्र से ही मेरा ज्वर कहाँ भाग गया। इस प्रकार कीअपूर्व घटना को प्रत्यक्ष देखकर डाक्टर

सा०, वकील सा० एवं दूसरे उपस्थित प्रेमी जन भी चकित हो गये; वह सब श्री सिद्धकिशोरी जी की भूरि २ प्रशंसा करते हुये उनकी सिधाई के भी कायल हो गये। रात्रि को केवल दो घंटे तक रंगीली झाँकी हुई। व्यारू हुई; मैंने भी व्यारू प्रसाद सेवन किया, यह तो सरकारी लीला थी और उनकी वाक्य सिद्धि का चमत्कार था। जो कुछ आप अपने मुखारविन्दु से कह दिया करती थीं, वह कभी निष्फल नहीं जाता था।

(७३) पटना के विवाहोत्सव में शीघ्र पहुँचना था। इसलिये सवेरे ही की गाड़ी से समाज ने पटना जाने की तैयारी कर ली उनकी विदाई के समय मेरा धैर्य्य भाग गया, और श्री जुगुल सरकार के युगुल चरणों को पकड़ कर मैं व्याकुल हो छटपटाने लगा। मेरी यह दशा देख कर श्री सिद्धकिशोरी जी ने मुझे आश्वासन देते हुये मेरे मस्तक पर अपना कर कमल फेरा और कहा कि भैया जी घबराओ मत, धैर्य्य रखो। थोड़े ही दिनों के बाद प्रधान श्री राम विवाह पञ्चमी का उत्सव अगहन मास में होने वाला है, उस समय आप को श्री अयोध्या जी में पूर्णानन्द मिलैगा, और यह भी कहा कि आप को हमारे संग चार महीने रह कर देशाटन भी करना होगा। मैंने फिर प्रार्थना की कि विवाह पञ्चमी के अवसर पर एक स्थानीय मुकदमा के कारण मेरा वहाँ रहना बहुत जरूरी है, तब मुझे आप का दर्शन कैसे प्राप्त होगा? श्री सिद्धकिशोरी जी ने उत्तर दिया भैया जी आप इसकी चिन्ता न करैं, सब कार्य ठीक हो जायगा और आप को हमारा दर्शन अवश्य मिलैगा, बस इतना कह कर आशीर्वाद देते हुये श्री जुगुल सरकार विदा हो गये, इस आधार को पाते ही मुझे भी कुछ संतोष हो गया, और धैर्य्य बंध गया, कारण कि "डूबते को तिनके का सहारा भी काफी होता है।" इधर कुछ दिनों बाद मेरे दिल में फिर यह

शंका उठी कि स्थानीय मुकद्दमा के कारण चार पांच दिन का अवकाश मिलना तो कठिन है, फिर श्री जुगुल सरकार के साथ चार महीने रहने का सौभाग्य कैसे प्राप्त होगा।

श्री विवाह पञ्चमी के दिन ज्यों २ निकट आने लगे, त्यों त्यों मेरा चित्त भी सरकारी दर्शनों के लिये अकुलाने छटपटाने लगा। परन्तु भारी संकोच इस बात का था, कि श्री गुरू महाराज से दस पाँच दिन का अवकाश माँगू भी तो कैसे माँगू।

पाठको ! भगवन् लीला की माप भला कौन कर सकता है ? भक्तों के कार्य का संचालन तो भगवान स्वयं एक निराले ही ढंग से किया करते हैं, जिसको कोई जान नहीं सकता- भगवान कब क्या और क्यों करते हैं, यह कहना तो शेष जी से भी शेष रह जाता है, तब मेरे जैसा कागज रंगने वाला अनाड़ी भगवान की लीला को क्या समझ सकता है। भगवान बड़े खिलाड़ी हैं, उनकी लीला व रहस्य को समझ लेना क्या कोई साधारण बात है। देखिये ! स्थानीय मुकद्दमा की तारीख सात आठ महीने के लिये टल गई, अब दस पाँच दिन की कौन कहे, श्री गुरू महाराज ने विवाहोत्सव के दर्शनार्थ प्रसन्नता पूर्वक बीस पचीस दिन की आज्ञा दे दी।

भगवत लीला के सम्बन्ध में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाना है, प्रभु के लीला का वितान भी किस ढंग से तना हुआ है, यह भी कहना बुद्धि से परे की बात है, देखिये एक जंगली शेर अच्छे शिकारी को देख कर तो लापता हो जाता है और फिर वही शेर कुछ दूरी पर जाकर एक महात्मा के चरण चुम्बन करता हुआ दिखाई पड़ता है। तथा एक मनुष्य तो पाषान (पत्थर) की मूर्ति को देख २ कर हँसी उड़ाता है (नास्तिक लोग) और दूसरा उसी में अपने इष्टदेव की ही भावना से मस्त नजर

आता है। (भगवत भक्त)! एक तो पत्थर के खम्भे में बाँध कर जान से मारने को खंजर उठाता है (हिरण्य कश्यप) तो दूसरा उसी खम्भे में से अपने प्रभु को ही प्रकट कर दिखाता है। (श्री प्रह्लाद जी) अहा! कैसी विचित्र लीला है।

पाठको! अब आप जरा अपने हृदय से तो पूँछिये कि इस विषमता का क्या कारण है, जरा अपने मष्तिश्क से विचार तो करिये कि इस अन्तर में क्या हेतु है? यों तो संसार के सभी मनुष्यों की विचार धारा एक सी हो नहीं सकती। सब की विचार पंक्तियाँ न्यारी २ होने के कारण एक मार्ग में चल नहीं सकतीं। फिर भी मीमांसा के अन्त में सब का निष्कर्ष एक यही निकलता है, कि "विश्वासो फल दायकः"। अपनी २ भावना एवं विश्वास के अनुकूल ही फल भी मिलता है, मनुष्य अपनी श्रद्धा, विश्वास का बना हुआ एक पुतला है। जैसा जिसका विश्वास होता है वैसा ही वह हो जाता है।

उस हकीम (साँवलिया वैद्य) का सब काम हिकमत के साथ होता है। भगवान अपने आश्रितों की रक्षा हर प्रकार से करते हैं। और यह भी एक तुली हुई बात है कि भगवात तो वही करते हैं, जिससे जीव का भला हो, चाहे जीव अज्ञानवश उसको प्रतिकूल समझे। भगवान की इच्छा भक्त की इच्छा के प्रतिकूल कब हो सकती है। देखिये! मेरी उत्कट इच्चा थी कि श्री जुगुल सरकार का विवाह पञ्चमी पर दर्शन हो जाय, भगवत कृपा से दर्शन हो ही तो गया। इसलिये —

"उसे फजल करते नहीं लगती बार, न हो मायूस उस से उम्मेदवार"।

(७४) मैं श्री राम विवाह पञ्चमी से पहिले ही श्री अयोध्या जी पहुँच गया। और प्रिय भाषी मन्द मुसकान वाले श्री दशरथ

राजकुमार श्री कौशिल्या किशोर जू एवं श्री मिथिला मानसर की कमोदनी चन्द्र एवं चन्द्रमा से भी कोटि गुणा शीतल सुकुमारी श्री मिथिलेश राजकुमारी के जुगुल श्री चरणों के दर्शन एवं स्पर्श मात्र से मैं कृत कृत्य हो गया, और मेरे हृदय की समस्त व्यथा पानी बन २ कर आँखों से बहने लगी। जिसको प्रिय बहिन, बहनोई ने अपनी चूँदरी एवं पीताम्बर की छोर से पोंछ कर कम कर दिया।

हाँ तो! श्री राम विवाह पंचमी का महोत्सव श्री बिहौती भवन में प्रधान माना जाता है। अहा! अगहन शुक्ला पञ्चमी तिथि कितनी भाग्शाली है आज के दिन विवाह मण्डप में आनन्द की लहरें उछलेंगी, मेरी बहुत दिनों की आशा वेली आज फली फूली, और मैं दलदल में फँसा हुआ सरकारी दर्शन करके सुखी हुआ। तिलक के अवसर पर श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपने श्री गुरुदेव श्री पुजारी जी महाराज से इस बात का विनय पूर्वक प्रार्थना करते हुये अनुरोध भी किया, कि स्थान कर्वी (चित्रकूट) के अधिकारी श्री राम रामगोपालदास जी को मैं श्री जानकी कुंड के महात्सव से ही अपना भैया मान चुकी हूँ, मेरी हार्दिक अभिलाषा है, कि वह जब तक इस मृत्युलोक में रहें, बिहौती भवन में प्रत्येक विवाह कलेवा उत्सव पर जहाँ तहाँ वह उपस्थित हो सकें उन्हीं के द्वारा समस्त तिलक विवाह एवं कलेवा की विधि सम्पन्न हुआ करैं, इस से हमको अधिक प्रसन्नता होगी, और यदि किसी ने हमारे इस संकल्प में कोई बाधा डाली, तो हमको भारी खेद होगा। श्री किशोरी जू की इस बार्ता को श्री पुजारी जी ने प्रेम पूर्वक सुना तो जरूर, उन्हें संकोच केवल इस बात का था, कि अधिकारी जी पढ़े-लिखे एवं एक भारी गद्दी के स्वतन्त्र अधिकारी होते हुये एक सिद्ध महान-पुरुष के शिष्य भी हैं, इस लिये हो सकता है, कि वह इस भावना को

स्वीकार न करें, परन्तु सब के हृदय की जाननहारी श्री सिद्ध किशोरी जी अपने श्री गुरू महाराज के हृदय की बात को भी ताड़ गईं, इसलिये श्री महाराज जी से कह ही तो दिया कि आप किसी बात की चिन्ता न करें, यह सब कार्य मैं स्वयं उनसे करा लूँगी, केवल उन्हें मेरे पास शृंगार कुंज में भेज तो दें श्री किशोरी जू ने गुप्तरूप से पंडित दुर्गादत्त जी के द्वारा श्री मान् श्री अवधनरेश जी के यहाँ से एक बहुमूल्य नई राजसी पोशाक भी मंगवा रक्खी थी; इसके अतिरिक्त राजा सा० का मोटर एवं आठ सिपाही भी पोशाक एवं बन्दूकों से सुसज्जित होकर बिहौती भवन पहुँच चुके थे, मुझे ज्यों ही श्री पुजारी जी ने सन्देसा दिया मैं तुरन्त श्री सिद्धकिशोरी जी के समीप पहुँच गया तो श्री किशोरी जी ने मेरा हाथ पकड़ा और भैया २ कह कर अपने समीप बैठा कर कहने लगीं कि आप का तिलक कुछ बिगड़ गया है, लावो उसे सुधार दूँ, इतना कहते ही अपने कर कमलों द्वारा मेरा तिलक सुधार कर केसरिया चन्दन की खौर भी लगा मेरे सामने राजसी पोशाक का एक बक्स भी रख दिया, और मुझे आज्ञा दी कि भैया जी इन वस्त्रों को पहिन लें, आप के ही द्वारा आज श्री राम जी की तिलक विधि कल बिवाह एवं परसों कलेवा उत्सव होगा, बस इस प्रकार आज से हमारा आप का तो बहिन भाई का एवं श्री राम जी से आप का सार बहनोई का दिव्य नाता दृढ़ हो जायगा, यह नाता अटल रहेगा, जो कभी टूट न सकैगा, इतना सुनते ही मुझे तो भारी संकोच हुआ, मेरी प्रार्थना थी, कि मैं एक कुरूप डाढ़ी मूँछ वाला बाबा जी इस योग्य कदापि नहीं हूँ कि राजसी शृंगार धारण करके बिवाह की रस्म को अदा कर इस भावना को भी निभा सकूँ, यह सेवा तो किसी सुन्दर बालक से ही लेनी उचित है।

मेरा उत्तर सुनते ही श्री किशोरी जी मचल कर कहने लगीं कि मैं तो आपको श्री जानकी कुंड से अपना लक्ष्मीनिधि भैया मान चुकी हूँ फिर आप टाल मटोल क्यों कर रहे हैं। क्या दाढ़ी मूँछों वाले भैया नहीं होते हैं? यदि आप ने राजकुमार का शृङ्गार न किया तो मैं भी अपना शृङ्गार न करूँगी, और भोजन भी न करके भूखी सो जाऊँगी।

सज्जनो! श्री किशोर जी के इस प्रकार के वचन सुनते ही मैं तो सहम गया। मेरी साँप, छछूँदर की सी दशा हो गई। मैं तो सोच सागर में गोते लगाने लगा; कि अब करूँ तो क्या करूँ? यदि उनकी आज्ञा का पालन नहीं करता, तो भारी अनर्थ हुआ जाता है; और अगर आज्ञा मानता हूँ तो साधु समाज में मेरी भारी हँसी होती है। जब श्री गुरु महाराज को मेरी इस भावना की खबर मिलेगी, तो न जाने वह भी कितने रुष्ट होंगे; और हो सकता है कि मुझसे कुछ रंज मान कर मेरा स्थान से परित्याग भी कर दें, मुझे चिन्तित और मेरा मुख मलीन देखते ही अन्तर्यामिनी श्री किशोरी जी मेरे मन की गति को तुरन्त जान गईं; और कहने लगीं कि आपके श्री गुरु जी महाराज रुष्ट न होकर; आपकी इस भावना को देख सुन कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। इस भावना द्वारा आपकी सम्पूर्ण मनोकामनायें पूर्ण होकर आपको अति सुख और परमानन्द भी प्राप्त होगा, अच्छे भावुक संत जन आपके इस भेष व भावना को देख सुनकर प्रफुल्लित होंगे, आपसे अधिक स्नेह प्रेम भी करेंगे। यदि कोई अभागा आपसे रुष्ट होगा तो उसकी चिन्ता नहीं; उस समय कई प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित थे। जिनमें से श्री स्वामी सत्याशरण जी महाराज एवं श्री पूज्य धर्म भगवान जी भी थे, इन्होंने मुझे उपदेश दिया कि अपने ऊपर श्री किशोरी जी की असीम कृपा समझो, जो आपका संसारी झूठा नाता तोड़ कर

दिव्य नाता जोड़ रही हैं; तब मैंने उनकी आज्ञा को सिरोधार्य किया; मेरे मन का सब मलाल जाता रहा प्रसन्नता पूर्वक शृङ्गार करके तैयार हो गया; मेरा किरीट-मुकुट एवं शिरपेंच स्वयं श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपने ही कर कमलों से पहिनाया; उधर तिलक की समस्त सामग्री पहिले से ही तैयार रखी थीं; सब सिपाही भी सुसज्जित हुये केवल मेरी ही प्रतीक्षा कर रहे थे; मंडप में जाते समय मैंने श्री किशोरी जी से प्रार्थना की कि मुझे सभा में बोलने में संकोच लगेगा, इसलिये मौन रह कर ही सब कार्य करूँगा, मुझे मुख छिपाने के लिये अपना प्रसादी रूमाल दे दिया जाय; इतना सुनते ही श्री किशोरी जी ने मुसकरा कर कहा कि भइया जी। रूमाल तो मैं दे देती हूँ; परन्तु मेरी इस बात को भी याद रखना कि आज आप दरवार में इतना बोलेंगे जिसकी कोई सीमा नहीं; मैंने रूमाल ले लिया, उनको प्रणाम कर आशीर्वाद ले मँडप की ओर चल दिया, मेरे पहुँचते ही तिलक की सब सामग्री मंडप के समीप पहुँच गई; और बन्दूकें भी चलने लगीं; श्री पुजारी जी महाराज मेरा राजकुमार का शृङ्गार देखकर मुसकराये; और कहने लगे कि श्री किशोरी जी ने असम्भव को भी आज सम्भव कर डाला, उस समय तुरन्त नाऊ को बुलाया उसे आज्ञा दी कि भैया लक्ष्मीनिधि जी श्री मिथिला जी से तिलक की सामग्री लाये हैं; पहिले इनके चरण पखार कर इनको आसन पर विराजमान करा दो; तभी तुम्हारा नेग मिलेगा, इतना सुनते ही नाऊ ने जल लाकर पहिले तो मेरे पाँव धोये, फिर मेरे बैठने के लिये एक पत्तल का आसन बिछा दिया, पाठको ! मेरे बराबर बड़भागी कौन हो सकता था, जिसका क्रीट मुकुट स्वयं श्री किशोरी जी ने अपने ही कर कमलों द्वारा धारण किया हो ? फिर इधर मेरे लिये एक पत्तल का आसन बिछाया जाना कितना अपमान जनक था उसको मेरा ही दिल जानता

है, भरे दरबार में एक नाऊ द्वारा अपना इस प्रकार का निरादर देख कर मुझे तो आवेश आ गया; मैंने नाऊ को बुरी तरह से फटकारा और पूँछा कि अरे मूर्ख! क्या मेरे वैठने के लिये यही आसन लाया है? उसने उत्तर दिया हाँ सरकार! यह सुनकर मेरा क्रोध वढ़ा और जोश में कहना पड़ा। मुझे भारी प्रसन्नता थी कि हमारी लाड़ली वहिन श्री चक्रवर्ती राजकुमार के यहाँ रह कर सुख पायेंगी; परन्तु आज पत्तल का आसन देखते ही मुझे भारी खेद हुआ कि जिन के घर में वैठने के लिये आसन तक का ठिकाना नहीं, फिर वहाँ सुख कहाँ? मेरे सव विचार मिट्टी में मिलगये और मेरी आशा निराशा के रूप में वदल गई।

सज्जनो! मेरा यह सम्वाद सुनते ही दरवार में सन्नाटा छा गया, हज़ारों दर्शक मेरे मुख की ओर ताकने लगे, चारों तरफ से गुन गुनाहट के शव्द मेरे कानों में भी पड़ने लगे, कि अरे यह तो कर्वी (चित्रकूट) स्थान के अधिकारी हैं। और यह भी देखने सुनने में आया कि श्री सिद्धकिसोरी जू के कथनानुसार प्रेमी भावुक जनों को मेरी यह भावना एवं राजसी शृंगार तो अच्छा लगा परन्तु जो कोई भावुक तथा प्रेमी न थे, उनको ज़रूर मेरी यह भावना भी अच्छी न लगी और भेस भी खटका, तभी तो कोई २ कहने लगे कि साधु होकर भी साले ने कोट पाजामा पहन रक्खा है। उधर अटारी में खड़े २ श्री किशोरी जी मेरा चरित्र देख सुन कर मुस्करा रही थीं, मौका पाकर श्री पुजारी जी ने मुझे समझाया कि हमारे यहाँ की विधि ही इसी प्रकार की है, और कोई बात नहीं है। आप चिन्ता न करें, आप की कृपा से श्री चक्रवर्ती महाराज के यहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं हैं, यहाँ आप की वहिन जी को कोई कष्ट न मिलैगा, इतना कहकर मानो मेरे क्रोध की अग्नि पर

पुजारी जी ने पानी डालते हुये उसे ठंडा कर दिया, मेरा क्रोध तुरन्त शान्त हो गया। मैंने अपने शब्दों को वापस ले लिया, और तिलक की विधि आरम्भ होने लगी; सर्व प्रथम मैंने अपने हाथों से दूल्हा भेष श्री राम जी के उन चरण कमलों को पखारा; जिनके दर्शनों के लिये देवी देवता एवं बड़े २ ऋषी महर्षि तरसा करते हैं, उसके पश्चात् वस्त्र तथा आभूषण पहना कर द्रव्य से पूजन किया, अन्त में आरती एवं निछावर विधि हुई; वहाँ की अन्तिम विधि यह भी थी, कि सार-बहनोई परस्पर हाथ से हाथ मिला कर गले लगें। मैंने दास भावना के अनुसार सरकारी चरण सेवा को छोड़ कर कभी उनके दूसरे अङ्ग को स्पर्श तक न किया था; यह केवल श्री सिद्ध-किशोरी जी की कृपा है जो सरकार से गले लगने और हाथ से हाथ मिलाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, उस समय मेरे स्नेह की धारा उभड़ उठी; जिसको यह जड़ लेखनी लिखने से लाचार है, उत्सव समाप्त होने के पश्चात् ज्यों ही मैंने शृंगार कुंज में जा कर श्री किशोरी जी के चरण स्पर्श किये, तो वे मुस्करा कर बोलीं कहो भैया जी कहाँ गया आप का वह मौन व्रत्त और क्या हुआ वह रेशमी रूमाल जिससे मुँह छिपा कर गये थे; मैंने केवल यही उत्तर दिया कि आप की लीला अपरम्पार है, भला यह शक्ति किसमें है कि आप की लीला को कोई जान सके! उस दिन से न जाने मेरी लाज कहाँ चली गई! श्री किशोरी जी की आज्ञानुसार मैं चार महीना तक उनकी सेवा में भी रहा; देसाटन भी खूब हुआ, लेखनी नहीं मानती, इसलिये कुछ संक्षेप रूप से चार महीने की घटनाओं को भी जो कि मेरे ही सामने हुई थीं उनको भी लिखूँगा, मैंने आज तक उनकी आज्ञाओं का पालन किया; और जब तक उनकी इच्छा होगी, भविष्य में भी पालन करता रहूँगा। दिव्य नाता

हो जाने से मेरा मन अब कभी सरकारों से चलायमान नहीं हो सकता। श्री विहौती भवन के वर्तमान लीला स्वरूपों में भी मेरा पूर्ण आदर भाव है; एवं स्नेह भी कुछ कम नहीं है, पहिले समाज में केवल जुगुल सरकार रहते थे, परन्तु इधर १५/१६ वर्ष से चार जुगुल अर्थात् आठ स्वरूप रहते हैं, इन सब की सेवा करने अथवा इनकी सीथ प्रसादी लेने में भी न तो कोई शर्म है न संकोच न ही कोई हिचक है, किसी प्रकार की घृणा, और हिचक तो तब हो, जब कि नाता कच्चा हो; जहाँ नाता अटल और अचल हो, वहाँ हिचक और ग्लानि कैसी ?

(७५) सज्जनो ! श्री सिद्ध किशोरी जू के लिये मेरा हृदय विचित्र प्रेमावेश में निरन्तर मग्न रहा करता है। कभी मिलने की मधुरता में मग्न, तो कभी विरह की व्याकुलता में व्यथित। क्या उनके उस समय का आनन्द एवं अनुपम सुख इस जड़ लेखनी द्वारा कागज पर लिखा जा सकता है ? कदापि नहीं। उनकी दयालुता और उदारता का कथन करना लेखक की साधारण बुद्धि से परे है। यों तो श्री किशोरी जी समस्त शुभ गुणों की भण्डार ही थीं, परन्तु उनके उदारता गुण की याद आते ही उनकी मानसिक मूर्ति भी मेरे नेत्रों के सामने आ जाती है, जैसे चुम्बक लोहे को खींच लेता है, ठीक उसी प्रकार उनकी सरसता एवं सरलता भी हृदय को खींच लेती थी, किसी भी निर्धन या दुखी को आप देख लेतीं, तो उसको धन, धान्य, वस्त्रादि से संतुष्ट किये विना न मानती थीं, आप अपने ओढ़ने पहरने के वस्त्र तक भी किसी याचक की याचना पर प्रसन्नता पूर्वक दे दिया करती थीं। चाहे मनुष्य में करोड़ों गुण क्यों न हों यदि उसमें उदारता नहीं, उसका हृदय कृपण है तो उसके समस्त गुण व्यर्थ हो जाते हैं। कंजूसी तो एक दुर्गुण है, जैसे मनुष्य

सर्वाङ्ग सुन्दर हो. और उसके मुख पर थोड़ा सा कुष्ट हो, तो जैसे थोड़ा सा कुष्ट सभी सौंदर्य को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार कृपणता भी सभी सद्गुणों पर पानी फेर देती है।

सज्जनो ! उनकी उदारता की एक दलसिंहसराये की घटना मुझे याद आ गई है; हम लोग जब दलसिंहसराये पहुँचे तो स्टेशन पर उतरते ही श्री जुगुल सरकार की अनुपम सुकुमारता एवं आभा को देख २ कर सैकड़ों लोग जमा हो गये; मानो एक मेला सा लग गया। कुछ प्रेमी जन तो दर्शन करते मात्र ही करुणा एवं प्रेम से पिघल गये; और मुझसे कहने लगे कि यह श्यामगौर दोनों सुकुमार तो आँखों में बिठलाने योग्य हैं, फिर आपने इनको लकड़ी की कुर्सियों पर कैसे बैठा रखा है, इनका शुभ-नाम क्या है ? किस देश को अपने बिछोह से व्यथित करके इस देश में किस बड़भागी के यहाँ पधारे हैं, फिर यहाँ से किस देश के प्रेमी समाज के नेत्रों को सुफल करने का विचार है, कृपया इनका सत्य २ परिचय तो बतलाइये ?

सज्जनो ! मेरा उत्तर यह था, कि कौशल देश के श्री अयोध्या नगर से पधारे हैं; एक महारानी श्री कौशिल्या अम्बा जू के लाल हैं; तो दूसरी श्री सुनयना अम्बा जू की लली; श्याम वर्ण वाले तो मेरे प्रिय बहनोई श्री रामजी एवं गौर वर्ण वाली मेरी प्रिय लाड़ली बहिन श्री किशोरी जी हैं, मैं लक्ष्मीनिधि श्री किशोरी जी का भैया अपने परम आदरणीय पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री विदेहराज पिता श्री जनक जी महाराज की आज्ञानुसार इन को अपने घर श्री जनकपुर लेजारहा हूँ; वहाँ हमारे पाहुन कृपा कर हमारे ही महलों में कुछ काल निवास करके सबको सुख देंगे; अब इस समय मार्ग का परिश्रम निवारणार्थ तथा आप सब प्रेमी जनों के नेत्रों को सुफल बनाने की इच्छा से भक्त

श्री चन्द्रकला शरण जी के परमाग्रह एवं अनुरोध पर ही केवल दो दिन के लिये इनके पाहुने बनकर इन्हीं के सुन्दर बगीचे में निवास करेंगे। सबेरे से सन्ध्या तक के प्रेमी लोग जो सरकार के आगमन की प्रतीक्षा में भूखे प्यासे स्टेशन पर पड़े थे, इतना सुनते ही उन सब की आँखों से प्रेम की वर्षा होने लगी और उसी वर्षा के जल से इन प्रेमी जनों ने श्री जुगुल सरकार के चरण कमल पखारे तथा आनन्द रस में स्वयं भीग गये। यहाँ तक कि किसी को शरीर की थकावट एवं भूख प्यास तक का ध्यान ही नहीं रहा। कुछ देर के बाद होश आने पर सब लोग बाजे गाजे के सहित पुष्पों की वर्षा करते हुये मोटर द्वारा आदर पूर्वक अपने ग्राम के बाहर ले जाकर अपने ही बगीचे की कोठी में निवास स्थान दिया; चन्द्रकला शरण जी पुजारी जी के अनन्य प्रेमी श्रद्धालु शिष्य हैं; आपके ही प्रेम के कारण समाज को वहाँ दस बारह दिन तक रुकना पड़ा; तब आनन्द की खूब वर्षा हुई, जिसको वहाँ की प्रेमी जनता ने नेत्रों के प्यालों से छक २ कर छवि सुधा का पान किया।

सज्जनो! कई बार देखने में आया कि श्री सिद्धकिशोरी जी के सामने यदि कोई दैन्य पुरुष आ जाता तो आप उसके यथोचित कष्ट निवारन का प्रयत्न करतीं; आपमें अपूर्व त्याग भी था, एक दिन एक दुखी जाड़े के मारे काँपता हुआ आपके दर्शनार्थ बगीचा में चला आया, आपको उसकी दैन्य दुखी दशा पर दया आ गई; तुरन्त बहुमूल्य अपना दुशाला उतार कर उसको उढ़ा दिया, एवं औषधि के लिये भी दस रुपया नकद दे उसे भोजन कराके बिदा कर दिया। अहा! धन्य है आपकी उदारता, दयालुता एवं परोपकार को! निस्वार्थ प्रेम एवं सेवा इसी को कहा जाता है।

(७६) श्री विहोती भवन में प्रधान विवाहोत्सव तो पञ्चमी

को कलेवा उत्सव छठ को हुआ करता है। एवं चौथारी उत्सव; के साथ २ भण्डारा भी प्रतिवर्ष अष्ठिमी को हुआ करता है, इस अवसर पर श्री पुजारी जी महाराज अपनी उदारता प्रेम, एवं त्याग का पूर्ण परिचय दिया करते हैं, पहिले तो प्रतिवर्ष चिट्ठी बाँट कर ही संत महन्तों को निमंत्रण दिया जाता था परन्तु इस वर्ष श्री सिद्धकिशोरी जी ने एक हजार मूर्ति के लिये सामग्री का प्रवन्ध हो जाने के पश्चात् ही श्री महाराज जी को वाध्य किया कि आज दिन से इस भण्डारा के लिये चिट्ठी द्वारा किसी को निमंत्रण न भेजा जावे, जो कोई भी संत, महन्त, अभ्यागत अतिथि सेवक एवं कंगले, आ जावैं, तो उन सब को सादर प्रेमपूर्वक पंगत में ही बिठा कर समस्त सामग्री (भोगपदार्थ) से पूर्ण कराया जाय। इतना सुनते ही पुजारी जी कुछ संकुचित हुये ऐसा न हो कि मूर्तियों के बढ़ जाने से सामग्री कम पड़ जाय; परन्तु श्री सिद्धकिशोरी जी ने उन्हें पूर्ण विश्वास दिलाया कि यदि किसी का अपमान न हुआ तो सामान कदापि कम न पड़ैंगा, किन्तु बच ही जायगा; और ठीक हुआ भी ऐसे ही !

सज्जनो ! एक हजार मूर्तियों के लिये सामग्री का प्रवन्ध होने पर लगभग चार हजार मूर्ति पंगत में जमा हो गये; अटूट खर्च होने पर भी सामान बच ही गया, मालपुआ तो इतना बचा जो चार दिन तक अटूट खर्च करने पर ही खतम हुआ। केवल भोजन ही नहीं, भोजन के पश्चात् सब को विदाई में भी किसी को थाल किसी को लोटा, किसी को गिलास तो किसी को कटोरा; किसी को रामायण; तो किसी को छात्ता; किसी को खड़ाऊँ; किसी को चट्टी; किसी को अचला तो किसी को दुपट्टा; किसी को धोती तो किसी को चदरा; किसी को साफी तो किसी को माला झोरी, किसी को कुछ किसी को कुछ सब

संत महन्तों को विदाई की वस्तु के साथ साथ द्रव्य भी दिया गया, समस्त गरीब कंगले भूखे नंगों को भी बैठा कर ही भोजन से पूर्ण कराया गया, ऐसा कोई न था जो इस दरबार से खाली गया हो श्री सिद्ध किशोरी जू के आशीर्वाद एवं आज्ञानुसार प्रति वर्ष इस प्रधान भंडारे में ऐसे ही हुआ करता है, सामान कभी कम नहीं पड़ता बल्कि बच ही जाता है, जिसको श्री पुजारी जी कई दिनों तक स्थान २ में घूम कर स्वयं अपने ही हाथों से प्रसाद रूप में मालपुआ द्रव्य एवं वस्त्रादि वितरण किया करते हैं। श्री पुजारी जी पर तो श्री सिद्ध किशोरी जी की पूर्ण दया एवं असीम कृपा हो चुकी है, तभी तो आप किसी दूसरे की सहायता कभी नहीं चाहते, और सच भी है, दयानिधान की दया जिस किसी भी भाग्यशाली के ऊपर हो जाती है, तब वह दूसरे के सहारे की परवाह ही कब करता है ? लक्ष्मीपति जिसके स्वयं अपने हो गये, तो वह संसारी लक्ष्मी के झूँठे विलासों को महत्व भी कब दे सकता है।

(७७) किसी महात्मा ने विहोती भवन में आकर श्री सिद्ध किशोरी जी को बाध्य किया कि हम से किसी वस्तु की सेवा स्वीकार की जावे, लाचार श्री किशोरी जी ने उस से थोड़ा करेले का मुरब्बा लाने को कह दिया, वह फैजाबाद से प्रयाग तब काशी होता खाली हाथ वापस आया, करेले का मुरब्बा उसे कहीं भी नहीं मिला, तब श्री किशोरी जीने मुझसे कहा, भइया जी ! आप ही करेले का मुरब्बा लाइये। मैंने निवेदन किया कि कहीं करेले का मुरब्बा भी होता है ? तो श्री किशोरी जी ने कहा कि हाँ, आप ही ने तो एक दिन हमको खिलाया था, मैंने उत्तर दिया, कि वह करेले का नहीं, परवल का मुरब्बा था, परन्तु श्री किशोरी जी का बार २ यही कथन था कि नहीं वह परवल का नहीं किन्तु करेले का ही मुरब्बा था। ज्योंही ही मैं उस परवल के मुरब्बे का

वर्तन उठा कर लाया तो क्या देखता हूँ कि उसमें करेले का ही मुरब्बा भरा है, श्री किशोरी जी ने उसका भोग लगाकर सब प्रेमियों को भी प्रसादी बाँटी तो वास्तव में वह करेला ही निकला इस चमत्कार को देख सुन कर सब लोग दंग रह गये, और वह प्रेमी तो छक ही गया।

(७८) एक दिन श्री जुगुल सरकार बिहौती मंदिर के बाहर आँगन में टहल रहे थे कि इतने में एक संत आ के खड़ाऊँ उतार कर मन्दिर में दर्शनार्थ चले गये, वापस लौट कर ज्योंही वह खड़ाऊँ पहनने लगे, तब श्री किशोरी जी ने संत जी से पूँछा कि यह सुन्दर खड़ाऊँ कहाँ की बनी हैं उत्तर मिला कि हमने इनको पीलीभीत से अपने गुरू जी के निमित्त खरीदा था, और गुरू जी ने इन को कुछ दिन पहन कर प्रसादी हमें दे दी हैं, बस इतना सुनते ही श्री किशोरी जू को भारी दुख हुआ, महात्मा जी से पूछने लगीं कि चेला के लिये गुरू की प्रसादी खड़ाऊँ पाँवों में पहिनना किस शास्त्र में लिखा है ? शिष्य का धर्म है कि अपने गुरू की पादुका की प्रतिदिन सेवा पूजा करे और उनका चरणामृत लेवे, देखिये ! श्री भरत जी महाराज ने श्री राम जी महाराज की पादुकाओं का कितना भारी आदर सत्कार किया था, वह तो अपने भाई कीं पादुका को शिर पर रख कर चित्रकूट से लाये, परन्तु कितने दुख का विषय है कि आप अपने गुरूदेव की पादुका पावों में पहिने घूमते फिरते हैं। बस इतना सुनते ही महात्मा जी निरुत्तर होकर लज्जित भी हुये और श्री किशोरी जी के चरणों में गिर कर अपराध की क्षमा भी माँगी। श्री सिद्ध किशोरी जी की इस प्रकार की गुरूनिष्ठा पर सब लोग प्रसन्न हुये और उनके सुन्दर भाव तथा गुरू भक्ति की सराहना करने लगे।

पाठको ! मुझे इस समय एक घटना की याद आ गई है,

श्री पुजारी जी महाराज कहा करते हैं कि मैं एक समय श्री जुगुल सरकार के समीप मन्दिर में बैठा कुछ सत्संग वार्ता कह रहा था, इतने में कोई भला आदमी मेरे पास आया, और कुछ वार्तालाप करने लगा, वार्तालाप होते होते उसने हमको कुछ तर्कना पूर्वक कठोर शब्दों में धमकी भी दे डाली. यद्यपि १०-१२ अन्य प्रेमी लोग भी उस समय वहाँ बैठे थे, मगर किसी की भी हिम्मत न पड़ी, कि उस भले आदमी को चुप करा दे परन्तु धन्य है, श्री सिद्ध किशोरी जी की गुरू निष्ठा, प्रेम, भक्ति, साहस एवं निडर पने को। आपका मुखारविन्द उस समय लाल २ हो गया, हाथ में एक डंडा उठा कर उस आदमी को डाटने लगीं कि बस चुप हो जाओ, अगर तुमने फिर हमारे श्री गुरू महाराज को हमारे सामने धमकी दी, अथवा कोई अप-शब्द कहा, तो इसी डंडा से तुम्हारी खोपड़ी फोड़ दूँगी; श्री महाराज जी ने तुरन्त श्री किशोरी जी को तो अपनी गोदी में ले लिया, और वह भला आदमी लज्जित होकर चुपके से खिसक गया, इनके तेज व प्रभाव के सामने उस की दाल न गली, और बोलती बंद हो गई।

(७६) श्री भंडारा उत्सव के दूसरे दिन एक साधू (श्री मनी-रामदास जी विद्यार्थी श्री जयदेव वैष्णवसंस्तकृत कालेज कर्वी (चित्रकूट) मुझ (लेखक) से श्री विहौती भवन में आकर मिले, मैं उनसे स्थान का एवं श्री गुरू महाराज जी का कुशल समाचार पूँछ ही रहा था, कि श्री किशोरी जी ने मुझ से पूँछा कि भैया जी ! यह साधु कहाँ रहते हैं ? मैंने उत्तर दिया कि यह हमारे ही स्थानीय कालेज के विद्यार्थी हैं, तब श्री किशोरी जी ने उनको कुछ मालपुआ जल पान करने को देकर कुछ वस्त्र भी उन को देने के लिये मुझ से पूँछा, मैंने निवेदन किया जो आप की इच्छा, श्री किशोरी जी ने इनको अपने शृंगार

का प्रसादी लहँगा देने की इच्छा प्रकट की मगर मेरा निवेदन था कि यह साधु केवल विद्यार्थी हैं, यह लीला स्वरूपों के भावुक या प्रेमी नहीं हैं, कहीं ऐसा न हो कि लहंगे का तिरस्कार कर दें, अथवा आपके प्रति कोई कटु शब्द का प्रयोग भी कर बैठे, इसलिये इसको कोई दूसरा वस्त्र दे दिया जाय, परन्तु अन्तर्यामिनी श्री किशोरी जी ने कहा कि भैया जी! जितनी प्रसन्नता इनको लहँगे के मिलने से होगी, उतनी खुशी किसी दूसरे वस्त्र से न होगी, इतना कहकर आप अन्दर चली गईं, दो बीड़ा पान एवं एक अपना प्रसादी लहँगा लाकर उनको दे ही तो दिया, न जाने उस लहँगा में कोई आकर्षण था, अथवा सरकारी स्पर्श में ही कोई जादू था, कि तुरन्त महात्मा जी उन के चरणों में गिर पड़े, चरण स्पर्श करके उठते ही लहँगे को अपने गले में डाल खूब नाचने लगे, इधर तो उनकी अश्रु-धारा चल रही थी, उधर लहँगे को अपनी आँखों पर लगा २ कर अपने भाग्य की सराहना करते हुये कह रहे थे अहोभाग्य! जो आज श्री किशोरी जी ने अपना प्रसादी लहँगा देकर अपनी अन्तरंगसखी बनाना हमको स्वीकार किया है, उस समय उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न थी, इसी प्रकार उछलते कूदते प्रसन्न होते थोड़ी देर के बाद महात्मा जी ने उस लहँगा को तो लपेट कर बगल में दबाया, और गोलाघाट के महन्त श्री पुरुषोत्तम शरण जी के समीप तुरन्त जा पहुँचे। यहाँ का सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कह सुनाने के बाद प्रार्थना की, आप रसिक आचार्य हैं, हमको सखी भावना का सम्बन्ध पत्र शीघ्र देने की कृपा करें, कारण कि श्री किशोरी जी का यह प्रसादी लहँगा इस बात का सूचक है कि उन्होंने हमको अपनी अन्तरङ्ग सखी बनाना स्वीकार कर लिया है। यदि ऐसा न होता तो हमको अपना लहंगा क्यों देतीं? कोई दूसरा ही वस्त्र क्यों न

दे देतीं ? महात्मा जी की ऐसी सुन्दर भावना एवं उत्कट अभिलाषा को टाल न सके, इस लिये श्री महन्त जी ने सखी भावना का सम्बन्ध पत्र उनको दे ही तो दिया। दूसरे दिन वह खुशी २ विहौती भवन में आये, श्री किशोरी जी के चरणों का चरणामृत पान करने के पश्चात केवल एक दिन भोजन भी किया, फिर उस दिन से आज तक उनका दर्शन मुझे नहीं हुआ। भगवान की लीला भगवान ही जानें, न जाने इसमें भी क्या रहस्य भरा था।

(८०) एक दिन श्री सीतामढ़ी के श्री अयोध्या बाबू मुख्तार-अदालत एवं पटना के स्पीकर साहब तथा पं० दुर्गादत्त जी विहौती भवन में श्री किशोरी जी के समीप बैठे हुये कुछ वार्तालाप कर रहे थे, इतने में मैं भी (लेखक) वहाँ पहुँच गया। सत्संग हो ही रहा था कि अकस्मात श्री किशोरी जी उठ खड़ी हुईं और घबरा कर मुझसे कहने लगीं; भैया जी, २ ! आपका जल का लोटा कहाँ है ? जल्दी लाओ। मैंने सोचा कि इनको अधिक प्यास लगी है, इसलिये उतावली हो रही हैं, मैं भी तुरन्त उठा और जल के लोटे के साथ २ गिलास भी ले आया। सरजू जल भरा लोटा मेरे हाथ से छीनकर समस्त जल धरती पर गिरा दिया; और खाली लोटा मेरे सामने रख कर मन्द मन्द मुस्कराने भी लगी; मैंने दिल में अनुमान किया कि श्री किशोरी जी ने मुझे छकाने के लिये ही आज यह हँसी की है तो इधर मैं भी विनोदार्थ उनसे मचल कर कहने लगा कि बहिन जी। आज आप ने हँसी करके मेरा समस्त सरयू जल व्यर्थ में गिरा दिया है; इसलिये मैं आज भोजन नहीं करूँगा; परन्तु किशोरी जी ने मुझे प्रेम पूर्वक पुचकारते हुये कहा कि भइया जी मैंने व्यर्थ में में आपका जल नहीं गिराया; केवल परमार्थ में ही इसको खर्च किया है। इसमें आपको भी पुन्य होगा, देखिये। अयोध्या बाबू के मकान पर उनकी पूजन की धूप दीप से अग्नि सुलग रही

थी, यदि मैं पानी न डालती, तो इनको बहुत हानि पहुँचती; अभी तो केवल एक ही कपड़ा जला है, यह सुनकर सबको अचम्भा हुआ, अयोध्या बाबू घटना स्थल पर आये, तो देखा कि वास्तव में बात सच्ची है, तभी से वह श्री किशोरी जी को अपना सर्वस्व और प्राण ही मानने लगे थे और कई बार सीतामढ़ी में भी सरकारों को ले गये; अपने ही क्वार्टर में आठ दस दिन रख कर खूब आनन्द एवं सुख लिया, श्री सिद्धकिशोरी जी के इस प्रकार के अनेक चमत्कारों को देख सुन कर लोगों को इनमें अटूट श्रद्धा होने लगी, सीतामढ़ी में अच्छे २ हाकिम एवं अहल-कारों को माला झोली गले में डाले भजन करते मैंने स्वयं देखा है यह सब प्रेमीजन सन्ध्या समय प्रतिदिन कीर्तन भवन में आकर कीर्तन भी किया करते थे।

(८१) भंडारा उत्सव समाप्त होने के बाद निमंत्रण में बाहर जाने के लिये मुहूर्त निकाला जा रहा था, तो श्री सिद्ध-किशोरी जी ने तुरन्त मना करते हुये श्री पुजारी महाराज से कहा कि श्री हजारा बाबा जो कई दिनों से बीमार पड़े हैं, वह केवल तीन दिन के ही मेहमान हैं, आज से निश्चय तीसरे दिन यह परलोक की यात्रा करेंगे, इसलिये पहिले इनकी यात्रा होने दें। तब कहीं की यात्रा के लिये मुहूर्त निकालना, श्री पुजारी जी इनके कई चमत्कार देख सुन चुके थे, इसलिये इनका कहना मान कर यात्रा स्थगित कर दी, ठीक तीसरे दिन महात्मा जी परलोक सिधार ही तोगये। इसको कहते हैं अन्तर्यामीपन एवं सिद्धि चमत्कार।

(८२) विहौती समाज श्री अयोध्या जी से चलकर जिस समय कानपुर स्टेशन पर पहुँचा, उस समय के स्वागत का वर्णन करना कठिन है। गाजे बाजे एवं अनेक प्रकार की सवा-रियों और प्रेमियों द्वारा अगवानी होकर स्वागत हुआ। बाद-शाही नाका में सेठ श्री हुलासीलाल, रामदयाल जी के मन्दिर

में आठ दस दिन तक अष्टयाम विधि अनुसार ही श्री विवाह कलेवा, झांकी उत्सव बड़े ही समारोह के साथ हुये, स्वामी श्री सत्याशरण जी एवं श्री धर्मभगवान जी, श्री अवध से कुछ पहिले कानपुर पहुँच चुके थे; आपके ही सुप्रबन्ध से यह महोत्सव सानन्द एवं निर्विघ्न समाप्त हुआ। सेठ जी के सब लड़कों ने अपने २ घरों में ले जाकर बड़े उत्साह, श्रद्धा और प्रेम से समाज का आदर सत्कार एवं मानसंम्मान किया। पाँव पुजाई एवं विदाई के समय तो अनेक प्रकार के बहुमूल्य वस्त्रों एवं रजत पात्रों से सेठ जी के समस्त परिवार ने श्री जुगुल सरकार की सेवा करते हुये अपनी प्रेमाभक्ति एवं उदारता का पूर्ण परिचय दिया।

इस मन्दिर के अतिरिक्त शहर में लक्ष्मीनारायण जी पांडे के यहाँ भी विवाह—कलेवा उत्सव बड़े समारोह के साथ हुआ। इन लोगों ने भी तन, मन, धन, से सरकारी सेवा करके अपने प्रेम व भक्ति का परिचय दिया। श्री जुगुल सरकार की अनुपम एवं मधुर रंगीली झाँकी तथा विवाह-उत्सव का दर्शन करके कानपुर की जनता तो कृत कृत्य एवं निहाल हो गई।

कानपुर में एक दिन झाँकी होते समय श्री सिद्धकिशोरी जी ने अकस्मात मुझसे (लेखक) कहा कि भइया जी; आपके स्थान कर्वी में एक बूढ़े महात्मा तपस्वी सियारामदास जी की (जिनकी आयु १०० वर्ष से अधिक हैं) कल मृत्यु होने वाली है। आपको आपके श्री गुरु महाराज जी बुलावेंगे। परन्तु आपका तो अन्न-जल यहाँ का लिखा है; तब वहाँ कैसे जा सकेंगे। ठीक हुवा भी ऐसे ही ! महात्मा जी परलोक भी सिधार गये। श्री गुरु महाराज जी का पत्र भी श्री स्वामी जी के नाम से आया, कि हमारे शिष्य चिरंजीवी रामगोपाल दास को शीघ्र भिजवा दिया

जाये; महात्मा जी की तेरही तिथि पर कुछ भंडारा करने का विचार है। इसलिये दो गाँठ कपड़ा मारकीन भी वहाँ से लेते आना।

देखिये सज्जनो! श्री किशोरी जी के कथनानुसार मैं कर्वी स्थान में भी नहीं गया वहाँ से दूसरा आदमी आकर कानपुर से कपड़ा खरीद कर ले गया। मेरा अन्न जल यहाँ का था इसलिये गुरु महाराज जी की आज्ञा का पालन भी न कर सका। सरकारी सेवा में रहकर यहीं आनन्द लेता रहा! देखिये श्री किशोरी जी की भविष्यवाणी कितनी सच्ची निकली।

(८३) फतेहपुर अन्तर्गत श्री सीताराम मन्दिर गुरुधौली (औंग)के भावुक महन्त श्री सियाराम शरण जी महाराज के निमंत्रण पर जिस समय बिहौती समाज औंग स्टेशन पर पहुँचा उस समय श्री महन्त जी ने कई प्रेमियों के सहित उत्साह पूर्वक गाजे बाजे द्वारा अगवानी की, गुरुधौली जाने के लिये कई सवारियों के साथ २ रोशनी का भी बहुत अच्छा प्रबन्ध था, वहाँ पहुँचते ही द्वारा चार विधि मनाते हुये श्री राम जी की बरात को जनवासा में विश्राम दिया, एवं ब्यारू का भी बहुत ही सुन्दर प्रबन्द किया, दूसरे दिन बरात भी बड़ी धूम धाम से निकली; तीसरे दिन विवाहोत्सव के समय मेरा (लेखक) लक्ष्मी निधि की भावना का राजसी श्रृंगार हुआ देखकर महन्त जी महाराज के मन में भी दूल्हा सरकार के चरणों को पखारने की उत्कट अभिलाषा जग उठी, तभी तो आप भी श्री जनक जी महाराज की भावना से राजसी श्रृंगार धारण करके दरबार में उपस्थित हो गये, इधर मिथिला वासियों का यह रंग ढंग देख कर भला श्री चक्रवर्ती जी महाराज कब चुप बैठ सकते थे, आप भी तुरन्त राजसी श्रृंगार द्वारा सुसज्जित होकर अपने

अवध बासी बरातियों के दरबार में आन पहुँचे; अब विवाह की विधि प्रारम्भ होते ही परमानन्द की वर्षा होने लगी; जिस किसी ने दर्शन किया, निहाल हो गया।

श्री धर्म भगवान जी (जो वहाँ उपस्थित थे) का कथन है; कि गुरूधौली में एक पं० बाबू राम जी हैं; जो कि नितान्त श्री लीला बिहारी स्वरूपों के विरोधी ही बने रहे; श्री विवाह उत्सव का समाचार पाते ही आप के मन में भारी शंका उत्पन हुई कि लड़कों से लड़कों का विवाह कैसा ? तुरन्त घर से मन्दिर की ओर चल दिये, रास्ते में आप ने अपने मन ही मन में यह बिचार लिया था, कि आज येन केन प्रकारेण में उत्सव के रंग में भंग कर दूंगा, और लीला करने वालों से पूछूँगा कि इस प्रकार के विवाह का किस शास्त्र में प्रमाण है, ज्यों ही पंडित जी मन्दिर में पहुँचे, तुरन्त श्री सिद्धकिशोरी जी ने उन को अपने समीप बुलवा कर पहिले तो एक बीड़ा पान उन को दिया फिर कहा पंडित जी ज़रा सावधान हो कर बैठ जावें मैं अभी २ आप को यह प्रमाण दिखलाती हूँ, कि लड़कों का विवाह होना किस शास्त्र में लिखा है, बस इतना सुनते ही पंडित जी के होश ही गुम हो गये, लज्जित होकर श्री किशोरी जी के चरण पकड़ते हुये क्षमा भी माँगने लगे !

पण्डित जी का कथन था कि मैंने केवल अपने ही मन में घर से चलते समय इस बात की शंका की थी, किसी से न इसकी चर्चा की; और न ही किसी से सलाह ली; मेरे यहाँ आते ही श्री सिद्ध किशोरी जी ने जब मेरे मन की बात को जान लिया; तब तो मुझे मुक्त कंठ से यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि यह बालक नहीं; साक्षात श्री किशोरी जी हैं, जो कि बालक के भेष में लीला कर रही हैं, इसलिये मैं भी इनको श्री सिद्धकिशोरी जी

ही करूँगा दूसरे दिन कलेवा उत्सवा में यह पण्डित जी तो सर्व प्रथम ही आ पहुँचे दण्डवत प्रणाम कर आनन्द पूर्वक उत्सव देखने लगे, पहिले जिन स्वरूपों की शीथ प्रसादी को पं० जी लड़कों की जूठन कह कर उससे घृणा किया करते थे, आज उसी जूठन को श्री युगुल सरकार के हाँथों से छीन २ खाते हुये नहीं अघाते। पाठको ! श्री सिद्ध किशोरी जी के एक बीड़ा पान ने आज वह करामात दिखाई, पं० जी की बुद्धि ने ऐसा पलटा खाया, कि जो कल लीला स्वरूपों के विरोधी थे, आज वही इनके प्रेमी भावुक भक्त बन गये।

गुरुधौली से थोड़ी दूर श्री गंगा जी के तट पर प्राचीन ऐतिहासिक तीर्थ स्थान शिवराजपुर (आदि काशी) भी है यहाँ पर मीरा के प्रभु गिरधर नागर जी का प्राचीन मन्दिर है, जिसमें भगवान की शालिग्रामी शिला पर अष्टभुजी मूर्ति की सुन्दर झाँकी है। वहाँ के प्राचीन एक रईस घराने के दोनों भाई भक्त-वर श्री प्रियाशरण जी एवं भक्त ललिता प्रसाद जी भी प्रतिदिन गुरुधौली में अपने प्रेमी समाज के सहित दर्शनार्थ आते रहे, आप दोनों भ्राता भगवत् भागवत एवं श्री लीला विहारी स्वरूपों के भी परम श्रद्धालु प्रेमी भक्त हैं, इस महोत्सव में आप ने अपनी सेवा द्वारा अपने प्रेम भक्ति का पूर्ण परिचय दिया था। आप दोनों भ्राता अभी भी विद्यमान हैं, आप के द्वार पर पहुँचा हुआ कोई भी अतिथि अभ्यागत एवं साधुसंत कभी खाली नहीं जाते, आप बड़े उत्साह से प्रेम पूर्वक साधु सेवा करते हुये उनका मान सम्मान भी करते हैं, आप को सत्संगत बहुत प्रिय है, तभी तो साधुओं के दर्शन मात्र से आप कृत कृत्य हो जाते हैं; आप के पुरुखों द्वारा निर्माण किया हुआ भगवान श्री राधा कृष्ण जी महाराज का गंगा तट पर एक विशाल मन्दिर भी है, जिसमें विधि वत वैष्णव ब्रह्मणों

द्वारा निरन्तर सेवा पूजा होती है; एवं बड़े समारोह के साथ भगवान के उत्सव समइया भी मनाये जाते है; आप का समस्त परिवार स्त्री बाल बच्चे तक वैष्णव हैं एवं सभी भगवान के श्रद्धालु भक्त हैं; प्रतिदिन भगवान के सन्मुख वाद्य यन्त्रों द्वारा भजन गायन एवं भगवत नाम कीर्तन भी किया करते हैं, मुझे (लेखक) भी वहाँ तीन चार वार जा कर दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

(८४) गुरुधौली से लौट कर विहौती समाज को फरूखाबाद के निमंत्रण में जाना पड़ा, पं० श्री शीतलदीन जी उस समय फरुखाबाद में स्कूल मास्टर थे, जिस प्रकार आप भगवत् भागवत के अनन्य उपासक एवं लीला विहारी स्वरूपों के भी कट्टर प्रेमी हैं, उसी प्रकार वहाँ के बाबू भगौती प्रसाद वकील भी हैं आप दोनों के आग्रह एवं निमंत्रण पर ही समाज को फरुखा-बाद जाना पड़ा था, सात आठ दिन तक वहाँ श्री विवाह-कलेवा उत्सव एवं अपूर्व झांकियाँ भी हुई, श्री राम जी की वारात का द्रश्य भी अनूपम एवं अद्वितीय था; जिन २ लोगों ने दर्शन किये मुग्ध हो गये; वहाँ के कई बृद्ध लोगों का कहना था कि हमने अपनी उम्र में आज तक न तो कभी ऐसी वारात देखी है, और न ही दूल्हा स्वरूपों की ऐसी मधुर मनोहर सुन्दर झांकी का ही अवलोकन किया है; वारात के समय हिन्दुओं ने श्री जुगुल सरकार को फूलों के अनेक गजरे पहिनाये; एवं पुष्पों की खूब वर्षा भी की; यह तो उनका पुनीत कर्त्तव्य एवं धर्म ही था, परन्तु उस शुभ अवसर पर वहाँ की मुसलिम जनता भी पीछे नहीं रही; कई मुसल्मानों को भी फूलों की मालायें लाते एवं पुष्पों की वर्षा करते हुये देखा गया था।

पं० शीतल दीन जी का कथन है कि जैसे स्वाती जल बूंदों का पान करने के लिये समुद्र की सीपियाँ मुख खोल देती हैं;

उसी प्रकार श्री सिद्धकिशोरी जी का वचनामृत पान करने के निमित्त प्रेमी लोग भी अपने श्रवण सम्पुटों को खोल कर अपलक नेत्रों से श्री जुगुल सरकार की ओर निहारा करते थे, अन्त तक वह बेचारे अतृप्त ही रहे, उनको तृप्ति नहीं हुई।

फ़रुखाबाद की एक घटना इस प्रकार है, जिस मुकाम पर सरकार ठहरे हुये थे; वहाँ से श्री गंगा जी ६ मील की दूरी पर थी; एक दिन श्री जुगुल सरकार की प्रबल इच्छा श्री गंगा स्नान के निमित्त हुई तो सवारी के लिये प्रेमी लोग पूँछने लगे; श्री किशोरी जी ने तो एक्का ही पसन्द किया, परन्तु श्री राम जी मोटर के लिये चाहना करने लगे, श्री राम जी का कथन था कि एक्के से जाने में देरी होगी, परन्तु श्री किशोरी जी का कथन था कि इस एक्के की बराबरी मोटर न कर सकेगी, दूसरे दिन प्रातःकाल के लिये श्री किशोरी जी ने तो एक्के के मालिक (सेठ जी) को एक्का भेजने के लिये कहा; एवं श्री राम जी ने एक मोटर के मालिक को मोटर भेजने के लिये। प्रातःकाल सर्व प्रथम एक्का ही पहुँचा, उसी पर श्री जुगुल सरकार, शृंगारी जी, एवं मैं, (लेखक) बैठ कर श्री गंगा स्नान के हेतु गये; ज्यों ही एक्का चला त्यों ही पीछे से मोटर ड्राइवर भूँ-भूँ करता अपनी मोटर को एक्का के समीप लाने के कई उपाय रचे, परन्तु एक्का के समीप वह मोटर को नहीं ला सका; उसकी मोटर एक्का से लगभग तीन सौ गज पीछे ही रही।

रास्ते में यद्यपि एक विचित्र घटना यह भी हो गई कि एक्का का कोचवान (जब कि घोड़ा बहुत तेजी से जा रहा था) अकस्मात एक्का से नीचे गिर पड़ा, वह कूद कर फिर बैठ गया। उसको कोई चोट भी नहीं लगी और सबसे पहले गंगा जी पर

वही एक्का पहुँचा, उसके बाद ही मोटर पहुँची। देखिये श्री किशोरी जी के वचन में कितनी भारी शक्ति थी, कितनी सत्यता थी।

(८५) श्री बिहौती समाज फरुखाबाद से प्रस्थान करके मुजफ्फरपुर पहुँचा, पं० रघुवंश जी शुक्ला हेड-क्लर्क डिस्ट्रिक्ट बोर्ड (जो कि स्टेशन के समीप ही मकान में रहते थे और श्री किशोरी जी के अनन्य उपासक एवं श्रद्धालु प्रेमी भी थे।) ज्योंही उन्होंने सुना कि श्री जुगुल सरकार पधारे हैं, स्टेशन पर नंगे सिर नंगे पाँव दौड़े २ आये, और विह्वल होकर सरकारी चरण पकड़ रोने भी लगे। सरकार ने उनको उठाया एवं सान्त्वना दी, तब वह अपने मकान पर ले गये। वहाँ दो दिन झाँकी होने के पश्चात हम लोग लहरिया सराय चले गये। उस प्राँत के प्रेमी जनों को दर्शन देते दिलाते समाज श्री अयोध्या जी वापस पहुँचा। वहाँ से मैं भी श्री जुगुल सरकार से विदा होकर कर्वी (चित्रकूट) अपने स्थान पहुँचा, तो मेरे पास शुक्ला जी की कुछ अंग्रेजी चिट्ठियाँ पहुँची, जिनसे मालूम हुआ कि वह श्री सिद्धकिशोरी जी के हाथों बेदाम बिक ही चुके हैं। उन्होंने तो किशोरी जी के बिछोह में दुखी होकर अपनी नौकरी से भी त्याग पत्र दे दिया था, मेरे पत्र व्यवहार द्वारा बहुत कुछ समझाने पर (कि घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है तुम अपनी निशकाम भक्ति किये जाओ। श्री जुगुल सरकार आपके प्रेम से खुश हैं, तुम विश्वास रखो, यदि तुम्हारा सच्चा और दृढ़ प्रेम होगा; तो सरकार को आपके प्रेम पाश में बंध कर अवश्य आपके समीप पहुँच कर दर्शन देना ही पड़ेगा) उन्होंने अपना चार्ज लिया, और काम तो करने लगे परन्तु रात दिन श्री सिद्ध-किशोरी जी के दर्शनों की लालसा उन्हें परेशान और व्याकुल करने लगी।

सज्जनो ! सच्ची लगन क्या नहीं कर सकती है ? उनकी सच्ची लगन (प्रेम के चुम्बक) ने कुछ ही दिनों के बाद श्री जुगुल सरकार को अपनी ओर खींच ही तो लिया (उनका इस विषय का एक अंग्रेजी पत्र मेरे पास भी आया था) सरकारी दर्शन करके वह इतने प्रसन्न हुये, इतने मग्न (निहाल) हुये कि उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रहीं। वह खुशी के मारे फिर संभल भी नहीं सके, जिस प्रकार अत्यन्त गमी मनुष्य की मृत्यु का कारण बन जाती है; उसी प्रकार अधिक प्रसन्नता भी शुक्ला जी की मृत्यु का कारण बन गई। श्री सिद्धकिशोरी जी के अधिक विछोह के कारण श्री शुक्ला जी उनकी स्मृति में घड़ियाँ गिनते २ परलोक सिधार गये; और दिव्य लोक में श्री सिद्धकिशोरी जी के चरणों में पहुँच कर उनकी सेवा के अधिकारी बने।

(८६) भैरोगंज (चम्पारन) स्टेशन के समीप ही एक नड्ढा ग्राम है, ग्राम में जाते समय पुजारी जी ने हम लोगों को रास्ते में एक तालाब दिखलाया; जिसका जल बहुत ही गन्दा होकर उस पर काई भी जम गई थी। श्री जुगुल सरकार को भी समझा दिया कि भूल से भी इस जल को कभी न पीना; नहीं तो बीमार हो जाओगे। श्री सिद्धकिशोरी जी को बहुत प्यास लगी थी। सब की आँख बचाकर उसी तालाब का जल पी लिया मुकाम पर पहुँचते ही सेवक लोग मीठे कुँवे का जल भर लाये। सबने हाँथ पाँव धोये, श्रीराम जी ने उसे प्रसन्नता पूर्वक पी भी लिया, परन्तु श्री किशोरी जी ने तो उस जल के दो घूँट पीकर कहा, कि यह जल अच्छा नहीं है इस जल से तो उसी तालाब का जल बहुत ठंडा और मीठा भी है, पुजारी जी इतना सुनकर बहुत दुखी हुये, परन्तु श्री सिद्धकिशोरी जी के बार २ आग्रह करने पर कि उस तालाब का जल इस कुँवे के जल से अधिक

ठंढा एवं मीठा भी है, तब तो सब को भारी अचम्भा हुआ, वहाँ जाकर देखने पर वास्तव में वह जल स्वच्छ प्रतीत हुआ, और उस समय इस पर काई भी नजर नहीं आई। जब कुछ प्रेमियों ने उस जल को पिया, तो बहुत ही ठंढा एवं मीठा लगा; तब से ग्राम के सभी लोग उसी तालाब का जल पीते हैं; धन्य ! श्री किशोरी जी को है जिन्होंने अपनी प्यास बुझाने के निमित्त अपने हस्त-कमल के स्पर्श मात्र से उस गन्दे जल को भी गंगा वत सुन्दर एवं स्वादिष्ट बनाकर जनता का भारी उपकार किया; आपके स्पर्श गुण की जितनी भी प्रशंसा की जाय वह कम ही है।

पाठको ! कपड़धीका ग्राम भी भैरोंगंज स्टेशन के समीप ही है सन् १६३७ में जब विहौती समाज वहाँ पहुँचा तो विवाह-कलेवा उत्सव एक कच्चे फूस के मण्डप में हुआ, और हम लोगों के रहने के निमित्त भी एक कच्चा फूस का ही मकान मिला, स्वाभाविक मैंने श्री किशोरी जी से कह दिया, कि यदि यहाँ भी पक्का विवाह मण्डप बन जाता तो बहुत ही अच्छा होता, तुरन्त श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि भैया जी ! कुछ दिनों के बाद आप लोग यहाँ पक्का मन्दिर (श्री सीताराम जी का) देखेंगे, परन्तु मुझे जल्दी चले जाना है, इसलिये मैं न देख सकूँगी, सचमुच वहाँ श्री सीताराम जी का पक्का मन्दिर बन गया जिसका अधिकार उस प्रेमी भक्त ने श्री पुजारी जी महाराज को सौंप दिया है; मुझे तीन बार उस मन्दिर को देखने का अवसर मिला। परन्तु दुख इस बात का है, कि श्री सिद्धकिशोरी जू अपने कथनानुसार अपने असली घर (साकेत धाम) को चली गई; और फिर दृश्य स्वरूप से वहाँ का दर्शन नहीं कर सकीं।

(८८) बहावल (चम्पारन) में विहौती समाज द्वारा वहाँ प्रेमी जनता ने आठ दस दिन तक श्री विवाह-कलेवा तथा झाँकियों का

आनन्द लूटते हुये अपनी शक्ति से भी अधिक सेवा करके भारी श्रद्धा प्रेम दर्शा अपने प्रेम का भी पूर्ण परिचय दिया, प्रेमियों की इस प्रकार की उदारता को देख कर मैंने श्री किशोरी जी से निवेदन किया कि जिस प्रकार यहाँ की जनता ने दिल खोल कर प्रेम से सेवा की है, यदि यहाँ रहने का मकान एवं विवाह मंडप भी घास फूस का न रह कर पक्का बन जाता, तब तो सोने में सुग्न्ध हो जाता। इतना सुनते ही श्री किशोरी जू ने मुसक्राते हुये मुझ से कहा भैया जी! दो साल के भीतर २ यहाँ इतना सुन्दर और विशाल मन्दिर तथा माड़ौ बनेगा कि उसके पटतर केवल श्री अयोध्या जी को छोड़ कर किसी दूसरी जगह न होगा; इसी में मन्दिर; इसी में शृंगार घर, विवाह मंडप, भंडार, कोठार कूप; फूलवारी, गोशाला सब कुछ इसी में होगा; आप लोग कई बार इसको देखैंगे परन्तु मैं फिर यहाँ न आ सकूँगी मुझे जल्दी अपने घर (साकेत धाम) चले जाना है; यद्यपि उस समय मैंने कहा कि ऐसा शब्द आप न कहैं हमको सुन कर अति दुख होता है; तब उत्तर मिला, कि जो बात यथार्थ होने वाली हो, तो उसके कहने में दोष ही क्या है, सज्जनो! ठीक श्री किशोरी जी के कथनानुसार मन्दिर, उनके पश्चात् ही बन कर तैयार हुआ उसमें श्री सीता राम जी के अतिरिक्त श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्र पट का भी प्रतिदिन पूजन होकर भोग लगता है। मेरे ख्याल में इस समय यह मन्दिर पचीस तीस हज़ार रुपया की लागत से कम का न होगा, जब उसमें बड़े २ शीशे (दर्पण) लगा कर उसे सजाया जाता है तब तो वह शीश महल के सदृश ही प्रतीत होने लगता है; उसी में मन्दिर उसी में निवास स्थान, शृंगार कुंज, रसोई भवन कोठार, फुलवारी एवं कूप, इत्यादि भी हैं; मन्दिर में पुजारी-रसोइया निरन्तर भगवान की सेवा पूजा में रहते हैं, आगन्तुक अभ्या-

गत, अतिथि, साधु संत का सेवा-सत्कार भी प्रेम पूर्वक होता है; इस मन्दिर के प्रबन्धक इस समय मुन्शी श्री राधा मोहन प्रसाद जी (श्री पुजारी जी माहाराज के लंगोटिया यार) हैं; जिनका भगवत, भागवत तथा लीला विहारी स्वरूपों में भाव भक्ति एवं प्रेम सराहनीय है, आप के एक रजिस्ट्री इकरार नामा द्वारा इस मन्दिर में प्रति वर्ष विवाह-महोत्सव श्री पुजारी जी के स्वरूपों द्वारा ही फाल्गुन शुक्ला २ से दसमीं तक बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है, श्री मुन्शी जी ने अपने जीवन के बाद मन्दिर का एवं इसमें लगी हुई भूमि का भी समस्त अधिकार पुजारी श्री राम शंकर शरण जी के नाम से लिख दिया है।

सज्जनो ! श्री सिद्धकिशोरी जू के कथनानुसार यह मंडप उनके बाद ही पूर्णतया तैयार हुआ; मैं भी चार वार वहाँ का दर्शन कर चुका हूँ, दुख इतना है कि श्री किशोरी जी की प्रतिमा की, यों तो मन्दिर में प्रतिदिन पूजा होती ही है, परन्तु वह प्रत्यक्ष रूप में इसको न देख सकीं, उनकी लीला अपरम्पार हैं, जिसका न कोई पारावार हैं।

(८९) सरइयाँ जिला छपरा, यह वह मुकाम है, जहाँ भक्तवर श्री रामाँ जी महाराज ने स्वयं पक्के चार विवाह-मंडपों का (श्री अवध, श्री बक्सर, श्री सीतामढ़ी श्री जनकपुर) निर्माण करते हुये श्री नौशा बबुआ दुल्हा सरकार श्री सीताराम जी के शुभ विवाह-कलेवा चौथारी एवं झांकी उत्सवों का परचार कर परम आनन्द प्राप्त करते हुये अन्तिम समय में भी इसी ग्राम से श्री साकेत धाम के लिये प्रस्थान किया था, उधर आप की शुभ स्मृति में सड़क के समीप ही तालाब के किनारे पुजारी श्री रामशंकर शरण जी महाराज ने एक पक्की समाधि बनवाई है।

और इधर सरइयाँ ग्राम निवासी श्रीमान् राजाबाबू एवं राजेन्द्र बाबू के द्वारा श्री बिहौती समाज के स्वरूपों द्वारा ही छः सात दिन के लिये विवाह-कलेवा उत्सव भी प्रतिवर्ष हुआ करता है। सन् १९३७ में जब कि मैं (लेखक) भी समाज के साथ यहाँ पहुँचा था, विवाह उत्सव समाप्त होते २ श्री पुजारी जी ने विवाह मंडप में ही जनता को इस बात की घोषणा की थी, कि कल प्रातःकाल आठ बजे से इसी मंडप में कलेवा उत्सव प्रारम्भ होगा। सूचना पाते ही दूसरे दिन प्रातःकाल से ग्रामी एवं आस पास के ग्रामों की भावुक जनता दर्शनार्थ एकत्रित होने लगी, नौ बजते २ हजारों लोग जमा हो गये, परन्तु किसी कारण विशेष से कलेवा एक बजे दिन से आरम्भ होने लगा सब प्रेमी भूखे थे; राजा बाबू का कथन है कि मुझे भी भूँख लगी थी, इसलिये घर में जो दाल भात साग बना था; मैंने चुपके से उस का भोजन कर लिया, और किसी से कुछ कहा नहीं, इधर कलेवा उत्सव की समस्त भोग की सामग्री टोकरों में भर भरा, प्रेमी लोगों से उठवा कर, मैं स्वयं कलेवा मंडप की तरफ लिवा जा रहा था, कि श्री सिद्धकिशोरी जू (जो कि उस समय श्री सीतामढ़ी मंडप में विराजमान थीं) मुझे बुलाकर कलेवा की समस्त सामग्री अपने समीप रखवा ली; अपने दयालु सुभाव वश कई प्रेमी जनों को जो कि भूँखे थे, बुला २ कर अपने हस्त कमलों द्वारा बालभोग बाँटने लगीं; राजा बाबू का कथन है कि सब की देखा देखी मैंने भी जब बाल भोग माँगा तो मुझे श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि आप तो छुप कर घर में दाल भात साग खाकर पेट भर आये हैं। आप भूँखे तो हैं नहीं, आप भी दो पूड़ी और साग प्रसादरूप में ले लें; राजा बाबू ने प्रसाद तो ले लिया; परन्तु जब देखा कि बहुत लोग हाथ फैलाये हैं और सब को श्री किशोरी जी प्रसाद बाँट

रही हैं, तो समीप के कलेवा-मण्डप में जाकर श्री पुजारी जी को इस की सूचना दे दी तो श्रीपुजारीजी श्री किशोरी जू के समीप चले आये और प्रार्थना करने लगे कि सरकार! यह समस्त सामग्री तो कलेवा के निमित्त घर में बनाई गई है यदि आप इसको बाल भोग में ही बाँट देंगी तो फिर कलेवा उत्सव कैसे होगा? श्री किशोरी जू ने उत्तर दिया; कि आपकी सूचना पाकर यह सब प्रेमी लोग दूर २ से प्रातः काल से ही आ गये हैं, अब दो बजना चाहते हैं; जो भूखे हैं, इनको बाल भोग दे रही हूँ, आपको इसमें क्या आपत्ति है, पुजारी जी ने उत्तर दिया कि केवल एक घण्टा के पश्चात हमको उस सामग्री की कलेवा के निमित्त जरूरत पड़ेगी, अगर यह सब भँट गई, तो राजा बाबू की हँसी होगी, फिर किशोरी जी ने कहा, आप जाइंमहाराज जी! सामान कम न पड़ी, यदि इस समय भूखों को बाल भोग मिल गया तब तो राजा बाबू की प्रशंसा होगी, और यदि यह लोग भूखे रह गये, तभी तो इनकी हँसी होगी, श्री पुजारी जी इनके अनेकों चमत्कार देख चुके थे, इनको विश्वास हो गया कि सामिग्री कम न पड़ेगी, दो बजे से कलेवा उत्सव प्रारम्भ होकर ६ बजे समाप्त हुआ क्यों न हो? जिस सामग्री में श्री किशोरी जू के कर कमल का स्पर्श हो जाय, तब वह कम कब पड़ सकती थी? उस कलेवा प्रसादी को आड़े हाथों दर्शक गणों में बाँटा गया तो भी कम नहीं पड़ा, बल्कि बच ही गई।

पाठको! राजा बाबू को भारी अचम्भा पहिले तो इस बात का था कि हमारे गुप्त रूप से भोजन करने का हाल श्री सिद्ध किशोरी जू ने जान लिया, दूसरे कलेवा की सामग्री खूब आड़े हाथों लुटाने पर भी कम नहीं पड़ी; इस लिये श्री किशोरी जू को जो श्री सिद्ध किशोरी जी कहा जाता है, वास्तव में यह अक्षरशः सत्य है, इस प्रकार के अनुपम चत्कार को प्रत्यक्ष देख कर

राजा बाबू तो बड़े ही प्रभावित हुये, तब से प्रति वर्ष आप प्रेम पूर्वक इस विवाहोत्सव को मनाते ही जा रहे हैं, आप को दृढ़ विश्वास हो चुका है कि इस उत्सव के कराने से हमें कभी कुछ हानि नहीं हुई बल्कि लाभ ही होता है. श्री सिद्धकिशोरी जी के पश्चात मुझे भी (लक्ष्मीनिधि) चार पाँच बार सरइयाँ जाकर राजाबाबू के घराने का सरकारो के प्रति पुनीत प्रेम देखने का शुभ औसर प्राप्त हुआ है।

(६०) लहरिया सराय जाने के लिये हमको दरंभगा पर गाड़ी बदलनी थी, ज्योंही गाड़ी से हम लोग उतरे, श्री जुगुल सरकार के गौर श्याम मनोहर दर्शन मात्र से स्टेशन के बाबू एवं यात्री छक गये। सब ने चारों तरफ से सरकार को घेर लिया, उस समय श्री जुगुल सरकार की आभा, तेज अनोखा एवं अनुपम प्रतीत हो रहा था, मालूम पड़ता था कि भगवान ही साकेत लोक से पधारे हैं। थोड़ी देर में उनके दर्शन के लिये समस्त ट्रेन के यात्री गाड़ी से उतर २ कर मुझसे पूँछने लगे, बाबा जी ! कहिये ! आप लोग कहाँ से पधारे हैं; कहाँ के रहने वाले हैं; कहाँ जाने का विचार है और क्या आप ही इस समाज के मुखिया और मालिक भी हैं। उस समय श्री पुजारी जी एक मैली सी खादी की बंडी पहिने, ऊपर से एक फटा पुराना कम्बल भी ओढ़े बैठे २ सरकारी सामान की रखवाली कर रहे थे। मैंने उन्हीं की तरफ संकेत करके मुसाफिरों से कहा कि इस कीर्तन समाज के मालिक आपही हैं, जो कुछ भी पूछना चाहें इन्हीं से पूँछ लें; जब वह लोग पुजारी जी से पूछने लगे तो आप उत्तर देते हैं, बाबू साहब, आप लोग तो पढ़े लिखे बुद्धिमान हैं फिर इन महात्मा जी की बातों में कैसे आ गये। हम मालिक कहाँ के हम तो निकम्मे मजदूर हैं; इनका सामान ढो देते हैं और कुछ सेवा भी कर देते हैं, तब खाने को मिल जाता है। पहले इन

बाबा जी की सूरत और पोशाक को, इन दोनों बालकों की सूरत और पोशाक से मिलान करके तो देखो तब आपको मालूम हो जायगा कि मालिक कौन हैं और नौकर कौन। इस प्रकार की चतुरता से श्री पुजारी जी स्वयं तो प्रथक हो गये और झगड़े में मुझे ही डाल दिया। उन सब के बारम्बार बाध्य करने पर मुझे भी सच २ कह देना पड़ा, कि न तो मैं मालिक हूँ और न ही यह दोनों बालक मेरे लड़के, भाई या चेले हैं। बल्कि मालिक यही (पुजारी जी) हैं। इन्हें कुछ कम न समझना, यह तो गुदड़ी में छिपे हुये लाल हैं। यह दोनों बालक इन्हीं के चेले हैं, और भी हजारों लोग इनके चेले हैं, कई हाकिम अहलकार एवं सेठ साहूकार भी इनको अपना पूज्य गुरुदेव मानते हैं। गाड़ी चले जाने के बाद स्टेशन स्टाफ़ ने हम लोगों को फर्स्ट क्लास वेटिङ्ग रूम में निवास देकर हमारे जलपान का भी प्रेम पूर्वक प्रबन्ध किया; और गाड़ी के आते ही हम सबको फर्स्ट क्लास में बैठा कर लहेरिया सराय स्टेशन पर भिजवा दिया। चार बजे हम लोग लहरिया सराय स्टेशन पर पहुँचे, वहाँ से बाबू जंगबहादुर साहब जेलर के क्वार्टर में पहुँचते ही उन्होंने जब श्री जुगुल सरकार का समाज सहित अचानक दर्शन किया तो कृत कृत्य और निहाल हो गये, और कहने लगे कि मैं तो स्वयं सरकारी दर्शनार्थ श्री अयोध्या जी जाने वाला था। अहोभाग्य! "कुँवा प्यासे के पास आया!" आप ने बड़े प्रेम और उत्साह से सबका आगत स्वागत करते हुये ब्यारू एवं रात्रि के विश्राम के लिये भी यथोचित प्रबन्ध किया। आप श्री जुगुल सरकार के अनन्य भक्त एवं श्री पुजारी जी महाराज के गुरु भाई भी हैं; जो कि इस समय श्री गया जी में जेलर (दारोगा-जेल) हैं! दूसरे दिन रात को श्री जुगुल झाँकी होनी थी; इधर सवेरे श्री सिद्धकिशोरी जी ने जेल के अन्दर के समस्त कैदियों को देखने की अभिलाषा

प्रकट की; तो जेलर सा० ने तुरन्त उनकी रुचि के अनुसार जेल का दृश्य दिखलाया। मैं भी श्री जुगुल सरकार के साथ था; अन्दर जाकर कैदियों को देखते ही श्री किशोरी जू के दयालु हृदय में एक भारी करुणा उत्पन्न हुई; तभी तो स्वयं जेल के अन्दर जाकर समस्त कैदियों को अपना अनुपम दर्शन देकर उनको कृतार्थ किया; इधर कैदियों ने श्री सरकार के दयालु स्वभाव की प्रशंसा करते हुये अपने भाग्यों की भी सराहना की; बहुत से कैदी तो श्री जुगुल सरकार की विदाई की खबर सुनकर जेल में रोने ही लगे; बहुत प्रेमावेश में आकर गुणों का गान करने लगे, तो बहुत से उनकी छवि माधुरी का अवलोकन कर अपने भाग्य की ही सराहना करने लगे; कि सरकार ने स्वयं यहाँ पधार कर और हम सब को दर्शन देकर कृतार्थ किया है।

बाबू जंग बहादुर साहब ने बिदाई के समय प्रेम पूर्वक सेवा करते हुये अपनी उदारता का भी पूर्ण परिचय दिया था, धन्य है आपकी भक्ति एवं आप के पुनीत प्रेम को। आपका अधिक समय भगवत कीर्तन एवं श्री रामायण जी के गाने बजाने में ही वितीत होता है, आप एक उच्चकोटि के कवी भी है।

(६१) श्री रामदयालू सिंह जी स्पीकर लेजिसलेटिव एसेम्बली पटना के यहाँ हाजीपुर जाते समय की एक अनुपम घटना जो रेलगाड़ी में ही हुई थी वह इस प्रकार है। श्री पुजारी जी अपने परिकर एवं सामान सहित थर्ड क्लास में बैठ गये थे, भीड़ अधिक थी, इसलिये मैं श्री जुगुल सरकार को लेकर सेकण्ड क्लास में बैठ गया और टी० टी० आई० को अधिक किराया देकर दो टिकट सेकण्ड क्लास के बनवा लिये। उस डिब्बे में केवल ६-७ यात्री बैठे थे, उनमें से एक नई रोशनी के भले मनुष्य भी थे, जिनकी आयु पचास से कम एवं साठ वर्ष से

अधिक न थी जिनमें वर्तमान शिक्षा की तो कमी न थी, वह एम. ए. यल. यल. बी. थे; धार्मिक वातावरण का उनके मस्तक में स्थान ही कहाँ ? तीर्थ यात्रा एवं सत्संग में जिनकी रुचि न थी और शिमला आदि पहाड़ों की हवा खाने में जिनको हिचक न थी, चलती गाड़ी में उन्होंने तो पहिले श्री जुगुल सरकार की श्याम गौरसूरत को देखा, फिर मेरी ओर देख कर बोले कहिये बाबा जी, यह दोनों बालक आप के भाई हैं, अथवा लड़के मैंने उत्तर दिया न भाई और न ही लड़के। तो क्या यह आप के चेले हैं। मेरा जवाब था कि नहीं; यह मेरे चेले नहीं हैं, मैं ही इनका चेला हूँ ! बस मेरा इतना कहना ही था कि वह साहब आपे से बाहर हो गये। झुंजला कर कटु शब्दों की बौछारें मेरे ऊपर डालते हुये बोले; कि पचास साठ वर्ष के आप तो बूढ़े बाबा जी और यह केवल दस ग्यारह वर्ष के छोटे २ गृहस्थ बालक; हमें भारी अचम्भा होता है कि यह दोनों बालक आप के गुरू कैसे ?

पाठको ! मैंने उनके कटु अपशब्दों की बौछारों को भी सहन करते हुये नम्रता पूर्वक उत्तर दिया कि छोटी बड़ी उम्र एवं गृहस्थ विरक्त भेष भूषा पर ही कुछ निर्भर नहीं रहता; जिस किसी से कुछ अच्छी शिक्षा प्राप्त हो तो उसको गुरू मानने में आप को कौन आपत्ति है ? देखिये ! श्री दत्तात्तरे जी महाराज के चौबीस गुरू थे; तो क्या वह सब उनसे उम्र में बड़े ही थे ? अजी ज़रा मन्त्र ही को लीजिये; एक छोटे से मन्त्र से परम स्वतन्त्र परमात्मा तक को भी वशीभूत होना पड़ता है। हाथी को ही देखिये वह कितना भारी मस्त मतवाला जानवर है; परन्तु उसको भी केवल लोहे का एक छोटा सा अकुंश ही अपने काबू में कर लेता है; कहाँ तक कहा जाय, घोड़े और बैलों को वश करने अथवा हाँकने के लिये केवल एक छोटा सा चाबुक एवं डंडा

ही पर्य्याप्त होता है ! तब विचारिये कि वहाँ छोटे बड़े का सवाल ही कहाँ रह जाता है ? किसी का तेज प्रभाव, शक्ति एवं सिद्ध चमत्कार को ही देखा जाता है, न कि उस की उम्र या बड़ी २ दाढ़ी मूछों को। देखिये तो परमहंस श्री सुखदेव जी महाराज कब बूढ़े थे और उनकी दाढ़ी-मूछें भी कहाँ थीं ? वे तो केवल पन्द्रह सोलह वर्ष के बालक ही थे न, जिनके चरणों में बड़े २ सिद्ध ऋषी मुनियों; महान पुरुषों के मस्तक नवते थे और उनको जगद्गुरू मानते हुये इसी में अपना गौरव समझते थे; केवल इतना ही नहीं, श्री सनक, सनन्दन, सनातन, सनतकुमार जी को भी देखिये वह चारों भी केवल पाँच २ वर्ष की आयु के बालक ही तो थे न; उनकी भी दाढ़ी मूँछ एवं लम्बी २ जटायें कहाँ थीं ? उनके चरणों की रज को भी तो अच्छे २ वयोवृद्ध, वीतराग, महात्मा ऋषी महर्षि तक अपने मस्तक पर धारण करने में ही अपना गौरव समझते थे; उनके उपदेश सत्संग द्वारा कृत्त कृत्य होकर पूर्ण मनोरथ हो जाते थे। तब आप ही बतलाइये कि छोटी बड़ी उम्रपर क्या निर्भर रह जाता है ? अजी एक छोटी सी अपकीर्त भी मनुष्य की समस्त बढ़ी हुई कीर्त को नष्ट कर देती है। इतने भारी शरीर में थोड़ा सा भी कुष्ट सम्पूर्ण शरीर की शोभा को नास कर देता है, घड़े भर जल को एक बूंद मदिरा भी अपयै बना देता है ! एक छोटी सी चींटी तो कान में घुस कर हाथी को भी मार देती है; एक छोटी सी कलम लाखों करोड़ों पुस्तकों को लिख डालती है, बाबू सा० कहाँ तक कहा जाय; जरा और भी देखिये तो, आग की जरा सी चिनगारी बड़े भारी शहर को जला देती है, और जरा सा संखिया (Poison) एक भारी पहलवान को मौत के घाट पहुँचा ही देता है, एक छोटा सा बीज भी बड़े भारी जंगल का निर्माण कर सकता है; बन्दूक का एक छोटा

सा जहरीला छर्रा या गोली एक मस्त हाथी एवं शेर—बबर तक को एक क्षण में हलाक कर सकती है। एक छोटा सा तोप का गोला बड़े भारी महल एवं पर्वत तक को चकनाचूर कर सकता है। एक छोटा एटमबम प्रलय का ही दृश्य दिखा देता है।

पाठको! मैंने अपनी लघु बुद्धि अनुसार जहाँ तक मुझसे हो सका; अपना पल्ला छुड़ाने के लिये उनको प्रेम पूर्वक समझाया; परन्तु क्या कहूँ, वह तो बड़े जिद्दी एवं अभिमानी थे इसलिये अपनी बुद्धि के सामने किसी को कुछ भी न समझते हुये मेरी एक भी नहीं मानी। और यों ही बड़बड़ाते रहे, कि यह बाबा जी बड़े झूठे हैं। छोटे २ लड़कों को अपना गुरु मान रहे हैं। यद्यपि दूसरे उपस्थित यात्रियों ने भी उनको समझाया कि यह दोनों बालक श्री सीताराम जी के लीला स्वरूप हैं। यदि बाबा जी ने इनके चरित्रों से प्रभावित होकर इनको अपना गुरू मान रखा है तो बुरा ही क्या किया है? अपनी २ भावना अलग हुआ करती है, इसलिये हमारी समझ में तो इन्होंने कुछ भी अनुचित नहीं किया; अब इसमें आपको क्या आपत्ति है। दूसरों के समझाने बुझाने पर भी वह साहब टस से मस नहीं हुये; किसी की एक भी नहीं मानी; और सच है मानते भी कैसे। एक तो उन पर प्रभुता पाने से गर्व का भूत सवार, दूसरे जो सनातन धर्मी नहीं है, जो अनीश्वरवादी हैं। अथवा जिसने अपने जीवन का ध्येय केवल खान पान एवं हास विलास को ही मान रखा हो, उसके लिये तो साक्षात भगवान भी कोई वस्तु नहीं है। तब भला इनके सामने साधु संत एवं श्री लीलाविहारी स्वरूप किस गिनती में हो सकते थे? एक तरफ से तो थी नास्तिकता की धुन सवार, और दूसरी तरफ से केवल श्री जुगुल सरकार के नाम के आधार पर जीवित रहने वाला मैं

श्री रामजी का सार, भला कर ही क्या सकता था; मैं तो भगवान के बल एवं भरोसे पर चुप लगा कर श्री जुगुल सरकार की रूपमाधुरी का आस्वादन करने लगा।

सज्जनो ! उसे तो भारी अभिमान हो गया था कि मैं सर्व श्रेष्ठ और भारी विद्वान हूँ; इसके अभिमान को चूर करना था; अतः गर्व हारिणी श्री सिद्धकिशोरी जू ने उसके गर्व को सर्व करने के निमित्त ही एक ऐसी क्रीड़ा रची; ऐसा विनोद किया, कि जिससे उसके अभिमान का अंकुर जड़मूल सहित नष्ट हो गया। मुझे जुकाम के कारण नाक साफ करने की जरूरत पड़ी, उस समय वायु जोरों से चल रही थी, और इधर के दरवाजे के समीप श्री जुगुल सरकार विराजमान थे; चलती रेलगाड़ी में हो सकता था, कि गन्दगी उड़कर कहीं सरकार पर आ पड़े। इसी ख्याल से दूसरी तरफ के दरवाजे की ओर में जाकर ज्योंही खिड़की से झुक नाक साफ करने लगा, दरवाजा की सिटकनी खुली थी; अकस्मात दरवाजा खुल गया; उसीके साथ मैं गिरकर खतम ही हो जाता, परन्तु दया सागरी श्री किशोरी जी ने अपनी जगह पर ही बैठे बैठाये आजानु बाहु का दृश्य दिखाते मुझे भैया भैया कह कर पकड़ ही तो लिया, और मैं नीचे गिरने से बच गया; जब कि मेरे गिरते समय भी उस भले आदमी ने खुशी का एक नारा लगाते हुये कहा "अच्छा हुआ।" परन्तु जो सेवक निरन्तर केवल भगवान के ही आसरे पर रहता हो; तो उसकी रक्षा को भगवान भूल जाँय; भला ऐसा कब हो सकता था ! और उस मूर्ख को यह ज्ञान भी कहाँ था; कि अपने निरा-पराधी सेवक की इस प्रकार की दुर्दशा भी भगवान कब सहन कर सकते हैं ? यह तो केवल सरकारी लीला थी; उस मूर्ख का सुधार करना था ! श्री सिद्धकिशोरी जी के इस प्रकार के अनुपम चमत्कार एवं प्रभाव को प्रत्यक्ष देखकर गाड़ी में बैठे

हुये समस्त यात्री दंग रह गये श्री जुगुल सरकार के साथ २ मेरे चरण छूते हुये मेरे भाग्य की भी सराहना करने लगे। अब तो उस भले आदमी का दिमाग भी ठिकाने आया, उनके हृदय में जो अहंकार का अंकुर उग कर जड़ पकड़ चुका था; इस अद्भुत घटना से वह भी जड़ मूल सहित सर्वथा नष्ट हो गया। तभी तो वह लज्जित होकर श्री किशोरी जी एवं श्री रामजी के चरणों के साथ २ मेरे भी पाँव स्पर्श करते हुये बोले, कि श्री जुगुल सरकार के अनुपम दर्शन कर मैं परम सन्तुष्ट हुआ। इस देह धारण करने का परम फल मुझे तो आज ही प्राप्त हो गया, मुझे इन बालकों का प्रभाव मालूम न था, आज मैं सचमुच आप की ही कृपा से कृतार्थ हो गया। आप से भी वृथा वाद विवाद के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ। इधर श्री जुगुल सरकार के चरण पकड़ कर फिर प्रार्थना करने लगे कि सरकार! आपके कृपा प्रसाद की एक भिक्षा चाहता हूँ, कि मेरा मन सदा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं अभिमान से शून्य होकर निरन्तर आपका ही स्मरण, भजन करता रहे और सर्वकाल में सर्वदा सर्वत्र श्री सीताराम नाम को जपता रहे। इस प्रकार से श्री जुगुल सरकार का आर्शीवाद ले उनकी कृपा को प्राप्त कर उनके श्री चरण कमलों की धूलि को अपने सिर पर रख उनकी मन्द मन्द मुसकान युक्त मधुर छवि को हृदय में धारण करते हुये वह सा० (पटना वासी बाबू द्वारकाप्रसाद) अगले स्टेशन पर उतर गये! देखा पाठको! श्री सिद्धकिशोरी जी ने किस तरह से अपनी क्रीड़ा के लिये एक नया कौतुक रच कर उसके अहंकार को दूर किया एवं उस कट्टर नास्तिक को आस्तिक बना दिया। लीलाधारी का विनोद एवं लीला ही तो ठहरी!

भगवान के इस प्रकार के रहस्य को समझने के लिये बहुत ही श्रद्धा युक्त हृदय की आवश्यकता है; क्या पाश्चात्य विद्या

के मद में धर्म को ढोंग एवं भगवत लीला को केवल स्वांग समझने वाले पुरुष श्री सिद्ध किशोरी जू के ऐसे अपूर्व और अनुपम चमत्कारों द्वारा कुछ अपने हृदय के विकारों एवं तर्क वितर्क को दूर कर सकेंगे। इस घटना का विचित्र प्रभाव दूसरे यात्रियों पर भी पड़ा, उनकी भी श्री लीला विहारी स्वरूपों में अटूट श्रद्धा एवं सच्ची भावना उत्पन्न हो गई; उन सब के हृदय में अपूर्व उल्लास था; अहलाद था, इसलिये श्री जुगुल सरकार की जय जय कार मनाते हुए श्री राम नाम प्रेम प्याला परस्पर पीने पिलाने की प्रतिज्ञा भी करने लगे।

थोड़ी ही देर बाद हम लोग हाजीपुर स्टेशन पर पहुँचे, श्री रामदयालु बाबू एवं वहाँ की समस्त प्रेमी जनता ने प्रेम पूर्वक उत्साह से जिस प्रकार स्वागत किया एवं आदर पूर्वक गाजे बाजे सहित हमारे समाज को सवारियों पर बैठा कर अपने घर ले गये; उसका वर्णन करना कठिन है, दस बारह दिन तक वहां विवाह कलेवा एवं झांकियों के अतिरिक्त झूले का भी अपूर्व अनन्द हुआ। उस आनन्द की वर्षा में लोगों ने प्रेम पूर्वक स्नान किया एवं प्रेमी समाज ने छक छक कर श्री जुगुल सरकार की छवि सुधा का भी पान किया। वहीं की एक दिन की घटना का वर्णन इस प्रकार है।

(९२) श्री गंडकी (सालिगरामी गंगा) जी में नौका पर श्री जुगुल झांकी हो रही थी अचानक आंधी जोरों से आ गई हमारी नाव डूबना ही चाहती थी कि मैं (लेखक) ने श्री किशोरी जी के चरण पकड़ कर निवेदन किया, सरकार! क्या मेरे राम को अब श्री गुरू महराज का दर्शन न होगा? तब श्री किशोरी जी ने कहा भइया घबड़ाते क्यों हो देखो तो आँधी बह गई। बस इतना कहते ही आंधी बन्द हो गई और हमारी नाव जो

मझधार में थी देखा तो, घाट के ही समीप खड़ी है।

(६३) जिस समय श्री विहौती समाज पटना से मोटर द्वारा बड़ोराज्य स्टेट में पहुँचा तो वहां प्रतिदिन श्री जुगुल सरकार की अष्टयाम झांकी युक्त श्री रामार्चाः श्री रामनाम एकाहः श्री राम विवाह-कलेवा, के अतिरिक्त बड़े समारोह से नित्य नवीन बांकी झांकियां भी होती रहीं; १०-१२ दिन तक समाज को वहां रहना पड़ा; श्री सिद्ध किशोरी जू के अनुपम चमत्कारी चरित्रों को देख सुन कर वहां की जनता अति प्रभावित हुई, यहां तक कि उस समय कई प्रेमीजन श्री पुजारी जी महाराज के शिष्य भी वन गये; विदाई के समय पर भी प्रेमी लोगों ने सेवा द्वारा अपनी उदारता एवं पुनीत प्रेम का पूर्ण परिचय भी दिया यहां से विदा होते समय की घटना इस प्रकार है।

बड़ोराज्य से विदा होकर मोतीपुर स्टेशन जाना था, स्टेशन वहां से केवल तीन मील दूर था, इसलिए श्री पुजारी जी मोटर कार द्वारा अपने सामान एवं परिकर सहित पहले स्टेशन के लिये रवाना हो गये, जब वहां से मोटर कार वापस आया तो हमलोग (श्री जुगुल सरकार, शृंगारी जी, लेखक) चारों उस मोटर में बैठ गये, और मैंने ड्राइवर से गाड़ी जल्दी चलाने को कहा। तब श्री किशोरी जी बोल उठीं कि हमको आज रेल गाड़ी तो मिल नहीं सकेगी, फिर शीघ्रता करने की क्या आवश्यकता है; ड्राइवर ने उत्तर दिया कि मोतीपुर स्टेशन यहां से केवल तीन मील है, रेलगाड़ी के आने में अभी एक घन्टे की देरी है, हम तो पन्द्रह बीस मिनट में ही सरकार को स्टेशन पर पहुँचा देंगे; फिर गाड़ी कैसे न मिलेगी ? फिर श्री किशोरी जी ने कहा कि कितने भी उपाय क्यों न करो; हमको यह गाड़ी कदापि न मिल सकेगी; कारण कि इस मोटर का

एक चक्का (पहिया) डेढ़ मील की दूरी पर जाकर फटने वाला है। पाठको ! वार्तालाप हो ही रही थी कि कार का एक पहिया डेढ़ मील की दूरी पर जाकर श्री किशोरी जी के कथनानुसार फट ही तो गया। उसको ठीक करने कराने में अधिक समय लगा जिससे स्टेशन पर पहुँचते पहुँचते रेल गाड़ी छूट गई। सज्जनो ! यह है श्री किशोरी जू की भविष्यवाणी का अपूर्व चमत्कार।

(६४) सज्जनो। श्री सिद्ध किशोरी जी की रुचि एवं आज्ञानुसार श्री विहौती समाज में मुझे श्री जुगुल सरकार की सेवा में चार मास से कुछ अधिक काल तक रहकर देशाटन करने का भी शुभ अवसर प्राप्त हुआ जिसका मुझे स्वप्न में भी भान न था जब श्री अवध धाम से श्री जुगुल सरकार का साथ छोड़ने की इच्छा न होने पर भी उनसे विदा होकर अपने शुभ स्थान गुरुद्वारा जाने के लिए उनसे विदा होकर श्री जुगुल सरकार की मैं अन्तिम दण्डवत करने लगा, तो मेरा हृदय इतना भर आया कि उसका बोझा भी मुझसे संभलना कठिन हो गया, मैं यथा शक्ति चलने का प्रयत्न तो करता, परन्तु चल ही नहीं सकता था, आगे को कदम उठाता, परन्तु वह बरबस पीछे ही पड़ता कारण कि हृदय की लगन जिस ओर लग जाती है उसके बंधन अधिक से अधिक मजबूत हो जाते हैं।

इस दिशा में न जाने मैं कितने दिनों तक श्री अयोध्या जी में ही चक्कर लगाता रह गया, एक दिन श्री सिद्ध किशोरी जू जब कि अपने मसहरी दार सुन्दर नवीन पलङ्ग पर विराजमान थीं; उनकी चितवन मन्द २ मुसकान से युक्त थी; वे अत्यन्त ही स्नेह से मेरी ओर निहारती हुई मुझसे कृपा पूर्वक कहने लगीं; भैया ! अब आप अपने स्थान में जाने से क्यों हिचकिचा रहे हो, किसलिए घबरा रहे हो। यदि आप को श्री गुरुदेव से डर

लगे तो मैं उनको पत्र लिख दूं? और यह भी कहा कि मुझे अनुभव हो रहा है कि आप का हमारा यह अन्तिम ही दरस-परस है, इसलिए आवो फिर अच्छी तरह से मिल लें; तुम घबड़ाना नहीं तुम्हें अब संसारी बन्धन न होगा; केवल एक ही बार फिर जन्म लेना होगा; उसके बाद तुम चौरासी के चक्कर में न पड़ कर मोक्ष पाजाओगे; कारण कि भगवत चरित्रों के श्रवण मनन से जीव संसारी बन्धनों से सदा के लिये छूट कर भगवान के नित्य धाम का अधिकारी बन जाता है। चौरासी के चक्कर से भी बच जाता है।

पाठको! श्री सिद्धकिशोरी जी की मधुर शांत्वनपूर्ण वाणी को सुनकर मैं बड़ा हि प्रसन्न हुआ, मैंने प्रार्थना की; मेरी प्यारी लाडली बहिन। आहा! मैं कितना भाग्यशाली हूँ आप की मुझ पर कितनी अपार कृपा है, मैं आप का इतना स्नेह भाजन बन सकूँगा. मुझे स्वप्न में भी इसका भान और अनुमान न था; आप की इस अहैतुकी कृपा के स्मरण करते मात्र मेरे सम्पूर्ण शरीर में रोमाञ्च हो जाता है; नेत्रों से झर २ आँसू बहने लग जाते हैं; और मेरी वाणी रुक जाती है। बहिन! मैं तो आप के चरणों को छोड़ कर अब कहीं भी जाना नहीं चाहता; और न ही मोक्ष की मुझे चाहना है। मैं तो केवल आप से यही भिक्षा माँगता हूँ। कि मेरा मन आप के एवं बहनोई श्री राम जी के चरणों की भक्ति छोड़ कर न कहीं आये न जावे; निरन्तर आप के श्री जुगुल चरणों का भ्रमर की भांति रसास्वादन करता रहे, बहिन! जिन्हें बन्धन से छूटने की इच्छा हो; आप उन्हें भले ही मोक्ष दें, मैं तो सदा आप के चरण कमलों के बन्धन में ही बँधा रहना चाहता हूँ। इधर जब आप के श्री चरणों से बँध गया तब तो उधर संसार से स्वतः ही अलग हो जाऊँगा, आप के मनुष्यवत् चरित्रों

को देख सुन कर अज्ञानी लोग भले ही आप के यथार्थरूप को भूल जाँय; किन्तु मैं अब आप को कैसे भूल सकता हूँ; आप ने तो मेरे ऊपर अत्यन्त अनुग्रह करके अपना भइया ही बना लिया है। आहा! आप के चरित्रों में कितना कोतूहल एवं प्रेम भरा रहता है; उनकी याद आते ही मेरा मन मुग्ध हो जाता है।

आप की इतनी असीम कृपा के बोझ से मैं तो दबा जा रहा हूँ। अब मेरी अन्तिम प्रार्थना यही है कि मुझे अपना कर अपने चरणों से कभी न्यारा न करना।

पाठको! भगवान तो जीव के लिये वही करते हैं, जिस में उसका भला हो; उस का कल्याण एवं अभ्युदय हो। और वे जिस से जो भी कराना चाहते हैं तब वह भी वही करने को विवश हो जाता है।

एक दिन श्री किशोरी जी का संकेत पाकर श्री राम जी ने भी मुझे अपने स्थान को प्रस्थान करने के लिये बाध्य किया; मेरा मन श्री जुगुल सरकार के चरणों को छोड़ कर अब कहीं जाने की इच्छा नहीं करता था; मुझे यह सुनकर भारी दुख हुआ; और रंज के मारे मेरा चेहरा भी कुम्हला गया; मुझे दुखी देख कर श्री किशोरी जी का हृदय भी भर आया; क्यों न हो! बहिन का हृदय ही तो ठहरा; जो तनिक देर में पसीज जाता है। थोड़ी देर बाद बहिन बोलीं भैया जी। आप किस विचार सागर में पड़े हैं; आप स्थान जाने का नाम सुनते ही दुखी क्यों हो गये? मेरा निवेदन था, कि आप ने मुझे संयोग सुख का आस्वादन कराया चार महीने आमोद प्रमोद में व्यतीत हो गये जिन का कुछ पता भी न चला, अब बरबस अपने श्री चरनों से न्यारा कर मुझे स्थान में क्यों भेज रही हैं? कृपया आप ही बतावें; कि जब आप के बिछोह का एक २ क्षण भारी

प्रतीत होगा, तब मेरी क्या दशा होगी ? श्री किशोरी जी का कथन था; कि मिलन, विछोह के लिये ही तो होता है, काल की ऐसी कुटिल गति है कि वह प्रेमियों को इकट्ठा रहने ही नहीं देता। धैर्य्यवान पुरुष महान कष्टों के पड़ने पर भी धैर्य्य का परित्याग नहीं करते; भैया ! आप तो राजकुमार हैं हमारा वचन मान कर स्थान में जावो और श्री गुरु महाराज का दर्शन करके उनकी ही सेवा में लग जावो; आप इस चिन्ता को भी मन से हटा दें श्री गुरु महाराज आप से रंज न होकर अधिक प्रसन्न होंगे; और यदि इस समय आप वहाँ न गये तो उनको भारी दुख होगा; एवं आप के लिये भी अमगंल होगा; इतना कह कर श्री किशोरी जी ने ज्यों ही मेरे सिर पर अपना हस्त-कमल फेरते हुये मेरी गोदी में बैठ कर मुझे पुचकारा और अपने वस्त्र से मेरे आँसुओं को पोंछा तो मेरे दुखी मन में तुरन्त यह सूझ उत्पन्न हुई; कि जो भगवान चींटा के पाँव की भी आहट सुन लेते हैं, तब उनसे क्या दूर है; वह तो मेरी करुण पुकार को भी अवश्य सुन ही लेंगे, फिर मुझे किस बात का डर है, इतना ज्ञान होते ही मेरे मनो-विचार बदल गये, मैंने तुरन्त श्री जुगुल सरकार के श्री चरणों में सादर सप्रेम अन्तिम दण्डवत प्रणाम किया; उनके चरणों की धूली (रज) को अपने सीस पर रख उनकी आज्ञा पालनार्थ स्थान के लिये प्रस्थान करने का साहस कर ही तो डाला; इधर मैं विदा हो कर स्थान जाने के लिये चल तो दिया, किन्तु मेरे हृदय में वियोग रूपी अग्नि की चिनगारी मेरे बहनोई (श्री रामजी) द्वारा लगाई हुई मार्ग में सुलग उठी और बहिन की याद आते ही मेरे मन मेंएक वेदना उठने लगी, मेरामन उस समय (श्री राम-जी) से कुछ रुष्ट होकर अपने हृदय उद्‌गार का दिग्दर्शन इस प्रकार से कराने लगा। बहनोई ! मेरा तो जीवन

संकट ग्रस्त हो रहा है; श्री किशोरी जी के वियोग की अग्नि मुझे जला रही है, प्यारे अब आप भी मुझे बहुत मत तरसाओ अधिक मत खिझावो, क्या आप मुझे कसौटी पर कस रहे हैं, इस प्रकार तड़पाने में यदि आप को कुछ गौरव एवं सुख मिलता हो, तो हर्ष से तड़पाओ; सताओ, कोई चिन्ता नहीं मेरे अन्तर में चलने वाले तूफान को तो कभी पहिचानो गे ही !

प्यारी बहिन का जब से हुआ बिछोह, दिल ही बेकरार हो बैठा
न है भूख-प्यास, जीने से भी हाथ धो बैठा''
"एक बार जो दर्शन सिद्ध किशोरी तेरा पा जाऊँ
तो इसमें शक नहीं कि मरता हुआ भी जी जाऊँ"

मृगतृषना की भाँति रंग बिरंगे जाल बिन कर अपने साले लक्ष्मी निधि को कब तक भुलावे देते रहोगे।

"प्रीतम तुमने ही किया जब साले से किनारा
तुम बिन कौन है फिर दुनिया में हमारा"
"अजब तेरा कानून देखा रघुराया,
अपने सार पर भी नहीं है तुम्हरी दाया"
"प्यारे एक रोज का रोना हो तो रो कर सब्र आये,
पर रोज के रोने को कहाँ से जिगर आये''
"प्यारे बहनोइ तेरे प्रेम में दीवाना हूँ मैं,
हर वक्त मधुर मुस्कान का मस्ताना हूँ मैं"
"कभी तू मुझको है राजकुमार बनाता,
कभी तू है मुझ को जार जार रुलाता"।
चरणों में अर्पित हैं इसे चाहो तो स्वीकार करो,
यह सार तुम्हारा है ठुकरा दो चाहे दुलार करो"

पाठको ! क्या कहूँ। मुझे स्थान जाते समय सरकारी बिछोह के दुख दर्द के साथ २ यह भी भारी खटका था, कि कहीं श्री

गुरुदेव मुझसे रुष्ट न हो जाँय कि तुमने अपनी दास भावना का परित्याग करके राजकुमार का शृङ्गार करते हुये बहिन–बहनोई की भावना का नाता भी क्यों जोड़ा ? किन्तु स्थान पहुँचने पर यह तो मेरा केवल भ्रम ही भ्रम निकला। श्री गुरु महाराज मुझे देखते ही खिल उठे; और अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते हुये प्रेम से बोले; भैया ! तुम भले ही आये; बेटा ! आज मैं तुम्हारी ही याद कर रहा था, कि तुम आ गये, कई सन्तों द्वारा तुम्हारी श्री रामजी के प्रति सार-बहनोई एवं श्री किशोरी जी के प्रति बहिन भैया की भावना को सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, तुम पर तो श्री सीताराम जी महाराज की पूर्ण कृपा है, उन्होंने तुमको संसारी नातों से विमुख करके दिव्य नाता के द्वारा ही तुमको अपने सम्मुख किया है; आहा ! जगत-जननी श्री जानकी जी जिसकी बहिन हों एवं जगतपिता श्री राम जी जिसके बहनोई, तब तो उसके भाग्य का क्या कहना, वास्तव में बेटा तुम बड़े ही भाग्यवान हो; तुमको भगवान चिरंजीव रक्खें, देखा प्रभु अपने आश्रितों एवं सेवकों का कितना ध्यान रखते हैं, अपने अकिंचन किंकरों पर कितनी कृपा करते हैं, अब यदि तुम अपना हित एवं कल्याण चाहते हो तो आज से अपनी इस दिव्य भावना का कभी भूल से भी परित्याग करने का दिल में ध्यान न लाना और अपने मन को भी कभी श्री जुगुल सरकार के चरणों से चलायमान न करना; यद्यपि मैं अस्वस्थ होने के कारण श्री जानकी कुंड में पधारे हुये तुम्हारे बहिन–बहनोई (श्री सीताराम जी) का शुभ दर्शन उस समय प्राप्त न कर सका; परन्तु कई सन्तों द्वारा उनके शील स्नेह युक्त स्वभाव, उनकी दयालुता एवं उदारता की प्रशंसा तो सुन ही चुका हूँ। उनको केवल बालक ही समझना सरासर भूल और अज्ञानता है, तुम उनको साक्षात प्रभु का आवेशावतार

ही समझना; तुम बड़भागी हो, जो उनकी सेवा एवं दर्शनों का परम लाभ तुमको प्राप्त हुआ। ऐसे ही लीला बिहारी स्वरूपों के दर्शनों एवं उनके चरित्रों के मनन करने से विश्वासी श्रद्धालु प्रेमीजनों के समस्त पाप ताप नष्ट हो जाते हैं। यह सब साधना द्वारा नहीं, किन्तु उनकी अपार दया व कृपा दृष्टि से ही हुआ करते हैं। तुम आजन्म लीला स्वरूपों को ही अपना इष्ट देव मानकर सब भेद भाव को त्यागते हुये उनके ही पाद पद्मों की उपासना करके उन्हीं को दण्डवत प्रणाम एवं उन्हीं को सब कुछ समझना; उन्हीं की भक्ति करते हुये उन्हीं की कृपा की बाट जोहते रहना, उन्हीं की कृपा द्वारा तुम्हारा अभ्युदय एवं कल्याण भी है, और यह याद रखना कि लीला स्वरूपों में एवं मन्दिर मूर्तियों में कोई भी अन्तर नहीं है।

पाठको ! मैं लेखक (लक्ष्मीनिधि) अपनी भावना एवं भाव के पत्र व्यवहार में से केवल तीन ही पत्रों को यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ। आप सब भी इनको अवलोकन करते हुये कुछ आनन्द (सुख) का अनुभव कर लें !

स्वस्ति श्री श्री बहिन मम हे सीते सुकुमारि।
यहाँ कुशल मंगल सकल चाहिये कुशल तुम्हारि॥
तुम्हरे कर कमलन लिख्यो पत्र मिल्यो बड़-भाग,
समाचार जाने सकल पढ़ि उमग्यो अनुराग।
मात पिता नित प्रति तुमहिं सुमिरत बारम्बार,
जनक नगर के लोग सब गावत चरित तुम्हार।
तुम्हें बुलावन हित कहे नित माता अकुलाय,
राज काज में फँस रहयो मैं ही सक्यों न आय।
पिता विदेह विदेह हैं सोइ सोइ कछु गुण मोर,
याही सों मेरो भयो यह अपराध न थोड़।
अब मैं वेग ही आइहों सकल समाज सजाइ,

धीरज धारो लाड़ली लैहों तुरत लेवाइ ।
आपका प्रिय भैया—लक्ष्मीनिधि ।

स्वस्ति श्री प्रिय वत्स मम लक्ष्मीनिधि शुभ नाम,
मंगल मय शुभ आशिष जेहिं पूरहिं सब काम ।
यहां कुशल सब भाँति हम पुरजन सहित सुहाय,
तत्र कुशल सिय लाड़ली सहित सखिन समुदाय ।
जब से तुम इतते गये तब ते सुधि नहिं पाई,
सकल कुमारी मिलन को मन ही चहै अधिकाय ।
कोटि कल्प सम पलक मम प्रिय पुत्री बिनु जाय ।
वेग ले आइय वत्सवर अधिक न देर लगाय ।
श्री चक्रवर्ती महाराज सों पुनि पुनि कहब निहोर,
शीघ्र, शीघ्र अति शीघ्र ही कुँवरि भेजिये मोर ।
अर्ध अषाढ़ विगत भये लीची अन्त जनाय,
बम्बइया हूँ आम अब चौथापन दरसाय ।
कृष्ण भोग मालदा आदि सब जोहत लली की राह,
कब आवें प्रिय लाड़ली सबके चित्त यहि चाह ।
अब विलम्ब जनि कीजिय प्रियवर पुत्र सुजान,
प्रिय पाहुन हूँ से कहब मेरे मन अरमान ।

हस्ताक्षर—श्री मिथिलेश जू ।

श्रीमद् दिव्य अनन्त गुण भूषित सद्गुण अयन,
पूज्य पिता युग पद कमल सीस धारूँ निज नयन ।
यहाँ कुशल हम सब विधि सकल बहिन के संग,
बहनोई हूँ कुशल सब सहित सप्रेम उमङ्ग ।
कृपापत्र तव पाइके उर में सुख न समाय ।
बहिन बहनोई सकल पढ़ि पढ़ि हृदय लगाय ।
बहनोई के प्रेम में मो मन भयो लवलीन,

जिमि अगाध निधि वारि से विलग होत नहिं मीन।
दिवस पंच दस विगत करि चारों बहिनी संग,
ले आइब बहनोई चारन कों सहित अधिक उमङ्ग।
आपका प्रिय पुत्र—लक्ष्मीनिधि।

* शृंगार बिसर्जन *

(९५) पाठको! जिस समय श्री सिद्ध किशोरी जी की आयु लगभग १५ वर्ष की हुई तो एक दिन श्री पुजारी जी ने उनसे प्रार्थना पूर्वक अपने हृदय का अभिप्राय प्रकट किया, कि सरकार आपने अपने अलौकिक, चमत्कृत चरित्रों एवं झांकियों द्वारा सात वर्ष तक आनन्द की वर्षा करते हुए हमको भी अत्यन्त सुखी करके पूर्ण मनोरथ किया है; अब आप सयानी हो गई हैं, इसलिए हमारा विचार है कि कोई शुभ मुहूर्त सोध कर आप का शृंगार बिसर्जन करके अन्तिम आरती की विधि करते हुए आप के ही द्वारा आप के प्रतिनिधि स्वरूप श्री जुगुल सरकार का निर्माण होकर आवाहन भी हो जाय; उसके पश्चात् आप कुछ दिनों के लिये अपने ग्राम माणीपुर में जाकर अपनी पूज्य माता की सेवा करके उनको सुख दें, क्योंकि अपनी माता जी के प्रति बेटे का यही पुनीत कर्त्तव्य है, बस इतना सुनते ही श्री किशोरी जू ने तुरन्त जवाब दिया कि न वह हमारी माता हैं; और न ही हम उनके बेटा; आप ही उनके बेटे हैं। आप को ही आजन्म उनकी सेवा करनी पड़ेगी, पुजारी जी का निवेदन था सरकार! हम उनके बेटे कहां हैं, हम तो उनके गुरू हैं; आप ही उनके बेटे हैं; और वह आप की माता जी। आप का धर्म उनकी सेवा करना है। फिर भी श्री किशोरी जी ने कहा कि हम किसी के बेटे नहीं हैं; हम तो बेटी (श्री किशोरी जी) हैं; श्री विदेह राज श्री जनक जी महाराज तो हमारे

पूज्य पिता जी हैं एवं श्री सुनयना अम्बा जू हमारी प्रिय माता जी हैं; हमारा घर श्री जनकपुर में है, अब हम यहां से भी जल्दी चली जाँयगी।

अबकी बार साहस करते हुए श्री पुजारी जी ने जब उनसे पूंछा कि आप यह क्या कह रहीं हैं? आप कहां चली जायेंगी? और कब कहां जाने का विचार कर रहीं हैं? श्री किशोरी जी ने प्रथम तो अपने नेत्रों द्वारा एवं अंगुली से भी ऊपर की तरफ संकेत करते हुए यह भी कहा कि रथयात्रा के कुछ ही दिन बाद हम अपने घर चली जायेंगी; और फिर यहां नहीं आयेंगी। इस वार्तालाप के तीसरे ही दिन जुगुल सरकार की अन्तिम झाँकी हुई, तो उसी दिन श्री सिद्ध किशोरी जी शृंगार स्वरूप में ही रोग शय्या में जाकर सो गईं। और श्री महाराज जी से कहने लगीं अभी कुछ देर है, हमारी अन्तिम विसर्जन आरती को अभी स्थगित रक्खा जाय; जब शुभ मुहूर्त होगा, तब मैं स्वयं बता दूँगी। श्री किशोरी जू ने थोड़ी देर के बाद श्री रामचन्द्र दास जी (स्वयं पाकी) को अपने समीप बुला कर कहा अब हम यहां अधिक न रहेंगे, अपने घर साकेत धाम को चली जायेंगी; आप स्थान में जाकर वहां से अपना आसन और पूजा ले आकर कुछ दिन हमारी अन्तिम सेवा भी कर लें; स्वयं पाकी जी महराज का कथन है कि मैं उनके कई अद्भुत चरित्रों से प्रभावित हो चुका था; मेरी इनमें अटूट श्रद्धा भी थी; इसीलिए मैं तुरन्त अपना आसन ला कर उनकी सेवा में लग गया। मैंने कभी न तो नल का जल पिया था और न ही किसी के हाथ का भोजन किया था; परन्तु श्री किशोरी जू के प्रेम वश और इस ख्याल से कि इनकी सेवा में किसी प्रकार की त्रुटि न हो जाय; इसलिए "आपत्ति काले मर्यादा नास्ति" के अनुसार मैंने अपना भजन पूजा पाठ छोड़ दिया, नल का जल

भी पिया, एवं साधुओं द्वारा बनाया हुआ भोजन भी पाने लगा ! तभी तो किशोरी जी ने मुझे अन्तिम आर्शीवाद दिया था कि आपने हमारी बड़ी सेवा की है इस लिए अब आप की लीला विहारी स्वरूपों में निरन्तर श्रद्धा बनी रहेगी। स्वयं पाकीजी का कथन है कि एक बार फिर श्री किशोरी जी ने मुझे अन्तिम बीमारी के तीन चार दिन पहले कहा था कि मैं अषाढ़ शुक्ल नौमी को अवश्य यहां से साकेत चली जाऊंगी; इसीलिए गुरू महराज को तार द्वारा भावल से बुलवाया जाय अब वह यहां आकर अन्तिम आरती करके हमारे स्वरूप को सरजू जी में विसर्जन कर दें; इधर पं० दुर्गादत्त जी को भी अषाढ़ शुदी पञ्चमी के दिन बाध्य किया कि हमको आज फैजाबाद से श्री अयोध्या जी ले चलो; हमको वहां एक अति आवश्यक कार्य करना है और नवमी को उसका अच्छा मुहूर्त है; उनका आदेश पाते ही तुरन्त डिप्टी साहेब उनको श्री अयोध्या जी विहौती भवन में ले आये; और उधर सप्तमी को पुजारी जी भावल से आ गये। श्री पुजारी जी का कथन है, कि श्री सिद्ध किशोरी जी का सप्तमी को मैंने दर्शन किया; उस समय कोई अमांगलिक चिन्ह उनके शरीर में दिखाई न पड़ता था, बल्कि उनके मुखार बिन्द पर प्रसन्नता एवं दिव्य तेज ही छाया हुआ नजर आता था; बहुत दिनों के बाद अपने घर जाने की जैसे किसी को प्रसन्नता होती है, ठीक उस समय ऐसा ही प्रतीत हो रहा था; एवं उनके मुखमंडल पर खुशी की रेखायें झलक रही थीं।

इधर श्री किशोरी जी की बीमारी का समाचार पाकर स्थानीय एवं बाहरी श्रद्धालु प्रेमी जन और अच्छे संत महन्त भी इनके अन्तिम दर्शनार्थ एकत्रित होने लगे; उस समय श्री किशोरी जू अपनी सुधामई दृष्टि के अवलोकन मात्र से आगन्तुक प्रेमी जनों के हृदयों को सींचने लगीं, ताकि लोग

कुम्हला न जायँ, एवं अपने श्रवण सुखद वचनों द्वारा प्रेमी जनों को रोता देख कर मृदुहास्य करके कृपासहित उनके मस्तक को भी अपने हस्त कमलों से स्पर्श करती हुई उनके हार्दिक शोक सन्ताप को दूर कर देती थीं, एवं अपने वचनामृत को नये २ भावों के प्याले में भर २ कर सब को पिलातीं और आशवासन के साथ २ उपदेश भी दिया करती थीं,

उपदेश (१) सुख दुख, जनम मरण, छाया की भांति जीवों के पीछे २ घूमा करते हैं; इन्हें कोई मना नहीं कर सकता; एवं यह स्थूल शरीर चोगा पहने हुये जो उछल कूद मचा रहा है वह यहाँ नहीं रह सकता, किसी न किसी दिन अवश्य वह इसको यहाँ रखकर चुप चाप चला जायगा।

(२) संसारी समस्त बन्धनों को छेदन करने में केवल भगवत् भक्ति ही समर्थ है, इसलिये आप लोग निरन्तर श्री सीताराम जी की भक्ति करते हुये दूसरे किसी देवता का अपमान (तिरस्कार) भी न करें, बस! इसी में सब का हित एवं कल्याण है।

(३) इस हाड़ माँस के शरीर में लोगों की जितनी आसक्ति है, अगर भगवान में भी कहीं इतना प्रेम हो जाय, तब तो उसका बेड़ा ही पार हो जाय, यह जीव गर्भ में प्रत्येक श्वास २ पर प्रभु नाम स्मरण करने का करार कर आया है, हर एक मनुष्य के प्रतिदिन इक्कीस हज़ार छः सौ श्वास निकलते हैं; इसलिये हर एक मनुष्य को प्रतिदिन पच्चीस हज़ार "श्री सीताराम" नाम का स्मरण तो अवश्य कर लेना चाहिये; अधिक हो सकें तो अच्छा ही है!

(४) साधुओं को केवल भगवान का प्रसाद ही सेवन करना चाहिये, किसी सकाम गृहस्त के घर जाकर कभी उसका भोजन

न करें, कारण कि साधूरूपी गौ को सकामी पुरुष भोजनरूपी चारा देकर भजन रूपी दूध दुह लेते हैं, इसलिये साधु कोरा का कोरा रह जाता है।

(५) सत्संग एवं संत समागम भगवत कथा यह बड़े भाग्यों से मिलता है, इस का कोटि गंगा में स्नान करने का फल होता है।

(६) किसी प्राणी को कष्ट न दे; और दयाधर्म को भी न त्यागना चाहिये।

(७) संग्रह का अन्त विनाश है, इसलिये दान पुन्य करना चाहिये, अधिक ऊँचे चढ़ने का अन्त नीचे गिरना है, अभिमान मत करो, संयोग का अन्त वियोग है, संसार में किसी से लिप्त मत होवे। एवं जीवन का अन्त मरण है; भगवान का भजन सत्संग करो। भजन पूर्व जन्म उपार्जित स्थूल एवं शूक्ष्म समस्त पापों को क्षण भर में भस्म करके पवित्र बना देता है।

(८) जैसे सुदृढ़ खम्भों वाला मकान बहुत काल के पश्चात् जीर्ण होने पर नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जरा जीर्ण होकर मृत्यु के आधीन हो नष्ट हो जाता है, और जिस प्रकार समुद्र में बहते हुये २ लक्कड़ एक दूसरे से मिल कर फिर बिलग हो जाते हैं, उसीप्रकार काल योग से मनुष्यों का भी एक दूसरे के साथ संयोग वियोग होता रहता है! और उसी प्रकार स्त्री पुत्र भाई-बन्धु एवं धन इत्यादि भी यह सब, कुछ काल के लिये इकट्ठे होते और फिर दूसरी जगह चले जाते हैं, इसलिये इनकाशोक, चिन्ता करना भी व्यर्थ है,

(९) जिस प्रकार जीवों के शरीर उत्पन्न होकर नष्ट हो जाते हैं, याद रखो, इस प्रकार आतमा का जन्म एवं मरण कभी नहीं होता, आत्मा अमर है, केवल शरीर ही नष्ट हो जाता है।

(१०) भगवान की प्रत्येक लीला में श्रद्धा और विश्वास का होना जरूरी है किसी की निन्दा न करनी चाहिये, भावना और विश्वास के अनुकूल ही फल भी मिला करता है;

आदमी वह है मुसीबत से जो परेशान न हो,
कोई मुश्किल नहीं ऐसी कि जो आसान न हो"

(११) गृहस्थ की स्त्री घर के सब लोगों की सेवा टहल तो कर देती है; किन्तु अपने स्वामी (पति) को छोड़ कर दूसरे किसी के साथ सोती नहीं है, इसी प्रकार सब धर्मों का आदर करो; परन्तु अपने मन को अपनी ही धर्मनिष्ठा से तृप्त करो, इसी को दृढ़ उपासना कहते हैं।

(१२) "काल, कर्म, गुण, स्वभाव सबके सीस तपत" संसार में ऐसा कौन जीवधारी है, जिससे कभी कोई अपराध न हुआ हो। भले बुरे, सज्जन, दुर्जन, मूर्ख; पंडित, सभी से कुछ न कुछ प्रकृति वश अपराध बन ही जाता है, इसलिये अपराधी मनुष्य से घृणा न करके क्षमा ही करना उचित है।

(१३) मन, वचन, कर्म से किसी भी जीव का अहित न करो, किसी के मन को मत दुखाओ, सबका भला चाहो; भला करो तो भगवान तुम्हारा भी भला करेंगे, अपना अहित करके भी दूसरों का हित करो।

बीमारी के अन्तिम समय आप अपनी दोनों आँखें मूँद कर शान्त भाव से जब अपने बिस्तरे पर पड़ी रहती थीं; तो मालूम होता था कि आप पड़े पड़े किसी का ध्यान एवं स्मरण भजन कर रही हैं। हालत पूछने पर आप सब को कह देती थीं, कि हम अच्छी हैं, सब आनन्द है, हमें कोई कष्ट नहीं है; श्री पुजारी का कथन है कि अंत में जब मुझे भारी बेचैनी और घबराहट होने लगी, तो श्री किशोरी जी ने मुझे अकस्मात श्रृङ्गार

युक्त दर्शन दिया, उस समय इतना प्रकाश हुआ कि मेरी आँखें चौंधिया गईं, और मैं बेहोश हो गया, उनके विशाल एवं भोले भाले मुखड़े पर दिव्य तेज हीरा की भाँति प्रकाशमान नजर आता था। मेरे कानों में उस समय एक धीमी आवाज भी आई महाराज जी, घबराओ नहीं, हम आपसे दूर नहीं हैं। इतना कहते २ फिर वही पहिला स्वरूप धारण कर हमसे मचल कर कहने लगीं कि हम कल रात्रि के समय अवश्य साकेत लोक जायँगी, अब इसमें कोई रोक टोक न करे।

कई प्रेमी सेवक दिन रात इनकी देख रेख एवं सेवा चिकित्सा में लगे रहते थे, परन्तु इस लोक-चिकित्सा से क्या होना था; इनको तो अपने घर (साकेत लोक) में जाने की धुन सवार थी; आप ने कई दिन तक तो भोजन न करके नित्य प्रति श्री अयोध्या जी के कई मन्दिरों से केवल भगवान का चरणामृत ही साधुओं द्वारा मंगवा २ कर पान किया था। कई डाक्कर, वैद्य, एवं हकीम आते अपनी अपनी औषधि देते; तो औषधि सेवन करते ही आपका बुखार भी अच्छा हो जाता, मगर फिर दूसरे दिन १०४ डिगरी तक पहुँच जाता। आप अपने दयालु उदार स्वभावानुकूल अन्तिम समय भी प्रेमी जनों को अपनी सेवा द्वारा कृतार्थ करने का शुभ अवसर प्रदान कर रही थीं, किसी प्रेमी तथा वैद्य का निरादर न हो जाय, इसलिये उन सबकी सेवा को स्वीकार करने के निमित्त ही तो आप देरी भी कर रही थीं, यह भी आप की एक लीला थी।

चेतावनी:—

पाठको ! इस जीवन का कोई ठिकाना या अवधि नहीं है; किसकी किस दिन किस समय समाप्ति होगी, इस बात को कोई नहीं जानता, और न कोई बता सकता है। परन्तु हाँ प्रकृति का

यह नियम है कि भगवान के अनन्य भक्त तथा सिद्ध महान पुरुषों को भविष्य की बातों का आसार पहिले से ही प्रकट होने लग जाता है। प्रारब्ध प्रारम्भ में ही अपने कार्यों की सूचना उन्हें दे देती है, इसलिये भगवत कृपा एवं भजन के प्रताप से वह कुछ अनुभव कर लेते हैं, कई लीला स्वरूप एवं सिद्ध महान पुरुष इस भारत भूमि में हो चुके हैं, और अब भी हैं जिनको पहिले से ही कुछ न कुछ अनुभव हो जाया करता है।

मनुष्य बड़ी बड़ी आशाओं से किसी काम को अपने हाथ में लेता है परन्तु इस कराल काल की विचित्र ही गति है। वह क्षण मात्र में उसकी सब आशाओं पर पानी फेर देता है सभी सहायक और कुटुम्बी मुँह ताकते रह जाते हैं, बड़े बड़े वैद्य, हकीम एवं डाक्टरों की बहुमूल्य औषधियाँ धरी ही रह जाती है, और जाने वाला पलक भर में काल के कराल गाल में जा पहुँचता है; उस समय किसी का भी कोई वश नहीं चलता। इसलिये और किसी बात पर लोगों को विश्वास न हो; परन्तु "एक दिन मरना जरूर है।" इस बात को तो सभी धर्म वाले एवं सभी वर्ण के लोग बिना किसी आना कानी के सच मान ही लेते हैं, इसमें शंका किसी को भी नहीं रहती, और शंका रहे भी कैसे; जिसने जन्म लिया है। उसका मरण भी उतना सत्य है जितना कि सूर्य का प्रतिदिन पूर्व में उदय होना।

"As the sun rises in the East daily',

सज्जनो ! भगवान की लीला कुछ अनोखी एवं विचित्र ही है; वे कब क्या और क्यों करते हैं। हम जैसे तुच्छ जीव उस लीलामय प्रभु के सम्बन्ध में भला क्या जान सकते हैं ? अभी क्षण भर के बाद क्या होगा, कौन सी विचित्र घटना कहाँ पर होगी; कब और कहाँ क्या २ परिवर्तन होगा, इन सब बातों को

तो प्रभु ही जानते हैं। यदि हमारे सामने कोई सुन्दर चीज आ जाय तो हम तुरन्त खुश हो जाते हैं, अगर चली जाय तो झट उदास हो जाते हैं, वह मनोरम वस्तु कहाँ से चली आई, और कहाँ चली गई, इसको हम नहीं जान पाते। प्रभु के समस्त विधान जानने में हम लोग असमर्थ रहते हैं; भगवान की इस क्रीड़ा ने संसार को विमोहित कर रक्खा है! सज्जनो! हम आप सभी उनके आदेशानुसार ही यहाँ आये हैं और जब उनकी आज्ञा होगी; चले भी जायेगें।

लाई हयात आये, कजा ले चली चलै,
न अपनी खुशी आये, न अपनी खुशी चले !"

भगवान की शक्ति विशेष रूप से भी जो कोई यहाँ मृत्यु लोक में आते हैं उन्हें भी जब प्रभु चाहें; अपने पास बुला लेते हैं, जब उनका कार्य पूरा हो जाता है, तो वह सब तरफ से चित्त को हटा कर अपने निजी गृह (दिव्य धाम) में चलने के लिये व्याकुल हो उठते हैं, तब तो उन्हें यहाँ एक छिण भर रहना भी कठिन हो जाता है।

दैव की कैसी विलक्षण क्रीड़ा एवं प्रारब्ध की कैसी विचित्र लीला है; कि जिन से हम एक पल भी प्रथक होना नहीं चाहते, किन्तु वह हमें हठात छोड़ कर सदा के लिये चले जाते हैं; और जिन के पास हम क्षण भर भी रहना नहीं चाहते उनके साथ आयु भर रहना पड़ता है, एवं जिनको हम समीप में रखना चाहते हैं वह हजारों कोस हमसे दूर रहते हैं, और जिन से हमेशा हम दूर ही रहना चाहते हैं वह रात दिन हमारी छाती पर मूँग दला करते हैं. सज्जनो! प्रिय संयोग में वियोग भी छिपा रहता है, वह कहीं से आता नहीं है। यदि विधि का बलवान विधान अनिवार्य न होता, तो कौन प्रियतम से प्रथक

होने की इच्छा करता ? किन्तु विधाता ने तो संयोग के साथ ही वियोग को भी बाँध दिया है; और जन्म के साथ पीछे मृत्यु ही सटी है। सुख के साथ दुःख भी जुटा हुआ है। इस लिये प्राणी सभी कर्म करने में विवश है; मरना जीना यह तो सब प्रारब्ध के ही आधीन है, कौन किसे मारता है, यह तो सब अपने ही कर्मों के आधीन होकर जीते मरते रहते हैं; देखिये ! मनुष्य कुछ और संकल्प करता है, मगर काल उसके विपरीत ही संकल्प करता है काल तो सदा घात में लगा रहता है, हम बेखबर भले ही हो जायँ; परन्तु काल हमेशा सावधान रहता है, वह किसी की बात नहीं मानता; वह किसी का भी शील संकोच नहीं करता, क्षमा करना, आलस्य करना वह सीखा ही नहीं है, आप का कितना ही बड़ा कार्य क्यों न पड़ा हो; कितना ही मनोरथ क्यों न हो, वह आप की एक भी नहीं सुनता; अपने समय से कभी नहीं चूकता, तब तो मनुष्य मृत्यु से व्यर्थ ही डरता है। जब तक मृत्यु का समय नहीं; तब तक लाख प्रयत्न करने पर भी मृत्यु आ नहीं सकती और जिस समय उसकी आयु पूरी हो जायगी; उस समय करोड़ों उपाय करने पर भी काल से कोई बचा नहीं सकता ! हम चाहे न जानें किन्तु मृत्यु का समय निश्चित होता है; वह अपने समय पर आ जाती है; और प्राणी को पकड़ कर ले ही जाती है; जिस ने जन्म लेकर शरीर धारण किया है; उसकी मृत्यु भी अवश्य होगी; उसे कोई टाल भी नहीं सकता; भावी को कौन टाल सकता है ? काल की गति को सज्जनो ! कोई टाल सके यह किसकी शक्ति है ? कौन किसे सुख दुःख दे सकता है ? सुख दुख के कारण को तो काल कृति ही माननी पड़ेगी। यह काल रूप भगवान कब किस से क्या कराना चाहते हैं, इसे कोई कह नहीं सकता, बड़े २ विद्वान ज्ञानी, ध्यानी, मुनि और

महात्मा भी काल की चेष्टाओं को यथावत समझने में असमथ हैं, यह सब काल की महिमा एवं भगवान की लीला है, काल की गति प्रबल है इसे कोई मिटा नहीं सकता, कितने भी शूरवीर हों, कितने भी ज्ञानी ध्यानी, तेजस्वी; तपस्वी क्यों न हों; काल किसी का भी पक्षपात नहीं करता, जिनका जिनसे जब तक जितना, जहाँ जैसा सम्बन्ध होगा उसका उससे तब तक उतना ही सम्बन्ध होकर रहैगा ! "अनहोनी होनी नहीं जो होनी सो होय"। जहाँ काल पूरा हुआ, तुम अपने रस्ते हम अपने रस्ते, नदी नाव संयोग वाली कहावत यहाँ भी घटती है। देखिये ! नाव में जब मुसाफिर सवार होते हैं कितने हिलमिल कर प्रेम पूर्वक बातें करते हैं; मगर जब नाव से उतरे; तब कौन किसको पूछता है, सब को अपने २ घर जाने की सूझती है; राम राम, श्याम-श्याम तक करना भी भूल जाते हैं।

हा ! काल की कैसी कुटिल गति है; यह जीवन मरण का कर्म अनादि काल से लगा है, एवं अनन्त काल तक लगा ही रहैगा; यह तो ऐसे ही संसार का अनादि प्रभाव चल रहा है, इसमें कौन किसका पिता कौन किसकी माता हैं। आज जो पिता हैं; दूसरे जन्म में पुत्र बन जाता है, यह संसार ऐसे ही उलटता पलटता रहता है। जीवित अवस्था में सभी राजे महाराजे सेवक और सम्बन्धी जिस पुरुष के शरीर का इतना मान सम्मान करते हैं, उसका अन्तिम परिणाम दो मुठ्ठी खाक ही होता है। यही तो संसार की असारता का एक प्रत्यक्ष दृश्य एवं प्रमाण है; कौन किस को मारता या मरवाता है, सभी का काल निश्चित होता है, उससे अधिक कोई कितना भी प्रयत्न करें जी नहीं सकता, और उस से पहिले वह चाहे विष पी लें, अग्नि में कूद पड़े पहाड़ से भी गिर पड़ें, दरिया में डूब जायें; तो भी बच ही जाते हैं, इसलिये काल की गति

समझ कर शोक को दूर करना ही पड़ता है, यह संसार तो भगवान की लीला स्थली है, फिर मृत्यु है क्या वस्तु? यह जीवन नाटक का एक नैसर्गिक परदा (ड्रॉप) है जिस के हुए विना नाटक की शोभा ही नहीं होती, आत्मा मरता नहीं; शरीर रहता नहीं, "Birth follows death" मिलना-बिछुड़ना-सम्बन्ध होना और टूटना यह तो सब इसी खेल के अंग हैं; फिर रोना धोना भी किस बात का?

"अग जग जीव नाग नर देवा, नाथ सकल जग काल कलेवा"

भला बताइये तो सही कि विधि के विधान को व्यर्थ करने की सामर्थ्य किस में है पुरुषार्थ से प्रारब्ध को हटाने का साहस भी क्या कोई कर सकता है? अजी! विधना के लेख पर भला मेख कौन मार सके? समय का प्रभाव प्रारब्ध का चक्कर, दैव की गति, और होनहार की बात भला कौन टाल सकता है।

भाग्य बड़ा बलवान होता है, जहां जिसका अन्न जल बदा होता है; उस समय वहीं जाने को उसकी बुद्धि भी वैसी ही हो जाती है। भावी उसको वहां खैंच ले आती है। तब आशा निराशा के रूप में बदल जाती है, संसार में स्थिर कुछ नहीं; जो जन्मा, उसकी मृत्यु अवश्य होगी। संसार के सभी संयोग-वियोग को साथ लिये जाते हैं, आत्मा अमर है: कभी मरता नहीं; अनित्य एवं क्षण भंगुर शरीर स्थाई रहता नहीं, फिर चिन्ता किस बात की; काल तो भगवान का संकेत पाते ही उसको ग्रसने के लिए खड़ा हो जाता है, चुपचाप उंगलियों पर समय की गणना किया करता है; इसलिये इसमें दोष भी किसे दिया जाय; जो पैदा हुआ है निश्चय ही मरेगा भी; जिस समय जिसकी जहाँ मृत्यु बदी है उस समय उसी स्थान पर उसकी मृत्यु अवश्य होगी, हम उसे रोकर या शोक करके टाल नहीं सकते। आप कितना ही रोइये कि संख्या

समय सूर्य अस्त न हों वह अवश्य ही अस्त होंगे, आप कितना ही माथा फोड़े कि सूर्य पूर्व से उदय न हों किन्तु वह तो जरूर पूर्व से ही प्रकट होंगे। इसलिए जो बात निश्चित है उसके लिए अधिक शोक करना भी व्यर्थ और भारी भूल है।

अनेक जन्मों के सम्बन्धी पृथक २ स्थानों में प्रकट होते हैं: भाग्यवश फिर मिल जाते हैं; और दुख सुख देकर न जाने फिर कहाँ चल भी देते हैं; यह काल की गति, मृत्यु की कठोरता, यमराज की दृढ़ता अनादिकाल से चली आई है और अनन्त काल तक चलती भी रहेगी, इसका न कोई आदि है न अन्त, मृत्यु के लिये काल अकाल कुछ नहीं; भावी कौन मेट सकता है; जीवन का क्या पता, अभी है क्षण भर में नहीं। इसलिये हमें इस शरीर की अनित्त्यता पर सदा ध्यान रखना चाहिए, "एक दिन हमें भी मरना है", यह बात यदि मनुष्य को याद बनी रहे, तो बहुत से पापों से तो वह यों ही बच सकता है, भाइयो ! मनुष्य पाप तब करता है। जब मृत्यु को भुला देता है। इसलिये।

दो बातों को भूल मत जो चाहे कलयाण।
"नारायण" एक मौत को दूजे श्री भगवान ॥

भगवान याद रहें, तब तो मृत्यु को भूल भी जायें तो कोई बात नहीं; मगर हम तो मृत्यु और भगवान दोनो को ही भूल कर इस साढ़े तीन हाथ के शरीर को ही सत्य मानते हुए इसके पालन पोषण में ही दिनरात निमग्न रहते हैं।

पाठको ! श्री सिद्ध किशोरी जू की इस प्रकार की लीला को देखते हुए प्रेमी जनों को अब विश्वास होने लगा; कि यह अपनी लीला के विस्तार को समेटना चाहती हैं, इसलिये सब शोक विभोर होने लगे, परन्तु कोई कर ही क्या सकता था

कई प्रेमी तो अपना तन मन धन अर्पण करने को तैयार बैठे थे; कई प्रेमी अपनी आयु तक दान करने को ही डटे थे, बहुत से प्रेमी तो यह चाहते थे कि हम इस संसार से चल दें और हमारे बदले में अभी श्री किशोरी जी जीवित रहें, परन्तु यह भी तो उन्हीं की लीला थी, वरना कुटिल काल की गति को रोकना भी तो उनके बायें हाथ का खेल ही था।

हाय! किसे पता था कि काल कराल की तरफ से इस प्रकार भयंकर उत्पात होगा, सच है विधाता की बातें टला नहीं करतीं; "युवा-मरण अति दुख होत" परन्तु प्रभु इच्छा में सिवाय धैर्य के किसी का बस ही क्या है? जिनके प्रत्येक कार्य में हमने सुख और आनन्द का अनुभव किया हो; वे न रहें, वे सदा के लिए किसी ऐसे लोक में चले जायें जहां जाकर वापस लौटने की आशा न हो तो उनकी स्मृति में कितना दुख होता है, इसे कौन जनाये। हा सज्जनो! मुझे दुःख होता है कि मैं इस हृदय विदारक घटना का चित्रण अपनी कोमल लेखनी से किस भांति करूं? यथार्थ में यह हृदय विदारक प्रसङ्ग हृदय को हिला देने वाला ही है। मेरा तो विचार यही था कि इस प्रसङ्ग को यहां न लिखूं जिससे प्रेमी लोगों के हृदय में वज्राघात होकर उनके हृदय में हूक पैदा हो। पर हाय रे विधाता! तुम पर किसी का कोई बस नहीं चलता, और यदि मैं इसको यहां न लिखूं तो "जीवनी" अधूरी रही जाती है, और अगर लिखूं तो इस महान् शोकागार समाचार के लिखते ही मेरा हाथ कांपने लगता है। क्यों री जड़ लेखनी आज तक तूने जिनके अनेक चमत्कारी चरित्रों से रातदिन पुस्तक के पन्ने पर पन्ने चित्रित कर डाले और मुझे विश्राम तक नहीं लेने दिया; अरी क्रूर जड़ लेखनी, तू रुक क्यों नहीं जाती; तू टूट क्यों नहीं पड़ती। पाठको! क्षमा करना, मैं इस समय लेखक धर्म से

विवश होकर आपके साथ घात करने को उतारू हो रहा हूँ। आप सबके हृदय में शोक सरिता बहाते हुए सुख समूह नसाने चल रहा हूँ। आप के स्वर्गीय परमानन्द को मिट्टी में मिलाने जा रहा हूँ।

अब हम सब के सामने से श्री सिद्धकिशोरी जी अदृश्य होने वाली हैं, प्रेमी एवं दर्शक गण दर्शन कर लें। रात्रि के ग्यारह बजे थे; उस समय भी उनके शरीर से दिव्य प्रकाश निकल रहा था, आपका मुखार बिन्द भी दमक रहा था। संत जन प्रेमीगण, दर्शक तथा सेवकगण उनके चारों ओर कुछ तो खड़े और कुछ बैठे थे, मिती अषाढ़ शु० ६ सं० १६६४ था बस उसी रात को सज्जनो! सब टुकर २ ताकते ही रह गये; कि श्री किशोरी जी अपनी वाणी को विश्राम दे ऐसी मौन और शान्त हो गईं, जिस प्रकार तेल के समाप्त होते ही दीपक शान्त हो जाता है! अर्थात अपने कर कमल द्वारा सबको अभय मुद्रा दिखाकर प्रसन्नता पूर्वक मुस्कराती हुई अपनी मानव लीला समाप्त कर नित्य लीला में प्राप्त हो गईं (इस धराधाम की यात्रा को पूर्ण कर अपने परम श्रेष्ठ स्थान श्री साकेत धाम को पयान कर गईं) कौन जानता था कि आपकी यह प्रसन्नता एवं अन्तिम मुस्कराहट सबको रुलाने के लिये है।

सज्जनो! श्री सिद्धकिशोरी जी इस मृत्यु लोक में जीवों पर दया करने के निमित्त ही तो पधारी थीं; अब उनके चरित्रों की याद कर २ के हृदय फटा जाता है, बहुत रोकने पर भी नेत्रों से आँसू गिरने से नहीं मानते। हायरे दुर्दैव! तू तो बड़ा ही निर्दयी है; सचमुच विधाता तू बड़ा ही निष्ठुर है; और हम भी अभागे हैं जो श्री सिद्धकिशोरी जी की आदर्श लीला को इस लौह लेखनी से लिख रहे हैं, किन्तु अब क्या करें, किस से कहें

कहाँ जाँय, किसको अपना दुखड़ा सुनावे; हम तो अमूल्य निधि श्री किशोरी जू को हाथ से खोकर सदा के लिये अनाथ हो गये। हायरे निर्दयी दुष्ट काल तुझे तनिक दया भी न आई; तूने अकाल में यह कार्य कर डाला। हमारी श्री किशोरी जी को भी तू दूसरों की भाँति हमसे छीनकर ले भागा।

इस अचानक विछोह के कारण सबका हृदय चूर २ हो गया। दुख और निराशा छा गई; प्राण हीन शरीर को देख २ भक्तों के हृदय में कितनी मार्मिक वेदना हुई इसकी कल्पना करना भी कठिन है; इस वज्रपात से प्रेमीजनों के कोमल हृदय पर एक गहरी चोट लगी। भला उनकी दशा का कोई क्या वर्णन कर सकता है, जिनके प्राण जीवन धन सदा के लिये उनको इस संसार में छोड़ कर चले गये! कठोर से कठोर हृदय वालों के भी अश्रुधारा बह रही थी, जो कोई भी सुनता, करुणा की ज्वाला उसके हृदय में जल उठती, उस समय की विरह दशा को देख सुनकर पाषान हृदय भी पिघलने लगे एवं उनके बिछोह में तो जन साधारण के हृदयों में भी करुणा फूट २ कर बिलखने लगी।

"सुन विलाप दुख हूँ दुख लागा, धीरज हूँ कर धीरज भागा।"

बहुत से लोग तो अवाक से बैठे हुये जहाँ तहाँ आँसू बहाते हुये काल की असामयिक करालता को कोसने लगे। ऐसे अलौकिक एवं अनोखे संस्कारी लीला बिहारी स्वरूप (श्री सिद्धकिशोरी जी) के दैवी गुणों एवं चरित्रों का स्मरण सबके हृदय में हूक पैदा करने लगा; कई प्रेमीजन तो रो २ कर अपने आँसुओं से मुँह धो हृदय की ज्वाला को शान्त करके अपने संचित पापों को धोने लगे। बस। प्रेमीजनो! ऐसा दुःखद करुण दृश्य जिसका स्मरण मात्र हृदय को हिला देता है, उसको मैं अब अधिक लिखने में असमर्थ हूँ। मेरा कलेजा विदीर्ण हुआ जाता

है, दैव ने मुझे भी ठग लिया; यह अभागिनी अँखियाँ न जाने कब तक तरसती रहेंगी; मेरा हृदय शून्य होकर मेरा भविष्य भी दुखमय बन गया। हा! जब इस हृदय विदारक सम्वाद की याद आ जाती है; तो शरीर के रोंगटे खड़े होकर हृदय भी कांप जाता है। कहाँ तक कहूँ मेरी आत्मा की जलन गरम आँसुओं से किसी प्रकार से शान्ति नहीं होती। बहिन! प्यारी बहिन! आप तो सबको रोता बिलखता और किसी को सोता हुआ ही छोड़ कर चली गई; परन्तु मुझे तो तीर्थ यात्रा में भेजकर ही आप साकेत पधारीं। आपके बिना सारा संसार मुझे अब सूना प्रतीत हो रहा है। विधाता ने भारी अन्याय किया, हाय! मेरा दुलार भी न देख सका। बहिन आपने तो अपने प्रेम से पाले भैया को भी भुला ही दिया। आप में लोक कल्याण की भावना प्रबल थी, तभी तो अपनी उदारता के वशीभूत होकर जन-साधारण का भी आप ने भारी उपकार किया; आपका जनता पर भारी प्रभाव पड़ा किन्तु इसे क्रूर निर्दयी काल सहन न कर सका।

(६६) शृंगारी राम विलास शरण जी का कथन है, एक दिन कानपुर से श्री सिद्धकिशोरी जू के अनन्य प्रेमी श्रद्धालु भक्त पं० श्री हरिहरदत्त जी (मित्र जी) भी इनकी बीमारी का समाचार सुनकर श्री अवध में दर्शनार्थ आये थे, श्री किशोरी जू ने तुरन्त इनको अपने समीप बुलाकर ढाढ़स देते हुये कहा था कि अब हम अच्छी हैं, आप ने हमारा दर्शन कर लिया, आप आज शाम की गाड़ी से ही कानपुर लौट जायें; कल रात को यहाँ कोई दूसरी लीला होने वाली है उस समय आप का यहाँ रहना उचित नहीं समझतीं। पाठको! पंडित जी बड़े श्रद्धलु प्रेमी एवं आज्ञाकारी थे ही इसलिये तुरन्त शाम की गाड़ी से लीलाधर भगवान की कुछ लीला समझ कर कानपुर चले गये;

दूसरे दिन रात्रि में आप ने अपनी मानव लीला समाप्त कर दी, उन्हें क्या खबर थी कि हमारे जीवन नौका की कर्णधार दया-सागरी जी यहाँ से सदा के लिये चली जावेंगी, मित्र जी को जब पाँच सात दिन के बाद यह दुखद समाचार मिला तो वह अपनी छाती पर पत्थर रख कर सहन कर ही तो गये, यदि सहन न करते, तो फिर करते ही क्या? सज्जनो मित्र जी मुझे भी (लेखक) एक बार कानपुर में मिले थे। श्री सिद्धकिशोरी जी की वार्तालाप चलते ही उनका वियोग उन्हें असह्य हुआ; इसलिये वह फूट २ कर रोने लगे, भइया जी! क्या कहूँ, श्री सिद्धकिशोरी जी का मुखारविन्द अत्यन्त मोहक एवं हृदय नवनीत के समान स्निग्ध स्वच्छ था; सब प्रेमी जन उनका आदर सत्कार करते थे, वह ऐसी तेजवान एवं प्रभाव शाली थीं, कि उनकी इच्छा के विरुद्ध कभी कोई बात ही नहीं कर सकता था, वह तो एक शान्ति की मूर्ती थीं, सरलता एवं मृदुलता में अपने ही समान थीं; उनकी हँसी में भी भारी सौन्दर्य एवं आकर्षण भी था, मुझे जब कभी उनके शृंगार की झांकी याद आती है, तभी मेरी आँखें भर आती हैं; और गला रुँध जाता है, विशेष दुख तो मुझे इस बात का है, कि मैं भी आप ही की तरह धोखे २ में रह गया; (आप को तो उन्हों ने तीर्थ यात्रा में भेज दिया और मुझे भी श्री अवध से वापस कानपुर भेज दिया था तभी तो उनके अन्तिम दर्शन न कर सका।

(६७) परसनल असिस्टेन्ट साहब श्री अवधराज का कथन है कि जिस समय श्री सिद्धकिशोरी जी फैजाबाद में बीमार थीं एक दिन इशारे से हमको अपने समीप बुलाया (मंझले बबुआ इधर आई) जब मैं उनके समीप गया तो कहने लगीं कि अब "मैं यहाँ रहना नही चाहती। यहाँ से जल्दी चली जाऊँगी" मैं उनकी इस गूढ़ वाँणी को समझ नहीं सका तब श्री पुजारी

जी को जगाया तो उन्हों ने आकर पूँछा सरकार; क्या बात है, कहाँ चलोगी, क्या श्री अयोध्या जी चलने की इच्छा है? तब उत्तर दिया कि कल हमको श्री अयोध्या जी ले चलो। हमें असाढ़ शु० ६ को वहाँ एक नई लीला करनी है। सज्जनो! सप्तमी को तो हम लोग उनकी आज्ञानुसार उनको श्री अयोध्या जी में ले आये और नौमी को उन्होंने अपनी अन्तिम लीला ही कर दिखाई।

अन्तिम शव निकालने से पहिले थोड़ी सी वर्षा हुई जब श्री सरयू जी के तट पर चिता बनाई, दाहकर्म के समय बड़े जोरों से वर्षा होने लगी मैंने अपने भाई दुर्गादत्त जी से पूँछा ऐसी वर्षा में जब कि लकड़ियाँ सब भीग गई हैं अग्नि संस्कार कैसे होगा तब उनहों ने कहा कि जैसी उनकी मरजी होगी हमें तो पूर्ण विश्वास है कि वह अन्तिम चमत्कार भी कुछ न कुछ दिखलायेंगी; जरा धीरज धरो और उनकी लीला को तो देखो! बस थोड़ी ही देर के बाद वर्षा बिल्कुल बन्द हो गई घृत कपूर एवं चन्दन से अग्नि प्रज्वलित करके दाह कर्म किया गया कुछ लोगों का विचार था कि आज रात्रि को उनकी चिता में से कुछ राख ले जायेंगे; कारण कि ऐसे २ सिद्ध महान पुरुषों की राख इत्यादि से भी कई प्रकार के जन्त्र, मन्त्र; तन्त्र सिद्ध होते हैं। मगर इधर प्रेमियों ने परस्पर पहिले से ही यह निश्चय कर रक्खा था कि सन्ध्या को वापस लौटते समय कोयला राख इत्यादि सब को श्री सरजू जी में ही प्रवाह कर के तब घर जायेंगे। मगर सन्ध्या होते ही इतने जोरों से वर्षा होने लगी कि समस्त राखादि को श्री सरजू जी स्वयं बहाकर ले गईं किसी को कुछ नहीं करना पड़ा, यहाँ तक कि चिता वाली जगह पर एक २ हाथ सरजू जी का जल बहने लगा। यह है उन की अन्तिम लीला।

विमान पर अन्तिम दर्शन

(६८) पाठको ! प्रातः काल होते ही आपकी अर्थी का एक बहुत सुन्दर विमान बनाया गया और उस उच्च विमान पर आप का शव पधराया गया। हजारों जनता एवं प्रेमी गण और संत महंत भी पुष्पों की वर्षा एवं निछावरें करते हुए श्री सरयू जी के पावन तट पर ले गये; वहां इनका विधि विधान से अन्तिम दाह संस्कार कार्य हुआ।

पाठको इनकी माता जी के कुसुम कोमल हृदय पर जो चोट आई वह अकथनीय है, आप तो शव को देखते ही पछाड़ खाकर गिर पड़ीं, और कई घंटों तक होश नहीं आया। इन की श्री माता जी अभी जीवित हैं, जो कि श्री विहौती भवन में रह कर अभी तक प्रतिदिन श्री जुगुल सरकार के सुन्दर चित्रपट का पूजन करती हुई कालक्षेप कर रही हैं। श्री किशोरी जू के कथनानुसार "हम किसी के बेटे नहीं हैं," हम तो श्री सुनयना जू की बेटी हैं, आप ही उनके बेटे हैं। (देखो चरित्र नम्बर) इसलिए अब तक पुजारी जी अपनी शिष्या की अपनी ही माता के सदृश सेवा कर रहे हैं, भगवान की लीला बड़ी विचित्र है, इसको भगवान ही जाने कि इसमें क्या रहस्य था। उस समय श्री पुजारी जी महाराज की दशा भी अत्यन्त सोचनीय थी, यदि श्री राम जी के स्वरूप एवं दूसरे प्रेमी गण भी इनको पकड़ कर अपनी देखरेख में न रखते, तो हो सकता था कि यह भी उनके बिछोह में जीते जी सरयू प्रवाह हो जाते। कारण कि समीपी भक्त एवं सेवक के लिए तो सबसे सुख की वस्तु है प्रिय संयोग, एवं दुखद है प्रिय वियोग। तब भला श्री पुजारी जी के हार्दिक दुख का कौन वर्णन कर सकता है जिनको निरन्तर सात वर्ष

तक श्री सिद्धकिशोरी जू का सुन्दर संयोग प्राप्त होकर अन्त में दुखद वियोग प्राप्त हुआ।

उस समय चारों तरफ से दुख का समुद्र उमड़ रहा था; यद्यपि सभी लोग दुखी थे उनके दुख में दुख को भी दुख हो रहा था, श्री पुजारी जी के दुख की तो कोई सीमा ही न थी, परन्तु तो भी श्री पुजारी जी, मौनी श्री हरिसेवक दास जी, पं० रुद्रदत्त जी, पं० दुर्गादत्त जी, बाबू रामदयालु सिंह जी स्पीकर, श्री मस्तराम जी (पंजाबी) श्री लछमन शरण जी, इन के अलावा और भी बहुत से प्रेमियों ने (जिनका नाम मुझे याद नहीं रहा) मिलकर विधि विधान पूर्वक इनका अन्तिम कृत्य पूरा किया। तेरही के दिन भी एक बड़ा भारी भंडारा (भोज) करके संत महन्त ब्राह्मण अतिथि, अभ्यागत, सेवक एवं कंगालों तक को सादर सप्रेम भोजन दक्षिणा से सन्तुष्ट करके श्री सिद्ध किशोरी जी की जय बोलते हुए सब प्रेमी जनों ने अपनी २ उदारता एवं सच्चे प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। कई सज्जनों द्वारा ज्ञात हुआ है कि उस समय श्री सिद्ध किशोरी जी का बीमारी के समय दान पुन्य एवं भंडारा इत्यादि में पन्द्रह हजार रुपया से कुछ अधिक ही खर्च हुआ था।

भैया लक्ष्मीनिधि के नाम अन्तिम पत्र

(९९) श्री सिद्धकिशोरी जू की अन्तिम बीमारी के समय श्री पुजारी जी ने श्री अयोध्या जी से मेरे नाम (लेखक) केवल एक ही पत्र दिया था जो कि मुझे स्थान करवी (चित्रकूट) में अषाढ़ सुदी अष्टमी को मिला, तो उस लिफाफे से दो पत्र निकले एक तो पुजारी जी एवं श्री राम जी का था दूसरा श्री सिद्ध

किशोरी जी का। श्री राम जी पुजारी जी ने तो लिखा था भैया! आप की बहिन श्री सिद्धकिशोरी जू इस समय बहुत बीमार हैं, आप जल्दी चले आवें। परन्तु श्री सिद्ध किशोरी जू के पत्र में लिखा था, भैया जी! मैं बहुत अच्छी हूँ, प्रसन्न हूँ, अब शीघ्र अपने घर भी जाने वाली हूँ, आप कोई चिन्ता न करें, श्री राम जी तथा श्री महाराज जी आप से हंसी कर रहे हैं इसलिए अभी आप यहां आने का कष्ट न करें, कारण कि आप भी अभी तीर्थ यात्रा से लौटे हैं, आप का और आप के श्री गुरु महाराज का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं है; भैया जी हमको भूलना नहीं, यदि आप हमको भूल भी गये, तो यह बहिन आप को कदापि न भूलेगी।

"मोहि रक्षक जिय जान के करियों सदा तुम प्रेम।
जो कदापि मोंहि भूलियों भैया न छाँड़ब नेम॥"

पाठको! मुझे महान दुख है कि मैं उस समय श्री सिद्ध-किशोरी जी के उन गूढ़ शब्दों की गहराई तक न पहुँच सका। इसलिये अभाग्यवश उनके अन्तिम दर्शन से भी वञ्चित रहना पड़ा; उनके पत्र का आशय था कि मैं अपने घर (श्री साकेत धाम) को जाने की खुशी में प्रसन्न हूँ। बीमार नहीं हूँ, बस इसके पांचवें दिन श्री प्रीतम शरण जी श्री जानकी कुँड निवासी ने मेरे पास स्थान कर्वी में आकर मुझे सन्देश दिया, कि श्री सिद्ध-किशोरी जी आषाढ़ शु० ६ की रात के समय श्री अयोध्या जी से श्री साकेत धाम पधार गई हैं। मुझे नौमीं के संध्या समय आपके निमित्त अन्तिम सन्देश इस प्रकार से दिया गया था कि मैं आज रात को ग्यारह बजे साकेत जा रही हूँ हमारे भैया लक्ष्मीनिधि (अधिकारी श्री रामगोपाल दास जी) के पास हमारी ओर से जाकर आशीर्वाद देते हुये आश्वासन देना कि

वह घबरावें नहीं, कारण कि गुलाब के फूल के साथ कांटे की तरह संयोग में भी हमेशा वियोग का कांटा बना ही रहता है। इसलिये जीवन का अन्त मरण और संयोग का अन्त वियोग जान कर हमारे भैया राजकुमार जी हमारे बिछोह से दुखी तथा व्याकुल न होवें! मैं उनसे प्रथक नहीं हूँ; वह मुझे जहाँ भी याद करेंगे मैं उनसे अवश्य मिलूँगी! और यह भी कहा था कि मैंने उनको जानबूझ कर अयोध्या जी न आने के लिये इसलिये लिख दिया था कि प्रथम तो उनके श्री गुरुदेव अस्वस्थ एवं भैया जी भी तीर्थ यात्रा से लौट आने पर बीमार हो गये हैं; यदि उस समय मैं उनको यहां बुला लेती; तो उन्हें भारी खेद और असह्य दु;ख भी होता; इसलिये नहीं बुलाया। सज्जनो! इस प्रकार की हृदय विदारक दुर्घटना को सुनते ही मेरे तो होश उड़ गये हृदय में विरहाग्नि धधक उठी, मैं मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ा, और सर्वस्व गँवाये व्यापारी की भाँति जल से पृथक हुई मछली की तरह एवं मणि छीने हुये सर्प के सदृश्य मैं तड़फड़ाने लगा, बिछोह के कारण व्याकुलता से मेरा हृदय फटा जाता था; विरह की ज्वाला मेरे अंग २ को भस्म कर रही थी; शाम का वक्त था, अब करता तो क्या करता, डाकखाना भी बन्द, तार घर भी बन्द! उधर बीमारी के कारण मैं स्वयं श्री अयोध्या जी भी जाने से लाचार, और श्री गुरू महाराज जी भी अस्वस्थ! चित्त चिन्ता के पंक में फँस गया। मेरी साँप छछूँदर की सी दशा हो गई। चिन्ता से मैं व्याकुल होकर उन्मत्त पागलों की तरह इधर उधर दौड़-धूप करने लगा, कारण कि भावना ही तो पागल बना देती है; कोई चीज अच्छी नहीं लगती थी; श्री किशोरी जू के बियोग में अच्छी चीजें भी मुझे काटने लगीं और मैं काल की कुटिल गति को कोसता हुआ अपनी कोठरी में चला आया। कुछ सचेत होने के बाद पूजा में

रखे हुये भवभयहरिणी श्री सिद्धकिशोरी जी के उस चित्रपट के सामने पहले तो प्रणाम किया फिर उस जगत मंगल मूर्ति को हृदय में धारण करके नम्रभाव से करबद्ध प्रार्थना की ! बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी क्या यह घटना सत्य है, अथवा मैं कोई स्वप्न ही देख रहा हूँ या आप ने मेरी प्रेम परीक्षा ही की है। अब जिस प्रकार हो सके; मुझे सचेत करते हुये मेरे प्राणों की रक्षा करें। आपके वियोग में मेरे प्राण निकलना चाहते हैं; यदि ये अभागे निष्ठुर प्राण न निकले तो मैं तुरन्त श्री मन्दाकिनी गंगा में ही कूद कर इस नश्वर शरीर को त्याग दूँगा। आत्म हत्या से चाहे मुझे नर्क ही क्यों न मिले; मुझे इसकी कोई चिंता नहीं है। आपके बिना अब मेरा कौन आधार है। सज्जनो ! केवल पाँच सात मिनट के अन्दर ही अन्दर पहिले तो मेरी बांई आँख फड़की, फिर बिल्ली ने रास्ता काटा, इधर पूजा में रखे चित्रपट का शीशा श्री किशोरी जू के सिर से चरणों तक क्रेक हो गया, (चिटक गया) इस प्रकार के तीनों असगुन मेरे लिये अमंगल सूचक निर्णय हुये, अब तो मैं समझ गया कि यह दुर्घटना झूठी नहीं सच्ची है ! अब तो मेरा शोक-सन्ताप पहिले से भी अधिक बढ़ने लगा, किसी साधू ने इस दुर्घटना को मेरे गुरु महाराज जी से भी वर्णन कर दिया तो झट श्री गुरु महाराज ने मुझे अपने समीप बुलाकर सान्त्वना देते हुये बहुत कुछ समझाया बुझाया; कि बेटा तुम्हारा कहना ठीक है; मृत्यु के स्थाई वियोग का दुख जरूर असह्य होता है, परन्तु भगवत इच्छा समझ कर उसको भी सहन करना ही पड़ता है। काल की गति प्रबल है, इसे कोई मिटा भी तो नहीं सकता ! "हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ"! इसलिये सब्र करना पड़ता है। दुख सुख किस पर नहीं आते, बन्धु, बान्धवों का वियोग किसे नहीं होता ? जय विजय का अनुभव

किसे नहीं करना पड़ता। होनहार को कोई रोक नहीं सकता तक़दीर का लिखा अमिट है एवं "फरा सो भरा औ बरा सो बुताना" मरना जीना तो प्राणी मात्र का काल के साथ ही बँधा है। जो बात निश्चित है, उसके लिये शोक करना भी व्यर्थ है; सब अपने प्रारब्ध के आधीन हैं। जिस का जिस के साथ जितनी देर तक का पूर्व जन्म का सम्बन्ध होता है; उतनी देर तक वह उसके साथ रह कर समय पूरा होते ही फिर चला भी जाता है, प्रारब्ध कर्म ही मिला देते हैं। और वे ही फिर अलग भी कर देते हैं; सभी जीव पूर्व जन्मों के कर्मों में बँधे हैं, भगवान जो करते हैं, शुभ ही करते हैं, उनकी लीला को कोई जान नहीं पाता, वह तो कोई जीवन मुक्त अवतारी महान पुरुष ही थे, इसलिये उनकी चिन्ता करना भी व्यर्थ है। सज्जनो! मेरे हृदय में प्रेम की अग्नि उमड़ चुकी थी इसलिये न कोई उपदेश भाता था और न ही खाना पीना अच्छा लगता था, मुश्किल से रात्रि तो रोते २ कटी! जिस किसी भी मनुष्य की चिन्ता सीमा से अधिक बढ़ जाती है तो वह दिन रात सोते जागते चलते फिरते उसी की उधेड़ बुन में ही लगा रहता है।

बस उस समय मेरी भी यही दशा थी, मुझे इस बात का विशेष दुख था कि कितने स्नेह प्रेम तथा कृपा से किशोरी जी ने मुझे अपनाया; अपना भैया बनाया खिलाया पिलाया लाड़ लड़ाया, केवल इतना ही नहीं; मुझे चार महीने तक अपने साथ २ देसाटन भी कराया; किन्तु इसका कारण क्या है कि इतना होने पर भी मुझे अपना अन्तिम दर्शन क्यों नहीं कराया;

"भोजन भाषण सयन में साथ-सिद्धकिशोरी के हम रहे,
भैया पालत प्रेम को अब बहिन वियोग कैसे सहे"।

हा! निष्ठुर विधाता तूने मेरे साथ भारी अन्याय किया

मुझको अपनी प्रिय बहिन की छत्र छाया से दूर कर दिया अब तो मुझे रात्रि दिन शोक सागर में निमग्न रहते हुये उनके सुधापगे बचनों, लाड़ प्यार, स्नेह एवं वात्सल्य के महान लाभ से भी बञ्चित रहना पड़ेगा, मेरा जीवन संकट ग्रसित हो रहा है, मुझे तो भविष्य की चिन्ता भी सता रही है; कि मेरा जीवन अब किस प्रकार व्यतीत होगा। बहिन आप तो मुझे अकेला छोड़ कर साकेत को चली गईं; किन्तु भैया की स्मृति भी बनी रहे; इसे भूल न जाना। सज्जनो! मनुष्य जब अधीर हो जाता है; तो आशा उस का हाथ पकड़ कर आगे को बढ़ा देती है। बस इसी प्रकार सोचते विचारते रोते गाते निद्रादेवी ने मुझे धीरे २ अपनी गोदी में सुला दिया, परन्तु मेरी आँखों में नींद कहाँ? श्री किशोरी जू का वियोग दृश्य तो प्रत्यक्ष मेरी आँखों के सामने नाचता दिखाई पड़ता था, किसी प्रकार मैंने रोते गाते आधीरात बिताई, उधर रात्रि के तीन बजते ही मैं एक स्वप्न देखने लगा। श्री सिद्धकिशोरी जी एक दिव्य अनूपन ज्योतिमय सिंहासन पर विराजमान हैं, और मैं उनके चरणों के निकट बैठो रोते हुये प्रार्थना कर रहा हूँ, बहिन! आप मुझे अकेला रोता-बिलकता छोड़ कर यहां कैसे चली आई हैं? अब मैं किस के आधार पर अपना जीवन बिताऊँगा और अपनी व्यथा किस को सुनाऊँगा? आप के सदृश अब मुझ से कौन प्रेम प्यार एवं लाड़ दुलार करेगा। अब मुझे भैया २ कह कर कौन पुकारेगा; एवं मैं भी किस को बहिन २ कहके सुख पाऊँगा! आप की कृपा वात्सल्य अपने ऊपर देख कर मुझे भारी अह्लाद होता था, चित्त को शान्ति व सुख मिलता था; अब किस की कृपा का सहारा लूँगा, मृत्युरूपी ग्राह मुँह फाड़े बैठा है, इस संसार सागर से मैं भय भीत हो रहा हूँ; अब इस से मेरी रक्षा भी कौन करेगा? बहिन! मैंने संसार

से मुख मोड़ा घर वालों से नाता तोड़ा आप से दिव्य नाता जोड़ा फिर अब मैं किस की शरण जाऊँ ? इधर कृपा बारिधि भय त्राता; श्री सिद्धकिशोरी जू ने जब मेरी वेदना पूर्ण वाणी द्वारा मर्म स्पर्शी शब्दों को सुना, तो प्रेम पूर्वक मुझे आश्वासन एवं धैर्य्य बँधाती हुई पुचकार कर समझाने लगीं; भैया जी ! आप इतने क्यों घबरा कर अधीर हो रहे हैं, धीरज को धारण करें चिन्ता किसी बात की न करें ।

हमारे ही सदृश सब लीला स्वरूप आप को भैया २ कह कर आप से प्रेम एवं लाड़ दुलार करेंगे । मैं भी अपने भैया को भूल नहीं सकती, जब जहां भी याद करोगे वहीं दर्शन दूँगी । भैया ! जो कुछ भी कष्ट आन पड़े उसको भी प्रारब्ध का भोग ही मान कर प्रसन्नता पूर्वक भोग डालना चाहिये । यदि आप मुझे अपनी बहिन ही मानते हैं, मेरी इस आज्ञा का पालन अवश्य करें । अभी कुछ काल तक अपने स्थान में रह कर भगवान की सेवा करते हुए श्री गुरु महाराज की अन्तिम सेवा प्रेम पूर्वक कर लें । यदि आपने मेरा कहना मान लिया तब तो सुख पाओगे, आप का हित एवं कल्याण इसी में है । और यदि मेरा कहा न मानोगे तो पछताओगे । एक मात्र अपने प्यारे प्रीतम की प्रतीक्षा करते हुये उन्हीं का स्मरण गुणगान द्वारा काल क्षेप करते हुए समय को बिताते जाओ, मैं आपको कदापि भूल नहीं सकती । परन्तु आप भी मुझे भूल न जाना ।

सज्जनों ! इतना कहते २ श्री सिद्धकिशोरी जू ने मेरे सिर पर अपना कर-कमल रखा, पुचकारा, फिर न जाने कहां अदृश्य हो गईं उधर मैं भी जाग उठा देखा तीन बजे थे । इस प्रकार शोक सागर में डूबते उतराते सवेरा हो गया; मैंने जाकर श्री गुरू महाराज जी के चरण स्पर्श किये, सादर साष्टांग दण्डवत की, और सर्व प्रथम रात्रि के स्वप्न का पूर्ण वृतान्त

भी उनसे कह सुनाया। श्री गुरू महाराज जी का कथन था कि इसको केवल श्री किशोरी जी की असीम कृपा का ही फल समझो। जिन्होंने तुमको अति व्याकुल एवं अधीर देखकर स्वप्न द्वारा दर्शन देते हुए तुमको धैर्य बंधा कर आज्ञा भी प्रदान की है, इसलिये उनको कोई साधारण बालक न समझ लेना। वह तो साक्षात कोई अवतारी महान पुरुष ही थे। इसलिए इनकी आज्ञा का कहीं भूल कर उलंघन न कर बैठना। यदि उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए कार्य करते रहोगे, तो अवश्य तुम्हारा हित और कल्याण होगा, देखो। आशा के सहारे से ही संसार का चक्कर घूम रहा है, सचमुच मनुष्य आशा के ही सहारे जीता है, यदि जीवन में आशा सहचरी न हो तो एक क्षण भी जीवित न रहे। कोई किसी आशा से, तो कोई किसी आशा से अपने को बचाये हुए है। संसार का अस्तित्व तो आशा के ऊपर ही अवलम्बित है। देखो मनुष्य कितना आशावादी है तुम्हारे ही पीछे जगत में व्योपार है। इतना कह कर श्री गुरू महाराज ने मुझे आज्ञा दी कि जाओ स्नान ध्यान करो फिर अपने कार्य को देखो और साथ ही साथ यह भी कहा कि सभी के कर्म एवं पुण्य प्रथक प्रथक होते हैं, संयोग वियोग भी प्रारब्ध के अनुसार ही होता है। इसलिए प्रारब्ध की विभिन्नता के कारण अनिच्छा पूर्वक सम्पूर्ण दुख हृदय पर पत्थर रख कर सहन करने ही पड़ते हैं।

सज्जनो! यद्यपि श्री किशोरी जू का विछोह अति दुखद था, जी चाहता था कि किसी निर्जन वन में भाग जाऊं, परन्तु ऐसा न करके श्री सिद्धकिशोरी जी एवं श्री गुरु महाराज जी की आज्ञा का पालन करते हुए पूर्ववत स्थानीय एवं संस्कृत कालेज के कार्यों की देखरेख करने लगा।

भैया की करुण पुकार !

(१००) श्री गुरुदेव के साकेत बास पर ता० २७।२।१६३६ को रात्रि के समय मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट के सन्मुख प्रार्थना करते हुए अपने हृदय का दुख इस प्रकार प्रकट किया मेरी प्यारी बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी, मेरी लाड़ली एवं महान उदार बहिन श्री जनकदुलारी जी, आप कितनी कृपा मुझ पर करती हैं। इसको मैं भली भांति जानता हूँ। उसे किन शब्दों में कहूँ। आपकी असीम कृपा न सीम वात्सल्य एवं उदारता का पूर्ण अनुभव कर २ मेरा तो हृदय फूला नहीं समाता! अपने प्रति आपकी परम अनुकम्पा प्रतिदिन बढ़ती ही दिखाई देती है। मैं क्या था और क्या बन गया; आपने मानो काँच को कंचन ही बना डाला। आपका मुझ दीन हीन पर कितना स्नेह और कितनी ममता है, इसे तो स्मरण करने मात्र ही मैं गद्‌गद हो जाता हूँ। इस प्रकार के अधिक स्नेह में मुझे शंका भी होने लगती है, कि मैं तो कदापि इतने स्नेह का पात्र नहीं था, मेरा इतना सौभाग्य ही कहां जो आप मुझ से इतना दुलार एवं स्नेह कर रही हैं! अहा! एक साधारण अबोध बालक को श्री मिथिलेश-राजकुमार बना देना भला आपके सिवाय दूसरे किसमें शक्ति है! अपकी इस अनन्त उदारता का मैं अनन्त ऋणी हूँ। बहिन! आपके लिये मेरे हृदय में कितना आदर है, किस कदर प्रेम है। उसे भी कैसे बताऊँ। आपकी असीम कृपा द्वारा श्री गुरुदेव भी ऐसे कीर्तिवान प्रभावशाली, दयालु, उदार एवं कृपा सागर सिद्ध महान पुरुष मिले; कि इस संसार में ऐसे गुरुजनों का मिलना भी दुलर्भ है; कहाँ तक कहूँ मेरा समस्त जीवन आप की असीम अनुकम्पा द्वारा अब तक परमानन्द में ही गुजरा

श्री रसिक सिरताज श्री मिथिला अवध हृदय के महाराज श्री जुगुल सरकार (वहिन-वहनोई) के वात्सल्य प्यार एवं आशीर्वाद का मैं अधिकारी वन गया। इससे बढ़ कर मेरे लिये हर्ष ही क्या हो सकता है ? मुझे तो भारी अचम्भा इस वात का है कि आप (श्री जुगुल सरकार) मुझ पर रीझ कैसे गये ? मैं इस योग्य था ही कहाँ ? आपने समस्त सुख देते हुये जिस प्रकार मुझे अपनाया है; इस प्रकार शायद ही और किसी को अपनाया होगा; केवल इतना ही नहीं, वल्कि संसारी कुटुम्वियों के मोह ममता के जाल से भी छुड़ाकर अपने दिव्य माता पिता पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री सुनयना अम्वा जू एवं सुनाम धन्य परम वन्दनीय पूज्य पिता श्री जनक जी महाराज की स्नेह मई गोदी तक पहुँचा दिया; तो क्या मेरे लिये यह कोई कम गौरव की वात है।

हे प्रिय वहिन ! आप तो सवके हृदय गति की जाननहारी हैं मेरे हृदय की लालसा भी आपसे छिपी नहीं है; मेरी सम्पूर्ण कामनायें तो आपकी कृपा से पूर्ण हुई ? क्या मुँह लेकर मैं आपकी प्रशंसा करूँ, किन शव्दों में कृतज्ञता प्रकट करूँ, एक उपकार हो तो उसका कथन भी किया जाय। मेरी तो पग-पग पर आपने देख रेख एवं रक्षा भी की है; आपने मेरे अनेकों मनोरथों को पूरा किया है; मेरी सभी लालसा पूरी की हैं। परन्तु मेरी एक लालसा शेष भी है। यद्यपि मेरे लिये तो अगम है, किन्तु आप पूर्ण काम एवं परम उदार के लिये सुगम ही है। इसलिये मेरी इस कामना को भी पूर्ण करने की अनुकम्पा करें, वहिन ! मैं संसार का सम्राट नहीं वनना चाहता; चक्रवर्ती राज्य की मुझे चाहना ही नहीं ! स्वर्ग के राज से भी मुझे वे-परवाही है, मैं और किसी प्रकार के अधिकार की भी अभिलाषा नहीं करता; यहाँ तक कि मोक्ष की भी तनिक इच्छा नहीं है यदि

इच्छा और चाह है तो केवल आप श्री जुगुल सरकार श्री सीता-राम जी की ही चरणों की सेवा; भक्ति, एवं भजन की बस वहिन, मैं तो अब पल्ला पसार कर आप से यही भिक्षा मांगता हूँ कि अपने श्री चरणों से कभी न्यारा न करते हुये मुझे अपने भजन एवं सेवा की शक्ति प्रदान करैं, कारण किः—

"भजन बिन जीवन को धिक्कार,
चाहै धन सम्पति सब कुछ हो-हो जगत पर अधिकार"
ठाट बाट हों अनेकों हों सुख सकल प्रकार
पर हरि भक्ति रस जिसको हुआ न अंगीकार,
उसने मानव तन पाकर किया कष्ट बेकार
नहीं जावैगा संग राज ये-कहते भैया लक्ष्मीनिधी पुकार,

वहिन! त्रिलोकी का त्रिकालिक सुख भगवत भजन एवं श्री मिथिला अवध रस के एक सीकर के साथ भी तुलना करने योग नहीं है। मैं तो सदा सर्वदा आप के ही नाम की छत्र छाया में रहना चाहता हूं। अब तो मुझे अपने कृपा कोट ही में बसाइये; जहाँ श्री जुगुल सरकार की करुणा वर्षा से भीगता और मुस्कराता रहूं। कारण कि इसके सिवाय मेरे दुखों की निवृत्ति की कोई भी सूरत इस संसार में दिखाई नहीं पड़ती मैं इस दुख पूर्ण अधर्मी कलिकाल में जीना भी नहीं चाहता। और यहाँ अधिक जीने में लाभ ही क्या? अब तो प्रेमरूपी पीयूष पिला कर आप अपने ही चरण कमलों में मुझे निवास दें, अब तो किसी भी चीज की मुझे दरकार नहीं, इस असार संसार से कुछ भी मेरा सरोकार नहीं"। आप मुझे ऐसा अशीर्वाद देकर आत्म शक्ति भी प्रदान करैं कि जिसके बल से नाम का तार टूटने न पावै। आप की कृपा एवं भजन के प्रताप से पूर्व सञ्चित पाप कर्मों का खाता भी रद्द हो जाय।

बस ! केवल यही भिक्षा मांगता हूँ; एवं शरीरान्त के पश्चात् आप के दिव्य अविचल साकेत लोक में भी केवल आप की सेवा को छोड़ कर और कुछ नहीं चाहता। क्या भैया पर इतनी कृपा न करोगी वहिन ! अब रही मेरी दूसरी प्रार्थनाः—

"मुझे क्या मालूम था दुर्दिन वही आ जायगा,
फ़ुरकते गुरुदेव में यह दर्देदिल बढ़ जायगा।"
"क्या खाक़ हो तरक्की जो पैग़ाम तक आया नहीं,
इस मोहब्बत के पले को सब्र क्यों कर आयेगा।"

हा ! काल की कैसी कुटिलगति है। हाय ! यह संयोग वियोग का विधान विधाता ने कैसा क्रूर बनाया है, अपने परम प्रिय सुहृदों तथा पूज्य आचार्यों से मिल कर बिछुड़ना कैसा दर्दनाक काण्ड है। वहिन ! मैंने आप की प्रथम आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया, बल्कि २६/२/१९३९ तक सर्वथा उसका पालन ही किया, परन्तु अब इस से अधिक पालन करने की शक्ति मुझ में नहीं रही। जब कि मेरे सिर से अधिकार दाताओं का साया ही उठ गया, अर्थात् मेरी इस जीवन नौका के कर्णधार श्री गुरू महाराज मुझे अकेला छोड़ कर आप के दिव्य लोक (साकेत) में २६/२/१९३९ को आप के ही समीप पहुँच गये; और उन से पहिले आप ने भी मुझे त्याग दिया तो अब किस के बल पर किस आधार से मैं यहाँ रहूँ और क्या करूँ। वियोगाग्नि से मेरा रहा सहा हृदय भी दग्ध हो रहा है, हाय कोई उपाय नहीं सूझता कि इस राज काज रूपी जाल से कैसे और कहाँ निकल जाऊँ ? एक तो आप का बिछोह; दूसरे श्री गुरू महाराज का दुखद विरह मुझ से कैसे सहन हो सकैगा। इसलिये प्रार्थी हूँ कि मुझे भी अब शीघ्र अपनी एवं श्री गुरू महाराज जी की चरण सेवा के निमित्त साकेत

में बुला लें। छाया की भाँति मैं सदा आप के संग रहता हुआ आप दोनों की चरण सेवा करूँगा। इस संसार की अशान्ति में भी दुख ही दुख हैं, एवं अपनी वेदना के आँसुओं में यह शक्ति नहीं पाता हूँ कि इनसे यह आग बुझा सकूँ; मन ही मन में कुढ़ा करता हूँ, दिन रात विरह वियोग में व्याकुल रहने के कारण विरह की ज्वाला मेरे अंग अंग को जला रही है इसी से आतुर हो रहा हूँ कि किस प्रकार यह आग बुझे? जो कुछ भी सुख एवं आनन्द था वह सब तो बहिन! आप के एवं श्री गुरुदेव के साथ ही साथ चला गया, अब तो वहाँ रात दिन केवल रोना और आँसुओं से मुँह का धोना ही बाकी रह गया है, बिना किसी आधार के भी संसार में सुख संतोष एवं धैर्य कहाँ? आप की तो याद आते ही मेरी आँखों से आँसुओं का बाँध टूट जाता है; और मेरा रोम २ आप को पुकारने लगता है बहिन तुम कहाँ हो; आप की अमृतमयी वाणी सुनने को मेरे कान मचल रहे हैं और मेरा मन आप के दर्शनों के निमित्त उतावला हो रहा है। प्यारी बहिन! जब कि दीन दुखियों पर दया व कृपा करना आप का दृढ़ व्रत ठहरा; तब तो आप ही बतावें कि इस समय मेरे जैसा भूला भटका एवं दीन दुखी इस संसार में कौन है। और इस दुख की ज्वाला से दग्ध मेरे अन्तः-करण को आप के सिवाय शीतल करने में भी और कौन सामर्थ है; आप के समान किस में शक्ति है?

आपकी बराबर कौन दयालु और उदार है? कि जिसे मैं अपना दुखड़ा सुनाऊँ! फिर आप मुझे इस असार संसार से न छुड़ा कर उलटा इसके नश्वर भोग पदार्थों एवं मोह माया के जाल में क्यों उलझा रही हैं; भैया को किस लिये बंधन में फंसा रही हैं, इनसे सुलझा कर शीघ्र मेरी रक्षा करें। हे करुणा सागरी जू जिस प्रकार आपने अपना दर्शनामृत पिला कर हमारे श्री

गुरु महाराज पर असीम कृपा की है; तो उन्हीं की भाँति मुझ अधमरे को भी अपने चरणों में क्यों नहीं बुला लेतीं; जिससे यहां भविष्य में आने वाले समस्त झंझटों और लड़ाई झगड़ों से तो छुटकारा पा जाऊँ! बहिन आपका चित्त तो बड़ा ही कोमल और स्वभाव भी दयालु है, मुझे भारी अचम्भा तो इस बात का है कि आपने भइया को अपना कर भुला क्यों दिया।

"चरणों में अर्पित है भैया, चाहो तो बहिन स्वीकार करो,
यह तो भार है राम जी का, इसे ठुकरा दो चाहे प्यार करो।"

आप परम सामर्थ एवं मैं परम असमर्थ हूँ; इसलिये मुझे तो दृढ़ विश्वास है कि आप भैया को अवश्य अपनी प्रेम भरी गोद में प्रेम पूर्वक बिठावेंगी। यदि ऐसा न हुआ तो देख लेना बहिन, भारी अनर्थ होगा! बहिन-भाई और सार-बहनोई का सम्पूर्ण नाता झूठा और व्यर्थ होगा।

हां बहिन! क्या प्यारे बहनोई एवं गुरुदेव के कोमल मुख कमल एवं चरणों को देखकर कभी मेरी यह आँखें भी शीतल होंगी? मुझे यहाँ कोई सुख नहीं है! यहाँ के महल अटारी तो मुझे अब सर्पों के समान ही काटने दौड़ते हैं। कलि के कुचाल से भी भारी हैरान और परेशान हूँ, इनसे मेरी रक्षा करें। "अब तुम बिनु कौन तन ताप हरे।" मेरी चिन्ता की चिनगारियाँ आँखों के सामने जुगुनू की भाँति चमक २ कर चौंधिया देती हैं। शोक सागर की प्रबल गम्भीर गर्जना से भयभीत होकर मेरा हृदय भी सहम जाता है, आपके पवित्र गुण हृदय को व्यथित कर रहे हैं, आपके गुणों की स्मृति में ही मेरा जीवन है, दर्द भरी टीस, एक कर्कश कूक, एवं हृदय की हूँक उठा करती है, इधर विकट वेदना, पिशाची की भाँति मुझे निगलने को दिखाई

पड़ती है, मैं यह नहीं जानता कि भविष्य में मेरे भाग्य में क्या लिखा है, अब तो केवल आपके कर कमलों द्वारा ही मैं सुरक्षित रह सकता हूँ; दूसरा कोई उपाय नहीं; मैं आपके पहिले उपकारों को कहाँ तक गिनाऊँ, कहाँ तक आपके गुण गाऊँ; आपकी अहेतुकी कृपाओं का भी किस प्रकार वर्णन करूँ; मैं अपनी कुशल भी क्या बताऊँ, कुशल तो बहिन प्रकाश में होती है न ? अन्धकार में तो चारों तरफ भय ही भय होता है ! सूर्य के अस्त हो जाने पर तम में प्रकाश कहाँ ? भुवन भास्कर रूपी श्री गुरुदेव के प्रस्थान कर जाने पर अब मेरे भाग्य में कुशल कैसी ? अब तो सर्वत्र अकुशल ही अकुशल मालूम पड़ती है क्या विधाता ने मेरे शरीर को दुख भोगने के निमित्त ही इस संसार में रचा है।

ऐ बक्क जाने वाले का इज़हारे हाल है।
चढ़ती उतरती धूप जमाने की चाल है ॥
बढ़ने को जो निहाल थे मुरझा के रह गये।
खिलने को थे जो फूल वह कुम्हला के रह गये ॥
बादे बहार चलने से रुक रुक के रह गई।
उठने को थी जो शाख वह झुक २ के रह गई ॥

आह ! अभी इस उजड़े दयार व सूखे चमन में बहार आने भी न पाई थी, इन बहार की मुत्तलाशी आंखों ने फूलों की शादाबी और चमन की हरियाली देखी भी नहीं थी। दिल अभी मानूसे बहारां भी होने नहीं पाया था, किसी मसरत और खुशी के मौका पर चन्द दिलों को मिल कर खुशी के आँसू बहाने का नज़रों में नज़रें डाल कर जेरे लब मुस्करा लेने का वक्त भी नहीं आने पाया था कि नागाह खिजाँ की आमद की खबर इसकी मन्हूस और मस्मूम हवा के झोंकों से मिली। यकबारगी भारी सदमें की गहरी चोट से मैं तलमला सा गया

आंखे चपोरास्त निगरां थीं, मगर होश ठिकाने न रहने के सबब कायेनात की सारी चीजें नजरों से ओझल थीं, फज्ञा तारीक हो गई, सिर में एक अजीब सी टीस होने लगी, दिमाग चरखी के मुवाफिक चकराने लगा, सुन्हरे ख्वाबों का शीराजा बिखर गया। उम्मेद की शादाब कलियाँ मुरझा कर खाक बदामां हो गईं, बहार से नजरें चार होने का सहारा टूट गया।

यही ख्याल में था दम बदम, कि बहार देखेंगे अब के हम।
जो छूटे असीरेकफस से हम, तो सुना कि खिजाँ के दिन आगये॥
जो सूरतें खुशी की थीं गम नाक हो गईं।
अफसोस सारी आरजुयें खाक हो गईं॥

लोग कहतें हैं कि यह दुनियां एक सराय और मुसाफिर खाना है। जिसमें तरह २ के मुसाफिर जगह २ से नहीं, बल्कि एक ही जगह से आते और कुछ ही दिन रह कर फिर उसी जगह चले जाते हैं, जहां से आये थे। इस मुसाफिर खाना में उनके कयाम का औसत ६०-७० साल के करीब होता है; जो लोगों से मिलने और हंस बोल लेने के लिये किसी तरह कम नहीं है, लेकिन फिर भी जब मुसाफिर सबों को छोड़ चलने की तैयारी में मशगूल होता है, तो लोग उसकी जुदाई का तस्उर कर के गला फाड़ फाड़ कर रोते और चीखते हैं अपने दामनों और गिरेबानों को भी बदहवासी में पारा २ कर देते हैं। तब कोई आंख नहीं मिलती जो इस मुंज़िर को देखे और आंसुओं से भर न आये। फिर मित्रो क्या बजह है कि मैं अपनी प्रिय बहिन श्री सिद्धकिशोरी जू के बिछुड़ने पर मातम न करूं, और उनकी याद में आँसू न बहाऊं जिन्होंने सिर्फ पन्द्रह साल तक की उम्र में हम लोगों के बीच कयाम किया हो, और इतने थोड़े ही अरसे में अपने हुसनें सलूक, खलवस मुहब्बत और

ग़ैर मामूली ज़राफत, बेहतरीन लियाकत से अपने रिश्तेदारों, संत-महन्तों, हाकिम-अहलकारों, सेठ-साहूकारों एवं प्रेमी भक्त-जनों के दिलों में पूरे तौर पर जगह पा ली हो, जिन्होंने आज तक किसी के दिल को न दुखाया हो और अपनी लासानी करामातों से एक आलम वरतये हैरत में मुवत्तिला कर दिया हो, और खुश किस्मती से नाम भी "श्री सिद्धकिशोरी जू" कितना सुन्दर और प्यारा पाया हो, जो या तो चुपके से दिल में छिपाने के काबिल है, या माला पर धीरे २ जपने के लायक।

मित्रो ! आज उन्हीं की जुदाई पर दिल बेताबी के साथ सिसकियाँ ले रहा है। आँखें उनके चरणों में आंसुओं के मोती नुमा कत्तरात का हकीर तोफा पेश कर रही हैं, दिल फिर मिलने के लिये आरजू पेश कर रहा है। "सीने से ग़म की हूक उटी-उठ के रह गई। आंसुओं की नदी आंखों के रास्ते बह गई" "एक रोज़ का रोना हो तो रोकर सब्र आये; और हर रोज के रोने को कहां से जिगर आये।"

ऐ गुलशने मिथिला के ताइरो, दरख्तो, पहाड़ो, कुछ तुम ही बताओ, उस शिगुफ्ता फूल को जिसकी खुशबू से प्रेमी समाज का दिमाग महका हुआ था; बादे तुन्द का झोंका कहाँ उड़ा कर ले गया ? ऐ बादे सबहा तू ही बता और सच्सच बता; मेरी प्यारी बहिन ! श्री सिद्धकिशोरी जू कहां छिपी हुई हैं ? बहिन ! क्या आप ने रिशता इसलिये कायम किया था कि एक दिन अपने भैया को ठुकरा कर और तड़पते ही छोड़ चली जायँगी ? मेरी दर्दअंगेज़ गिरिया-ज़ारी तो पत्थर को भी मोम बना रही है, फिर न जाने बहिन ! तेरा माखन सा कोमल हृदय आज किस चीज का बन गया है, जो मेरी इस दर्दनाक आहो-ज़ारी को सुनते हुये भी नहीं पिघलता; अगर इस आड़े वक्त में आँख चुराई और दस्ते-शफ़क़त न फैलाया, तो मेरी तबाही और

बरबादी जरूर है, बहिन! क्या आप इस बात को गवारा करोगी कि आप का नाज पर्वुर्दा ब्रादर (लक्ष्मीनिधि) तो तड़प २ कर मर जाय और हमशीरा छिपी रहें? हा! जब आप की खूबियाँ याद आती हैं तो दिले-बेताब को तसकीं देने वाला और मुझे खामोश कराने वाला भी कोई नजर नहीं आता। एक दफा आकर देख तो जावो कि आप की अदम-मौजूदगी में मेरी कैसी नागुफ्ताबेह हालत हो रही है:—

इस मिथिला अवध की भी रखना याद तुम,
मुद्दतों जिसमें रहीहो बहिन, आबाद तुम।
बहिन साकेत में बुलाओ तो खुशी इन्तिहा की है,
छोड़ा अगर तो प्राणों की मरजी फना की है।
"इमदाद ले के अपने दिले नासबूर से,
जो दुख दर्द था मुझे, कह दिया हजूर से"
"तेरी याद में क्या रोयें, आँसू भी नहीं रोने के लिये
पाया था तुम्हें बहिन किशोरी क्या खोने के लिये"

बहिन, बहिन, प्यारी लाड़ली बहिन लो चला अब तुम्हारा भैया मन्दाकिनी गंगा की भेंट।

❀ श्री जुगुल सरकार का शुभ दर्शन ❀

(१०१) मेरी करुण कथा जब प्रार्थना रूप में श्री सिद्धकिशोरी जू के पेश हुई तो रात्रि में स्वप्न होता है कि भैया २! घबराओ मत, धैर्य्य रखो, मैं अभी आती हूँ, इतना सुनते ही मेरी अन्तरात्मा प्रफुल्लित हो उठी, और अनायास मेरे मुख से यह शब्द निकले। "आज दम भर में अजल का सामना होने को था,
खैर गुजरी आ गईं बहिन, क्या से क्या होने को था"।

सज्जनो ! करुणा को भी करुणा सागर में डुबो देने वाली मेरी गदगद आर्त वाणी को केवल मेरी बहिन ने नहीं किन्तु इसके साथ २ मेरे परम प्रिय बहनोई श्री राम जी महाराज ने भी सुना और खूब सुना, तारीख २६/२/१९३९ की रात्रि को तीन बजे ही श्री चित्रकूट अन्तर्गत श्री मन्दाकिनी गंगा के तट पर स्थित स्थान कर्वीमाफी में प्रिया प्रीतम श्री युगुल सरकार ने मेरी ही कुंज में अपने दिव्यरूप से प्रकट होकर मुझे दैव दुर्लभ अपने शुभ दर्शनों से कृतार्थ करते हुये मेरे मस्तक पर अपना सुखद शीतल अभय हस्त-कमल फेरा। श्री जुगुल सरकार (श्री सीता राम जी) ने ज्यों ही अपनी करुणा दृष्टि से मेरी ओर निहारा ! उनके केवल दर्शन एवं स्पर्श मात्र से ही मेरी समस्त शारीरिक वेदनायें और चिन्तायें तुरन्त नष्ट हो गईं। मुझ में कुछ आकर्षण का भान हुआ और आत्म शक्ति भी बलवान हो गई, परन्तु श्री जुगुल सरकार के अधिक तेज, प्रकाश के कारण मेरी आँखें चौंधिया गईं मैं इस को सहन न कर सका, इसलिये अधिक प्रसन्नता के कारण धरती पर गिर पड़ा; तब मन को हरने वाली मन्द २ मुसकान द्वारा श्री किशोरी जू ने मुझे सावधान कर उठाया; और अपने मीठे भाषण द्वारा मेरे मन को हर लिया; मैं उस समय रोते हँसते हुये अपनी हार्दिक अभिलाषा को इस प्रकार श्री जुगुल सरकार के चरणों में निवेदन करने लगा, सरकार मैंने सन्तों द्वारा सुना है कि भगवान से जोड़ा हुआ बहिन-बहनोई, माता,-पिता, दास-दासी मित्र-सेवक; आदि कोई भी दिव्य नाता कदापि टूट नहीं सकता; वह हर समय अविकल; अचल एवं अटल रहता है; ऐसा ही धर्म शास्त्रों का मत भी सुनने में आया है, क्या यह सत्य है ? यदि धर्म शास्त्र सत्य हैं, तो फिर आप मुझे त्याग कर संसारी जाल में क्यों फंसा गये, अपने संग में

क्यों नहीं ले गये, क्या मैं आपका भैया नहीं ? या श्री राम जी का साला नहीं हूँ ? यदि हूँ तो फिर मुझे त्याग कर मेरी प्रार्थना को विफल क्यों कर रहे हैं ? इस समय मेरा जीवन अन्धकार और प्रकाश के संगम पर है, न जाने होनहार क्या है। आपकी भोली भाली सूरत की याद कर करके रोते २ मेरी तो आँखों के आँसू भी चुक गये हैं ! अब तो मुझे किसी भी संसारी वस्तु की चाहना नहीं रही, और न ही किसी दूसरे की सहायता की आवश्यकता है।

इमदाद चाहिये न कोई साथ चाहिये, सिर पर केवल जुगुल हाथ चाहिये

सज्जनो ! श्री जुगुल सरकार पहिले तो कुछ संकुचित हुये—इधर श्रीराम जी टाल मटोल करने लगे; परन्तु सच्चा आग्रह एवं जिज्ञासा को टालना सहज नहीं था; कुछ तो दया से पीड़ित होकर एवं कुछ अपनी प्रतिज्ञा का नियम भंग होते देख पहिले तो मेरे प्राणाधार बहनोई श्री रामजी ने मुझे बरवस उठाया और अपने गले से लगा हाथ मिला अपने पास बिठला कर आश्वासन देते हुये धैर्य एवं अभय प्रदान करके मेरे दुखी चित्त को भी शान्त एवं सुखी बना दिया। तत्पश्चात दयासागरी लाड़ली बहिन श्री सिद्धकिशोरी जू ने मुझे स्नेह पूर्वक अपनी पूत्र भावना के अनुसार ही अपनी स्नेह भरी गोदी में बैठा कर पुचकारा, दुलारा फिर अपने आंचल से मेरे आँसुओं को भी पोंछा। परन्तु (आँसुओं के पोंछने से क्या होता था। कारण कि हृदय का दुख निकले बिना आँसू बाहरी कपड़े के पोंछने से कैसे सूख सकते थे)। तब कृपा सागरी जू ने अपने दयालु, सुशील स्वभाव के अनुसार विविध भाँति से सान्त्वना देते हुये मेरे हृदय को शान्ति एवं निर्मल बना दिया। तब आप बोलीं। भइया ! घबराओ नहीं; अब तो आपके मन से

समस्त कचाई, चिन्ता, ग्लानि हटकर मोह जनित शोक का भी परित्याग हो गया है अब दुख के दुर्दिन तुम्हारे समीप न आने पावेंगे। हर्ष चाँदनी छिटकेगी, तुम्हार वैरी दल की आशा कभी सफल न होगी; और यह भाग्य की बात समझो कि आपको हमारा दर्शन हो गया। इस प्रकार से श्री सिद्धकिशोरी जू कृपा बारिकी वृष्टि करके, अपने स्नेहामृत से भिगोती हुई फिर बोलीं भैया! राजकुमारों को तो धैर्यवान होना चाहिये; फिर आप क्यों इतने अधीर तथा शोकाकुल हो गये, दुख सुख तो सब पर बीता ही करते हैं। सदा एक रस किसी की नहीं बीती।

मुझ में सब शक्ति है, भैया। मैं सब कुछ करने कराने में परम सामर्थ हूँ किन्तु आप के श्री गुरू महाराज के बचनों को मैं अन्यथा करना नहीं चाहती, उनकी हार्दिक अभिलाषा थी; कि तुम सात वर्ष तक स्थानीय कार्यों की देख रेख तो अवश्य करना; उसके बाद जैसी तुम्हारी रूचि हो वैसे ही करना। यदि तुम्हारा मन माने तो स्थान में रहना, नहीं तो जहाँ इच्छा हो वहीं जाकर निवास करना। इसी में तुम्हारी भलाई है। भैया जी आपको तो गुरू महाराज ने कई बार समझाया था क्या आप अभी से उसको भूल गये? अच्छा तो अब आपके स्थान एवं कालेज के समस्त सेवा भार को मैं स्वयं सात वष के लिये अपने माथे लेती हूँ। तुमको केवल निमित मात्र यहाँ रहना पड़ेगा! यदि आप अपना कल्याण चाहते हैं तो श्री गुरू महाराज की आज्ञा को प्रसन्नता पूर्वक पालन करते हुये सात वर्ष तक इस स्थान में रह कर सरकारी सेवा कर लो। भइया मैं सत्य कहती हूँ कि इस अवधि के समाप्त होते ही तुमको समस्त बन्धनों से मुक्त कराकर अपने ही पास श्री अयोध्या जी श्री जानकी घाट में ही बुला कर रखूँगी। तब आप स्वतन्त्र रूप से विचरते हुये दर्शं-पर्स एवं भजन पूजन तथा

लीलाबिहारी स्वरूपों के लाड़-प्यार के सुख एवं आनन्द का अनुभव करते हुये श्री अवधवास का लाभ भी उठाना! भइया जी! आप का कथन भी ठीक है, कि संसार के नश्वर भोग-पदार्थों एवं मोह माया के जंजाल में फसने से किसी को शांति नहीं मिलती है; तथापि में आपको हार्दिक आशीर्वाद देती हूँ कि तुम किसी भी संसारी प्रलोभनों में न फँस कर मोहमाया के जाल में फँसने से भी बचे ही रहोगे, अब तुम्हारे मार्ग के कांटे विवेक रूपी बुहारियों से साफ होकर जीवन संग्राम का पथ भी साफ और सुथरा होता रहेगा, इसलिये यदि अपनी भलाई और कीर्तिं चाहो और मुझे अपनी वहिन मानते हो; तो मेरे वचनो को सत्य मान कर दृढ़ता पूर्वक निर्भय होकर स्थान की देख-भाल आरम्भ कर दो. मैं हर समय तुम्हारी रक्षा करूँगी।

सज्जनो! बस इतना कहते २ जैसे बादलों में बिजली चमक दिखला कर अदृश्य हो जाती है, ठीक उसी प्रकार क्षण भर में लीला धारी श्री जुगुल सरकार अपनी अनुपम छटा दिखाकर एवं मेरा धैर्य बंधा कर यह गये वह गये, न जाने फिर कहां अदृश्य हो गये, और मैं छटपटा कर देखता ही रह गया, मेरी कुंज जो उस समय चमचमा उठी थी. वह बिल्कुल अंधेरी कोठरी हो गई। श्री जुगुल सरकार के दर्शनों, संतोष प्रद बचनों द्वारा एवं उनके आशीर्वाद के प्रभाव से मेरे हृदय का समस्त खेद, दुख-दर्द जाता रहा। मेरी हर प्रकार की कचाई व ग्लानी भी मिट गई अब तो अन्तर अह्लाद के कारण चित्त में उत्साह, एवं बल भी अधिक प्रतीत होने लगा। अहा! मैं कह नहीं सकता कि श्री जुगुल सरकार की उस कोमल वाणी में कितना रस, कितनी मिठास, कितना स्नेह एवं कितनी समवेदना भरी थी। इन्हीं सब बातों का ध्यान एवं मनन करते २ सवेरा हो गया, मैं स्नान-ध्यान नित्य नेम-आदि से छुट्टी पाकर सरकारी कृपा

का सहारा हृदय में धारण कर उनकी आज्ञा पालनार्थ निर्भय होकर दृढ़ता पूर्वक कार्य में डट गया और श्री जुगुल सरकार के चित्रपट एवं श्री गुरुदेव जी के पादुकाओं को ही अपना आधार मान कर और हर प्रकार की असमञ्जस के समय उनके ही सन्मुख चिट्ठी द्वारा आज्ञा प्राप्त कर स्थानीय कार्य करने लगा।

सज्जनो ! समय पर कहना ही पड़ता है कि पाप के सर्पों का विष जब भयकंरता से मनुष्य के ऊपर चढ़ बैठता है तो उनकी बुद्धि भी विपरीत हो जाती है, उन्हें इर्षा द्वेष के कारण धर्म अधर्म, सत्य-असत्य एवं लोक-परलोक तक किसी का भी भय नहीं रह जाता, वह तो पाप कर्म करने से अपने ऊपर आने वाली घोर घटनाओं को भी भूल जाते हैं। ऐसे लोग जाल तो बिछाते हैं दूसरों को फंसाने के लिए, परन्तु फंस जाते हैं स्वयं। इसलिये ऐसे स्वार्थी लोगों को धर्म युक्त न्याय संगत बातों से मतलब ही क्या ? भगवान के दरबार में अन्या कभी न होकर न्याय ही होता है; मगर हां ! देर सवेर की बात दूसरी है, उन्हें यह भी मालूम नहीं रहता कि भगवान के दरबार में किसी पदार्थ धन-दौलत की भेंट स्वरूप में ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, पाठको वहां तो केवल सत्य एवं भगवत् स्वरूप प्राप्त की लगन लेकर जाने से ही कुछ प्राप्त हो सकता है ।

इधर स्थान करवी माफ़ी में कुछ स्थानीय धार्मिक नियम भंग होते देख कर अपने स्वभाव से भी लाचार होने के कारण मैंने अपने गुरु भाइयों के कुछ प्रस्तावों का उनकी रुचि अनुसार समर्थन नहीं किया था, बल्कि श्री गुरु महाराज जी की प्रेरणा द्वारा श्री जुगुल सरकार के भरोसे पर ही अन्त समय तक उसका विरोध ही किया, जिसके फल स्वरूप मैं उनके मार्ग का कंटक बन गया। इसलिये मुझ निरपराधी पर भी उनकी

निगाह टेढ़ी हो गई। मेरा श्रीसिद्धकिशोरी जू में अटूट श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास हो चुका था कि वह सदा मेरे साथ रहती हुईं निरन्तर मेरी सहायता व रक्षा भी करती हैं। तथा श्री गुरु महाराज के वचनों में भी मेरी पूर्ण श्रद्धा एवं धारणा थी, श्री गुरु महाराज कहा करते थे।

रण, बन, आपति, विपत्ति में बृथा डरे जनि कोय।
जो रक्षक जननी जठर सो हरि गयो न सोय ॥
जो तू को कांटा बुए ताहि बुए तू फूल।
तो कूं फूल के फूल हैं वाको हैं तिरशूल ॥

और जिसके रक्षक श्री राम, उसको सभी करें प्रणाम। जिस पर भगवान की कृपा होती है और जो कोई एक मात्र भगवान की शरण ले लेते हैं, उनको मिटा देने या हानि पहुँचाने के निमित्त किसी भी धन-जन की शक्ति कुछ काम नहीं कर सकती। देखिए! पाँडवों की रक्षा करते हुए भगवान ने तो यहाँ तक प्रत्यक्ष दिखला दिया है कि जो कोई समस्त आसरों को छोड़ कर एक मात्र मेरी ही शरण ले लेते हैं। मैं उनके लिये सब कुछ करने कराने और सब कुछ बनने बनाने को तैयार रहता हूँ। और जहां जैसा भी अवसर देखता हूँ, वहाँ वैसा ही बन भी जाता हूँ। न तो मुझे मान का ध्यान रहता है और न ही अपमान का तभी तो 'कहीं बने नन्द नन्दन-तो कहीं बने नाई नन्दा'

काल के प्रभाव से स्थान में कई प्रकार के भले बुरे परिवर्तन हो गये, बहुत उलट फेर हुये, अनेक प्रकार की संकटपूर्ण स्तिथियों एवं काल की कठिन बाधाओं का निरन्तर सात वर्ष तक मुझे भी सामना तो करना पड़ा, परन्तु श्री सिद्ध किशोरी जी ने स्वयं सात वर्ष के लिये समस्त स्थानीय भार अपने ही मत्थे ले लिया था, मुझे केवल निमित मात्र ही बना रखा था,

तब भला किसका साहस था कि हानि पहुँचा सके, इसलिए मेरा कोई अनहित न करके मुझे किसी प्रकार की हानि भी न पहुंचा सका। मैं तो सरकार की असीम कृपा द्वारा साफ २ और बेदाग बच गया, किसी में शक्ति न हुई कि मेरा बाल भी बाँका कर सके, सज्जनों यह है श्री सिद्धकिशोरी जू की सिधाई का अपूर्व चमत्कार एवं प्रभाव। यों तो भगवान बड़े उदार, दयालु और कृपालु हैं, वह किसी का कभी बुरा नहीं चाहते, वह तो प्रत्येक जीव के देखने की निरन्तर अभिलाषा ही किया करते हैं, उनकी प्रत्येक प्राणियों पर सर्वदा कृपा दृष्टि ही रहा करती है। किन्तु मैं तो अपने को सबसे विशेष भाग्यशाली मानता हूँ। आज यद्यपि श्री सिद्ध किशोरी जी स्थूल स्वरूप से मेरी दृष्टि से ओझल हैं, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उनकी कृपा नाना प्रकार के अन्धकार में मुझे आज भी प्रकाश पथ कर अग्रसर करती हैं, मेरी चिर सेवित मनोकामना कुछ अंश में तो सफल हुई। यदि इस आशा के बल पर मुझे संतोष नहीं तो धैर्य तो अवश्य है, एवं विश्वास है कि शेष भी (श्री साकेत धाम का वास) अब की बार पूर्ण हो ही जायगा।

पाठको! ज़रा सरकारी प्रतिज्ञा को तो देखिए। श्री सिद्ध किशोरी जी ने अपनी प्रतिज्ञानुसार सात वर्ष की अवधि समाप्त होते ही स्थानीय समस्त झंझटों से मुक्त कराकर मुझे आदर पूर्वक श्री अयोध्या जी में अपने ही समीप बुला तो लिया। श्री सिद्ध किशोरी जी की असीम कृपा द्वारा मैं इस जंजाल से पार होकर उनके श्री चरणों तक पहुँच गया, यह मेरे हर्ष के लिये क्या कम है।

—:०:—

❀ श्री अवध वास ❀

(१०२) पाठको ! जरा इस घटना को भी देखें स्थान कर्वी (चित्रकूट) में सात वर्ष की अवधि व्यतीत होने के अति निकट एक उनुचित स्थानीय बटवारा (Partiticn compromise) दोनों गुरूभाइयों में हुआ, इसका विरोध करते हुये ऐसी असमञ्जस में मैंने श्री सिद्धकिशोरी जू के चित्रपट के सामने दो चिट्ठियाँ लिख कर रखीं, (एक में लिखा था कि स्थान में रह कर इसका विरोध करो; दूसरे में श्री अयोध्या जी जाने का प्रस्थान) जब आँख मूँद कर चिट्ठी उठाई तो श्री अवध जाने की ही चिट्ठी निकली, मुझे बड़ी प्रसन्ता हुई और तुरन्त मैंने श्री अयोध्या जाने का प्रस्ताव भी कर दिया, उस समय कर्वी की जन्ता के अतिरिक्त चित्रकूट की जन्ता एवं संत महन्तों और सज्जन पुरुषों ने यहाँ तक कि कर्वी-बाँदा के अहलकार एवं हाकिमों ने भी मुझे कर्वी स्थान छोड़ कर बाहर जाने से रोका, और बाध्य किया कि स्थान में ही रह कर भजन करो। परन्तु मैंने उत्तर दिया, कि भला बताइये तो सही, कि जिन श्री किशोरी जी की कृपा द्वारा ही में इन भारी जञ्जालों से बिना प्रयास पार हो कर इस संसार में अब तक जीवित रहा हूँ, जिन्हों ने सात वर्ष तक समस्त स्थानीय भार अपने माथे पर लिया और जो मेरे जीवन की संरक्षक हों, तो भला मैं उनकी (चिट्ठी द्वारा प्राप्त) आज्ञा को भंग कैसे कर सकता हूँ, इसलिये मैंने अपना अन्तिम निर्णय श्री सिद्धकिशोरी जू की आज्ञा को ही शिरोधार्य करके कर्वी स्थान को अन्तिम प्रणाम करते हुये ता० १६/६/२६४६ को श्री अयोध्या जी के लिये प्रस्थान कर दिया, जिसे आठ वर्ष से अधिक हो चुके है।

पाठको ! यदि श्री सिद्धकिशोरी जी की कृपा न होती, अर्थात् मुझे श्री अवध के लिये प्रेरणा न करतीं, और गुरूभाई मेरा स्वागत सत्कार करके स्थान में ही मुझे रख लेते; तो सम्भव था; कि मैं जीवन भर उन्हीं के यहाँ फंसा रहता; एवं समय पड़ने पर उनके अन्यायों का समर्थन मुझे भी करना पड़ता परन्तु मेरे ऊपर तो श्री किशोरी जू की विशेष कृपा हुई है जिस के कारण आनन्द पूवक श्री अवध में निवास करते हुये समय २ पर अन्य तीर्थों में भी बिचरने का सौभाग्य प्राप्त हो जाया करता है। तब से मैं स्थान में फिर कभी भी नही गया। अब ज़रा इसे भी तो सुन लीजिये कि श्री किशोरी जू ने कर्वी स्थान से मुझे बुला कर फिर रखा कहाँ ? अपने हीं स्थान श्री जानकी घाट में, और मेरे जीवन का संरक्षक किस को बनाते हुये मेरा हाथ किसको सौंपा ? संत शिरोमणि बीतराग पूज्यपाद श्री वैष्णव समाज के उज्वल जगमगाते रत्न न्याय; वेदान्त, व्याकरण, मीमांसा आचार्य पंडित श्री रामपदार्थ दास जी महाराज (श्री वेदान्ती जी) श्री जानकी घाट श्री राम बल्लभा कुंज निवासी को, जो कि महान बड़भागी, भगवत चरणारविन्द अनुरागी, प्रातः स्मरणीय साधु भूषण; पूज्यपाद अनन्त श्री पं० रामबल्लभा शरण जी महाराज के चरण कमलों के पराग सेवी हुये।

सज्जनो ! श्री गुरुदेव की असीम कृपा एवं आशीर्वाद द्वारा आप का व्यवहारिक एवं पारमार्थिक जीवन दोनों अकथनीय हैं। आप का सदाचार, सरल स्वभाव, उदार-चित्त एवं साधु सेवा यह सद्गुण तो परम प्रशंसनीय हैं; आप ने योगाभ्यास के इलावा नेती; धोती, प्राणायाम; एवं खेचरी आदि की विद्या में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की है; आप का यह सुन्दर विचार कि "सम्पति सब रघुपति की आहि" इस को इस प्रकार समझना आप जैसे किसी बिरले बड़भागी एवं गुरू के लाल का ही काम

है। आप का साधु सेवा के अतिरिक्त अभ्यागत एवं अतिथि सेवा में भी भारी प्रेम है। आप समस्त सद्गुण सम्पन्न एवं कई विषय के विद्वान परम आदरणीय विरक्त श्री वैष्णव संत हैं; आप एक परम कुलीन सरजू पारीण ब्राह्मण घराने में से हैं! आप घर में भी धनधान्य से भली प्रकार सम्पन्न थे; और यहाँ भी किसी प्रकार की कमी नहीं है। आप अपनी आय में से अपने निजी काम में एक पैसा भी व्यय न करके समस्त धन को भगवत-भागवत की सेवा में ही खर्च कर देते हैं। अहा! जिन की पूज्य माता श्री राम भक्त हों, जिन का पचीस हजार श्री सीताराम नाम प्रतिदिन जपने का दृढ़ नियम रहा हो; तो भला उनके सुपुत्र भी क्यों न श्री राम भक्त होंगे; ? यही कारण है कि आप का भी बाल्यकाल से ही श्री सीताराम जी में प्रेम था। आप भगवान का भजन, कीर्तन, यहाँ तो प्रतिदिन करते ही हैं; आप तो बाल्यकाल से ही घर में भी किया करते थे। श्री जानकीवल्लभलाल जू के प्रेम सागर में निरन्तर अटूट श्रद्धा विश्वास युक्त गोते लगाते २ आप की बुद्धि अति स्वच्छ एवं निर्मल हो चुकी है, आप दूसरों के दुख को भी अपना ही दुख जान कर उनके अभ्युदय के निमित्त भगवान से प्रार्थना भी करने लगते हैं। क्यों न हो; आप तो दया के एक उछलते हुये सागर ही हैं; आप में गम्भीरता एवं नम्रता तो मानो कूट २ कर भरी है, इतनी भारी योग्यता प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान होने पर भी आप में अभिमान तो लेषमात्र भी दिखाई नहीं पड़ता, कई बार का अनुभव है कि आप स्वयं अमानी रह कर एक साधारण मनुष्य तक का भी सम्मान आदर-सत्कार करने से नहीं चूकते। आप की भगवत भावना एव निष्टा भी विचित्र ही है; जो कि अति प्रबल होने के कारण इतनी उच्च कोटि में पहुँच चुकी है; कि जिसको यह जड़ लेखनी

लिखिने से लाचार है; क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता; परन्तु समय आने पर कुछ कहे बिन रहा भी नहीं जाता। अहा! श्री रामजन्म भूमि के विषय में आप के मुख से निकले हुये स्वर्ण अक्षरों से लिखे जाने योग्य उन अनमोल्य शब्दों का भला ऐसा कौन अभागा जड़ जीव होगा; जो सच्चे हृदय से आदर सम्मान न करैगा और उसे भूल जायगा ?

आप ने एक समय भरी सभा में अपना भाषण देते हुये प्रतिज्ञा पूर्वक कहा था कि श्री राम जन्म भूमि के मन्दिर से अब श्री रामलला जी को हटाना लोहे के चने चबाना है; देखें ! कौन अपनी माई का जाया लाल है; जो मन्दिर से भगवान को हटाने का साहस दिखावै। भगवान के लिये मेरा तन, मन, धन, स्थान और सर्वस्व अर्पण है। केवल इतना ही नहीं, यदि मेरे तन का अचला और लंगोटी भी भगवान के लिये बिक जाय, तो मुझे कोई दुख और लज्जा न होगी। आप की दूसरी प्रतिज्ञा यह भी थी कि यदि किसी भी समय बलिदान की आवश्यकता आ पड़ी तो इस धर्म-कार्य के लिये सर्व प्रथम मेरा ही तन भगवान के श्री चरणों में भेंट होगा। अहा आप धन्य हैं भगवत् भागवत के लिये आपकी इस प्रकार की भक्ति एवं सुन्दर भावना को देख सुन कर चकित एवं अवाक हो जाना पड़ता है; वर्तमान काल के आप एक महान प्रसिद्ध वीतराग महान पुरुष हैं ! आपके प्रभाव एवं सिद्धि चमत्कारों को देख सुनकर बड़े २ हाकिम, अहलकार, राजा, महाराजा एवं रईस भी आपका आदर सम्मान करते हुए आपके सत्संग द्वारा लाभ उठाकर पूर्ण मनोरथ होते हैं; प्रति-वर्ष हजारों मनुष्य आपके शिष्य भी होते रहते हैं।

आप तो बड़े भाग्यशाली, प्रभावशाली एवं अग्रसोची भी हैं। आप ने यह ख्याल करते हुए कि शरीर तो अनित्य है; इस

दम का कोई भरोसा नहीं इसलिये कहीं ऐसा न हो कि साकेत वासी श्री गुरु महाराज की संकल्प मयी अभिलाषा (नवीन मन्दिर का निर्माण) उनके मन ही मन में रह जाय। इसलिये आप ने कई वर्ष हुये इसकी पूर्ति कर दी ! श्री गुरु महाराज की रुचि से भी कहीं अधिक कार्य कर दिखाया। अहा ! इस नवीन मन्दिर का कहना ही क्या ? मन्दिर तो अति सुन्दर विशाल एवं नई शैली का लासानी ही बना है, जिसको देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है, इसके साथ २ अनन्त श्री जानकीवल्लभ लाल जू की अपूर्व अनुपम, मनमोहनी सुन्दर छटा युक्त जुगुल झाँकी का तो वर्णन ही कौन कर सकता है, जिनके दर्शन मात्र से मनुष्य आनन्द सिन्धु में मग्न हो जाता है, और ऐसा मालूम पड़ता है कि साक्षात भगवान श्री सीताराम जू अभी २ श्री साकेत दिव्य धाम से यहाँ पधारे हैं। कई प्रेमी जनों को तो दर्शन करते मात्र श्री लीलाबिहारी स्वरूपों का ही भान होने लगता है। भगवान के निमित्त गंगाजमुनी सिंहासन भी ऐसा लाजवाब (अद्वितीय) ही बना है कि कुछ कहते नहीं बनता, केवल देखते ही बनता है, जिसको दो सिंहों ने उठा रखा है। अनेक प्रकार के अतलस, कीमखाब, रेशम, मखमल आदि के रंग बिरंगे वस्त्र सुन्दर २ स्वर्ण एवं मणि जटित आभूषण, कीट, मुकुट चन्द्रिकादि तथा स्वर्ण एवं रजत, पात्र, पार्षद, एवं खेल खिलौने तो इतने हैं कि जिनकी कोई गणना नहीं। अब ऐसा मन्दभागी संस्कार हीन पुरुष कौन होगा, जिसको श्री भगवान, उनका मंदिर एवं सिंहासन इत्यादि अच्छे न लगेंगे, और जो भगवान के शुभ दर्शन मात्र से गद्‌गद होकर हर्षित न हो जायगा।

सज्जनो ! केवल मन्दिर का निर्माण ही नहीं, इसके अतिरिक्त भगवान के लिये प्रतिदिन बालभोग, राजभोग तथा ब्यारू भोग का सुन्दर प्रबन्ध और दो ढाई सौ अभ्यागत, अतिथि की नित्य

प्रति की सेवा, समइया उत्सव, पाठशाला और उनके विद्यार्थियों का भोजन, गोशाला, आगन्तुक सती सेवकों का सत्कार होना तथा अनेक धर्म संस्थाओं में आप का सभापति पद को ग्रहण करते हुये अन्य प्रदेशों में भी जा जाकर अपने अपूर्व मार्मिक उपदेशों द्वारा जनता को कृत कृत्य करना क्या यह आपकी भक्ति, प्रेम, उदारता, दयालुता, साधुता त्याग एवं विद्वता को प्रकट नहीं करता। मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि इन परमार्थिक एवं धार्मिक कृत्यों को देख २ कर आपके श्री गुरु महाराज जी को परम सन्तोष एवं सुख-शांति प्राप्त होती होगी; यही कारण है कि उनकी आशीर्वाद द्वारा ही आप यह समस्त स्थानीय कार्य (विना किसी बन्धानी आय के) पूर्ण रीति से चला रहे हैं, जो कि एक मनुष्य की तो क्या कहें, राजा महाराजा की शक्ति से भी बाहर की बात है।

सज्जनो! मुझे आठ वर्ष श्री जानकी घाट अपनी बहिन "श्री किशोरी जू" के छत्रछाया में रहते हुये व्यतीत हो रहे हैं; जिस प्रकार आनन्द सुख, शांति, स्वतंत्रता एवं मान-सम्मान मुझे यहां प्राप्त हुआ है, उसके लिये मेरे पास शब्द ही नहीं हैं जो मैं यहाँ लिख सकूँ। इसके अतिरिक्त जितनी भी दया, अनुकम्पा, उदारता, स्नेह, प्रेम, एवं देख रेख श्री बहिन की इस भैया पर निरन्तर रहा करती है; वह तो अकथनीय है। इसके उपलक्ष में मेरे पास केवल एक हृदय को छोड़कर और है ही क्या जो अपनी बहिन के श्री चरणों में भेंट करूँ। वह हृदय भी तो बहनोई श्रीराम जी ने ही चुरा रखा है।

पाठको! अब मैं अपने नित्य पूज्यास्पद जीवन के संरक्षक प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद "श्री वेदान्ती जी महाराज" का भी आजन्म ऋणी हूँ, जिन्होंने मेरे लालन-पालन, लाड़-प्यार में

कोई कसर बाकी न रख करमुझे श्री युगुल सरकार श्री सीताराम जी महाराज के दर्शन एवं उनके अनुपम चरित्रों के अवलोकनार्थ ही पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है। मैं आप के इन उपकारों का बदला कभी चुका ही नहीं सकता।

मैं आपकी क्या सेवा तथा भेंट करूँ। आप तो धन के नहीं केवल प्रेम के ही भूखे हैं। इसलिये मैं जब तक इस मृत्युलोक में जीवित रहूँगा तब तक आपकी एवं श्री बड़े महाराज जी की जय-जयकार मनाता रहूँगा। इसके साथ २ आपकी दीर्घायु हो; आपका मंगल विग्रह निरन्तर सुखी बना रहे, इसके लिये भी मैं निरन्तर श्री जुगुल सरकार से प्रार्थना करता रहूँगा।

श्री अवध की एक बिचित्र घटना

श्री चित्रकूट से श्री अयोध्या जी पहुँचने के कुछ ही दिनों पश्चात् जब कि एक दिन मैं श्री सिद्ध किशोरी जू के बिछोह से अत्यन्त व्याकुल दशा में पड़ा २ उनकी याद में कुछ आंसू बहा रहा था। मुझे दुखी देख कर श्री किशोरी जी ने उसी रात को स्वप्न द्वारा मुझे आज्ञा दी भैया जी। आप नित्य प्रति श्री कनक भवन (महल) में जाकर दर्शन कर आया करो तो हमारी झाँकी की झलक उसी मन्दिर की श्री किशोरी जू की मूर्ति में मिलने से आप को परम सुख व शान्ति प्राप्त होगी। यह सुनते ही मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ, और मैं श्री किशोरी जू की प्रेरणा अनुसार अब तो प्रति दिन महल में दर्शनार्थ जाने लगा, वास्तव में मुझे उनके दर्शनों से भारी सुख एवं आनन्द मिलने लगा; यहाँ तक कि कभी २ अधिक समय बैठ कर जब मैं ध्यान करने लगता, तब तो श्री सिद्ध किशोरी जू

की मनोहर छवि की कुछ झलक भी उनमें प्रतीत होने लगती।

इधर लगभग चार पाँच वर्ष हुए हैं कि दुर्भाग्यवश मैं कालाजार बुखार के कराल पञ्जे में फंसा, पूज्य श्री "वेदान्ती जी" महाराज की कृपा, देखरेख, एवं सुन्दर उपचार करने कराने से मैं किसी प्रकार कराल काल के गाल में जाने से तो बच गया, परन्तु मेरा शरीर इतना दुर्बल एवं कृश हो गया, कि मुझे वाध्य होकर कई दिनों तक श्री कनक भवन जाने का नियम भी भंग करना पड़ा। इधर दर्शन न होने के कारण फिर मुझे श्री सिद्ध किशोरी जी की याद सताने लगी, इसलिये फिर विवश होकर श्री सिद्धकिशोरी जी का मानसिक ध्यान करते हुए उनके ही चित्रपट के सम्मुख प्रेम पूर्वक करबद्ध मुझे प्रार्थना करनी पड़ी, कि हे दयासागरी जू शरीर की अत्यन्त दुर्बलता के कारण मैं श्री कनक-भवन जाने में असमर्थ हूँ। वहां न जाने से आप के शुभ दर्शनों से बञ्चित रह कर मेरा चित्त दुखी एवं चिन्तित होने लगता है; अब क्या उपाय करूं जिससे चित्त का दारुण दुख एवं संताप दूर हो। आहा सज्जनों! दया-सागरी बहिन की कृपा का क्या कहना, उन्होंने अपने दयालु स्वभाव वश तुरन्त उसी रात को फिर स्वप्न द्वारा मुझे यह प्रेरणा की, कि अब प्रतिदिन कनक भवन न जाकर अपने ही निवास स्थान श्री जानकीघाट (श्री रामवल्लभ कुंज) में ही अनन्त श्री जानकी वल्लभ लालु जू के शुभ दर्शन कर लिया करें, तुमको उन्हीं में हमारा भी दर्शन प्राप्त हो कर तुम्हारे मन को पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी, और यह भी कहा कि सुख दुख तो पूर्व कर्मों का भोग है, इसको भोग लेना ही अच्छा है, घबराना नहीं चाहिये।

पाठको! अब तो मैं प्रतिदिन श्री कनक भवन में न जाकर नित्य अपने मन्दिर में श्री जानकी वल्लभलाल जू के ही दर्शन करने लगा, सचमुच श्री सिद्धकिशोरी जू के कथनानुसार मुझे

तो इनके दर्शनों से चित्त को भारी शान्ति और सुख प्राप्त होने लगा, कभी २ तो श्री सिद्ध किशोरी जू की आभा एवं झलक भी इन्हीं में दिखाई पड़ने लगती। इधर दो तीन वर्ष हुये, कि जब मैं कलकत्ता में मोटर कार के नीचे दब जाने पर भी साफ २ बच गया था, तो क्या यह श्री किशोरी जी की असीम अनुकम्पा न थी; तो और क्या था? यद्यपि वहाँ के डाक्टरों ने कह दिया था कि इनका बचना असम्भव है, कारण कि फेफड़े की चोट बड़ी खतरनाक थी, परन्तु श्री किशोरी जू के लीला स्वाप्न ने उस समय मुझे आशीर्वाद देते हुये कहा था। भैया जी! आप चिन्ता किसी बात की न करें; आप पाँच सात दिन में अच्छे हो जायेंगें! सज्जनो! ठीक हुआ भी ऐसे ही।

श्री गया जी में श्री रूपकला हरि नाम यशसंकीर्तन सन्मेलन के पश्चात् बिहौती समाज को चम्पारन की तरफ किसी निमंत्रण में जाना था, समाज के श्री जुगुल सरकार ने सम्मेलन के सभापति श्री वेदान्ती जी महाराज से मुझे भी एक महीने के लिये अपने साथ ले जाने के निमित्त मेरी याचना की; कि भैया जी को हम अपने साथ ले जायँगे; श्री वेदान्ती जी महाराज अपने सरल हृदय अनुसार तुरन्त मेरा हाथ ही पकड़कर श्री जुगुल सरकार को सौंप दिया, इसलिये मुझे सरकारी सेवा में जाना ही पड़ा, फिर एक मास की कौन कहे, मुझे लगभग छः मास तक श्री जानकी घाट स्थान से पृथक रह कर उन्हीं के साथ २ देशाटन करना पड़ा, अब तो इधर श्री जानकी घाट कुंज निवासनी श्री किशोरी जू से जब मेरा अधिक विछोह सहन न हो सका, तो श्री वेदान्ती जी महाराज को (श्री वशिष्ट जी) मन्दिर की श्री किशोरी जू ने २७/४/१९५२ की रात्रि के समय स्वप्न में प्रेरणा करते हुये मुझे कानपुर में पत्र भेजने की आज्ञा प्रदान की। श्री किशोरी जी की प्रेरणानुसार तुरन्त २८/४/१९५२

को श्रीवेदान्ती जी ने मेरे पास कानपुर में २ पत्र भेजे थे, जिन को मैं नीचे अक्षरशः उद्धरित करते हुये भावुक प्रेमी जनो को केवल इतना दिखाना चाहता हूँ कि हृदय देश; वासी वह परम प्रियतम ही प्रेमदेव है। एवं निस्वार्थ प्रेम में कितना भारी बल होता है; इसको भी जरा देख लें। प्रेम का तो तत्व ही कुछ ऐसा दिव्य है, कि वह जिस हृदय में विकसित होगा, उसे दिव्य ही बना देगा, एवं दिव्य नायक पुरुषोतम की ओर कभी न कभी अवश्य खेंच कर ले भी जायेगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं; केवल आवश्यकता है, भगवान के प्रति अटल विश्वास, अटूट श्रद्धा, सच्ची तड़प, अचल प्रेम, दृढ़ लगन, और सच्ची भावना की ! जिस किसी भी मनुष्य को इस बात का पक्का विश्वास हो जाता है कि मैं सर्व शक्तिमान सर्वाधार विश्वपति भगवान की शरण होकर उनका एक जन होते हुये उन्हीं की छत्र छाया में हूँ; एवं अपने प्रीतम को ही वह अपना जीवन धन बना लेता है; तब तो विवश होकर ऐसे प्रेमीं हृदय को भगवान श्री सीताराम जी अवश्य खैंच ही लेते हैं, चाहे वह कहीं पर भी क्यों न हो, वे इसके बड़े ग्राहक हैं, सज्जनो ! दृढ़ विश्वास ही सफलता की कुंजी एवं विजय का मूल मंत्र है। यही भगवान को अपने समीप खैंचने वाला चुम्बक समझो।

प्रेमियों की दुनिया उलटी हुआ करती है,। ग्रहस्थ जीवन में श्री तुलसी दास जीं ने प्रेम की मस्ती में नदी के बहते हुये एक मुरदे को नौका ही समझ कर उसी के सहारे अपना रास्ता भी तै किया था; और छप्पर से लटकते हुये सर्प को ही रस्सी समझ उसे पकड़ते हुये वह अपनी प्रिया के शयनागार में भी जा पहुँचे थे। बरसात की अंधेरी रात वर्षा की तूफानी बूँदें एवं पवन के प्रलयकारी थपेड़े तुलसीदास जी के हृदय में उठे हुये तूफान के

आगे सब बेकार हुये। जरा और भी देखिये।

भगवान के प्रेम पाश में बाँधने के अनेक उदाहरण हैं, श्री द्रोपदी जी, कुब्जा जी एवं मीराबाई इत्यादि ने अपने पवित्र प्रेम द्वारा ही तो भगवान को अपने प्रेम पाश में बाँध लिया था। मजनूँ तो लैला का और फुरहाद शीरीं का दीवाना बना, दर-बदर की खाक छानी; पहाड़, पानी और पत्थरों से ठुकराये; दाने २ के लिये दोनों मोहताज बने अन्त में जब मरने की घड़ी आई तो तब भी वह अपने प्रेम से बाज नहीं आये। भाइयो! यह हैं प्रेमी दुनिया के नमूने! अहा। प्रेम की प्यास में कितनी तड़प है, इसे तो वह पपीहा ही जानता है; यह सौभाग्य तो विरले ही भाग्यवानों को मिलता है। "पैगम्बरे इश्करा किताबे दिगरस्त।"

इश्क क्या शय है किसी सौदाई दिल से पूँछना चाहिये"
"और दर्द दिल क्या है किसी घायल से पूँछना चाहिये।"
"वह सिर नहीं जिसमें कि हो सौदा न किसी का,
वह दिल नहीं जो दिल न हो दीवाना किसी का;"

जब कि प्रेम का कोई अन्त, सीमा या आर-पार नहीं है तो,

तोड़ लेखनी फेंक मसी, कागज डारो फाड़,
प्रेम व्यवस्था जनि लिखो जाको वार न पार।"

पूज्य श्री वेदान्ती जी महाराज (श्री वशिष्ठ जी) श्री अयोध्या जानकी-घाट निवासी के ता० २८।४।५२ के पत्र की प्रतिलिपि।

परम प्रिय वत्स श्री लक्ष्मीनिधि जी चिरंजीव।

यहाँ पर श्री मिथिलेश राजकुमारी बहुत चिन्तित हैं, आप शीघ्र आइये! नारद जी (एक साधू) से आपकी बीमारी का समाचार सुन करके बहुत उतावली हो रही हैं, इनका सब समाचार ऋषि नारद जी से आपको मालूम हो ही जायगा;

बहुत दिनों का बिछोह दुखद होता है, यहाँ का और सब समाचार अच्छा है; आपका अभ्युदय श्री राघो जी से सर्वदा चाहता हूँ। द० वशिष्ठ

श्री जानकी घाट-मंदिर की श्री किशोरी जी के पत्र ता० २८।४।५६ की प्रतिलिपि, (प्रतिनिधि श्री वेदांती जी)

श्रीमान् प्रिये भैया जी !

(१०४) वीरन ! आप इतने दिन तक मुझे तो कभी नहीं बिसराते थे, क्या भैया जी आप निर्मोही भैया हो गये ? हमारी जानकी घाट का कुँज सूना प्रतीत होता है। क्या आप इतने विरक्त हो गये कि बहिन की भी याद नहीं, आप मेरे अकेले ही भैया हैं, यदि और भी हमारे दो चार भइया होते तो दूसरों को भी देख कर सन्तोश होता यद्यपि संसार में सब कुछ है तथापि बिना बीरन के हम उदास सी प्रतीत होती हैं। भैया जी ! पत्र देखते ही अपने विचार शीघ्र हमारे पास आने का कीजिये। यदि आप नहीं आवेंगे तब मैं अपने पुरोहित को भेजूँगी। भैया निर्मोही न बनो, आप जानते हैं; भैया को बहिन कितना चाहती है। भैया तो अ क देशों को देखता और मन बहलाता है, एवं मैं तो घर के अदर ही बैठी रहती हूँ, आप ही के चितवन से जब आप का स्वरूप सामने आताहै, तब भैया हृदय भर आता है; बहुत दिनां तक मुझे न भुलाया जाये। जब मेरा जी बहुत घबराता है तब मेरे जीवनधन प्राणधन, हृदयतम, रघुवंशभूषण, सरकार कहते हैं, कि हे प्रियतमे ! घबड़ाओ नहीं, मैं शीघ्र तुम्हारे भैया को बुला दूँगा। फिर भैया आप तो जानते ही हैं, कि उनका कितना बड़ा राज काज है वह भूल जाते हैं, अब आप ही स्वयं शीघ्र आइये। मेरा हृदय भर आया। अब मैं नहीं लिख सकती। भैया, भैया, भैया। आपकी एक बहिन, महलकुँज निवासिनी, श्री अयोध्याराजधानी

श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट का अपूर्व प्रभाव एवं चमत्कार

पाठको ! जिन पर महान पुरुषों की अथवा स्वयं भगवान की ही कृपा हो जाती है तब वे भक्ति मार्ग में आते हैं, मैं पहिले भी कई बार निवेदन कर चुका हूँ कि "विश्वासो फलदायका," मनुष्य अपनी श्रद्धा एवं विश्वास का बना हुआ पुतला है, जिस का जिस के प्रति जैसा भी विश्वास होता है, तब वैसा ही उसका वह काम भी हो जाता है।

मैंने अभी जून १९५४ में जब श्री हरिद्वार जी की यात्रा की, तो जाते समय कुछ प्रेमी जनों के आग्रह पर मुझे कई दिन तक उनके यहां रुकना भी पड़ा, वहां के भावुक प्रेमियों ने श्री सिद्धकिशोरी चरितामृत का श्रद्धा पूर्वक प्रेम से पान किया; उनमें से कुछ भावुक प्रेमियों की याचना पर मैंने श्री सिद्ध किशोरी जी की फोटो (चित्रपट) भी उनको दे दिया, कई प्रेमियों ने तो उस चित्रपट को अपनी पूजा में ही रख लिया, अब जिन २ सज्जनों को श्रद्धा से विश्वास युक्त पूजा करने से अपनी मनोकामनाओं की सिद्धि प्राप्त हुई है; उनके पत्र भी मेरे पास आये हैं, उनमें से केवल ४ ही पत्रों के कुछ अंश को यहां मैं लिखता हूँ, जिससे भगवत भक्त एवं विश्वासी जनों के लिये तो कोई आश्चर्य जनक प्रतीत न होंगी, मगर हाँ ! अभगत तथा अविश्वासी लोगों को यदि ब्रह्मा जी भी स्वयं आकर बोध करावें, तो वह उन के कहने को भी कदापि न मान सकेंगे।

(१०५) बांस बरेली साहूकारा में मुझे बाबू श्री ललित कुमार

जी वकील के मकान पर ठहरने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था आप निशकपट श्रद्धालु अनन्य हरि भक्त हैं, आप की श्री गुरुदेव तथा संतों में भी पूर्ण श्रद्धा रहती है, आप सत्यसंग और भगवत् कीर्तन के कट्टर प्रेमी हैं तभी तो इनके मकान पर भगवदार्चन पूजन एवं कीर्तन नियम पूर्वक हुआ करता है, डाक्टर राजनारायण जी के सुपुत्र विजय किशोर जी (आप के भतीजे) का पत्र ता० २६-८-५४ को मेरे (लेखक) पास आया है आप लिखते हैं कि मैं इन्ट्रेंस क्लास में फेल हो गया था, श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट के सामने मैंने कुछ दिन तक प्रार्थना की तो उसके फल स्वरूप में कुछ ही दिनों बाद जब दोबारा परिक्षा फल निकला तो मैं द्वतीय श्रेणी में पास हो गया। तब मैंने वकील साहब के मकान पर कीर्तन करा कर श्री सिद्धकिशोरी जी को भी कुछ भोग लगा प्रशाद प्रेमी जनों में बांट दिया, किशोरी जी का चित्रपट देकर आपने मेरी जिंदगी ही बना दी, आपके इस उपकार को कभी नहीं भूल सकता।

(१०६) नचीबाबाद (बिजनौर) से ता० १६-७-५४ को डाक्टर हरासिंह साहणी (पंजाबी सरदार) Ex. I.M.D. मुझे (लेखक को) पत्र द्वारा लिखते हैं, कि आप से प्राप्त हुये श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट को मैंन अपने जीवन का आधार बनाकर उसको अपनी पूजा में रख लिया था, हर रोज जी भर कर धूप दीप करके भोग लगाते हुए उनका शुभ दर्शन कर मन को निहाल कर लिया करता हूँ, क्या कहूँ, उनका फोटो तो इस कलियुग में भी जादू से बढ़कर असर दिखा रहा है, पहिले मेरी दुकान का काम कुछ मन्दा पड़ गया था। मगर अब अच्छी तरह से चलने लगा है और जिस होटल में दो अढ़ाही साल से मैं खाना खा रहा था, श्री सिद्धकिशोरी जी का चित्रपट पाने के बाद जब मैं वहां खाने जाता तो मुझे भारी नफरत

होती जिससे वापस लौट आता, मुझे तीन दिन तक बराबर इसहाल (दस्त) भी होते रहे जो बिना कोई दवाई खाये खुद ब खुद ठीक भी हो गये। तब से श्री सिद्धकिशोरी जी की कृपा और प्रेरणा द्वारा अपने ही हाथों से खाना बनाया करता हूँ, होटल को बिल्कुल छोड़ दिया गया है नफरत हो गई है मांस बनाने, बेचने तथा पकाने वालों से भी नफ़रत (घृणा) हो गई है इसलिए सबसे बिल्कुल नाता भी तोड़ दिया है। यह सब आप की और आप की बहिन श्री सिद्ध किशोरी जी की अति कृपा का फल है कि मुझ जैसे पापी को भी गन्दे गड़े से निकाल कर अपने चरणों का दास बना लिया है। मैं अपने इस समय के सुख का उसी तरह से वर्णन नहीं कर सकता जिस प्रकार को कोई गुंगा मनुष्य मिठाई के स्वाद का कथन नहीं कर सकता—आप के धन्याद प्रकट करने के लिये मेरे पास कोई शब्द ही नहीं हैं।

(१०७) देहली राजेन्द्रनगर से ता० २४/७/५४ को पहला पत्र और २०/१०/५४ को दूसरा पत्र स्वर्गीय श्रीमान श्री गिरधारी लाल जी के सपुत्र श्री रामचंद्र जी व श्री लछमन जी ने मेरे नाम से भेजे हैं जिनका आशय यह है; कि देहली में पधार कर आप ने जो श्री सिद्धकिशोरी जी के कुछ चमत्कारी चरित्रों को सुनाया था; उन के सुनते मात्र ही हमारे पुज्य पिता जी के मन में पूर्ण श्रधा एवं विश्वास उत्पन हो गया था कि जो लीला स्वरूप इतने सिद्ध थे तब तो उनका चित्रपट (फोटो) भी सिद्ध होगा, हमारे पिता जी की उत्कट अभिलाषा पर आप ने जो उन को फोटो दिया था पिता जी ने उस को अपनी पूजा में रख लिया और रात दिन श्री सिद्धकिशोरी जी से प्रार्थना करने लगे कि अब हमको जलदी इस फानी जहान (नश्वर-संसार) से उठा लो और अपने ही श्री चरनों में बुला कर

सेवा में रख लों। बस इसी प्रकार प्रति दिन इसी धुन में मग्न रहकर दुकान का काम और घरबार सब को भूल गये; उस समय उनकी तबियत बिल्कुल ठीक थी। इधर ता० ८ को आप यहाँ से गये उधर १६ जुलाइ को पिता जी की तबियत कुछ खराब हुई तो श्री रामायण सुनने की इच्छा प्रकट की; एक महात्मा जी के द्वारा उनको जब श्री रामायण जी सुनाई गई तोबड़े प्रेम से सुनी, फिर श्री जमुना जी के स्नान् की इच्छा भी प्रगट की; और रात्री को श्री सीता राम जी का शुभ नाम रटते २ प्रातःकाल ४ बजे श्री सिद्धकिशोरी जी की असीम कृपा द्वारा आप की जो मनो कामना थी साकेत लोक में श्री किशोरी जी के चरनों में पहुँच गये।

(१०८ देहली सबजीमंडी में दसहैरा के मौका पर कुँवार मास में हम लोगों की तरफ से भी कुछ दिन के लिये हर साल श्री राम लीला हुआ करती है, वह इस साल भी बराबर हुई, लीला में हमारे पिता जी भी कुछ पार्ट (सम्वाद) किया करते थे, इस साल उन के न रहने पर लीला समाज के प्रबन्धकों को उनकी कमी महसूस हुई तो चिंतित हो कर विचार करने लगे कि अब इस की पूर्ती कैसे और किस के द्वारा होनी चाहिये; इधर दूसरे ही दिन हमारे छोटे भाई श्री लक्ष्मन जी को श्री सिद्धकिशोरी जी की प्रेरणा होती है कि तुम ही अपने पिता जी की कमी को पूरा कर दो, यद्यपि लछमन जी पहिले कभी भी श्री राम लीला के स्टेज (रंगमंच) पर नहीं आये, थे, लेकिन श्री सिद्धकिशोरी जी की कृपा का क्या कहना कि भाई साहेब ने पिता जी के सब सम्वादों की पू त श्री किशोरी के बल भरोसे पर कर ही तो डाली, और जन्ता को बराबर यही भान हुआ कि श्री गिरधारीलाल जी ही पार्ट कर रहे हैं, इन सब बातों पर विचार करते हुए हम सब को पूर्ण विश्वास हो गया है कि

कि यह तो केवल श्री सिद्धकिशोरी जी की ही परम कृपा का फल है, वरना ऐसे २ अनूपम कार्यों की सिद्धि तथा पूर्ति होना किसी भी मनुष्य की शक्ति से बाहर की बातें हैं;

अखण्ड कीर्तन का प्रभाव

(बिहौती भवन श्री अयोध्या जी में अपूर्व चमत्कार)
श्री अयोध्या जी के विरक्त पत्र अङ्क नं० २१
ता० १।६।१६५४ से उद्धरित।

(१०८ माला का सुमेरु भौतिक भारतीय पुराणवाद को नहीं मानते, उनकी आँखें खोलने के लिये एक आश्चर्य-कारी घटना का उल्लेख किया जाता है, जो इस प्रकार है।

श्री अयोध्या जी में बिहौती भवन नामक एक स्थान है, यहाँ की उपासना भगवान श्री रामचन्द्र जी के दुलहा स्वरूप की है, यहाँ निरन्तर चार जुगुल सरकार (चार सरकार एवं चार महारानी स्वरूप) रहते हैं, प्रतिमास की हर पंचमी छठी को यहाँ श्री राम बिवाह एवं कलेवा उत्सव मनाया जाता है, इस स्थान के महन्त (पुजारी श्री रामशंकर शरण जी) अच्छे प्रसिद्ध महात्माओं में से हैं, "श्री सिद्धकिशोरी जी" जिन्होंने अपने अपूर्व अनोखे चमत्कारी चरित्रों द्वारा जनता को चकित कर दिया था वह इसी बिहौती भवन के प्रधान स्वरूप थे।

सुप्रसिद्ध कीर्तनकार साकेत धाम वासी अनन्त श्री रूपकला जी के परम स्नेही श्री स्वर्गीय भक्तवर रामाँ जी महाराज की सुपुत्री श्रीमती रामकुमारी देवी इसी स्थान में रह कर श्री अवध निवास करती हैं, उन्होंने विगत १६।५।१६५४ को श्री सीताराम नाम का

अष्टयाम कीर्तन किया, जिसमें दिन में तो स्त्रियों ने और रात में पुरुषों ने भाग लिया। इस कीर्तन में मंगल कलश की स्थापना की गई थी, गर्मी के मौसम का ख्याल करके दीपक न रख कर पुष्प ही रख दिये थे, रात्रि में मिट्टी के तेल की दो ढेवरियाँ जिनमें आधा आधा तेल भरा था, अपने प्रकाश के लिये जलाकर ताखे पर रख दी गईं थीं। लगभग रात्रि के दो बजे एक ढेवरी बुझ गई। ता० १७।५।५४ को प्रातःकाल ५ बजे देवी जी ने दूसरी ढेवरी भी बुझा कर मंडप में रख दी, और कीर्तन की समाप्ति कर प्रसाद वितरण करने के पश्चात् जिस कोठरी में वह विश्राम करती हैं उसमें चली गईं। उस मंडप में जहाँ कीर्तन हुआ था, लगभग ८५ वर्ष की एक बुढ़िया भी रहती है, देवी जी के जाने के दस मिनट के बाद उसने दोनो ढेवरियों को पुनः जलते हुये देख कर अनुमान किया कि देवी जी ही जलाकर चली गईं होंगी। देवी जी रात भर जगी थीं अतः वह प्रातः काल चार बजे जब सोकर उठीं तो देखा एक दीपक जल रहा है। और एक को बुझा कर बुढ़िया ने अपने पास रख लिया है, उक्त स्थान में जो दो चार व्यक्ति उस समय उपस्थित थे उनसे जाँच करके पूँछा गया कि दीपक किसने जलाया ? तो सबने शपथ लेकर जलाने से इन्-कार किया ! तब परीक्षा की गई कि देखें यह दीपक कब तक जलता है, तो वह दीपक आँधी और तेज तूफानी हवा में भी बराबर जलता रहा, यह खबर धीरे धीरे फैल गई, और बहुत से दर्शकों ने आकर उक्त घटना को प्रत्यक्ष देखा, अभी तक दीपक उक्त स्थान से हटाया नहीं गया है, प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक व सायंकाल ५ बजे से रात्रि भर दीपक के दर्शन नित्य होते हैं। और स्त्रियाँ आ आकर पूजन करतीं और लाभ उठाती हैं।

एक प्रत्यक्षदर्शी जेठ कृष्ण ३ सं० २०११।

❀ निष्कर्ष ❀

सज्जनो देखिये ! इस घोर कलिकाल में भी केवल पन्द्रह वर्ष के बालक (लीला स्वरूप) ने अपने अपूर्व; अलौकिक, चमत्कार दिखला कर जन्ता को एक आश्चर्य में डाल दिया, इतनी छोटी अवस्था में ऐसे ज्ञान एवं सिद्धि चमत्कारों का होना क्या कोई साधारण बात है ? किसी को उसका भविष्य बता देना; तो किसी को साकेत भेजवा देना, किसी का घर धन धान्य से भर देना;तो किसी के मनमाने मनोर्थ ही पूर्ण कर देना, कहीं नितान्त बालक बन जाना, तो कहीं विद्वानों के भी छक्के छुड़ा देना ! आप के अनेकों विचित्र चरित्र हैं जो वर्णातीत हैं, विना किसी शक्ति विशेष के इतनी २ अपूर्व बातों का होना असम्भव है। यह सब मनुष्य की शक्ति के बाहर की बातें हैं। इसलिये अन्त में यह मानना ही पड़ेगा; कि आप कोई साधारण बालक नहीं; बल्कि कोई अलौकिक अवतारी महान आतमा ही थे, महापुरुषों के स्वरूप को पहचानना बड़ा कठिन है, वे किस रूप में कहाँ रहते हैं और क्या करते हैं, इसको कोई नहीं जानता; किसी में यदि शक्ति का विशेष रूप में प्राकट है तो किसी में कम; मैंने अपनी बाल्यावस्था से लेकर आज तक सैकड़ों लीला बिहारी स्वरूपों के शुभ दर्शन किये; परन्तु उनमें से आठ दस स्वरूपों में तो कई चमत्कार एवं सिद्धियां भी दूसरों से कुछ अधिक देखने में आईं; परन्तु इन सब से प्रधानता तो श्री सिद्धकिशोरी जू की ही रही ; जिन्हों ने अपने अनेकों अनोखे, अलौकिक चमत्कारों द्वारा प्रेमी समाज को कृत कृत्य कर दिया और यह भी देखने में आया, कि अपरोक्त आठ दस चमत्कारी

स्वरूपों में से कोई भी लीला स्वरूप पन्द्रह, सोलह और सत्रह वर्ष की आयु पश्चात् इस संसार में प्रकट रूप में न रह कर कोई तो साकेत धाम एवं कोई २ गोलोक धाम को पधार गये।

यद्यपि संसारी लोगों को वे जन्म लेते एवं शरीर त्यागते ही दृष्टि गोचर होते हैं, परन्तु यदि वास्तव में देखा जाय तो वह जन्म मरण से रहित सदा जीवन मुक्त होते हुए भी केवल जगत के कल्याण एवं उपकारार्थ ही इस संसार में आया जाया करते हैं परन्तु उनको संसारी लोगों के सदृश जन्म मरण का कोई कष्ट भी नहीं व्यापता। मगर हां ! संसारी लोगों के लिये तो कर्म का कानून अटल है। वह जैसा करते हैं, वैसा उसका फल भी भोगते हैं।

सज्जनो ! इन्ही श्री सिद्धकिशोरी जी की बीमारी के अन्त समय तक बहुत से प्रेमी जनो ने कई प्रकार के अनुष्ठान, जाप पूजा, पाठ, व्रतादि स्वयं किए और दूसरों से भी कराये, उनसब प्रेमियों की परमाभिलाषा थी, कि ऐसे विलक्षण चमत्कारी लीला स्वरूप अभी इस पृथ्वी तल पर कुछ काल और भी निवास करें तो अच्छा ! जिससे हम जैसे पामर जीवों का कल्याण हो, परन्तु यह भी तो उन्हीं की इच्छा एवं उन्हीं की लीला थी। खुशी हुई तो इतनी कि अनन्त श्री किशोरी जी ने एक अनुपम लीला आदर्श दिखला कर दर्शकों को तो सचेत किया एवं समस्त लीला मंडलियों को भी गौरव प्रदान करती हुई श्री साकेत धाम को लौट गईं। और दुख है तो इतना, कि यदि कुछ काल तक वह और भी यहां रह जातीं, तो न जाने कितने लोगों का हित और कल्याण होता, हम लोगों से पृथक होने पर भी हमारी दया सागरी जू आज भी हमारे समीप आस-पास में ही तो गुप्त रूप से खेल कर रहीं हैं, अपने दृश्य जीवन में तो अनन्त जीवों पर अनुग्रह कर उनका उद्धार किया

अब अदृश्य रूप से भी वह न जाने कितने ही जीवों का कल्याण कर उन्हें धन्य कर रही हैं।

कई प्रेमियों ने अनेक स्वरूपों के शुभ दर्शन किए, एक से एक सुन्दर एक से एक भावुक और चमत्कारी। किन्तु ऐसे चमत्कारी, सुशील, शान्त, ऐसे भावुक श्रद्धालु स्वरूप नहीं देखने में आये, इनमें अनन्त गुण थे, प्रेमी लोग आज भी उनके वर्णन करते थकते नहीं। वैसे तो उनकी स्मृति जीवन भर रहेगी, वह कभी भूल थोड़े ही सकती है। उनकी मधुर मुस्कान एवं धुनि आज भी कानों में सुनाई देती हुई उनकी स्मृति को ताजा बना रही है। आप का सदाचार, आप की निर्मल कीर्ति, आप का उदार, दयालु सरल स्वभाव, गरीबों की सेवा, अति मधुर भाषण, आप की भोली भाली रंगीली झाँकी के साथ २ अधरों की मन्द-मन्द मुस्कान आज भी प्रेमी जनों के हृदय पटल पर अविचल आसन जमाये आंखों में झूल रही है, आप की धवल कीर्ति का इस निर्जीव लेखनी द्वारा उल्लेख करना शक्ति के बाहर है।

यह तो केवल प्रेमी भक्त जनों के सञ्चित शुभ कर्मों का फल ही था, जो ऐसे अलौकिक चमत्कारी लीला स्वरूप ने आकर हम सोते हुए सब लोगों को फिर से जगा कर सचेत कर दिया। यदि ऐसा न होता तो लीलाधारियों एवं उनके दर्शकों में कुछ शिथिलता जरूर आने लग जाती, काल के प्रभाव से इधर लोगों की श्रद्धा कुछ कम होने लगी थी, हो सकता था कुछ प्रेमी निरास होकर इस मार्ग से प्रथक भी हो जाते।

वास्तव में श्री रामलीला, श्री कृष्ण लीला; श्री भक्त लीला एवं श्री जुगुल झांकी मण्डलियों द्वारा कई दर्शक लोग मुग्ध एवं मोहित होकर उनके कट्टर भक्त भी बन गये। क्यों न हो;

भगवान तो अपने लीला अनुकरण से आकर्षित होकर ऐसे रीझते हैं कि स्वयं तत्काल ही प्रकट भी हो जाते हैं। जैसा कि श्री रासपंचाध्याई में बृजगोपिकाओं को भगवान ने उनकी रहस लीला करने पर ही स्वयं उनको दर्शन दिया था; इस का एक मात्र कारण यही है कि भगवत लीला अनुकरण में केवल ब्राह्मणों के सुपात्र सुन्दर ब्रह्मचारी बालकों को ही तो स्वरूप बनाया जाता हैं, उनके क्रीट मुकुट एवं वस्त्रालंकार भी साक्षात भगवान के से ही बनाये जाते हैं, इसलिये जो मनुष्य निर्मल चित्त से श्रद्धा और विश्वास युक्त होकर ऐसे लीला स्वरूपों में भगवान का ही ध्यान करते हैं भगवान समझ कर ही उनकी सेवा करते हैं; तो उनकी भावनानुसार उन्हें मनोरथ की सिद्धि एवं मोक्ष की प्राप्ति क्यों न होगी ? "जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी"

सज्जनो ! लीला बिहारी स्वरूप आवेशावतार माने गये हैं और यह नियम है कि हर एक मनुष्य अपने विश्वास तथा भावना के अनुरूप ही अपने मन वांछित फलों को प्राप्त करता है; मनुष्य का विश्वास ही मुख्य साधन है, जो शुभ विश्वास हुआ तो उत्तम गति को पा लिया और जो अशुभ हुआ तो बुरी गति को; अर्थात शुभ भावना वाला तो भगवान का दर्शन करता है और अशुभ भावना वाला नर्क का।

मैं तो अपना अनुभव कहूँगा कि इस कलिकाल में भगवान के नाम; रूप, लीला, धाम, से बढ़ कर मन को एकाग्र करने के निमित्त दूसरे कोई सुलभ और निरापद साधन नहीं हैं, इसलिये जो कोई दृढ़ विश्वास एवं श्रद्धायुक्त लीला बिहारी स्वरूपों का दर्शन; उनकी सेवा, एवं उनके चरित्रों का ही श्रवण मनन करता है, तो उसके हृदय की कालिमा धुल कर हृदय

शीघ्र निर्मल हो जाता है ! तभी तो श्री लीला बिहारी सरकार भी अवश्य उसका उद्धार कर देते हैं, भले ही वह ऊंच हो या नीच; पंडित हो या मूर्ख, राजा हो या रंक, परन्तु होना चाहिये भावुक ! देखिये । स्वयं श्री भगवान का ही कथन है कि "ब्राह्मण बालक मेरा ही स्वरूप हैं; सत्यब्राह्मण मेरे ही मुख से उत्पन्न हुये हैं, इसलिये मेरे मुख के पुत्र हैं, पिता को स्वयं खाने में उतनी प्रसन्नता नहीं होती, जितनी पुत्र को खिलाने से होती है, उसी प्रकार ब्राह्मण बालक को खिलाने से मेरा मुख संतुष्ट हो जाता है। इसलिये सुन्दर मोहन भोग, अथवा और भी कोई स्वादिष्ट भोग पदार्थ फल फूल मेवा इत्यादि कोई प्रेमी भक्त श्री लीला-बिहारी-स्वरूपों के मुख में देता है तब तो मेरी प्रसन्नता का कहना ही क्या ? मेरा मुख खिल कर बिकसित हो जाता है। और उस प्रेमी भक्त के सब मनोरथों को मैं ही उस लीला स्वरूप द्वारा पूरा कर देता हूँ। बस जिस किसी ने भी श्री लीला बिहारी स्वरूपों का आश्रय गृहण कर लिया, तब उसे धर्म; अर्थ काम मोक्ष इन चारों पदार्थों में से फिर कौन सी वस्तु दुर्लभ है ? सज्जनो, यह सब चीजें तो भगवान अपने प्रेमी भक्तों को बिना मांगे ही स्वयं दे देते हैं। तभी तो निषकाम भक्ति को ही सब से श्रेष्ठ माना गया है !

श्री सिद्धकिशोरी जी इस लोक से चली गईं, उनकी कथा मात्र शेष रह गई; तो भी उनकी स्नेहमई; पुन्यमई प्रतिमा प्रतीक आज भी प्रेमी जनों के हृदय में विराजमान है। साल पर साल व्यतीत हो चुके; इधर काल के प्रभाव से कितनी तरह के भले बुरे परिवर्तन भी हो गये, परन्तु तो भी श्री सिद्धकिशोरी जी का शुभ नाम उसी प्रकार सब जगह गौरव से ही लिया जाता है, श्री लीला बिहारी स्वरूपों की महिमा प्रत्येक प्रेमी जनों को विदित ही है, ऐसे २ श्री लीला स्वरूप तो प्रेमी भक्तों की पूजा

की सामिग्री हुआ करते हैं जिनको वह अपने हृदय से एक पल के लिये भी पृथक नहीं कर सकते।

पाठको! जब तक इस पवित्र भारत भूमि में एक भी भगवत लीला प्रेमी रहैगा, तब तक श्री "सिद्धकिशोरी जी"; का शुभ नाम भी अमर बना रहैगा। एवं जिस दिन आप के समान चमत्कारी लीला-स्वरूप इस भारत वर्ष में प्रकट हो जायेंगें, उस दिन तो समस्त दुख दावानल शान्त होकर अनाथों की डूबती हुई नैया भी किनारे लग जायगी।

श्री जनक नन्दिनी जू की कृपा

वात्सल्ता तथा शील स्वभाव

इस संसार के लम्बे चौड़े इतिहास में त्रिलोकी के विशाल वक्षस्थल पर न जाने कितनी सती आर्या महिलायें हुईं, और उनकी महिमा जब तक सूर्य चन्द्रमा रहैंगे—गाई जाती रहैंगी; परन्तु सती गौरव श्री अवध राजधानी की महरानी श्री जनक नन्दिनी जू की महिमा अत्यन्त विलक्षण है; क्या विलक्षण है?

(१) सती दमयन्ती को एक लकड़हारे ने बुरी दृष्टि से देखा तो उन्होंने अपने सत की अग्नि से उसे भस्म ही कर डाला। (२) सती सांडिलनी को गरुड़ जी योग्य समझकर भगवान की प्रसन्नता के लिये बड़े आदर से बैकुंठ में ले जाना चाहते थे, तो उस देवी ने अपने सत्य के बल से उनके शरीर तक को गला दिया। (३) सती शिरोमणि श्री जनक नन्दिनी क्षमा रुपिणी पृथ्वी की पुत्री हैं, पृथ्वी का सार अथवा सत रूप होने के कारण वह पृथ्वी से भी कोटि गुणा अधिक क्षमा

शील हैं। यद्यपि उनका सत्य दमयन्ती, शांडिलिनी, लक्ष्मी आदि से भी कोटि गुणा अधिक है; तो भी उन्होंने अपने सत् की आग से रावण जैसे महान दुष्ट राक्षस को भी नहीं जलाया बल्कि वह बोलीं; हे पुत्र ! मैं सब की माँ हूँ; तुम्हारी भी माँ हूँ; इसलिये तुम्हारा मुझ पर कुदृष्टि करना उचित नहीं है, मैं अपने सत् के बल से तुम्हें जलाकर खाक कर सकती हूँ, परन्तु इसमें भी तो मुझे ही दुख होगा इसलिये बेटा ! सोच समझ कर सपूत बनो, मूर्खता को त्याग दो।

अशोक वाटिका में राक्षसियों का उपद्रव देखकर हनुमान जी ने श्री स्वामिनी जी से आज्ञा मांगी कि इन्हें मार डालूँ ? इस पर श्री किशोरी जू राक्षसियों के शिर पर अपना वरद हस्त कमल रखते हुये श्री हनुमान जी से बोलीं, पुत्र ऐसा मत कहो; यह विचारी तो अपने स्वामी (रावण) की आज्ञा का पालन कर रही हैं, इसमें इनका क्या दोष है; श्रेष्ठ पुरुष बड़े से बड़े अपराधी को भी क्षमा ही करते हैं, संसार में सभी अपराधी हैं, किस २ पर दृष्टि डाली जाये; इसलिये बेटा हनुमान, अपने हृदय में दुर्गुण नहीं आना चाहिये ! परम शीतल श्री मिथिलेश- दुलारी शीलस्वभावा जू के मधुर वचनों को सुन कर श्री हनुमान जी का हृदय आदर, श्रद्धा, विनय, प्रेम एवं आनन्द से भर कर गदगद होने लगा; और उनके श्री चरणों में गिर पड़े ! मन्दोदरी युद्ध में अपने पुत्र मेघनाद का वध सुन कर क्रोध से भरी महाराज श्री रामचन्द्र जी को कुछ अपशब्द बकती अशोक बन की तरफ़ आई, और उनको शाप देने जा ही रही थी ; कि सर्मा (विभीषण जी की स्त्री) के मुख से सब समाचार सुन कर श्री किशोरी जी मन्दोदरी के समीप पहुँच, धरती पर घुटने टेक, हाथ जोड़, बड़ी नम्रता से बोलीं; मां ! अपने पुत्र के प्रति माता की कितनी ममता होती है, यह मैं

जानती हूँ; परन्तु तुम्हारे दुख का कारण वे (श्री राम जी) नहीं है! सारे अनर्थों की जड़ तो मैं ही हूँ; तुम उनके लिये कुछ न कहो! माँ! किन्तु अपनी क्रोधाग्नि से मुझे ही दंड देकर अपने हृदय की व्यथा को शान्त कर लो! बस! फिर क्या था; श्री स्वामिनी जी का शीतल हृदय एवं दैन्ययुक्त मुखमंडल देखकर उनके करुण, सत्य, एवं मधुर वचन सुन कर मन्दोदरी का हृदय भी शान्त एवं शीतल हो गया। श्री स्वामिनी जी को हृदय से लगा कर बोलीं! हां! तुम्हारे इस शील एवं शीतल स्वभाव पर मेघनाद जैसे लाखों पुत्र कुर्बान हैं, बल्हिार हैं न्योछावर हैं; पुत्री तुम्हारा सोहाग अचल हो—और तुम अपने स्वामी से मिलकर सुखी रहो! सज्जनो! श्री अयोध्या महारानी जू के शील स्वभाव का वर्णन कहाँ तक किया जाय; वह आकाश के समान अनन्त, समुद्र के समान गम्भीर, अमृत के समान मधुर, और मधुरता के समान प्यारी, एवं कोटि चन्द्र के समान शीतल भी हैं।

जिस समय जयन्त (कौवे के भेस में) श्री किशोरी जी पर पञ्जे और चोंच का प्रहार करके भागा था, और भगवान श्री राम जी के सींक बाण के भय से मृत्युलोक में कहीं भी शरण न मिलने पर घबराता, काँपता, श्री नारद जी के उपदेश से फिर वहाँ आया, और श्री रामचन्द्र जी महाराज के चरणों के पास गिर पड़ा, उस समय भी उसका मुख श्री राम जी के बिपरीत एवं पीठ उनके सामने हो गई थी, तब भी श्री स्वामिनी जी ने कृपा पूर्ण हृदय से महाराज श्री रामचन्द्र जी की नज़र बचा कर अर्थात् उनकी दृष्टि पड़ने से पहिले ही झट उसको विमुख से सन्मुख कर दिया; (अपने ही कर कमलों द्वारा उसका मुख श्री राम जी की तरफ़ फेर दिया।)

पाठको! अब बतलाइये तो सही, कि दैन्य वत्सला जगदम्बा

महारानी श्री जनकनन्दिनी जू के सिवाय दुष्टों पर भी ऐसी कृपा एवं दया भला कर ही कौन सकता है, बहिन मेरी प्यारी लाड़िली बहिन ! हम आप के गुणों का वर्णन कहाँ तक करें; आप के गुण, नाम एवं रूप अनन्त हैं, आप की लीला भी अनन्त, अपार है जिसका न कोई पारावार है, जो हमारी बुद्धि से भी अगम है । तभी तो आपको वेदों ने भी नेति नेति कह कर पुकारा है ।

❀ अन्तिम प्रार्थना ❀

अब मैं भइया लक्ष्मीनिधि अन्त में श्री जुगुल सरकार अनन्त श्री सीता राम जू महाराज के शुभ नाम की छाप लगा कर; इस पुनीत जीवन चरित्र को; (जो कि एक अनमोल रत्न है, और जिस के श्रवण मात्र से जीवों का अन्तः करण शुद्ध एवं मन पवित्र होकर चित्त भगवत चरणों की ओर आकर्षित होता है) यहाँ विश्राम देता हुआ अपने प्रिय बहनोई श्री अवधेश राजकुमार परम रस विग्रह श्री राघवेन्द्र जू महाराज एवं अपनी प्यारी लाड़ली बहिन श्री मिथिलेश राजदुलारी श्री सिद्धकिशोरी जू के कमल रूपी चरणों में वारम्बार सादर सप्रेम दण्डवत प्रणाम करते हुये नम्रनिवेदन करता हूँ, कि आप सर्वेश्वर की स्वामिनी होने पर भी कृपा एवं ममता वश शरणार्थियों की रूचि रक्खा करती हैं, इसलिये आप अपने जीवों के हृदय में पुनीत प्रेम की धारा बहा कर अपनी करुणा एवं सनेह मयी गोदी में उनको बैठाने की कृपा करेंगी । कारण कि आप की दृष्टि में तो कोई अपराधी है ही नहीं; सभी अपना कर्मफल भोगते हैं; इसलिये करुणा के पात्र हैं, आहा धन्य । कितनी उदारता; कृपा, दया, कितनी भारी करुणा है हमारी लाड़ली श्री किशोरी जू के करुणा मयी हृदय में । प्रिय बहिन, आप

तो अर्थ, धर्म, काम मोक्ष के भी देने वाली हैं, जो भी दीन दुखी आप की शरण में गया बस उसका तो बेड़ा ही पार हो गया अर्थात् सब विपत्तियों से छूट कर आनन्द सागर में ही निमग्न हो गया, भूले भटके संसारी जीवों को प्रभु श्री रामजी के समीप पहुँचाने का मार्ग "श्री सम्प्रदाय" आपने तो पहले से ही खोल रक्खा है न।

बहिन! आप के रूप अनन्त हैं, आप नित्य लीला बिहार करती हुई भी हमारे समीप अवश्य हैं, आप कहीं भी क्यों न हों, मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार आप मुझे अपना भैया मान कर सदा मेरी देख रेख एवं रक्षा करती आई हैं, भविष्य में भी उसी प्रकार करती रहेंगी। मेरी अन्तिम प्रार्थना यही है कि अपने श्री चरणों से लगा आपने मुझे जिस मार्ग पर अग्रसर किया है मेरी जीवन यात्रा उसी मार्ग से पूर्ण हो जाये, और अन्त में बहिन! भुजा पकड़ कर मुझे अपने चरणों में बिठा लेना कहीं ऐसा न हो कि भइया को फिर चौरासी के चक्कर में पड़ कर्म घास के बोझे सिर पर लादने पड़ें। प्रिय बहिन! इस समय संसारी जीव भी महान दुख के सागर में गोते खा रहे हैं, इस-लिये अब अपनी उन समस्त बिलखती तड़पती आत्माओं को भी अपना कर रख लो अपनी चरण शरण में।

परम प्रिय बहनोई श्री राम जी से भी मेरी अन्तिम एक प्रार्थना है आशा है कि आप मुझे निरास न करेंगे। मैं आप के दर्शनों से वंचित रहने के कारण आवागवन की कठिन से कठिन चक्की में पिसा, अनेक योनियों तथा नरकों के महान् कष्ट भोगे माया देवी ने भी खूब नाच नचाया, दरबदर की खाक छानी यह तो केवल श्री सिद्धाकिशोरी जी तथा आपकी ही करुणा एवं कृपा का मधुर परिणाम है, कि मैं अनेक दुखों का सामना करता

हुआ संसार के कीचड़ (दलदल) में से निकल श्री युगुल सरकार की चरण शरण में पहुँच आप का साला तथा श्री किशोरी जी का भइया कहलाने का सौभाग्य एवं गौरव प्राप्त कर सका। देखिये पाहुन ! हमारी बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी ने तो अपनी प्रतिज्ञा अनुसार अपनी शरण में बुला ही तो लिया, मैं ८ वर्ष से आनन्द पूर्वक उन्हीं के छत्रछाया में श्री जानकी घाट महल में निवास कर रहा हूँ, अब आप दर्शन देने तथा अपने श्री साकेत लोक में ले जाने से संकोच क्यों कर रहे हैं, क्या मेरी किसी भारी खता से रूठे हैं ? "तेरी नजरों में नजराना मेरा दिल, बहनोई तेरे ही हाथ बिकाना हमारा दिल।" इस में जरा भी शक नहीं, किंचित मात्र भी संदेह नहीं, आप मुझ से निस्संदेह मिलेंगे परन्तु जब मिलना ही है तो देर क्यों लगाते हो, इतना क्यों तरसाते और सताते हो, और यदि कहो कि कुछ देर है तो क्यों ? फिर यह सार- बहनोई का नाता ही कैसा ? और अगर मेरे प्रेम में कमी है तो इसे पूरा क्यों नहीं करते, प्रेम के अधूरे प्याले को पूरा क्यों नहीं भरते। प्यारे ! आपकी छविसुधा के लोचन प्यासे हो रहे हैं,

छिपी वह कहाँ मधुर मुस्कान ॥

तरस रहीं फिर "सार" की अखियाँ सुखसागर दया निधान।
आकुल नैन बिलोकत चहुँ दिश, पीताम्बर फहिरान।
पै नहीं दीखत पीताम्बर धर, छिण छिण तलफत प्राण।
नासासखि की हलन न भूलत, नैनन की वह सान।
कहा कहूँ मन खैंच लियो है, "पाहुन" प्रेम निधान।
अब न सताओ तुरत करो, निज जन प्रतिपालन बाणि।
निखिल निमिख हैं जुग सम बीतत, देओ दर्श को दान।

बहनोई ! अपनी नटखट माया का परदा हटा कर अपना

सलोना, मनमोहना मुखड़ा शीघ्र दिखला मुझे अपने ही साथ २ साकेत धाम में भी ले चलें।

कृपा करो रसाई दो सजन, अपने चरणों में।
बुरा भला "सार" जैसा भी है, तुम्हारा है।

अब मेरी सादर करवद्ध प्रार्थना है, आप भी आशीर्वाद दें, कि आप के सगरे राज में धार्मिक भावों की वृद्धि होकर नास्तिकवाद का नाश हो, समस्त प्रजा सुधर्मनिष्ठ तथा प्रेम परायण होकर श्री सिद्धकिशोरी जी के इस पुनीत जीवन चरित्र को पढ़ सुनकर आपके चारु चरित्रों का अनुकरण कर सके।

इति शुभम्! श्री सीतारामचंद्राये नमः श्री सीतारामचन्द्रापर्णमस्तु

श्री युगुल सरकार श्री सीतारामचन्द्र महाराज की जय,
श्री माण्डवी भरतलाल जी की जय;
श्री उर्मिला लखनलाल जी की जय!
श्री श्रुतिकीर्ति शत्रुघ्नलाल जी की जय,
श्री हनुमतलाल जी की जय!
श्री गुरू महाराज की जय!

श्री मिथिलेश राजकुमारी वहिन,
श्री सिद्ध किशोरी जी की
दया का भिक्षुक—
आप का ही भइया,
लक्ष्मीनिधी



॥ श्री ॥



लेखक व प्रकाशक :—

अधिकारी रामगोपालदास,

भइया लक्ष्मीनिधी,

श्री जानकीघाट, श्री अयोध्या जी

— संशोधक —

पं० श्री भैयाराम जी मिश्र, एम. ए. एल. एल. बी.

अध्यापक,

गु० ना० खत्री कालेज, कानपुर।